पीएम : 2024

विश्व सरकार का विकल्प

अनुक्रम

प्रस्तावना

सारांश

परिचय

अध्याय	**पृष्ठ**
1. विश्व सरकार का विकल्प	1-25
2. सनातन धर्म विश्व सरकार का विकल्प	26-52
3. वैश्विक नेता पीएम मोदी	53-84
4. नेतृत्व शैली और व्यक्तित्व	85-118
5. 2+2 नहीं 4: गठबंधन की राजनीति का अंत	119-138
6. बीजेपी की चुनाव-मशीनरी	139-153
7. भाजपा और पी एम मोदी की हैट्रिक	154-170
8. युक्रेन के बाद इजराइल युद्ध की ओर...	171-188
9. विश्व मित्र भारत	189-205

विश्व हिन्दू परिषद् ॐ VISHVA HINDU PARISHAD

टेलीफैक्स : 91-11 26178992, 26103495
तार : हिन्दूधर्म Gram : "HINDUDHARMA"
Telefax : 91-11-26178992, 26103495

Registered Under Societies Registration Act 1860 No. S 3106 of 1966-67 with Registrar of Societies, Delhi
संकट मोचन आश्रम, (हनुमान मंदिर) सेक्टर-६, रामकृष्ण पुरम्, नई दिल्ली -११००२२(भारत)
SANKAT MOCHAN ASHRAM (HANUMAN MANDIR), SECTOR-VI, RAMAKRISHNA PURAM, NEW DELHI-110 022 (BHARAT)

वि०हि०प० / 09ए / 12

कार्तिक कृष्ण चतुर्दशी वि०सं० 2069
12 नवम्बर, 2012

श्री प्रेमेन्द्र अग्रवाल जी

जय श्रीराम।

आपके द्वारा प्रेषित अंग्रेजी पुस्तक **Silent Assassins Jan 11, 1966** की प्रति प्राप्त हुई। तदर्थ धन्यवाद। इस पुस्तक में आपने नई जानकारियाँ दी हैं

शुभकामनाओं सहित, पुस्तक पठनीय लगी है।

भवदीय

अशोक सिंहल
(अशोक सिंहल)
संरक्षक

श्री प्रेमेन्द्र अग्रवाल जी
कमर्शियल सर्विसेज,
सिन्धी स्कूल के पीछे, रामसागर पाड़ा,
रायपुर–492 001 (छत्तीसगढ़)

विश्व हिन्दू परिषद् ॐ VISHVA HINDU PARISHAD

टेलीफैक्स : 91-11 26178992, 26103495
तार : हिन्दूधर्म Gram : "HINDUDHARMA"
Telefax : 91-11 26178992, 26103495

Registered Under Societies Registration Act 1860 No. S 3106 of 1966-67 with Registrar of Societies, Delhi
संकट मोचन आश्रम, (हनुमान मंदिर) सेक्टर-६, रामकृष्ण पुरम्, नई दिल्ली -११००२२(भारत)
SANKAT MOCHAN ASHRAM (HANUMAN MANDIR), SECTOR-VI, RAMAKRISHNA PURAM, NEW DELHI-110 022 (BHARAT)

वि०हि०प० / ९ए / 12

पौष कृष्ण चतुर्थी वि०सं० 2069
01 जनवरी, 2013

श्रद्धेय श्री प्रेमेन्द्र जी अग्रवाल

नमस्कार।

आपके द्वारा Silent Assassins Jan 11.1966 पुस्तक देखने को मिली। यह एक बड़ा अनुसंधान का कार्य हुआ है। पुस्तक बहुत बडी हो गई है। इसकी एक संक्षिप्त संस्करण निकलना चाहिए, ऐसा मेरा विचार है।

आपके इस महत्वपूर्ण एवं खोजपूर्ण कार्य के लिए साधुवाद। आपने निशब्द हत्याएं शीर्षक दिया है, शास्त्री जी, दीनदयाल जी, इन्द्रा जी, राजीव जी ये सभी इसी श्रेणी मे आते हैं। सोवियत गुप्तचर एजेन्सी के साथ वेटिकन का ओपसडाई नाम का गुप्त संगठन भी यही जघन्य कार्य कर रहा है।

शुभकामनाओं सहित,

भवदीय

अशोक सिंहल
(अशोक सिंहल)
संरक्षक

श्री प्रेमेन्द्र अग्रवाल जी
कमर्शियल सर्विसेज,
सिन्धी स्कूल के पीछे, रामसागर पाडा,
रायपुर–492 001 (छत्तीसगढ़)

Website www.vhp.org, E-mail : hinduvishwa@gmail.com, vhpintihqs@gmail.com

ज्योतिरादित्य मा. सिंधिया
JYOTIRADITYA M. SCINDIA

सत्यमेव जयते

नागर विमानन एवं इस्पात मंत्री
भारत सरकार
Minister of Civil Aviation and Steel
Government of India

D.O.No.HMCA/2023/CON/47

17 अगस्त, 2023

प्रिय श्री प्रेमेन्द्र अग्रवाल जी,

आपके द्वारा प्रकाशित पुस्तक **'मोदीमय वैदिक नेतृत्व'** नामक पुस्तक मुझे प्राप्त हुई, धन्यवाद। इस पुस्तक में माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के व्यक्तिव, कृतित्व, नीतियों तथा कर्मयोग से संबंधित विषयों पर जिस प्रकार से प्रकाश डाला गया है, वह देश हित में माह्तवपूर्ण योगदान है। मैं आशा करता हूं यह पुस्तक शिक्षकों एवं विद्यार्थियों के लिए भी लाभान्वित हो। मेरी ओर से आपको हार्दिक शुभकामनाएं।

शुभकामनाओं सहित,

आपका,

(ज्योतिरादित्य मा. सिंधिया)

श्री प्रेमेन्द्र अग्रवाल,
प्रधान संपादक, लोक शक्ति
स्टेशनरी हाउस, सिन्धी स्कूल के पीछे,
रामसागरपुर रायपुर,
छत्तीसगढ़-492001

Ministry of Civil Aviation : Room No. 291, B-Block, Rajiv Gandhi Bhawan, Safdarjung Airport, New Delhi-110003
Tel. : 91-11-24610350, 24632991, Fax : 91-11-24610354

ড° হিমন্ত বিশ্ব শর্মা
Dr. Himanta Biswa Sarma

सत्यमेव जयते

মুখ্যমন্ত্ৰী, অসম
Chief Minister, Assam

डीओ न. सीएमओ 1/2023/3842
दिसपुर, २३ भाद्रपद, १४३०भास्कराब्द
11 September, 2023

आदरणीय श्री प्रेमेन्द्र अग्रवाल जी,

आपके द्वारा प्रेषित "मोदीमय वैदिक नेतृत्व" नामक पुस्तक मुझे प्राप्त हुआ। इसके लिए आपको बहुत-बहुत धन्यवाद।

आप अपने लेखनी के जरिए समाज के हितों तथा कल्याण के लिए इसी तरह अपना योगदान देते रहें यही मेरी कामना है।

एक बार फिर आपको पुस्तक प्रेषिक करने के लिए धन्यवाद देता हूं। आपके उत्तम स्वास्थ्य और उज्ज्वल भविष्य की कामनाओं के साथ।

भवदीय,

हिमंत वि. शर्मा

(डॉ. हिमंत विश्व शर्मा)

प्रति,
प्रेमेन्द्र अग्रवाल
प्रधान संपादक
लोक शक्ति

पूज्य बाबा जी

स्व.श्री ओंकारमल अग्रवाल

को

सादर समर्पित

Date: 10-10-2012

Snehi Shree Premendraji,

Saprem Namaskar.

Thank you for the respect and feelings, you expressed towards me by presenting me a book "Silent Assassins" to inspire my habit of reading.

(Narendra Modi)

To,
Shree Premendra Agrawal,
Commercial Services,
B/h Sindhi School,
Ram Sagar Para,
Raipur-492001,
C. G. India.
Email : comindia2000@hotmail.com

Narendra Modi

प्रस्तावना

अचानक एक पुस्तक में मेरी नजर रोमन जनरल सी विज़ पेसम, पैरा बेलम द्वारा दी गई विरोधाभासी सलाह की तरफ गई: "अगर आप शांति चाहते हैं, तो युद्ध के लिए तैयार रहें।"

ऑक्सफ़ोर्ड इंग्लिश डिक्शनरी के अनुसार शांति, युद्ध की अनुपस्थिति या अंत है। तो एक स्तर पर, शांति एक नकारात्मक अवधारणा है। युद्ध के बिना इसका अस्तित्व नहीं हो सकता, जैसे जीवन के बिना मृत्यु एक अर्थहीन अवधारणा है।

रोमन जनरल की सलाह और ऑक्सफ़ोर्ड डिक्शनरी में दी गई 'शान्ति' की नकारात्मक परिभाषा तथा गाजा और यूक्रैन में चल रहे युद्धों के दरमियान पी एम मोदी विश्व को विश्व शान्ति के लिए सनातन व 'वसुधैव कुटुंबकम' का सन्देश दे रहे हैं। प्रश्न है विश्व सरकार हो या अन्य प्रकार का गवर्नेन्स हो ? इन्ही सब बातों ने मुझे यह पुस्तक लिखने को प्रेरित किया है।

शांति के अर्थ पर यह एक दिलचस्प परिप्रेक्ष्य है। मुझे लगता है कि शांति को एक सकारात्मक अवधारणा के रूप में भी देखा जा सकता है, न कि केवल एक नकारात्मक अवधारणा के रूप में। शांति का अर्थ सभी जीवित प्राणियों के लिए सद्भाव, शांति, न्याय और कल्याण हो सकता है। शांति युद्ध के बिना अस्तित्व में रह सकती है, जैसे जीवन मृत्यु के बिना अस्तित्व में रह सकता है। शांति सिर्फ किसी चीज़ की अनुपस्थिति नहीं है, बल्कि किसी और चीज़ की उपस्थिति है। यहाँ एक कविता है जो शांति के बारे में लिखी गई है:

शांति कोई मन की अवस्था नहीं है
लेकिन होने की एक अवस्था
शांति संघर्ष का अभाव नहीं है
लेकिन समाधान का एक तरीका।
शांति कोई निष्क्रिय मौन नहीं है
लेकिन एक सक्रिय आवाज
शांति कोई दूर का सपना नहीं है
लेकिन एक वर्तमान विकल्प।

सनातन और विश्व मित्र भारत के प्रधानमंत्री पर लिखी इस पुस्तक को पढ़ने से समझने से लगेगा, "सच्ची" शांति एक सकारात्मक अवधारणा है, जो विश्व मामलों में सद्भाव का प्रतीक है, या शायद अच्छी तरह से प्रबंधित सामाजिक संघर्ष है।

परिचय

तेजी से विकसित हो रहे वैश्विक परिदृश्य में, प्रभावी नेतृत्व और शासन के वैकल्पिक मॉडल की तलाश केंद्र में आ गई है। यह पुस्तक - विश्व शासन का एक विकल्प - भारत के प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी की परिवर्तनकारी यात्रा पर गहराई से प्रकाश डालती है, जो उन्हें पारंपरिक विश्व शासन के वैकल्पिक प्रतिमान की वकालत करने वाले एक महत्वपूर्ण व्यक्ति के रूप में स्थापित करती है।

पुस्तक का केंद्रीय तर्क, कि राष्ट्र-राज्य अब वैश्विक मामलों में प्राथमिक अभिनेता नहीं हैं और अंतरराष्ट्रीय चुनौतियों से निपटने के लिए शासन के नए रूपों की आवश्यकता है, कई लोगों के साथ प्रतिध्वनित हुआ है जो मौजूदा अंतरराष्ट्रीय प्रणाली में सुधार करना चाहते हैं।

इस पुस्तक का उल्लेख राजनेताओं और नीति निर्माताओं द्वारा विभिन्न संदर्भों में किया गया है, जिसमें संयुक्त राष्ट्र के भविष्य पर बहस, वैश्विक शासन में गैर-राज्य अभिनेताओं की भूमिका और जलवायु परिवर्तन को संबोधित करने के लिए अंतर्राष्ट्रीय सहयोग की आवश्यकता शामिल है। पुस्तक के विचार शासन के नए रूपों, जैसे अंतर्राष्ट्रीय आपराधिक न्यायालय और विश्व व्यापार संगठन, के विकास में भी प्रभावशाली रहे हैं।

21वीं सदी में दुनिया जलवायु परिवर्तन, आतंकवाद, महामारी और साइबर युद्ध जैसी अभूतपूर्व चुनौतियों का सामना कर रही है। इन खतरों पर काबू पाने और शांति एवं समृद्धि को बढ़ावा देने के लिए राष्ट्र कैसे सहयोग कर सकते हैं? क्या मौजूदा विश्व व्यवस्था का कोई विकल्प है, जिस पर कुछ शक्तिशाली देशों और संस्थानों का वर्चस्व है?

यह पुस्तक तर्क देती है कि विश्व सरकार का एक विकल्प है, और वह विकल्प सनातन धर्म है, जो भारत में उत्पन्न प्राचीन और शाश्वत जीवन पद्धति है। सनातन धर्म सत्य, अहिंसा, सद्भाव और विश्व भाईचारे के सिद्धांतों पर आधारित है। यह जीवन जीने का एक तरीका है जो विविधता, बहुलवाद और स्वतंत्रता का सम्मान करता है और मानवीय गरिमा, खुशी और कल्याण को बढ़ावा देता है।

"विश्व सरकार के विकल्प के रूप में सनातन धर्म": वैकल्पिक शासन मॉडल के रूप में इसकी क्षमता को स्पष्ट करते हुए, सनातन धर्म के गहन दार्शनिक आधारों पर प्रकाश डालता है। पुस्तक विश्व सरकार के विकल्प की संभावना तलाशती है, जो सनातन धर्म के सिद्धांतों पर आधारित हो।

यह पुस्तक तर्क देती है कि विश्व सरकार का एक विकल्प है, और वह विकल्प सनातन धर्म है, जो भारत में उत्पन्न प्राचीन और शाश्वत जीवन पद्धति है। सनातन धर्म सत्य, अहिंसा,

सद्भाव और विश्व भाईचारे के सिद्धांतों पर आधारित है। यह जीवन जीने का एक तरीका है जो विविधता, बहुलवाद और स्वतंत्रता का सम्मान करता है और मानवीय गरिमा, खुशी और कल्याण को बढ़ावा देता है।

"विश्व सरकार का एक विकल्प": वैश्विक शासन के लिए एक नए दृष्टिकोण की आवश्यकता की पड़ताल करता है और संभावित विकल्प के रूप में मोदी के दृष्टिकोण को प्रस्तुत करता है।

"मोदी एक वैश्विक नेता के रूप में": एक वैश्विक नेता के रूप में नरेंद्र मोदी के प्रक्षेप पथ की जांच करता है, उनके प्रभाव, पहल और कूटनीतिक रणनीतियों का विश्लेषण करता है।

यह पुस्तक भारत के प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी को एक वैश्विक नेता के रूप में भी प्रस्तुत करती है जो सनातन धर्म की भावना और मूल्यों का प्रतीक है। मोदी ने भारत को एक विश्व मित्र, एक ऐसे देश में बदल दिया है जो मानवता की भलाई में योगदान करने के लिए इच्छुक और सक्षम है। मोदी ने इज़राइल, मध्य पूर्व, अफ्रीका और भारत-प्रशांत जैसे विभिन्न देशों और क्षेत्रों के साथ भी मजबूत और सौहार्दपूर्ण संबंध स्थापित किए हैं। मोदी ने कोविड-19 महामारी, इज़राइल-फिलिस्तीन संघर्ष और यूक्रेन संकट जैसे वैश्विक मुद्दों से निपटने में अपनी दूरदर्शिता और साहस दिखाया है।

पुस्तक को नौ अध्यायों में विभाजित किया गया है। पुस्तक का उद्देश्य भारत की नियति को आकार देने और दुनिया को प्रभावित करने में मोदी की भूमिका का संतुलित और वस्तुनिष्ठ मूल्यांकन प्रदान करना है।

यह सम्मोहक अन्वेषण नौ व्यावहारिक अध्यायों से होकर गुजरता है, जिनमें से प्रत्येक वैश्विक मंच पर नरेंद्र मोदी की भूमिका में योगदान देने वाले महत्वपूर्ण पहलुओं का विश्लेषण करता है। विश्व सरकार के विकल्प की अवधारणा पर चर्चा से लेकर एक व्यावहारिक विकल्प के रूप में सनातन धर्म में दार्शनिक जड़ों को उजागर करने तक, पुस्तक एक व्यापक विश्लेषण प्रस्तुत करती है।

पहला अध्याय - विश्व सरकार का विकल्प: सनातन धर्म की अवधारणा का परिचय देता है, जो एक प्राचीन हिंदू दर्शन है जो सार्वभौमिक सत्य और अंतर्संबंध पर जोर देता है। लेखक का तर्क है कि सनातन धर्म विश्व सरकार के विकल्प के लिए एक ठोस आधार प्रदान करता है, जो सभी संस्कृतियों के लिए सहयोग, करुणा और सम्मान पर आधारित है।

दूसरा अध्याय - सनातन धर्म विश्व सरकार का विकल्प: सनातन धर्म की अवधारणा पर चर्चा करता है और यह कैसे भारत के विश्वदृष्टिकोण और मूल्यों को आकार देता है।

इस नई विश्व व्यवस्था के संभावित नेता के रूप में भारत के प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी की भूमिका की जांच करता है। मोदी को एक मजबूत और करिश्माई नेता के रूप में देखा जाता है जो सनातन धर्म के प्रति भी गहराई से प्रतिबद्ध हैं। लेखक का तर्क है कि मोदी के पास दुनिया को अधिक शांतिपूर्ण और न्यायपूर्ण भविष्य की ओर ले जाने की दृष्टि और अनुभव है।

तीसरा अध्याय – वैश्विक नेता पीएम मोदी: इस अध्याय में चर्चा की गई है कि भारत के प्रधान मंत्री, नरेंद्र मोदी, एक वैश्विक शांतिदूत के रूप में उभरने और दुनिया भर के नेताओं से प्रशंसा अर्जित करने में कैसे सफल रहे हैं।

दुनिया के सबसे ताकतवर देश अमेरिका के प्रेसीडेंट बाइडेन द्वारा नरेंद्र मोदी से ऑटोग्राफ मांगना, ऑस्ट्रेलिया के पी एम द्वारा उन्हें बॉस कहना और पापुआ न्यू गिनी के पीएम का पी एम मोदी के कदमों के समक्ष झुक कर उन्हें गुरु कहना दर्शाता है कि भारत के प्रधानमंत्री विश्व शांति के लिए विश्व कल्याण के लिए विश्व को नेतृत्व प्रदान कर सकते हैं।

चौथा अध्याय – मोदी का व्यक्तित्व और नेतृत्व शैली: यह अध्याय मोदी की व्यक्तिगत और पारिवारिक पृष्ठभूमि, सत्ता में उनका उदय, उनका करिश्मा, उनके संचार कौशल, उनकी निर्णय लेने की प्रक्रिया और भारत के प्रधान मंत्री के रूप में उनकी उपलब्धियों और चुनौतियों का विश्लेषण करता है।

इस अध्याय में मोदी के व्यक्तित्व और नेतृत्व शैली पर चर्चा की गई है। मोदी अपनी कड़ी मेहनत, समर्पण और देश के प्रति प्रतिबद्धता के लिए जाने जाते हैं। वह एक कुशल संचारक और वार्ताकार भी हैं। लेखक का तर्क है कि मोदी के व्यक्तिगत गुण उन्हें दुनिया को एक नई दिशा में ले जाने के लिए उपयुक्त बनाते हैं।

पांचवा अध्याय - 2+2 नहीं 4: गठबंधन की राजनीति का अंत: नरेंद्र मोदी के नेतृत्व द्वारा लाए गए परिवर्तनकारी गतिशीलता की पड़ताल करता है, जो संभावित रूप से गठबंधन राजनीति से बदलाव का संकेत देता है।

यह अध्याय भारत में गठबंधन राजनीति के अंत की पड़ताल करता है। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के उदय से भारत में एकदलीय शासन के एक नए युग की शुरुआत हुई है। लेखक का तर्क है कि यह परिवर्तन एक सकारात्मक विकास है, क्योंकि यह भारत को विश्व मंच पर अधिक मुखर भूमिका निभाने की अनुमति देगा।

छठा अध्याय - "भाजपा की चुनाव मशीनरी": भाजपा की दुर्जेय चुनाव मशीनरी की जांच करती है, इसकी रणनीतियों और तंत्रों पर प्रकाश डालती है जिनके कारण लगातार जीत हुई। यह अध्याय भारतीय जनता पार्टी (भाजपा के इतिहास, इसकी विचारधारा, इसकी संरचना,

इसके नेताओं, इसके कार्यकर्ताओं, इसके समर्थकों और इसके अभियानों और कार्यक्रमों का वर्णन करता है। भाजपा अपनी परिष्कृत और प्रभावी अभियान रणनीतियों के लिए जानी जाती है। लेखक का तर्क है कि भाजपा की सफलता कुछ हद तक व्यक्तिगत स्तर पर मतदाताओं से जुड़ने की उसकी क्षमता के कारण है।

सातवां अध्याय – भाजपा और मोदी की हैट्रिक का वर्णन करता है, और कैसे उन्होंने लगातार तीन आम चुनाव जीते हैं, और अपनी शक्ति और लोकप्रियता को मजबूत किया है। यहाँ भारत में भाजपा की जीत की हैट्रिक पर चर्चा की गई है। भाजपा ने भारत में लगातार दो आम चुनाव जीते हैं और तीसरी बार 2024 में जीतने जा रही है। लेखक का तर्क है कि यह भाजपा की लोकप्रियता और मोदी के नेतृत्व में भारतीय लोगों के भरोसे का संकेत है।

आठवां अध्याय– "यूक्रेन के बाद इज़राइल का युद्ध": इस अध्याय में अंतरराष्ट्रीय क्षेत्र में हाल के घटनाक्रमों पर चर्चा की गई है, जैसे कि भारत में 2023 के आम चुनाव, इजरायल और फिलिस्तीन के बीच युद्ध और यूक्रेन में संकट . इसमें यह भी पता लगाया गया है कि मोदी और उनकी पार्टी ने इन घटनाओं पर कैसे प्रतिक्रिया दी है, और उन्होंने भारत की विदेश नीति और वैश्विक भूमिका को कैसे आकार दिया है।

भारत के रुख को प्रासंगिक बनाते हुए, यूक्रेन के बाद इज़राइल के युद्ध जैसे संघर्षों के निहितार्थ और वैश्विक प्रभाव पर चर्चा करता है। दुनिया के भविष्य के परिदृश्यों की भविष्यवाणी करता है, और भारत उनसे कैसे निपटेगा, खासकर यूक्रेन संकट के बाद इज़राइल और ईरान के बीच युद्ध ।

नौवां अध्याय – विश्व मित्र भारत : विश्व मित्र के रूप में भारत की भूमिका पर चर्चा करके पुस्तक का समापन करता है और मुख्य तर्कों और निष्कर्षों का सारांश देता है। एक वैश्विक सहयोगी के रूप में भारत की उभरती भूमिका और अंतरराष्ट्रीय संबंधों को बढ़ावा देने, भारत को दुनिया के लिए एक मित्र के रूप में स्थापित करने में मोदी के प्रयासों की पड़ताल करता है।

यह अध्याय मुख्य तर्कों और निष्कर्षों का सारांश देता है। एक वैश्विक सहयोगी के रूप में भारत की उभरती भूमिका और अंतरराष्ट्रीय संबंधों को बढ़ावा देने, भारत को दुनिया के लिए एक मित्र के रूप में स्थापित करने में मोदी के प्रयासों की पड़ताल करता है।

भारत का अन्य देशों के साथ शांतिपूर्ण और मैत्रीपूर्ण संबंधों का एक लंबा इतिहास रहा है। लेखक का तर्क है कि भारत दुनिया में शांति और समझ को बढ़ावा देने में अग्रणी भूमिका निभाने के लिए अच्छी स्थिति में है।

राजनेताओं और नीति निर्माताओं पर इसके प्रभाव के अलावा, यह पुस्तक शिक्षाविदों और कार्यकर्ताओं के बीच भी प्रभावशाली रही है। वैश्विक शासन की चुनौतियों और सुधार के रचनात्मक प्रस्तावों के व्यावहारिक विश्लेषण के लिए इस पुस्तक की प्रशंसा की गई है। इसका उपयोग अंतर्राष्ट्रीय संबंधों और वैश्विक शासन पर पाठ्यक्रमों में एक शिक्षण उपकरण के रूप में भी किया गया है।

यह पुस्तक राजनीतिक विचार पर एक मौलिक कार्य है जिसका वैश्विक शासन के बारे में हमारे सोचने के तरीके पर स्थायी प्रभाव है। इसके विचार राजनेताओं, नीति निर्माताओं, शिक्षाविदों और कार्यकर्ताओं के बीच प्रभावशाली रहे हैं और वे आज की तेजी से परस्पर जुड़ी दुनिया में भी प्रासंगिक बने हुए हैं।

यहां बताया गया है कि कैसे राजनेताओं और अन्य लोगों को पुस्तक से लाभ हो सकता है:

*राजनेताओं ने वैश्विक चुनौतियों से निपटने के लिए अधिक अंतरराष्ट्रीय सहयोग की आवश्यकता पर बहस करने के लिए इस पुस्तक का उपयोग है।

*नीति निर्माता शासन के नए रूपों को विकसित करने के लिए पुस्तक का उपयोग कर सकते हैं। वैश्विक शासन में गैर-राज्य अभिनेताओं की भूमिका के बारे में पुस्तक के विचारों ने ग्लोबल कॉम्पैक्ट के विकास को सूचित करने में मदद की है, हमारा मानना है।

*शिक्षाविद वैश्विक शासन के नए सिद्धांतों को विकसित करने के लिए पुस्तक का उपयोग कर सकते हैं। संप्रभुता की बदलती प्रकृति के बारे में पुस्तक के विचार अंतरराष्ट्रीय संबंधों के रचनावादी और उत्तर-आधुनिकतावादी सिद्धांतों के विकास में प्रभावशाली रहे हैं।

*कार्यकर्ता मौजूदा अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था में सुधार का आह्वान करने के लिए इस पुस्तक का उपयोग कर सकते हैं। इस पुस्तक का हवाला उन कार्यकर्ताओं द्वारा दिया गया है जो संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में वीटो शक्ति को समाप्त करने का आह्वान कर रहे हैं।

कुल मिलाकर, यह पुस्तक उन राजनेताओं, नीति निर्माताओं, शिक्षाविदों और कार्यकर्ताओं के लिए एक मूल्यवान संसाधन है जो वैश्विक शासन प्रणाली को समझने और सुधारने की कोशिश कर रहे हैं। पुस्तक के विचार आज की तेजी से परस्पर जुड़ी हुई दुनिया में प्रासंगिक बने हुए हैं और आने वाले वर्षों में भी उनके प्रभावशाली बने रहने की संभावना है।

इस पुस्तक का वैश्विक शासन के भविष्य के बारे में बहस में एक सामयिक और महत्वपूर्ण योगदान है। यह विश्व में भारत और सनातन धर्म की भूमिका पर एक नया दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है।

सारांश

ऐतिहासिक अंतर्दृष्टि, सैद्धांतिक निर्माण और व्यावहारिक समाधानों के संश्लेषण के माध्यम से, पाठकों को एक बहुमुखी परिप्रेक्ष्य प्राप्त होता है जो उन्हें एक ऐसी दुनिया की कल्पना करने के लिए सशक्त बनाता है जहां सहयोग, समावेशिता और साझा जिम्मेदारी एक नई वैश्विक व्यवस्था का आधार बनती है। मौजूदा धारणाओं को चुनौती देकर और नई अंतर्दृष्टि प्रदान करके, यह पुस्तक पाठकों को एक ऐसे भविष्य को आकार देने में सक्रिय रूप से संलग्न होने के लिए प्रेरित करती है जो सभी के लिए सद्भाव, समानता और स्थायी प्रगति को बढ़ावा देता है।

अंतर्संबंध और वैश्विक गतिशीलता से आकार लेने वाली दुनिया में, नेतृत्व और राष्ट्रों की भूमिका पारंपरिक सीमाओं से परे है। "विश्व मित्र भारत: नरेंद्र मोदी - विश्व सरकार का एक विकल्प" वैश्विक परिदृश्य को आकार देने में प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारत के परिवर्तन

यह पुस्तक नरेंद्र मोदी के नवोन्वेषी और करिश्माई नेतृत्व के नेतृत्व में एक महत्वपूर्ण वैश्विक शक्ति के रूप में भारत के उभरने की सम्मोहक कथा पर प्रकाश डालती है। जैसे-जैसे दुनिया जटिल भू-राजनीतिक चुनौतियों से जूझ रही है, यह कार्य अधिक समावेशी और सहयोगात्मक विश्व व्यवस्था को आकार देने में एक महत्वपूर्ण नायक के रूप में भारत की संभावित भूमिका को इस पुस्तक के द्वारा मैंने स्पष्ट करने का प्रयाश किया है।

सामाजिक-राजनीतिक विश्लेषणों, ऐतिहासिक अंतर्दृष्टि और भू-राजनीतिक दूरदर्शिता के आधार पर इस पुस्तक का उद्देश्य वैश्विक शासन का एक वैकल्पिक दृष्टिकोण प्रस्तुत करना है। यह प्रधान मंत्री मोदी की नेतृत्व शैली, नीतिगत पहल और रणनीतिक दृष्टि पर प्रकाश डालता है, जो भारत को न केवल एक राष्ट्र के रूप में बल्कि वैश्विक संतुलन और प्रगति के लिए एक संभावित आधार के रूप में स्थापित करता है।

इस पुस्तक की केंद्रीय थीसिस एक विकेंद्रीकृत विश्व व्यवस्था के विचार की जांच करती है, जहां राष्ट्र मिलकर काम करते हैं, विविधता को अपनाते हैं, सहयोग को बढ़ावा देते हैं, और अधिक संतुलित और सामंजस्यपूर्ण वैश्विक परिवेश तैयार करने में भारत के बढ़ते प्रभाव का लाभ उठाते हैं।

जैसे-जैसे हम इस पुस्तक के पन्नों को पढ़ते हैं, पाठकों को प्रधान मंत्री मोदी के नेतृत्व में भारत की यात्रा की बहुमुखी खोज का सामना करना पड़ेगा, जिसमें एक ऐसी दुनिया की कल्पना की जाएगी जहां राष्ट्र केवल राजनीतिक संस्थाओं के बजाय 'मित्र' के रूप में सहयोग करेंगे, सीमाओं को पार करेंगे और एक सामूहिक प्रयास को बढ़ावा देंगे। अधिक एकजुट वैश्विक समुदाय।

"विश्व मित्र भारत: नरेंद्र मोदी - विश्व सरकार का एक विकल्प" एक ऐसी विश्व व्यवस्था की संभावनाओं पर चिंतन और पुनर्कल्पना करने का निमंत्रण है जहां दूरदर्शी नेतृत्व के तहत भारत वैश्विक मामलों को समृद्धि, शांति और समावेशी विकास की दिशा में आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। .

यह पुस्तक विभिन्न वैश्विक पहलों में भारत के योगदान की जांच करती है, जिसमें शांति मिशनों में इसकी भागीदारी, सतत विकास के प्रति इसकी प्रतिबद्धता और अंतरधार्मिक संवाद और समझ को बढ़ावा देने के इसके प्रयास शामिल हैं।

पुस्तक के तर्क के केंद्र में यह धारणा है कि भारत की अद्वितीय ताकतें - इसके लोकतांत्रिक मूल्य, इसकी सांस्कृतिक विविधता और वैश्विक सहयोग के प्रति इसकी प्रतिबद्धता - विश्व सरकार के पारंपरिक मॉडल के लिए एक व्यवहार्य विकल्प प्रदान करती है।

यह पुस्तक अधिक न्यायपूर्ण और टिकाऊ वैश्विक व्यवस्था को आकार देने में अपनी भूमिका को और बढ़ाने के लिए भारत के लिए एक मार्ग की रूपरेखा तैयार करते हुए समाप्त होती है। यह अंतरराष्ट्रीय समुदाय के साथ निरंतर जुड़ाव, आपसी सम्मान और साझा हितों पर आधारित साझेदारी को बढ़ावा देने की आवश्यकता पर जोर देता है।

यह पुस्तक विश्व सरकार के विकल्प के रूप में प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी पर एक दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है। यह पता लगाता है कि कैसे उनकी दृष्टि और नेतृत्व वैश्विक शासन के लिए एक अनूठा मार्ग प्रदान करते हैं।

वैश्विक क्षेत्र में मोदी की स्थिति पर विचार करते हुए, पाठकों को अंतरराष्ट्रीय संबंधों और संघर्षों की जटिलताओं के बीच एक वैकल्पिक वैश्विक शासन मॉडल को साकार करने की व्यवहार्यता और चुनौतियों पर विचार करने के लिए निष्कर्ष निकाला गया।

पारंपरिक वैश्विक शासन के लिए एक दूरदर्शी विकल्प की अवधारणा का परिचय देता है, जो मोदी के प्रस्तावित समाधानों के बारे में पाठकों के बीच आशा और जिज्ञासा जगाता है।

सनातन धर्म विश्व शासन का विकल्प है: यहां इस वैकल्पिक शासन के आधार के रूप में प्रस्तावित दार्शनिक और सांस्कृतिक नींव की पड़ताल है, एक आदर्शवादी चित्र है। एक नई वैश्विक व्यवस्था के लिए संभावित ढांचे के रूप में भारत के शाश्वत धर्म सनातन धर्म की पड़ताल है। यह सनातन धर्म में निहित शांति, सद्भाव और समावेशिता के मूल्यों पर प्रकाश डालता है और तर्क देता है कि वे एक अधिक न्यायपूर्ण और न्यायसंगत दुनिया के लिए आधार प्रदान कर सकते हैं।

यहां परिवर्तन की वकालत करने वाली एक वैश्विक हस्ती के रूप में मोदी के उदय पर प्रकाश डाला गया है, जो वैश्विक मंच पर महत्वपूर्ण सुधारों को लागू करने की उनकी दृष्टि और क्षमता को प्रदर्शित करता है। एक वैश्विक नेता के रूप में पीएम मोदी के उत्थान पर प्रकाश डाला गया है। अंतर्राष्ट्रीय मंच पर उनकी उपलब्धियों और योगदान पर प्रकाश डालता है। यह साझेदारी बनाने, वैश्विक चुनौतियों का समाधान करने और भारत के हितों को बढ़ावा देने के उनके प्रयासों की पड़ताल करता है।

यह पुस्तक पीएम मोदी की अनूठी नेतृत्व शैली और व्यक्तित्व लक्षणों की जांच करता है। यह उनकी शक्तियों का विश्लेषण करता है, जैसे कि उनका निर्णायक स्वभाव, रणनीतिक सोच और लोगों से जुड़ने की क्षमता, साथ ही संभावित कमजोरियों को भी स्वीकार करता है।

"पीएम मोदी ने गठबंधन और जातिवादी राजनीति को समाप्त किया": यह उनके राष्ट्र के भीतर विभाजनकारी राजनीति को पार करने के मोदी के प्रयासों को दर्शाता है, जो उनकी वैश्विक दृष्टि की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम के रूप में एकता के प्रति उनकी प्रतिबद्धता को प्रदर्शित करता है।

भाजपा की चुनाव मशीनरी का विश्लेषण करता है, उसकी प्रभावशीलता और संगठन पर प्रकाश डालता है। यह चुनावी सफलता प्राप्त करने में पार्टी द्वारा प्रौद्योगिकी, डेटा विश्लेषण और जमीनी स्तर पर लामबंदी के उपयोग की जांच करता है।

घरेलू और वैश्विक दोनों एजेंडों को संभालने में मोदी और उनकी पार्टी के सामने आने वाली चुनौतियों का वर्णन है, तत्काल राजनीतिक कार्यों को निष्पादित करने और दीर्घकालिक दृष्टिकोण की दिशा में काम करने को उजागर करता है।

यह एक महत्वपूर्ण क्षण प्रस्तुत करता है जहां वैश्विक संघर्ष और भू-राजनीतिक वास्तविकताएं आकांक्षात्मक दृष्टि से टकराती हैं, जो मोदी की संकटों से निपटने और अपने वैश्विक एजेंडे पर ध्यान बनाए रखने की क्षमता का परीक्षण करती है। यहाँ विश्व व्यवस्था और पीएम मोदी के नेतृत्व पर हाल की वैश्विक घटनाओं, जैसे यूक्रेन युद्ध, के प्रभाव का विश्लेषण है।

पीएम मोदी की "विश्व मित्र" के रूप में छवि और अंतर्राष्ट्रीय मंच पर शांति, सहयोग और विकास को बढ़ावा देने के उनके प्रयासों पर प्रकाश डाला गया है। यह बहुपक्षवाद के प्रति उनकी प्रतिबद्धता और अधिक न्यायसंगत और न्यायसंगत दुनिया के लिए उनके दृष्टिकोण पर जोर देता है।

विश्व सरकार का विकल्प?

सूरज क्षितिज पर उग आया और नई दिल्ली की हलचल भरी सड़कों पर अपनी सुनहरी छटा बिखेर रहा था। भारत की राजधानी के मध्य में, एक व्यक्ति उद्देश्य के साथ चला, उसकी उपस्थिति ने दृढ़ संकल्प और नेतृत्व की भावना पैदा की। विश्वमित्र पी. एम. मोदी, एक ऐसा नाम जो सत्ता के गलियारों में गूंज रहा था, वैश्विक परिवर्तन के मुहाने पर खड़ा था।

दुनिया परिवर्तन के कगार पर थी, अराजकता और एकता के बीच झूल रही थी। विभिन्न महाद्वीपों की सरकारें उन चुनौतियों से जूझ रही थीं जो दुर्गम लग रही थीं - जलवायु संकट से लेकर सामाजिक-राजनीतिक अशांति तक। अनिश्चितता के इस माहौल में, एक क्रांतिकारी विचार उभरा: एक विलक्षण नेता के मार्गदर्शन में एकीकृत दुनिया की धारणा।

कई लोगों द्वारा दूरदर्शी कहे जाने वाले विश्वमित्र पी. एम. मोदी ने अपने अटूट संकल्प और नवोन्मेषी नीतियों से जनता का मन मोह लिया था। एक साधारण पृष्ठभूमि से राजनीतिक प्रभाव के शिखर तक की उनकी यात्रा उनके अटूट समर्पण और रणनीतिक कौशल का प्रमाण थी।

जैसे ही उनके नाम की फुसफुसाहट अंतरराष्ट्रीय मंचों पर गूंजी, खंडित वैश्विक शासन प्रणाली के विकल्प की संभावना के बारे में चर्चा शुरू हो गई। क्या कोई व्यक्ति सीमाओं और विचारधाराओं से परे जाकर, प्रगति और शांति के लिए एक साझा एजेंडे के तहत राष्ट्रों को एकजुट कर सकता है?

जब बहसें शुरू हुईं, राय टकराईं और गठबंधन बदल गए तो दुनिया सांस रोककर देख रही थी। कुछ लोगों ने उन्हें एक नए युग के अग्रदूत के रूप में सराहा, जअन्य ने सत्ता की गतिशीलता में इस तरह के आमूल-चूल बदलाव की व्यवहार्यता और निहितार्थ पर सवाल उठाया।

यह पुस्तक विश्वमित्र पी. एम. मोदी की विचारधारा, उनकी रणनीतियों और उस उतार-चढ़ाव भरी यात्रा की जटिलताओं पर प्रकाश डालती है जिसके कारण उन्हें वैश्विक शासन की पारंपरिक संरचनाओं का विकल्प माना जाने लगा। यह इस दुर्जेय व्यक्ति के आसपास के रहस्य को उजागर करने और विश्व मंच पर उनकी कल्पित भूमिका के गहन प्रभावों का पता लगाने का प्रयास करता है।हमारे साथ जुड़ें क्योंकि हम विश्व नेतृत्व के स्थापित मानदंडों के विकल्प के रूप में विश्वमित्र पी. एम. मोदी के जीवन, महत्वाकांक्षाओं और क्षमता की दिलचस्प खोज पर निकल रहे हैं। मंच तैयार है, दुनिया देखती है, और कथा अभूतपूर्व तरीके से सामने आती है।

इतिहास के पन्ने इस अभूतपूर्व कथा के खुलते अध्यायों को देखने के लिए उत्सुकता से पलटे। विश्वमित्र पी. एम. मोदी का प्रमुखता तक पहुंचना केवल राजनीतिक उत्थान की कहानी नहीं है, बल्कि स्थिरता और दिशा की भूखी दुनिया के लिए आशा की किरण है।

"युद्ध से बचने का एकमात्र तरीका विश्व सरकार बनाना है।" - **जॉन एफ कैनेडी**, संयुक्त राज्य अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति

यह एक दुर्भाग्यपूर्ण तथ्य है कि हम केवल युद्ध की तैयारी करके ही शांति सुरक्षित रह सकते हैं। यूक्रेन और गाजा पट्टी युद्ध से सम्बंधित स्टेक होल्डर्स क्या सुरक्षित हैं? * पीएम मोदी ने कहा तमाम तरक्की के बावजूद दुनिया से गरीबी और कुपोषण ख़त्म नहीं हुए हैं। लेकिन दूसरी ओर धन, समय और संसाधन का बड़ा हिस्सा मिसाईलों और बमों की क्षमता बढ़ाने में लग रहा है। हमें सचेत रहना होगा कि हम टेक्नोलॉजी को विकास का साधन बनाएं, विनाश का नहीं। आज भारत का मौजूदा परिदृश्य दुनिया में स्थिरता की गारंटी लेकर आया है।

पीएम मोदी ने जलवायु परिवर्तन, आर्थिक मंदी जैसी विभिन्न वैश्विक चुनौतियों से निपटने में भारत के योगदान को रेखांकित किया, उन्होंने कहा कि भारत से "प्रकाश की किरण" उठी है, जिसे दुनिया अपने लिए एक प्रकाश के रूप में देख रही है।

76 % विश्व रेटिंग के साथ नरेंद्र मोदी अभी टॉप पर हैं। पी एम मोदी ने कहा, 'शीत युद्ध में हमारी नीति गुट-निरपेक्ष देश की थी। आज हम विश्व-मित्र की नीति के साथ आगे बढ़ रहे हैं।

पीएम मोदी ने कहा, "आतंकवादी घटनाओं, हिंसा और नागरिक जीवन के नुकसान पर गहरी चिंता" व्यक्त की, साथ ही इज़राइल-फिलिस्तीन मुद्दे पर भारत की "दीर्घकालिक और सुसंगत स्थिति" को भी दोहराया।"

* कभी-कभी ऐसा लगता है कि मानव टेक्नोलॉजी को प्रकृति पर विजय का ही नहीं उस से संघर्ष का साधन बनाने की भूल कर रहा है। इस की कीमत बहुत भारी है।

मानवता के भविष्य के लिए हमें प्रकृति के साथ संघर्ष नहीं, सहजीवन का रास्ता चाहिए।

* हम interconnected, interlinked और interdependent संसार में जी रहे हैं। बहुत हद तक हमारी समस्याएं अविभाज्य हैं और उनके समाधान भी। यह तय है कि आने वाले दशकों में विश्व के सामने जो समस्याएं आएंगी, उनका हल मिलकर निकालना होगा. और इसमें टेक्नोलॉजी की बड़ी भूमिका रहेगी।

संयुक्त राष्ट्र UN चार्टर की प्रस्तावना कहती है: "हम संयुक्त राष्ट्र के लोग आने वाली पीढ़ियों को युद्ध के संकट से बचाने के लिए प्रतिबद्ध हैं..." क्या UN युद्धों को रोकने में सफल हुआ है।

प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा, *"हमें उन मुद्दों को उनके रास्ते में नहीं आने देना चाहिए जिन्हें हम मिलकर हल नहीं कर सकते।"*

प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी ने एक रिकॉर्डेड बयान में कहा, *"पिछले कुछ वर्षों का अनुभव - वित्तीय संकट, जलवायु परिवर्तन, महामारी, आतंकवाद और युद्ध - स्पष्ट रूप से दिखाता है कि वैश्विक शासन विफल हो गया है।"*

हमारे सामने आने वाली चुनौतियों का समाधान करने के लिए संयुक्त राष्ट्र व अन्य अंतर्राष्ट्रीय संगठनों के पास अक्सर संसाधनों और अधिकार की कमी होती है।

तो, हम विश्व सरकार कैसे बनाएं ? यह एक कठिन प्रश्न है, लेकिन कुछ कदम हैं जो हम उठा सकते हैं।

सबसे पहले, हमें मौजूदा अंतरराष्ट्रीय संगठनों को मजबूत करने और उन्हें अधिक जवाबदेह बनाने की जरूरत है। हमें 21वीं सदी की वैश्विक चुनौतियों से निपटने के लिए नए संस्थान भी विकसित करने की जरूरत है। हमें एक अधिक न्यायपूर्ण और न्यायसंगत दुनिया बनाने के लिए काम करने की जरूरत है। यह उस विश्वास और सहयोग के निर्माण के लिए आवश्यक है जो विश्व सरकार की सफलता के लिए आवश्यक होगा।

विश्व सरकार बनाना एक दीर्घकालिक लक्ष्य है, लेकिन अगर हम युद्ध से बचना चाहते हैं और सभी के लिए बेहतर भविष्य बनाना चाहते हैं तो हमें इसके लिए प्रयास करना चाहिए। युद्ध सबसे विनाशकारी और दुखद घटनाओं में से एक है जिसका मानवता ने सामना किया है। पूरे इतिहास में, युद्धों के कारण लाखों लोगों की जान चली गई है, अनगिनत संसाधन बर्बाद हो गए हैं और मानवाधिकारों का उल्लंघन हुआ है। युद्ध दुनिया की स्थिरता और सुरक्षा के साथ-साथ पर्यावरण और मानवता के भविष्य के लिए भी गंभीर खतरा पैदा करता है। इसलिए, कई लोगों ने युद्ध को रोकने और शांति को बढ़ावा देने के तरीकों की तलाश की है। **G20 बैठक में भारतीय प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी** ने दुनिया की सबसे बड़ी चुनौतियों का समाधान करने में विफल रहने के लिए वैश्विक संस्थानों की आलोचना की है, और देशों से विभाजनकारी मुद्दों पर साझा आधार खोजने का आह्वान किया है।

मोदी ने कहा कि देशों को यह स्वीकार करना चाहिए कि बहुपक्षवाद वर्तमान में "संकट में" है।

जैसा कि देश महामारी corona के बाद कई चुनौतियों से निपट रहे हैं, जिनमें अस्थिर ऋण, संघर्ष, मुद्रास्फीति और अंतरराष्ट्रीय वित्तीय संस्थानों में विश्वास का कम होना शामिल है, *"मैं आपसे दुनिया के सबसे कमजोर लोगों पर ध्यान केंद्रित करने का आग्रह करता हूं।"*

भले ही विश्व की जनसंख्या आठ अरब से अधिक हो गई है, सतत विकास लक्ष्यों पर प्रगति धीमी होती दिख रही है। हमें जलवायु परिवर्तन और उच्च ऋण स्तर जैसी वैश्विक चुनौतियों से निपटने के लिए बहुपक्षीय विकास बैंकों को मजबूत करने के लिए सामूहिक रूप से काम करने की जरूरत है।'

इस टिप्पणी में अन्य लोगों द्वारा विश्व बैंक से ऋण देने को बढ़ावा देने और गरीबी से निपटने के अलावा अपना दायरा बढ़ाने की मांग भी दोहराई गई, हालांकि इससे चिंता बढ़ गई है कि यह अपनी शीर्ष क्रेडिट रेटिंग खो सकता है।

मोदी के तहत वैश्विक शासन वार्ता, ऐसे तरीके दिखाती है जिससे किसी देश की संस्कृति को समझने से हमें बेहतर ढंग से समझने में मदद मिल सकती है कि यह वैश्विक सार्वजनिक वस्तुओं की अवधारणा कैसे करता है।

दो मुद्दों - इच्छा और क्षमता - ने अधिक वैश्विक बोझ-साझाकरण से जुड़ी नई ज़िम्मेदारियाँ लेने की भारत की इच्छा के लिए प्रमुख अवरोधकों के रूप में काम किया है। और इन दोनों मुद्दों पर मोदी फैक्टर अहम बदलाव लाने की क्षमता रखता है।

17वें प्रवासी भारतीय दिवस सम्मेलन में बोले पीएम मोदी: *"भारतीयों ने जो ठाना वो करके दिखाया, हमारे लिए पूरा संसार ही स्वदेश"* पीएम मोदी ने इस कार्यक्रम में भारतवंशियों का स्वागत करते हुए, उन्हें देश का ब्रांड एंबेसडर बताया। पीएम मोदी ने कहा, *'दुनिया के इतने अलग-अलग देशों में जब भारत के लोग एक कॉमन फ़ैक्टर की तरह दिखते हैं, तो 'वसुधैव कुटुंबकम्' की भावना के साक्षात् दर्शन होते हैं। दुनिया के अलग-अलग देशों में जब सबसे शांतिप्रिय, लोकतांत्रिक और अनुशासित नागरिकों की चर्चा होती है, तो Mother of Democracy होने का भारतीय गौरव और बढ़ जाता है।' "*

वैश्विक सरकार का विचार नया नहीं है, लेकिन हाल के वर्षों में इसने नए सिरे से ध्यान आकर्षित किया है। ऐसी दुनिया में जहां सीमाएं तेजी से कमजोर हो रही हैं और वैश्विक चुनौतियों के लिए सामूहिक समाधान की आवश्यकता है, एक काल्पनिक वैश्विक सरकार के विचार ने जोर पकड़ लिया है। कुछ लोगों का मानना है कि जलवायु परिवर्तन, महामारी, आतंकवाद, शांति, आर्थिक असमानता, गरीबी जैसी वैश्विक चुनौतियों से निपटने के लिए एक वैश्विक सरकार आवश्यक है।

वैश्विक आर्थिक सहयोग और विकास जैसे वैश्विक मुद्दों से निपटने के लिए विश्व के राष्ट्र एक ही नेतृत्व में एकजुट हों। यदि ऐसा कोई परिदृश्य सामने आता है, तो इस वैश्विक सरकार के लिए सही नेता चुनना सर्वोपरि होगा। नेता का चुनाव कैसे किया जाए यह प्रश्न महत्वपूर्ण होगा। ऐसी कई अलग-अलग चुनाव प्रक्रियाएँ हैं जिनका उपयोग किया जा सकता है।

यूक्रेन युद्ध में दोनों पक्ष चाहे वह रूस हो या यूक्रेन या उसको समर्थन देने वाले पाश्चात्य देश सभी भारत के प्रधानमंत्री मोदी की मध्यक्षता चाहते हैं। भारत में फिलिस्तीन के राजदूत अबू ***अलहैजा*** *ने 10 अक्टूबर 2023 कहा है कि भारत, इजरायल और फिलिस्तीन दोनों का मित्र है। इसलिए हम चाहते हैं कि भारत गाजापट्टी में हो रहे युद्ध में हस्तक्षेप करे और बातचीत में हमारी मदद करे।*

विश्व मित्र के रूप में नरेन्द्र मोदी विभाजित और अशांत विश्व को नई दिशा प्रदान करने की क्षमता रखते हैं, ऐसा विश्वास विश्व के बड़े छोटे नेताओं को है। नरेंद्र मोदी संयुक्त राज्य अमेरिका, रूस, चीन, जापान, ऑस्ट्रेलिया, इज़राइल, सऊदी अरब, संयुक्त अरब अमीरात, फ्रांस, जर्मनी, ब्रिटेन, आसियान आदिके साथ मजबूत संबंध बनाकर अंतरराष्ट्रीय क्षेत्र: ब्रिक्स, एससीओ, G-20, और संयुक्त राष्ट्र में भी एक प्रमुख हस्ती हैं।

नरेंद्र मोदी जलवायु परिवर्तन, आतंकवाद, गरीबी, स्वास्थ्य, शिक्षा, नवाचार और डिजिटल परिवर्तन जैसे वैश्विक मुद्दों के भी मुखर समर्थक रहे हैं। उन्होंने कई पहल और मंच लॉन्च किए हैं, जैसे अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन, आपदा प्रतिरोधी बुनियादी ढांचे के लिए गठबंधन, वैश्विक नवाचार और प्रौद्योगिकी गठबंधन, भारत-अफ्रीका फोरम शिखर सम्मेलन, भारत-प्रशांत द्वीप सहयोग। नरेंद्र मोदी को संयुक्त राष्ट्र, बिल एंड मेलिंडा गेट्स फाउंडेशन, सियोल पीस प्राइज फाउंडेशन, सऊदी अरब के किंग अब्दुलअजीज सैश, यूएई के जायद मेडल, द ऑर्डर जैसे विभिन्न अंतरराष्ट्रीय संस्थानों और रूस के सेंट एंड्रयू, फ्रांस के लीजन ऑफ ऑनर, अफगानिस्तान के गाजी अमीर अमानुल्ला खान के स्टेट ऑर्डर और 2016456 में टाइम पर्सन ऑफ द ईयर (रीडर्स पोल) मान्यता और पुरस्कार दिये गए है।

नरेंद्र मोदी के भाषण और लेख अक्सर वैश्विक स्तर पर एकता और सहयोग के महत्व पर जोर देते हैं। उन्होंने जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए **"एक विश्व, एक सूर्य, एक ग्रिड"** पहल का आह्वान किया है और उन्होंने दुनिया में शांति और स्थिरता को बढ़ावा देने के लिए भारत की प्रतिबद्धता के बारे में बात की है।

नरेंद्र मोदी संरक्षणवाद और एकपक्षवाद के मुखर आलोचक रहे हैं। संवाद और समझ को बढ़ावा देना: मोदी विभिन्न संस्कृतियों और सभ्यताओं के बीच संवाद और समझ के भी प्रबल समर्थक रहे हैं। "नरेंद्र मोदी एक गतिशील नेता हैं जो दुनिया को अधिक सामंजस्यपूर्ण और एकजुट भविष्य की ओर ले जाने की क्षमता रखते हैं।" "एकजुट और समृद्ध दुनिया के लिए मोदी का दृष्टिकोण प्रेरणादायक है और उनका नेतृत्व इस कठिन समय में आशा की किरण हो सकता है।"

नरेंद्र मोदी के उद्धरण जो विभाजित और परेशान दुनिया को एक नई दिशा प्रदान करने की उनकी क्षमता का सुझाव देते हैं:

"दुनिया एक चौराहे पर है। हम या तो विभाजन और संघर्ष की दुनिया में रहना चुन सकते हैं, या हम सहयोग और सद्भाव की दुनिया बनाना चुन सकते हैं।"

"हमें एक नई वैश्विक व्यवस्था बनाने की ज़रूरत है जो शांति, न्याय और साझा समृद्धि के सिद्धांतों पर आधारित हो।"

"हमें अतीत की पुरानी विचारधाराओं से आगे बढ़ने और एक नई दुनिया बनाने की ज़रूरत है जो सहयोग और आपसी समझ पर आधारित हो।" "दुनिया नेतृत्व के लिए भारत की ओर देख रही है। हमारी जिम्मेदारी है कि हम सभी के लिए शांति और समृद्धि को बढ़ावा देने के लिए अपनी शक्ति और प्रभाव का उपयोग करें।"

अंततः, ऐसी सरकार का लक्ष्य राष्ट्रों को एकजुट करना होगा। भारतीय प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी ने वैश्विक चुनौतियों से निपटने में वैश्विक सहयोग के महत्व के बारे में बात की है।

नरेंद्र मोदी के मामले में, वैश्विक सरकार के प्रमुख के रूप में उनका संभावित चयन चुनी गई चुनाव प्रक्रिया और वैश्विक समुदाय की इच्छा पर निर्भर करेगा। 2019 में संयुक्त राष्ट्र में एक भाषण में उन्होंने कहा: *"हम एक ऐसी दुनिया में रहते हैं जहां हमारे सामने आने वाली चुनौतियाँ वैश्विक और परस्पर जुड़ी हुई हैं। कोई भी देश उन्हें अकेले हल नहीं कर सकता है। हमें इन चुनौतियों से निपटने के लिए एक वैश्विक समुदाय के रूप में मिलकर काम करने की ज़रूरत है। जब भारत मजबूत था तो किसी को सताया नहीं; जब मजबूर था, तब किसी पर बोझ नहीं बना प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शनिवार को तीसरी बार संयुक्त राष्ट्र महासभा (यूएनजीए) की 75वीं बैठक को संबोधित किया। उन्होंने किसी भी देश का नाम लिए बिना कहा, 'भारत दुनिया का सबसे बड़े लोकतंत्र है।"*

VIDEO: PM Modi addressed the 74th session of the UN General Assembly in 2019 and said the world needs to unite and have a consensus on fighting terrorism.Terrorism is one of the biggest challenges before humanity

मोदी के बयान से पता चलता है कि वह वैश्विक सरकार के विचार के प्रति खुले हैं। हालाँकि, उन्होंने स्पष्ट रूप से यह नहीं बताया है कि क्या उनका मानना है कि वैश्विक सरकार में एक निर्वाचित नेता होना चाहिए।

कैनेडी द्वारा व्यक्त किए गए सबसे विवादास्पद और उत्तेजक विचारों में से एक विश्व सरकार, एक वैश्विक राजनीतिक प्रणाली का उनका दृष्टिकोण था जो सभी देशों को एक सामान्य प्राधिकरण और कानून के तहत एकजुट करेगा। कैनेडी का मानना था कि विश्व सरकार ही युद्ध से बचने और मानवता के अस्तित्व को सुनिश्चित करने का एकमात्र तरीका है। उन्होंने 1963 में अमेरिकी विश्वविद्यालय में एक भाषण में कहा:

"युद्ध का एकमात्र विकल्प सभी मानव जाति के सामान्य हित को सुरक्षित करने का एक सामान्य प्रयास है। और सभी मानव जाति के सामान्य हित को सुरक्षित करने का एकमात्र तरीका एक विश्व सरकार बनाना है।" **विश्व सरकार** एक काल्पनिक राजनीतिक व्यवस्था है

जो दुनिया के सभी देशों और क्षेत्रों को एक ही संप्रभु प्राधिकरण और कानूनी प्रणाली के तहत शामिल करेगी। एक विश्व सरकार के पास कानून बनाने और लागू करने, अंतरराष्ट्रीय संबंधों को विनियमित करने, वैश्विक सार्वजनिक सामान प्रदान करने और अपने सदस्यों के बीच संघर्ष और विवादों को हल करने की शक्ति होगी। एक विश्व सरकार के पास एक सामान्य मुद्रा, एक सामान्य सेना, एक सामान्य न्यायपालिका और एक सामान्य संसद या विधानसभा भी हो सकती है। यूक्रेन युद्ध और इज़राइल-ऑन-वॉर के सन्दर्भ में

Britannica द्वारा विश्व सरकार पर की गई टिप्पणी महत्त्व पूर्ण हो जाती है। अंतर्राष्ट्रीय प्रणाली में सुधार के माध्यम से युद्ध के उन्मूलन के सभी दृष्टिकोणों की कमियों और सीमित व्यावहारिकता दोनों ने कई विचारकों को इस विचार को स्वीकार करने के लिए प्रेरित किया है कि युद्ध को केवल पूर्ण पैमाने की विश्व सरकार द्वारा ही समाप्त किया जा सकता है।

ऐसे युग में जब युद्ध के मानव जाति के सामान्य विनाश में बदलने के खतरे का सामना कर रहा है, शांति बनाए रखने का केंद्रीय महत्व स्पष्ट है और आम तौर पर स्वीकार किया जाता है। लेकिन यहां विचारक बंटे हुए हैं। कुछ लोग विश्व सरकार को पूरी तरह से काल्पनिक मानते हैं, चाहे वह कितनी भी तार्किक और वांछनीय क्यों न हो। पर इस बात से सभी सहमत हैं कि युद्ध की जटिल घटना इतनी बड़ी संभावित आपदा का प्रतिनिधित्व करती है कि सभी सिद्धांतकारों को इसे समझने का प्रयास करना चाहिए और युद्ध की रोकथाम और शमन के लिए अपनी समझ को लागू करना चाहिए। उनके निपटान में सभी साधन उपलब्ध हैं।

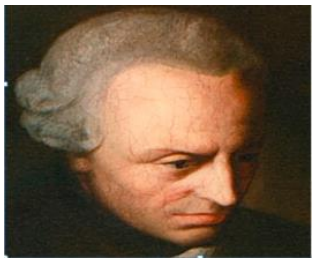

अपने निबंध "सतत शांति: एक दार्शनिक रेखाचित्र" (1795) में, **इमैनुएल कांट** ने वर्तमान और भविष्य के युद्ध के खतरे को स्थायी रूप से समाप्त करने के लिए मानवीय मामलों को व्यवस्थित करने के लिए विश्व शांति स्थापित करने के लिए विश्व नागरिकता को एक आवश्यक कदम माना।

जलवायु परिवर्तन, अंतर्राष्ट्रीय संघर्ष, स्वास्थ्य संकटों, महामारी और परमाणु प्रसार जैसी वैश्विक चुनौतियों के लिए समन्वित प्रतिक्रियाओं की आवश्यकता है। इन वैश्विक चुनौतियों का सामना करने वाली तेजी से परस्पर जुड़ी दुनिया में, विश्व सरकार के विचार ने जोर पकड़ लिया है। हालाँकि यह एक विवादास्पद और जटिल अवधारणा बनी हुई है, पूरे इतिहास में कई आवाज़ों ने एक वैश्विक शासी निकाय की वकालत की है।

वैश्विक सरकार को एक एकल वैश्विक निकाय के रूप में वर्णित किया जा सकता है जिसके उद्देश्य और लक्ष्य स्पष्ट रूप से अन्य अभिनेताओं पर शासन करने के लिए निर्धारित हैं । एक शासी निकाय होने के नाते, इसका अन्य राज्यों के साथ संबंध है लेकिन उनके साथ क्षैतिज शक्ति (horizontal power)संबंध नहीं है।

अल्बर्ट आइंस्टीन विश्व सरकार के प्रबल समर्थक थे। उन्होंने एक बार कहा था, "मुझे नहीं पता कि तीसरा विश्व युद्ध किन हथियारों से लड़ा जाएगा, लेकिन चौथा विश्व युद्ध लाठियों और

पत्थरों से लड़ा जाएगा।" आइंस्टीन ने अंतर्राष्ट्रीय संघर्ष के विनाशकारी परिणामों को पहचाना और माना कि भविष्य के युद्धों को रोकने के लिए एक वैश्विक शासी निकाय आवश्यक था।

महात्मा गांधी ने कहा, *"मैं विकेंद्रीकृत, मानव-स्तरीय समुदायों की एक दुनिया की कल्पना करता हूं, जिसमें निर्णय स्थानीय स्तर पर उन लोगों द्वारा लिए जाएंगे जिनके पास तथ्यों और वास्तविक जरूरतों की वास्तविक समझ है।" "विश्व सरकार का समय आ गया है, या कम से कम वैश्विक शासन के एक नए रूप का जो इक्कीसवीं सदी की चुनौतियों का समाधान कर सके"* - डेविड हेल्ड

"विश्व सरकार का समय आ गया है, या ऐसा हमें अंतर्राष्ट्रीयवादियों, शिक्षाविदों और मीडिया पंडितों के समूह द्वारा बताया गया है" जॉन आर. बोल्टन

एक काल्पनिक वैश्विक सरकार के प्रमुख के लिए विभिन्न चुनाव प्रक्रियायें:

प्रत्यक्ष वैश्विक जनमत संग्रह: राजनीतिक विश्लेषक सारा थॉम्पसन का कहना है, "प्रत्यक्ष वैश्विक जनमत संग्रह वैश्विक एकता और लोकतंत्र की दिशा में एक ऐतिहासिक कदम होगा। यह राष्ट्रीय सीमाओं को पार करेगा और हमारे साझा भविष्य को आकार देने में प्रत्येक व्यक्ति को आवाज देगा।"

वैश्विक सरकार के प्रमुख के चयन के लिए एक संभावित चुनाव प्रक्रिया प्रत्यक्ष वैश्विक जनमत संग्रह हो **सकती** है। इस परिदृश्य में, प्रत्येक पात्र वैश्विक नागरिक को अपनी राष्ट्रीयता की परवाह किए बिना अपने पसंदीदा उम्मीदवार को वोट देने का अवसर मिलेगा। यह प्रक्रिया सच्चे वैश्विक लोकतंत्र का प्रतीक होगी, जिससे दुनिया भर के लोगों को यह कहने का अधिकार मिलेगा कि उनका नेतृत्व कौन करता है।

अंतर्राष्ट्रीय संबंध विशेषज्ञ डॉ जेम्स रॉबर्ट्स बताते हैं, "संयुक्त राष्ट्र महासभा का मतदान चयन प्रक्रिया में वैश्विक भागीदारी सुनिश्चित करते हुए राष्ट्रों के बीच संप्रभु समानता के सिद्धांत को बनाए रखेगा।"

प्रत्येक राष्ट्र द्वारा राष्ट्र महासभा मतदान: एक अन्य विकल्प संयुक्त राष्ट्र महासभा के भीतर एक वोट आयोजित करना होगा, प्रत्येक राष्ट्र को, उसके आकार या जनसंख्या की परवाह किए बिना, एक वोट मिलता है। यह पद्धति संयुक्त राष्ट्र की वर्तमान संरचना को प्रतिबिंबित करती है, जहां देशों को वैश्विक मंच पर समान रूप से प्रतिनिधित्व किया जाता है।

क्षेत्रीय चुनावी कॉलेज: वैश्विक प्रतिनिधित्व और क्षेत्रीय हितों को संतुलित करने के लिए, तीसरे दृष्टिकोण में क्षेत्रीय चुनावी कॉलेज बनाना शामिल हो सकता है। प्रत्येक क्षेत्र - जैसे

उत्तरी अमेरिका, यूरोप, एशिया, अफ्रीका और दक्षिण अमेरिका - एक प्रतिनिधि का चुनाव करेंगे, और ये क्षेत्रीय प्रतिनिधि फिर वैश्विक नेता के लिए मतदान करेंगे। जैसे G 20 में आफ्रिकी यूनियन के 48 देशों का प्रतिनिधित्व एक प्रतिनिधि ने किया था।

राजनीतिक वैज्ञानिक डॉ मारिया रोड्रिग्ज का कहना है, "क्षेत्रीय चुनावी कॉलेज यह सुनिश्चित करने में मदद कर सकते हैं कि उम्मीदवार दुनिया के विभिन्न हिस्सों के सामने आने वाली अनूठी चुनौतियों को समझें और उनका समाधान करें।" **विश्व संसद:** एक अधिक जटिल लेकिन व्यापक दृष्टिकोण विश्व संसद की स्थापना हो सकता है, जहां प्रत्येक राष्ट्र के निर्वाचित प्रतिनिधि वैश्विक नेता के चयन सहित सामूहिक निर्णय लेने के लिए एकत्रित होते हैं। यह प्रणाली आनुपातिक प्रतिनिधित्व पर जोर देते हुए वैश्विक स्तर पर राष्ट्रीय सरकारों की नकल करेगी।

"एक विश्व संसद वैश्विक शासन और सहयोग के आदर्शों को मूर्त रूप देगी, जिससे यह वैश्विक सरकार के लिए एक प्रमुख का चयन करने के लिए एक उपयुक्त मंच बन जाएगा," अंतर्राष्ट्रीय कानून विद्वान प्रोफेसर जॉन चांग कहते हैं।

विशेषज्ञों का वैश्विक सम्मेलन: वैकल्पिक रूप से, चयन प्रक्रिया में विशेषज्ञों का एक वैश्विक सम्मेलन शामिल हो सकता है, जहां दुनिया भर के प्रमुख विद्वान, वैज्ञानिक, अर्थशास्त्री और नीति निर्माता अपनी विशेषज्ञता और भविष्य के दृष्टिकोण के आधार पर विचार-विमर्श करने और एक वैश्विक नेता को नामित करने के लिए इकट्ठा होते हैं।

"*विशेषज्ञों का एक वैश्विक सम्मेलन राजनीति पर योग्यता और ज्ञान को प्राथमिकता देगा, यह सुनिश्चित करेगा कि दुनिया का नेतृत्व सबसे अच्छे दिमागों द्वारा किया जाए, न कि केवल सबसे लोकप्रिय उम्मीदवारों द्वारा,"* अर्थशास्त्री डॉ. एमिली विल्सन का सुझाव है।

हाइब्रिड मॉडल: लोकप्रिय वोट और विशेषज्ञ पैनल:

प्रत्यक्ष लोकतंत्र और विशेषज्ञ मूल्यांकन दोनों के तत्वों को मिलाकर, एक हाइब्रिड मॉडल में उम्मीदवारों को नामांकित करने के लिए एक वैश्विक लोकप्रिय वोट शामिल हो सकता है, जिसके बाद विशेषज्ञों का एक पैनल होगा जो उनकी योग्यता और उपयुक्तता के आधार पर फाइनलिस्टों का आकलन और समर्थन करेगा।

राजनीतिक टिप्पणीकार मार्क डेविस कहते हैं, *"एक हाइब्रिड मॉडल जटिल वैश्विक परिदृश्य में लोगों की पसंद और सक्षम नेतृत्व की आवश्यकता के बीच संतुलन बना सकता है।"* एक काल्पनिक वैश्विक सरकार के प्रमुख का चयन करना एक कठिन कार्य है जिसके लिए

लोकतांत्रिक सिद्धांतों, वैश्विक प्रतिनिधित्व और क्षमता पर सावधानीपूर्वक विचार करने की आवश्यकता होगी। चाहे प्रत्यक्ष वैश्विक जनमत संग्रह, संयुक्त राष्ट्र महासभा वोट, क्षेत्रीय चुनावी कॉलेज, विश्व संसद, विशेषज्ञों का वैश्विक सम्मेलन, या एक हाइब्रिड मॉडल के माध्यम से, वैश्विक नेता की पसंद एक परस्पर जुड़े विश्व में मानवता के पाठ्यक्रम को आकार देगी।

प्रसिद्ध दार्शनिक और सामाजिक आलोचक **बर्ट्रेंड रसेल** ने एक बार कहा था, "विश्व सरकार का समय आ गया है।" रसेल के शब्द पहले से कहीं अधिक वैज्ञानिक हैं। ऐसी दुनिया में जहां परमाणु हथियार मौजूद हैं, उनके उपयोग को रोकने का एकमात्र तरीका एक वैश्विक प्राधिकरण है जो उन्हें नियंत्रित कर सके।

मानवाधिकारों की सुरक्षा: बर्ट्रेंड रसेल मानवाधिकारों के मुखर समर्थक थे। विश्व सरकार के लिए उनका आह्वान इस विश्वास पर आधारित था कि एक वैश्विक प्राधिकरण दुनिया भर में व्यक्तियों के अधिकारों और स्वतंत्रता की बेहतर रक्षा कर सकता है। ऐसी दुनिया में जहां मानवाधिकारों का हनन जारी है, रसेल का दृष्टिकोण प्रासंगिक बना हुआ है।

जलवायु परिवर्तन: रसेल की अंतर्दृष्टि एक शक्तिशाली अनुस्मारक के रूप में कार्य करती है कि आज हम जिन समस्याओं का सामना कर रहे हैं वे राष्ट्रीय सीमाओं से परे हैं। उदाहरण के लिए, जलवायु परिवर्तन एक वैश्विक संकट है जिसके लिए प्रत्येक राष्ट्र को समन्वित कार्रवाई की आवश्यकता है। रसेल ने माना कि स्वतंत्र रूप से कार्य करने वाले अलग-अलग देश ऐसे अस्तित्व संबंधी खतरों से निपटने में अपर्याप्त होंगे।

दो विनाशकारी विश्व युद्धों के बाद कहे गए ये शब्द आज की परस्पर जुड़ी और अन्योन्याश्रित दुनिया में और भी अधिक मजबूती से गूंजते हैं। वैश्विक शासन के लिए रसेल का आह्वान वैश्विक चुनौतियों का समाधान करने, सहयोग को बढ़ावा देने और अधिक शांतिपूर्ण और न्यायपूर्ण दुनिया सुनिश्चित करने की तत्काल आवश्यकता को दर्शाता है।

"PM Modi highlighted India's big contribution to fighting climate change despite being one of the lowest emitters of carbon emissions. Per capita wise India's contribution to global warming is very low, but we are a leading nation in mitigation plans," PM Modi said in his address at UNGA in September 2019.

वाशिंगटन विश्वविद्यालय के जीवविज्ञानी **डेविड हूपर** की टीम ने 192 अध्ययनों की जांच की जिसमें प्रजातियों की समृद्धि और पारिस्थितिक तंत्र पर इसके प्रभाव को देखा गया। हूपर बताते हैं, *"जैव विविधता के नुकसान के प्राथमिक*

चालक प्रभाव के मोटे क्रम में हैं: आवास नुकसान, अत्यधिक कटाई, आक्रामक प्रजातियां, प्रदूषण और जलवायु परिवर्तन।" शायद अस्वाभाविक रूप से, "21 वीं सदी में जैव विविधता हानि पारिस्थितिकी तंत्र परिवर्तन के प्रमुख चालकों में से एक हो सकती है," 3 मई को प्रकृति। (साइंटिफिक अमेरिकन नेचर पब्लिशिंग ग्रुप का हिस्सा है।)

जगदीश चंद्र बसु ने साबित कर दिया कि पेड़-पौधों में भी जीवन है। कागज उत्पादन के लिए, पर्यावरण के रक्षक, हमारे जीवन के रक्षक, जंगल में असंख्य पेड़ मारे जाते हैं।

लवलॉक कहते हैं, वैश्विक जलवायु को एक पूरी तरह से नए संतुलन में "फ्लिपिंग" से रोकने के लिए जो सभ्यता को खतरे में डालेगा जैसा कि हम जानते हैं। लेकिन हम मानवता को बचाने के लिए बहुत कुछ कर सकते हैं। साइलेंट स्प्रिंग की परंपरा में, यह हमारे सामूहिक भविष्य के लिए एक बड़े खतरे को दूर करने का आह्वान है।

वैश्विक परिप्रेक्ष्य: भू-राजनीतिक तनाव, जलवायु परिवर्तन और परमाणु हथियारों के प्रसार से प्रभावित दुनिया में, विश्व सरकार का विचार एक काल्पनिक सपने जैसा लग सकता है। हालाँकि, रसेल की दृष्टि इस विश्वास पर आधारित थी कि केवल एकजुट वैश्विक प्रयास के माध्यम से ही मानवता अपने सामने आने वाली गंभीर चुनौतियों पर काबू पा सकती है।

संघर्ष पर सहयोग: "विश्व सरकार का समय आ गया है" भी संघर्ष पर सहयोग के महत्व को रेखांकित करता है। प्रथम और द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान रसेल के अनुभव, जहां उन्होंने सक्रिय रूप से शांति के लिए अभियान चलाया, ने उनके विश्वदृष्टिकोण पर गहरा प्रभाव छोड़ा। बेहतर भविष्य केवल अंतर्राष्ट्रीय सहयोग के माध्यम से ही प्राप्त किया जा सकता है।

आज की दुनिया में, जहां राष्ट्रों के बीच तनाव बना रहता है, विश्व सरकार के लिए रसेल का आह्वान एक अनुस्मारक के रूप में कार्य करता है कि सैन्य टकराव पर कूटनीति और बातचीत को प्राथमिकता दी जानी चाहिए। संयुक्त राष्ट्र, अपनी अपूर्णताओं के बावजूद, संघर्षों को सुलझाने और शांति को बढ़ावा देने में अंतर्राष्ट्रीय सहयोग की क्षमता के प्रमाण के रूप में खड़ा है।

एक वैश्विक सरकार मानवाधिकार उल्लंघनों को अधिक प्रभावी ढंग से संबोधित करने, अत्याचारों के लिए जिम्मेदार लोगों को जवाबदेह ठहराने और मौलिक स्वतंत्रता के सम्मान की संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए एक मंच प्रदान कर सकती है। रसेल के शब्द हमें वैश्विक स्तर पर मानवाधिकारों की रक्षा और कायम रखने की हमारी साझा जिम्मेदारी की याद दिलाते हैं।

चुनौतियाँ और बाधाएँ: जबकि विश्व सरकार के लिए रसेल का आह्वान सम्मोहक है, यह चुनौतियों और बाधाओं से रहित नहीं है। राष्ट्रों के बीच संप्रभुता संबंधी चिंताएँ, सांस्कृतिक मतभेद और शक्ति असंतुलन महत्वपूर्ण बाधाएँ हैं जिन्हें दूर करना होगा। हालाँकि, रसेल का

दृष्टिकोण हमें अधिक न्यायसंगत और न्यायसंगत विश्व व्यवस्था के लिए प्रयास करते हुए इन चुनौतियों को स्वीकार करने के लिए प्रोत्साहित करता है।

विश्व सरकार के कुछ लाभ इस प्रकार हैं: युद्ध का खतरा कम होना: विश्व सरकार अंतरराष्ट्रीय विवादों को शांतिपूर्ण तरीके से सुलझाने के माध्यम से युद्ध के खतरे को कम करने में मदद कर सकती है। विश्व सरकार राष्ट्रों के बीच युद्ध की संभावना को समाप्त कर देगी।

न्याय: विश्व सरकार न्याय की एक वैश्विक प्रणाली बनाएगी जो सभी लोगों के अधिकारों की रक्षा करेगी।

समानता: विश्व सरकार देशों के भीतर और देशों के बीच अमीर और गरीब के बीच असमानता को कम करने के लिए काम करेगी।

स्थिरता: विश्व सरकार जलवायु परिवर्तन, महामारी, गरीबी और अन्य चुनौतियों से निपटने के लिए वैश्विक प्रयासों का समन्वय कर सकती है।

समृद्धि: विश्व सरकार वैश्विक आर्थिक सहयोग और विकास को बढ़ावा दे सकती है।

बेहतर मानवाधिकार: विश्व सरकार दुनिया भर में मानवाधिकारों और लोकतंत्र को बढ़ावा देने में मदद कर सकती है।

बर्ट्रेंड रसेल का दावा है कि "विश्व सरकार का समय आ गया है" कार्रवाई के लिए एक कालातीत आह्वान के रूप में प्रतिध्वनित होता है। वैश्विक संकटों और परस्पर निर्भरता से चिह्नित युग में, उनके शब्द हमें अंतरराष्ट्रीय सहयोग, संघर्ष पर कूटनीति की प्राथमिकता और मानवाधिकारों की सुरक्षा की तत्काल आवश्यकता को पहचानने के लिए मजबूर करते हैं। जबकि विश्व सरकार का रास्ता लंबा और जटिल हो सकता है, रसेल की दृष्टि आशा की किरण बनी हुई है, जो हमें वैश्विक स्तर पर अधिक शांति और एकता के भविष्य की ओर मार्गदर्शन कर रही है।

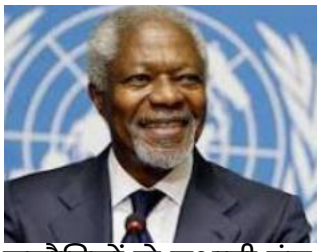

वैश्विक समस्याओं को हल करने के लिए हमें एक वैश्विक सरकार की आवश्यकता है – कोफी अन्नान: संयुक्त राष्ट्र के पूर्व महासचिव कोफी अन्नान इस विचार के कट्टर समर्थक थे कि दुनिया को आज मानवता के सामने आने वाली गंभीर वैश्विक चुनौतियों से प्रभावी ढंग से निपटने के लिए एक वैश्विक सरकार की आवश्यकता है। उनका दृष्टिकोण इस विश्वास में निहित था कि हमारी परस्पर जुड़ी दुनिया जलवायु परिवर्तन, वैश्विक स्वास्थ्य संकट और अंतर्राष्ट्रीय संघर्षों जैसे मुद्दों से निपटने के लिए एक समन्वित, एकीकृत

दृष्टिकोण की मांग करती है। हम इन वैश्विक समस्याओं को हल करने के लिए एक वैश्विक सरकार की आवश्यकता पर कोफ़ी अन्नान के दृष्टिकोण पर चर्चा करेंगे।

वैश्विक समस्याओं की जटिलता: दुनिया जटिल चुनौतियों की एक अभूतपूर्व श्रृंखला का सामना कर रही है जो पारंपरिक सीमाओं और राष्ट्रीय समाधानों को चुनौती देती है। उदाहरण के लिए, जलवायु परिवर्तन राजनीतिक सीमाओं का सम्मान नहीं करता है। दुनिया के एक हिस्से में ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन दुनिया भर में मौसम के पैटर्न और पारिस्थितिकी तंत्र को प्रभावित करता है। इसी तरह, महामारी जैसा स्वास्थ्य संकट तेजी से एक देश से दूसरे देश में फैल सकता है, जिससे दुनिया भर में जीवन और अर्थव्यवस्थाओं को खतरा हो सकता है। ये चुनौतियाँ स्वाभाविक रूप से वैश्विक प्रकृति की हैं, और इनसे निपटने के लिए सामूहिक, वैश्विक प्रतिक्रिया की आवश्यकता है। **वैश्विक सरकार की भूमिका:** कोफी अन्नान ने तर्क दिया कि सामूहिक कार्रवाई के लिए रूपरेखा प्रदान करने के लिए एक वैश्विक सरकार, या कम से कम एक मजबूत और सुधारित संयुक्त राष्ट्र आवश्यक है। उनका मानना था कि ऐसी इकाई वैश्विक मुद्दों को प्रभावी ढंग से संबोधित करने के प्रयासों के समन्वय में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।

प्रसिद्ध राजनयिक और नेता, कोफ़ी अन्नान ने समझा कि मानवता के सामने आने वाले कई महत्वपूर्ण मुद्दे राष्ट्रीय सीमाओं से परे हैं। जलवायु परिवर्तन, महामारी, आतंकवाद और गरीबी वैश्विक समस्याओं के कुछ उदाहरण हैं जिनके लिए समन्वित और सहयोगात्मक प्रयासों की आवश्यकता है। अन्नान ने तर्क दिया कि अलग-अलग राष्ट्र, चाहे कितने भी शक्तिशाली क्यों न हों, अपने दम पर इन मुद्दों को प्रभावी ढंग से संबोधित नहीं कर सकते। इसके बजाय, उन्होंने एक वैश्विक सरकार की वकालत की जो राष्ट्रों के बीच सहयोग को सुविधाजनक बनाएगी और सामूहिक कार्रवाई के लिए आवश्यक रूपरेखा प्रदान करेगी।

यहां कुछ प्रमुख कारण दिए गए हैं कि वैश्विक सरकार के लिए अन्नान का दृष्टिकोण क्यों आवश्यक है:

समन्वित प्रतिक्रिया: वैश्विक समस्याओं के लिए समन्वित प्रतिक्रिया की आवश्यकता होती है। एक वैश्विक सरकार अंतर्राष्ट्रीय सहयोग को सुविधाजनक बना सकती है और यह सुनिश्चित कर सकती है कि देश अलग-थलग होने के बजाय एक साथ काम करें। जलवायु परिवर्तन जैसे मुद्दों से निपटने के लिए यह महत्वपूर्ण है, जहां हर देश का योगदान मायने रखता है।

शांति और संघर्ष समाधान: राष्ट्रों के बीच संघर्ष वैश्विक चुनौतियों से निपटने में एक महत्वपूर्ण बाधा है। एक वैश्विक सरकार एक तटस्थ मध्यस्थ के रूप में काम कर सकती है

और राजनयिक बातचीत के लिए एक मंच प्रदान कर सकती है, जिससे संघर्षों को शांतिपूर्ण ढंग से रोकने और हल करने में मदद मिल सकती है।

इसके अलावा, अन्नान ने तर्क दिया कि एक वैश्विक सरकार शांति को बढ़ावा देने और संघर्षों को रोकने में सहायक होगी। राजनयिक वार्ता को बढ़ावा देकर और विवाद समाधान के लिए एक तटस्थ मंच प्रदान करके, एक वैश्विक सरकार राष्ट्रों के बीच तनाव को कम करने और संघर्षों को पूर्ण पैमाने पर युद्धों में बदलने से रोकने में मदद कर सकती है। रवांडा नरसंहार और बाल्कन सहित विभिन्न अंतरराष्ट्रीय संघर्षों में मध्यस्थ के रूप में अन्नान के अपने अनुभव ने शांति और स्थिरता को बढ़ावा देने के लिए वैश्विक शासन की क्षमता में उनके विश्वास को मजबूत किया।

वैश्विक सरकार की आवश्यकता पर अन्नान के विश्वास का एक प्राथमिक कारण वैश्विक चुनौतियों की परस्पर प्रकृति है। उदाहरण के लिए, **जलवायु परिवर्तन** राष्ट्रीयता के आधार पर भेदभाव नहीं करता है। एक देश के कार्यों के पूरे ग्रह पर दूरगामी परिणाम हो सकते हैं। जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को कम करने के लिए, सभी देशों के लिए एक साथ आना और ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन को कम करने, नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों में परिवर्तन और नाजुक पारिस्थितिकी तंत्र की रक्षा के लिए प्रतिबद्ध होना आवश्यक है। एक वैश्विक सरकार राष्ट्रों को जलवायु कार्रवाई पर बाध्यकारी समझौते स्थापित करने और लागू करने के लिए मंच प्रदान कर सकती है।

अन्नान ने यह भी माना कि वैश्विक चुनौतियाँ अक्सर मौजूदा असमानताओं को बढ़ाती हैं। उदाहरण के लिए, **गरीबी** एक व्यापक मुद्दा बनी हुई है जो दुनिया भर में लाखों लोगों को प्रभावित करती है। हालाँकि गरीबी कम करने में कुछ प्रगति हुई है, फिर भी महत्वपूर्ण असमानताएँ मौजूद हैं। एक वैश्विक सरकार आर्थिक विकास को बढ़ावा देकर, शिक्षा और स्वास्थ्य देखभाल तक पहुंच सुनिश्चित करके और वैश्विक स्तर पर आय असमानता को कम करने वाली नीतियों को लागू करके गरीबी के मूल कारणों को संबोधित करने के लिए काम कर सकती है। **वैश्विक स्वास्थ्य सुरक्षा**: एक महामारी की स्थिति में, एक वैश्विक सरकार चिकित्सा आपूर्ति, टीकों और संसाधनों के वितरण के समन्वय के लिए बेहतर ढंग से सुसज्जित होगी। इससे वैश्विक स्वास्थ्य संकटों का तेजी से और कुशलता से जवाब देने की हमारी सामूहिक क्षमता में वृद्धि होगी।

रिचर्ड ब्रैनसन का वैश्विक आयोग: ड्रग नीति पर वैश्विक आयोग के सदस्य, उद्यमी और परोपकारी रिचर्ड ब्रैनसन ने दवा नीति सुधार में वैश्विक सहयोग के महत्व पर जोर देते हुए कहा, "अब नशीली दवाओं के उपयोग को एक आपराधिक मुद्दा नहीं बल्कि एक स्वास्थ्य समस्या के रूप में मानने का

समय है। वास्तव में वैश्विक दृष्टिकोण। इस मुद्दे पर विश्व सरकार का समय आ गया है।" **आर्थिक स्थिरता:** एक वैश्विक सरकार अंतरराष्ट्रीय वित्तीय नीतियों के समन्वय और आर्थिक उथल-पुथल के समय जरूरतमंद देशों को सहायता प्रदान करके वैश्विक संकटों से होने वाले आर्थिक नुकसान को कम करने में मदद कर सकती है। एक वैश्विक सरकार की अवधारणा को संदेह और प्रतिरोध का सामना करना पड़ सकता है, लेकिन वैश्विक स्थिरता, शांति और समृद्धि के संदर्भ में इसके संभावित लाभों पर विचार करना उचित है। जैसा कि हम अपने समय के महत्वपूर्ण मुद्दों का सामना कर रहे हैं, हमें कोफी अन्नान के ज्ञान पर ध्यान देना चाहिए और एक अधिक सहयोगी और एकीकृत दुनिया के लिए प्रयास करना चाहिए, जहां राष्ट्र उन चुनौतियों का समाधान खोजने के लिए मिलकर काम करें जो हम सभी को प्रभावित करती हैं।

"दुनिया को एकजुट होना होगा अन्यथा यह नष्ट हो जाएगा।" अल्बर्ट आइंस्टीन: अल्बर्ट

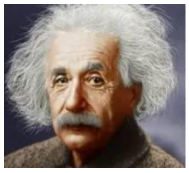

आइंस्टीन का एक लेख जिसका शीर्षक था "समाजवाद क्यों?" 1949 में मासिक समीक्षा पत्रिका में प्रकाशित। लेख पूंजीवाद की समस्याओं पर चर्चा करता है और एक समाजवादी विकल्प का प्रस्ताव करता है। लेख में कहा गया है कि "विश्व सरकार, या कम से कम राष्ट्रों के एक संघ का समय आ गया है जो प्रभावी ढंग से युद्ध को रोक सकता है और सामाजिक न्याय सुनिश्चित कर सकता है" (पृष्ठ 5)3।

वैश्विक एकता की अनिवार्यता: विश्व सरकार के लिए एक आह्वान: "दुनिया को एकजुट होना होगा अन्यथा यह नष्ट हो जाएगा।" अल्बर्ट आइंस्टीन द्वारा कहे गए ये शक्तिशाली शब्द आज की परस्पर जुड़ी दुनिया में पहले से कहीं अधिक मजबूती से गूंजते हैं। प्रसिद्ध भौतिक विज्ञानी आइंस्टीन ने समझा कि उनके समय की वैश्विक चुनौतियों के लिए सामूहिक प्रतिक्रिया की आवश्यकता थी। यह उद्धरण आज पहले से कहीं अधिक प्रासंगिक है, क्योंकि हम जलवायु परिवर्तन, परमाणु प्रसार, महामारी और परमाणु युद्ध की धमकियों सहित कई वैश्विक चुनौतियों का सामना कर रहे हैं। इसी प्रकार, एक दार्शनिक और सामाजिक आलोचक बर्ट्रेंड रसेल ने घोषणा की, "विश्व सरकार का समय आ गया है।" उनकी दूरदर्शी अंतर्दृष्टि मानवता के लिए वैश्विक मुद्दों के सामने वैश्विक एकता और एक विश्व सरकार की आवश्यकता को पहचानने का एक स्पष्ट आह्वान है।

दुनिया पहले से कहीं अधिक आपस में जुड़ी हुई है। हम समान हवा, पानी और संसाधन साझा करते हैं, जलवायु परिवर्तन और महामारी जैसी समान चुनौतियों का सामना कर रहे हैं। और हम सभी एक-दूसरे पर निर्भर हैं, यानी हम अपनी भलाई के लिए एक-दूसरे पर निर्भर हैं।

हमारे सामने मौजूद वैश्विक चुनौतियों से निपटने के लिए हमें मिलकर काम करने की जरूरत है। हमें अपने मतभेदों को भुलाकर आम जमीन तलाशने की जरूरत है। हमें विश्वास और सहयोग बनाने की जरूरत है। और हमें एक ऐसी दुनिया बनाने की जरूरत है जहां हर किसी को आवाज उठाने और योगदान करने का मौका मिले।

वैश्विक एकता की तात्कालिकता: अल्बर्ट आइंस्टीन के शब्द हमें वैश्विक एकता की तत्काल आवश्यकता की याद दिलाते हैं। जलवायु परिवर्तन और महामारी से लेकर परमाणु प्रसार और गरीबी तक मानवता आज जिन चुनौतियों का सामना कर रही है, वे राष्ट्रीय सीमाओं से परे हैं। कोई भी देश इन मुद्दों को अलग-थलग करके नहीं सुलझा सकता। जैसे-जैसे दुनिया तेजी से एक-दूसरे से जुड़ती जा रही है, एकजुट न होने के परिणाम गंभीर होंगे। राष्ट्रों को अपने मतभेदों को दूर करना चाहिए और वैश्विक स्तर पर सहयोग करना चाहिए। ऐसी दुनिया में जहां एक राष्ट्र के कार्यों का दूसरों पर दूरगामी प्रभाव पड़ सकता है, सहयोग सिर्फ वांछनीय नहीं है; यह जरूरी है। **विश्व सरकार का दृष्टिकोण:** बर्ट्रेंड रसेल का कथन, "विश्व सरकार का समय आ गया है," एक अधिक संगठित और न्यायसंगत वैश्विक व्यवस्था की दृष्टि को दर्शाता है। जबकि "विश्व सरकार" शब्द केंद्रीकृत शक्ति के बारे में चिंता पैदा कर सकता है, रसेल की दृष्टि सत्तावादी नियंत्रण की नहीं बल्कि सहकारी शासन की थी जो राष्ट्रों की संप्रभुता का सम्मान करती है।

एक विश्व सरकार, जैसा कि रसेल ने कल्पना की थी, वैश्विक महत्व के मुद्दों पर राष्ट्रों के साथ मिलकर काम करने के लिए एक मंच के रूप में काम करेगी। यह कूटनीति, संघर्ष समाधान और सामूहिक निर्णय लेने का एक मंच होगा, जो यह सुनिश्चित करेगा कि दुनिया की सबसे गंभीर समस्याओं का समाधान व्यापक और निष्पक्ष रूप से किया जाए। **वैश्विक चुनौतियाँ वैश्विक समाधान** की माँग करती हैं: वैश्विक एकता और विश्व सरकार के लिए आइंस्टीन और रसेल के आह्वान समकालीन वैश्विक चुनौतियों के सामने और भी अधिक प्रासंगिक हो गए हैं।

महामारी: COVID-19 महामारी ने स्वास्थ्य संकटों का सामना करने के लिए वैश्विक सहयोग की आवश्यकता को रेखांकित किया है। वायरस राष्ट्रीय सीमाओं का सम्मान नहीं करते हैं, और प्रभावी प्रतिक्रियाओं के लिए टीका वितरण, अनुसंधान और सार्वजनिक स्वास्थ्य उपायों पर सहयोग की आवश्यकता होती है।

परमाणु प्रसार: कई देशों के पास परमाणु हथियार होने से परमाणु संघर्ष का खतरा मंडरा रहा है। विनाशकारीसंघर्षों को रोकने के लिए वैश्विक

निरस्त्रीकरण प्रयास और हथियार नियंत्रण समझौते आवश्यक हैं।

गरीबी और असमानता: दुनिया भर में आर्थिक असमानताएँ बनी हुई हैं, जिससे अस्थिरता और संघर्ष हो रहा है। एक विश्व सरकार संसाधनों और अवसरों के अधिक न्यायसंगत वितरण, गरीबी को संबोधित करने और वैश्विक स्तर पर असमानता को कम करने की दिशा में काम कर सकती है।

गरीबी एक परिवार के लिए संसाधनों की अनुपलब्धता से संबंधित है। गरीबी उन लोगों में देखी जाती है जिनकी आय और संपत्ति का आधार इतना कम है कि जीवन की एक निश्चित गुणवत्ता को बनाए रखना मुश्किल है । असमानता से तात्पर्य आय, धन, शिक्षा, स्वास्थ्य, पोषण, रहने की जगह और सामाजिक संकेतकों के आधार पर लोगों के बीच असमानताओं से है । **चतुर्थ. आगे की चुनौतियाँ** जबकि विश्व सरकार का विचार सम्मोहक है, यह अपनी चुनौतियों और आलोचनाओं से रहित नहीं है। आलोचकों का तर्क है कि इससे राष्ट्रीय संप्रभुता का नुकसान हो सकता है या भ्रष्टाचार का खतरा हो सकता है। हालाँकि, इन चिंताओं को सावधानीपूर्वक डिजाइन और अंतर्राष्ट्रीय सहयोग के माध्यम से संबोधित किया जा सकता है।

Abstract

This paper is an attempt at analysing the intricacies between international law, the concept of Responsibility to Protect and its implications for the sovereignty of modern states. The paper examines how the concept of responsibility to protect (as stipulated by the International Commission on Intervention and State Sovereignty (ICISS)) impacts on the sovereignty of states. It adopts the essay style of writing and reviews a number of documents on the subject of international law, sovereignty and the responsibility to protect. The paper consequently argues that though the ICISS claims that its "purpose is not to license aggression with fine words, or to provide strong states with new rationales for doubtful strategic designs" (ICISS, 2001, p. 35), the Commission's very attempt to exempt the permanent five and other so-called major powers from intervention does just that whether intentionally or unintentionally. It consequently recommends that much effort should be made to address the inequalities within the international system through the formulation of appropriate policies and international regulations that address the sovereign equality of states in the international system, especially on the question of intervention.

संप्रभुता की रक्षा: एक विश्व सरकार को व्यक्तिगत राष्ट्रों की संप्रभुता का सम्मान करने के लिए संरचित किया जा सकता है, यह सुनिश्चित करते हुए कि प्रमुख निर्णय सामूहिक रूप से केवल उन वैश्विक मुद्दों पर लिए जाते हैं जिनकी आवश्यकता होती है, जबकि घरेलू मामलों का प्रबंधन प्रत्येक राष्ट्र पर छोड़ दिया जाता है।

जवाबदेही और पारदर्शिता: भ्रष्टाचार और सत्ता के दुरुपयोग के जोखिम को कम करने के लिए विश्व सरकार की शासन संरचना में पारदर्शिता और जवाबदेही तंत्र का निर्माण किया जा सकता है।

लोकतांत्रिक प्रतिनिधित्व: वैधता सुनिश्चित करने के लिए, एक विश्व सरकार को लोकतांत्रिक सिद्धांतों को ध्यान में रखते हुए डिजाइन किया जा सकता है, जो सभी देशों के प्रतिनिधित्व की अनुमति देती है और यह सुनिश्चित करती है कि निर्णय लेने में वैश्विक आबादी की विविधता प्रतिबिंबित हो।

चुनौतियों के बावजूद, वैश्विक एकता हासिल करने के लिए कई चीजें की जा सकती हैं। इसमे शामिल है: **अंतर्राष्ट्रीय संस्थानों को मजबूत बनाना**: हमें संयुक्त राष्ट्र जैसे अंतर्राष्ट्रीय संस्थानों को मजबूत करने की आवश्यकता है, ताकि वे वैश्विक चुनौतियों से निपटने में अधिक प्रभावी हो सकें। **बहुपक्षवाद को बढ़ावा देना:** हमें बहुपक्षवाद, या समस्याओं को हल करने के लिए मिलकर काम करने के विचार को बढ़ावा देने की आवश्यकता है। इसका मतलब है अपने मतभेदों को दूर करना और आम जमीन तलाशना।

शिक्षा और विकास में निवेश: हमें शिक्षा और विकास में निवेश करने की आवश्यकता है ताकि सभी को बेहतर भविष्य में योगदान करने का अवसर मिले।

मानवाधिकारों की रक्षा: हमें मानवाधिकारों की रक्षा करने और सामाजिक न्याय को बढ़ावा देने की आवश्यकता है। इससे एक अधिक न्यायपूर्ण और न्यायसंगत दुनिया बनाने में मदद मिलेगी।

वैश्विक एकता के महत्व पर उद्धरण: *"कोई भी अकेले नहीं बचाया जाता। शांति केवल युद्ध की अनुपस्थिति नहीं है, बल्कि न्याय की उपस्थिति है। हमें भाइयों की तरह एक साथ रहना सीखना चाहिए अन्यथा हम मूर्खों की तरह एक साथ नष्ट हो जाएंगे।.. हमने पक्षियों की तरह हवा में उड़ना और मछली की तरह समुद्र में तैरना सीखा है, लेकिन हमने भाइयों की तरह पृथ्वी पर चलना नहीं सीखा है।"* - मार्टिन लूथर किंग जूनियर।

"हमें मनुष्य के सामान्य शत्रुओं: गरीबी, भूख, बीमारी और युद्ध पर विजय पाने के लिए आम कार्रवाई में एकजुट होना चाहिए। दुनिया को एक समुदाय बनना चाहिए। हमें एक-दूसरे से प्यार करना चाहिए और मानवता को पहले रखना चाहिए।" - नेल्सन मंडेला

अल्बर्ट आइंस्टीन का उद्धरण, *"दुनिया को एकजुट होना चाहिए या यह नष्ट हो जाएगा," एक चेतावनी है जिस पर हमें ध्यान देना चाहिए। हमारे सामने मौजूद वैश्विक चुनौतियों से निपटने के लिए हमें अपने मतभेदों को भुलाकर मिलकर काम करने की जरूरत है।"* हमारे पास

सभी के लिए बेहतर भविष्य बनाने के लिए ज्ञान, संसाधन और प्रौद्योगिकी है। लेकिन हम यह तभी कर सकते हैं जब हम मिलकर काम करें।

वैश्वीकरण के युग में, और आज जिस दुनिया का हम सामना कर रहे हैं उसमें परस्पर निर्भरता बढ़ गई है, एक सवाल है जो हमें उठाना पड़ सकता है: क्या हमें एक ऐसी विश्व

सरकार की आवश्यकता है और क्या हम प्राप्त कर सकते हैं, जो शांति सुनिश्चित करने और दुनिया भर में अच्छी सुविधा प्रदान करने में सक्षम हो -न्यायसंगत और कुशल तरीके से किया जा रहा है? कुछ प्रमुख जीवित दार्शनिक इस प्रश्न पर उत्तेजक और आकर्षक तरीके से अपना विचार देते हैं। उनके निबंध न केवल व्यापक सैद्धांतिक रुचि के हैं, बल्कि इस सबसे सामयिक और जरूरी मुद्दे पर एक विचारोत्तेजक दृष्टिकोण भी प्रदान करते हैं। रिचर्ड फ़ॉक, माइकल वाल्ज़र, थॉमस पोगे, लैरी मे, अल्फ्रेड रुबिन, स्टेनली हॉफ़मैन, जान नारवेसन, वर्जीनिया हेल्ड, पॉलीन क्लिंजल्ड और लुइस कैबरेरा शामिल हैं। जोवन बेबिक बेलग्रेड विश्वविद्यालय में नैतिकता के प्रोफेसर और पोर्टलैंड स्टेट यूनिवर्सिटी में विजिटिंग प्रोफेसर हैं। पेटार बोजानिक सेंटर फॉर एथिक्स, लॉ एंड एप्लाइड फिलॉसफी (सीईएलएपी) के साथ-साथ इंस्टीट्यूट ऑफ फिलॉसफी एंड सोशल थ्योरी (बेलग्रेड) में सीनियर रिसर्च फेलो हैं। **वैश्विक शासन की पुनर्कल्पना के संबंध में रिचर्ड फॉक के विचार:** रिचर्ड फ़ॉक एक प्रसिद्ध अंतरराष्ट्रीय संबंध विद्वान हैं जो वैश्विक शासन की पुनर्कल्पना में एक प्रमुख आवाज़ रहे हैं। उनका काम अधिक न्यायसंगत और न्यायसंगत विश्व व्यवस्था की आवश्यकता पर केंद्रित है।

नागरिक समाज की भागीदारी: फॉक वैश्विक शासन में नागरिक समाज की भूमिका पर जोर देते हैं। उनका तर्क है कि गैर-सरकारी संगठनों और जमीनी स्तर के आंदोलनों को अंतरराष्ट्रीय नीतियों को आकार देने में अधिक महत्वपूर्ण भूमिका निभानी चाहिए। वह लिखते हैं, "सरकारों को जवाबदेह बनाने और प्रगतिशील बदलाव को आगे बढ़ाने में नागरिक समाज की एक आवश्यक भूमिका है।"

मानवाधिकार और न्याय: रिचर्ड फ़ॉक वैश्विक शासन में मानवाधिकारों और न्याय के प्रबल समर्थक हैं। उनका मानना है कि अंतरराष्ट्रीय संस्थानों को मानवाधिकार और सामाजिक न्याय को प्राथमिकता देनी चाहिए। वह कहते हैं, "कमजोरों के लिए न्याय न्याय का सबसे महत्वपूर्ण उपाय बन जाता है।"

वैश्विक नागरिकता: फॉक वैश्विक नागरिकता के विचार को प्रोत्साहित करता है, जहां व्यक्ति खुद को वैश्विक समुदाय के सदस्य के रूप में देखते हैं और वैश्विक मुद्दों की जिम्मेदारी लेते हैं।

वह कहते हैं, "वैश्विक नागरिकता का विचार हमारी परस्पर संबद्धता और साझा ज़िम्मेदारियों को स्वीकार करने के बारे में है।"

अंतर्राष्ट्रीय कानून में सुधार: फॉक ने मौजूदा अंतरराष्ट्रीय कानूनी ढांचे की आलोचना की है और समकालीन वैश्विक चुनौतियों से बेहतर ढंग से निपटने के लिए इसमें सुधार का आह्वान किया है। उनका तर्क है, "दुनिया की बदलती गतिशीलता को प्रतिबिंबित करने के लिए अंतर्राष्ट्रीय कानून को विकसित करने की आवश्यकता है।"

शांति और संघर्ष संकल्प: फ़ॉक संघर्ष समाधान प्रयासों में शामिल रहा है, और वह कूटनीति और संघर्षों के शांतिपूर्ण समाधान के महत्व में विश्वास करता है। वह लिखते हैं, "युद्ध मानव मस्तिष्क का आविष्कार है। मानव मस्तिष्क शांति का आविष्कार कर सकता है।"

वैश्विक एकजुटता: फॉक वैश्विक एकजुटता की अवधारणा को बढ़ावा देता है, जहां राष्ट्र और व्यक्ति वैश्विक मुद्दों के समाधान के लिए एक साथ खड़े होते हैं। उनका तर्क है, "एकजुटता परोपकारिता का मामला नहीं है। एकजुटता दूसरों के उत्पीड़न में निष्क्रिय या सक्रिय सहयोग की हमारी अपनी अखंडता के अपमान को सहन करने में असमर्थता से आती है।"

संक्षेप में, वैश्विक शासन की पुनर्कल्पना पर रिचर्ड फॉक के विचार अंतरराष्ट्रीय सहयोग, मानवाधिकार, न्याय और नागरिक समाज की सक्रिय भागीदारी के महत्व पर केंद्रित हैं। उनका दृष्टिकोण इस विश्वास में निहित है कि सामूहिक कार्रवाई और एक सुधारित वैश्विक शासन प्रणाली के माध्यम से एक अधिक न्यायसंगत और शांतिपूर्ण दुनिया प्राप्त की जा सकती है। क्या कोविड-19 हमें उस प्रणाली को और भी मजबूत करने के लिए प्रोत्साहित करेगा? कोविड-19 महामारी एक वैश्विक संकट है, फिर भी इसे बड़े पैमाने पर राज्यों द्वारा स्वतंत्र रूप से कार्य करके प्रबंधित किया गया है। अरविंद अष्ट बरगंडी स्कूल ऑफ बिजनेस, यूनिवर्सिटी बौर्गोगेन फ्रैंच-का तर्क है कि महामारी के आलोक में, हमें विश्व संघीय सरकार की ओर बढ़ने के संभावित लाभों पर गंभीरता से विचार करना चाहिए।

कोविड-19 द्वारा बनाई गई स्थिति विश्व संघीय सरकार में स्थानांतरित होने के विशेष लाभों को उजागर करने का काम कर सकती है। इससे एक ऐसे बदलाव की शुरुआत हो सकती है जो न केवल महामारी से होने वाले नुकसान को कम करने में मदद करेगा, बल्कि मानवता के सामने वर्तमान में मौजूद कई अन्य चुनौतियों का समाधान भी पेश करेगा।

विश्व संघवाद या वैश्विक संघवाद एक लोकतांत्रिक, संघीय विश्व सरकार की वकालत करने वाली एक राजनीतिक विचारधारा है । एक विश्व महासंघ के पास वैश्विक पहुंच के मुद्दों पर अधिकार होगा, जबकि ऐसे महासंघ के सदस्यों के पास स्थानीय और राष्ट्रीय मुद्दों पर अधिकार रहेगा। कोई देश वैश्विक संघवाद से अलग होना चाहे तो हो सकता है।

संघवाद के कई फायदे हैं, जैसा कि दो शताब्दियों से भी पहले संघीय पत्रों में बताया गया था , जिसमें परिभाषित सीमाओं के भीतर लोगों और पूंजी की शांति और मुक्त आवाजाही शामिल है। महामारी से निपटने में राज्यों की अक्षमता से हमें शासन के लिए नए दृष्टिकोण तलाशने के लिए प्रोत्साहित होना चाहिए, जिसमें अतीत में जो काम हुआ है, उसके बारे में हमारे ज्ञान का उपयोग करना चाहिए। इसे ध्यान में रखते हुए, निम्नलिखित मुख्य कारण हैं कि हमें अब विश्व संघीय सरकार की ओर बढ़ने पर विचार क्यों करना चाहिए।

असमानता को कम करना

मुद्रा जोखिम को ख़त्म करना

पर्यावरण की रक्षा करना

कराधान तय करना

बहुराष्ट्रीय कंपनियों की शक्ति पर अंकुश लगाना

संकटों के प्रति उचित प्रतिक्रिया सुनिश्चित करना

पलायन की समस्या का समाधान

परिवर्तन के लिए एक उत्प्रेरक के रूप में महामारी

Gurdian में प्रकाशित एक लेख के अनुसार, यदि हम स्वीकार करते हैं कि कोई सरकार किसी विशेष क्षेत्र के लोगों पर उनकी सहमति के साथ या उसके बिना सत्ता का प्रयोग कर सकती है, तो हाँ, कुछ आधिपत्य शक्ति या शक्तियों का संग्रह है जो दुनिया पर शासन करता है। इसकी कल्पना करना संभव है, शायद उदारतापूर्वक भी। , रोमन साम्राज्य ने सदियों तक ज्ञात विश्व के अधिकांश भाग पर नियंत्रण रखा। चीनी सम्राटों ने "स्वर्ग के आदेश" का दावा किया, जिसके बारे में उनका मानना था कि यह उन्हें पृथ्वी पर व्यवस्था बनाए रखने का अधिकार देता है। नेपोलियन युद्धों के बाद, महान शक्तियों ने विवादों को शांतिपूर्वक निपटाने और बड़े पैमाने पर रूढ़िवादी व्यवस्था बनाए रखने के लिए यूरोप के कॉन्सर्ट का गठन किया।

सैन फ्रांसिस्को में संयुक्त राष्ट्र के संस्थापक सम्मेलन ने एक ऐसी संस्था बनाई जिसने सत्तावाद और लोकतंत्र को समायोजित किया। लेकिन अब यह युद्धों को रोकने और दुनिया में शांति स्थापित करने और यहां तक कि आतंकवाद को परिभाषित करने में भी माहिर है। क्या कोविड-19 हमें उस प्रणाली को और भी मजबूत करने के लिए प्रोत्साहित करेगा? पिछली बड़ी आपदाओं ने हमें अलग तरह से सोचने पर मजबूर किया। नेपोलियन युद्धों और दो विश्व युद्धों ने अंतर्राष्ट्रीय संबंधों के प्रबंधन के नए तरीकों को जन्म दिया। महामारी ने कमजोरियां उजागर कर दी हैं। **गार्जियन** के अनुसार, यदि हम स्वीकार करते हैं कि कोई

सरकार किसी विशेष क्षेत्र के लोगों पर उनकी सहमति के साथ या उसके बिना सत्ता का प्रयोग कर सकती है, तो हाँ, कुछ आधिपत्य शक्ति या शक्तियों का संग्रह है जो दुनिया पर शासन करता है। इसकी कल्पना करना संभव है, शायद उदारतापूर्वक भी। , रोमन साम्राज्य ने सदियों तक ज्ञात विश्व के अधिकांश भाग पर नियंत्रण रखा। चीनी सम्राटों ने "स्वर्ग के आदेश" का दावा किया, जिसके बारे में उनका मानना था कि यह उन्हें पृथ्वी पर व्यवस्था बनाए रखने का अधिकार देता है। नेपोलियन युद्धों के बाद, महान शक्तियों ने विवादों को शांतिपूर्वक निपटाने और बड़े पैमाने पर रूढ़िवादी व्यवस्था बनाए रखने के लिए यूरोप के कॉन्सर्ट का गठन किया।

ज्ञात दुनिया को विजय द्वारा एकजुट करने की कोशिश करने वाली योजनाओं का लक्ष्य ऐतिहासिक रूप से संघीय सरकार के बजाय एक केंद्रीकृत, एकात्मक सरकार रहा है। विश्व संघवादी आम तौर पर विश्व संघ के प्रति हिंसक रास्ते का समर्थन नहीं करते हैं (विश्व संघवाद देखें § विश्व संघ की स्थापना के लिए वर्तमान प्रस्ताव) सैन फ्रांसिस्को में संयुक्त राष्ट्र के संस्थापक सम्मेलन ने एक ऐसी संस्था बनाई जिसने सत्तावाद और लोकतंत्र को समायोजित किया। लेकिन अब यह युद्धों को रोकने और दुनिया में शांति स्थापित करने और यहां तक कि आतंकवाद को परिभाषित करने में भी माहिर है।

बेहतर होगा कि हम ऐसा शीघ्र करें, क्योंकि हमें अधिक महामारियों, अधिक वैश्विक अशांति और सबसे ऊपर, जलवायु परिवर्तन के अस्तित्वगत खतरे का सामना करना पड़ेगा। क्या हम, जैसा कि रिचर्ड हास और चार्ल्स कुपचन ने हाल ही में विदेशी मामलों के लिए एक लेख में सुझाव दिया है, स्थिरता बनाए रखने के सीमित लक्ष्य के साथ, शक्तियों के एक नए संघ के साथ शुरुआत कर सकते हैं? बाधाएँ दुर्जेय हैं। दुष्ट राष्ट्र विश्व मत की अवहेलना करते हैं। क्षेत्रीय प्रतिद्वंद्विता के युद्ध में बदलने का खतरा है, जैसा कि हम यूक्रेन और इजराइल युद्ध में देख रहे हैं।

यूरोपीय संघ यूरोपीय संघ (ईयू) बढ़े हुए अंतर्राष्ट्रीय एकीकरण का एक क्षेत्रीय उदाहरण है। यूरोपीय संघ को साझा सरकार के तत्वों के साथ एक सुपरनैशनल इकाई के क्षेत्रीय उदाहरण के रूप में देखा जा सकता है। इसका निर्माण द्वितीय विश्व युद्ध की तबाही के बाद यूरोप में भविष्य के युद्धों को रोकने की इच्छा से प्रभावित था। यूरोपीय आयोग के पूर्व अध्यक्ष जीन-क्लाउड जंकर ने शांति और सहयोग को बढ़ावा देने में यूरोपीय संघ की भूमिका पर प्रकाश डाला: "सीमाएँ राजनेताओं द्वारा अब तक किया गया सबसे खराब आविष्कार है।"

अफ्रीकी संघ (एयू) एक महाद्वीपीय संगठन है जो अफ्रीकी राज्यों के बीच सहयोग और एकीकरण को बढ़ावा देता है। हालाँकि, एयू भी सदस्य राज्यों के स्वैच्छिक सहयोग पर निर्भरता से सीमित है।

चाहे संयुक्त राष्ट्र के माध्यम से, यूरोपीय संघ, अफ्रीकी संघ जैसे क्षेत्रीय संघों के माध्यम से, या वैकल्पिक दृष्टिकोण के माध्यम से, विश्व सरकार का विचार अधिक शांतिपूर्ण और टिकाऊ वैश्विक भविष्य बनाने के बारे में चर्चा को आकार देना जारी रखता है।

"विश्व सरकार कोई दूर का आदर्श नहीं है। यह एक तत्काल आवश्यकता है।" - **यू थांट**, संयुक्त राष्ट्र के पूर्व महासचिव

"विश्व सरकार कोई कल्पना नहीं है। यह एक आवश्यकता है।" -**मिखाइल गोर्बाचेव**, सोवियत संघ के पूर्व राष्ट्रपति

"हम विश्व के नागरिक हैं। हमें विश्व सरकार का अधिकार है।" - **डेसमंड टूटू**, नोबेल शांति पुरस्कार विजेता

विश्व सरकार का विचार लंबे समय से बहस का विषय रहा है, और इसकी व्यवहार्यता और वांछनीयता पर विभिन्न दृष्टिकोण हैं। यहां कुछ और उद्धरण दिए गए हैं जो विश्व सरकार के काल्पनिक विचार पर विभिन्न दृष्टिकोण दर्शाते हैं:

"विश्व सरकार न केवल संभव है, यह अपरिहार्य है; और जब यह आएगी, तो यह अपने सच्चे अर्थों में देशभक्ति की अपील करेगी, अपने एकमात्र अर्थ में, उन लोगों की देशभक्ति जो अपनी राष्ट्रीय विरासतों से इतनी गहराई से प्यार करते हैं कि वे उन्हें सुरक्षित रूप से संरक्षित करना चाहते हैं आम भलाई के लिए।" - **रोसिका श्विमर**

"यह पर्याप्त नहीं है कि हम जानते और मानते हैं कि सभी मनुष्य भाई-भाई हैं। हमें यह भी जानना और महसूस करना चाहिए कि हम सभी एक ही पिता की संतान हैं जो स्वर्ग में है। हमें यह महसूस करना चाहिए कि हम जीवन के एक वृक्ष की शाखाएँ हैं ; कि हम अस्तित्व के एक महासागर की लहरें हैं।" - **स्वामी विवेकानंद**

"साझा मूल्यों और आदर्शों पर आधारित एक वैश्विक समाज के उद्भव के लिए वैश्विक जिम्मेदारी की एक बड़ी भावना की आवश्यकता है। इसके लिए यह समझने की आवश्यकता है कि सभी मानवता एक साझा भविष्य साझा करती है और वैश्विक चुनौतियों का अंतिम समाधान सामूहिक कार्रवाई से आना चाहिए।" - **बान की मून**

"कल्पना करें कि सभी लोग शांति से जीवन जी रहे हैं। आप कह सकते हैं कि मैं स्वप्नद्रष्टा हूं, लेकिन मैं अकेला नहीं हूं। मुझे उम्मीद है कि किसी दिन आप हमारे साथ जुड़ेंगे और दुनिया एक हो जाएगी।" - **जॉन लेनन**

ये उद्धरण और उदाहरण आदर्शवादी दृष्टिकोण से लेकर वैश्विक सहयोग और साझा जिम्मेदारी के व्यावहारिक विचारों तक, विश्व सरकार की संभावना और वांछनीयता पर विविध दृष्टिकोणों को दर्शाते हैं।

दुनिया भर में उथल-पुथल हो रही है, लेकिन विश्व शांति की गारंटी केवल सनातन धर्म और भारत में है। मोदी सरकार सनातन धर्म के वसुधैव कुटुंबकम के दर्शन के अनुरूप, कोविड-19 संकट, युद्ध स्थितियों, प्राकृतिक आपदाओं और आर्थिक संकटों के दौरान दुनिया की

सहायता के लिए आगे आई है । अगले 25 वर्ष भारत और शेष विश्व दोनों के लिए महत्वपूर्ण होंगे। अगले अध्याय में इसकी विस्तार से चर्चा है।

एक विलक्षण विश्व सरकार का विचार वैश्विक सद्भाव के लिए एक आदर्शवादी समापन बिंदु के रूप में कायम है, विश्व मित्र मोदी का विकल्प एक व्यावहारिक और अनुकूलनीय

दृष्टिकोण प्रदान करता है। 'विश्व का विश्वसनीय भागीदार: विश्व को कोविड महामारी से निपटने में मदद करने में अपने योगदान के बाद उन्होंने वैश्विक मुद्दों पर भारत के मानव-केंद्रित और लोकतांत्रिक दृष्टिकोण के उदाहरण के रूप में सीडीआरआई, मिशन लाइफ, सोलर एलायंस जैसीअन्य की हैं।

Garry Davis, Man of No Nation Who Saw One World of No War: फ्रांस में, 1948 में, गैरी डेविस ने संयुक्त राष्ट्र महासभा की बालकनी से विश्व सरकार के लिए एक अनधिकृत भाषण शुरू किया , जब तक कि उन्हें गार्डों द्वारा खींच नहीं लिया गया। डेविस ने अपनी अमेरिकी नागरिकता त्याग दी और विश्व नागरिकों की एक रजिस्ट्री शुरू की । **यहां उनके शब्दों पर आधारित एक कविता है:**

** मैं विश्व के एक नागरिक के रूप में आपके सामने खड़ा हूं*

किसी राष्ट्र, जाति या पंथ का नहीं

लेकिन मानव परिवार एक सामान्य बंधन से एकजुट है

प्रेम, न्याय और शांति का

** मैं जनता की आवाज बनकर आपसे बात करता हूं*

जो युद्ध की विभीषिका से पीड़ित हैं

जो स्थायी सौहार्द्र के लिए तरसते हैं

जो वैश्विक लोकतंत्र का सपना देखते हैं

** मैं संयुक्त राष्ट्र के सदस्य के रूप में आपसे अपील करता हूं*

अपनी पवित्र प्रतिज्ञा को पूरा करने के लिए

आने वाली पीढ़ियों को युद्ध के नरक से बचाने के लिए

कानून के शासन के तहत विश्व सरकार की स्थापना करना

** मैं आपको विश्व के नेता के रूप में चुनौती देता हूं*

अपने संकीर्ण हितों से ऊपर उठना है

अपनी उच्च जिम्मेदारियों को अपनाने के लिए

एक नई विश्व व्यवस्था का निर्माण करना जो सभी के अधिकारों और स्वतंत्रता को सुरक्षित कर सके

*विश्व सरकार का समय आ गया है **

एक विलक्षण वैश्विक शासन प्रणाली की धारणा सदियों से आकर्षण, विवाद और संदेह का विषय रही है। इस अन्वेषण में, हमने वैश्विक सरकार की पारंपरिक धारणा के विकल्प की संभावना पर विचार करते हुए नेतृत्व, दृष्टि और भू-राजनीतिक गतिशीलता के प्रतिमान में गहराई से प्रवेश किया है।

प्रधानमंत्री मोदी के जीवन और नेतृत्व ने भारत की सीमाओं से परे भी चर्चाओं को जन्म दिया है। उनकी नवीन नीतियों, रणनीतिक कूटनीति और प्रगति के प्रति अटूट प्रतिबद्धता ने वैश्विक मामलों को आकार देने में दूरदर्शी नेताओं की भूमिका के बारे में दिलचस्प सवाल उठाए हैं।

विश्वमित्र की अवधारणा - एक नेता जो राष्ट्रीय सीमाओं को पार करता है और एकता, सहयोग और प्रगति के सिद्धांतों का प्रतीक है - ने कई लोगों की कल्पना पर कब्जा कर लिया है। पी.एम. सतत विकास, अंतर्राष्ट्रीय सहयोग और तकनीकी प्रगति को बढ़ावा देने के लिए मोदी के अथक प्रयासों ने दुनिया भर का ध्यान आकर्षित किया है।

हालाँकि, विश्व सरकार के विकल्प का विचार जटिल और विवादास्पद दोनों बना हुआ है। भू-राजनीति की पेचीदगियाँ, विविध विचारधाराएँ और शासन प्रणालियों की बारीकियाँ एक ही नेतृत्व के तहत वैश्विक एकीकरण के किसी भी प्रयास के लिए कठिन चुनौतियाँ पेश करती हैं।

बहरहाल, विश्वमित्र को विश्व सरकार के विकल्प के रूप में देखने से शुरू हुई चर्चाओं ने वैश्विक नेतृत्व की पुनर्कल्पना के लिए उत्प्रेरक के रूप में काम किया है। इसने राष्ट्रों के बीच सहयोग, समावेशिता और आपसी समझ पर संवाद को प्रोत्साहित किया है, जिससे एक अधिक परस्पर जुड़े और सामंजस्यपूर्ण विश्व के लिए आधार तैयार हुआ है।

जैसे-जैसे यह पुस्तक समाप्त होती है, यह किसी विचार का निष्कर्ष नहीं बल्कि बातचीत की शुरुआत है। विश्वमित्र का विचार, चाहे वह मूर्त वास्तविकता हो या प्रतीकात्मक आकांक्षा, हमें एक ऐसी दुनिया की संभावनाओं पर विचार करने की चुनौती देता है जहां नेता मानवता की भलाई के लिए सामूहिक रूप से काम करने के लिए सीमाओं को पार करते हैं।

भविष्य अलिखित है, और वैश्विक शासन की नियति राष्ट्रों और उनके नेताओं के सामूहिक कार्यों और आकांक्षाओं से आकार लेती है। विश्वमित्र का दृष्टिकोण एक अनुस्मारक के रूप में खड़ा है कि एक बेहतर दुनिया की खोज के लिए न केवल दूरदर्शी नेतृत्व की आवश्यकता है बल्कि सभी व्यक्तियों और राष्ट्रों की सामूहिक इच्छा और सहयोग की भी आवश्यकता है।

जैसे-जैसे हम अपनी दुनिया की जटिलताओं से निपट रहे हैं, सहयोग, समझ और प्रगति की भावना हमें एक ऐसे भविष्य की ओर ले जाए जहां सीमाएं बाधाओं के रूप में नहीं बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए एक अधिक समृद्ध और शांतिपूर्ण दुनिया के पुल के रूप में मौजूद हों।

सनातन धर्म विश्व सरकार का विकल्प

सनातन धर्म विश्व सरकार का विकल्प पेश कर सकता है क्योंकि यह सार्वभौमिक मूल्यों और सिद्धांतों के आधार पर वैश्विक सद्भाव और शांति की दृष्टि को बढ़ावा देता है। इसे वैश्विक शासन के लिए एक वैकल्पिक दृष्टिकोण के रूप में देखा जा सकता है जहां व्यक्ति और समाज एक न्यायपूर्ण और सामंजस्यपूर्ण दुनिया को बनाए रखने के लिए अपने नैतिक कर्तव्यों का पालन करते हैं। भगवद गीता में धर्म पर कई शिक्षाएँ शामिल हैं।

'हर राष्ट्र के पास देने के लिए एक संदेश है, पूरा करने के लिए एक मिशन है, पहुंचने के लिए एक नियति है। भारत का मिशन मानवता का मार्गदर्शन करना रहा है:' - स्वामी विवेकानन्द

मोदी सरकार सनातन धर्म के वसुधैव कुटुंबकम के दर्शन के अनुरूप, कोविड-19 संकट, युद्ध स्थितियों, प्राकृतिक आपदाओं और आर्थिक संकटों के दौरान दुनिया की सहायता के लिए आगे आई है । अगले 25 वर्ष भारत और शेष विश्व दोनों के लिए महत्वपूर्ण होंगे। 2047 तक कई देश सनातन धर्म का पालन करेंगे।

वर्तमान पश्चिमी आर्थिक मॉडल और दर्शन ने दुनिया को कोई लाभ नहीं पहुँचाया है। वास्तव में, उन्होंने विकासशील और गरीब देशों के पर्यावरणीय क्षरण और शोषण को बढ़ा दिया है।

'धर्म सही आचरण का सार्वभौमिक कोड है जो सामान्य आंतरिक बंधन को जागृत करता है, स्वार्थ पर लगाम लगाता है, लोगों को बाहरी अधिकार के बिना सामंजस्यपूर्ण स्थिति में एक साथ रखता है' - एमएस गोलवलकर

विदेश नीति का एक अन्य पहलू अमीर या गरीब, प्रत्येक देश की संस्कृति और परंपराओं का सम्मान करना और उन्हें महत्व देना है। आर्थिक और आध्यात्मिक मॉडल के भारतीय मॉडल

का बढ़ता आकर्षण आने वाले वर्षों में भारत को दुनिया की आकांक्षाओं और भौतिक जरूरतों को पूरा करने के लिए आकर्षण का केंद्र बना देगा।

आध्यात्मिक ज्ञानोदय: सनातन धर्म सहस्राब्दियों से आध्यात्मिक ज्ञान का स्रोत रहा है। यह व्यक्तियों को अपने भीतर का अन्वेषण करना, सत्य की तलाश करना और आत्म-प्राप्ति के लिए प्रयास करना सिखाता है। मानसिक और आध्यात्मिक कल्याण को बढ़ावा देने के लिए योग, ध्यान और कर्म जैसी अवधारणाओं को विश्व स्तर पर अपनाया गया है। इन प्रथाओं ने अनगिनत व्यक्तियों को आंतरिक शांति पाने, तनाव कम करने और जीवन में उद्देश्य की गहरी समझ खोजने में मदद की है, अंततः उनके समग्र कल्याण में योगदान दिया है।

प्राचीन ज्ञान का संरक्षण: सनातन धर्म प्राचीन ज्ञान के विशाल भंडार को संरक्षित और प्रसारित करने में सहायक रहा है। वेद, उपनिषद और भगवद गीता जैसे ग्रंथों में दर्शन और नैतिकता से लेकर गणित और विज्ञान तक कई विषयों पर कालातीत ज्ञान शामिल है। इस ज्ञान ने न केवल दुनिया की समझ को समृद्ध किया है बल्कि कई वैज्ञानिक प्रगति और नवाचारों की नींव भी रखी है।

विज्ञान और गणित: विज्ञान और गणित के क्षेत्र में सनातन धर्म के योगदान को अक्सर कम सराहा जाता है। प्राचीन भारतीय विद्वानों ने खगोल विज्ञान, बीजगणित और ज्यामिति जैसे क्षेत्रों में उल्लेखनीय प्रगति की। शून्य की अवधारणा, दशमलव प्रणाली और सौर मंडल की संरचना की समझ वैश्विक वैज्ञानिक ज्ञान में महत्वपूर्ण योगदान थे। इन प्रगतियों का विभिन्न विषयों पर गहरा प्रभाव पड़ा है और इससे मानव कल्याण को बहुत लाभ हुआ है।

आयुर्वेद और समग्र स्वास्थ्य: सनातन धर्म ने आयुर्वेद को जन्म दिया, जो चिकित्सा की एक समग्र प्रणाली है जो शरीर, मन और आत्मा के भीतर संतुलन और सद्भाव पर जोर देती है। स्वास्थ्य के प्रति आयुर्वेद के प्राकृतिक और व्यक्तिगत दृष्टिकोण को दुनिया भर में स्वास्थ्य देखभाल प्रथाओं में अपनाया और एकीकृत किया गया है। इसके रोकथाम के सिद्धांत, जीवनशैली प्रबंधन और प्राकृतिक उपचारों का उपयोग वैश्विक स्तर पर बेहतर स्वास्थ्य और कल्याण में योगदान देता है।

पर्यावरण चेतना: सनातन धर्म प्रकृति के साथ सभी जीवन रूपों के अंतर्संबंध पर जोर देता है। यह पारिस्थितिक जागरूकता लंबे समय से दर्शन का हिस्सा रही है, जो प्राकृतिक संसाधनों के जिम्मेदार उपयोग और संरक्षण की वकालत करती है।

परोपकार और दान: सनातन धर्म जरूरतमंद लोगों के लिए दान और सेवा के कार्यों को प्रोत्साहित करता है। "सेवा" या निस्वार्थ सेवा का अभ्यास संस्कृति में गहराई से निहित है।

वसुधैव कुटुंबकम: यह प्राचीन भारतीय ग्रंथ (महा उपनिषद) से एक संस्कृत वाक्यांश है जिसका अर्थ है "दुनिया एक परिवार है।" यह इस विचार पर जोर देता है कि पूरी मानवता एक-दूसरे से जुड़ी हुई है और उसे सद्भाव और सहयोग से रहना चाहिए। हालाँकि यह स्पष्ट रूप से विश्व सरकार का प्रस्ताव नहीं करता है, यह वैश्विक एकता की भावना को बढ़ावा देता है।

यह अवधारणा सभी प्राणियों के अंतर्संबंध और सभी देशों के बीच सहयोग और समझ की आवश्यकता पर जोर देती है। यह सुझाव देता है कि हमें खुद को अलग और प्रतिस्पर्धी संस्थाओं के बजाय एक वैश्विक समुदाय के हिस्से के रूप में देखना चाहिए।

वसुधैव कुटुंबकम का उपयोग संयुक्त राष्ट्र जैसे राष्ट्रों के बीच सहयोग और समझ को बढ़ावा देने वाले अंतरराष्ट्रीय संगठनों के निर्माण को उचित ठहराने के लिए किया जा सकता है। इसका उपयोग अंतरराष्ट्रीय कानून और मानदंडों के विकास का समर्थन करने के लिए भी किया जा सकता है जो मानव अधिकारों की रक्षा करते हैं और पर्यावरणीय स्थिरता को बढ़ावा देते हैं।

सनातन धर्म सिखाता है कि सभी प्राणी आपस में जुड़े हुए हैं और हम सभी एक सार्वभौमिक चेतना का हिस्सा हैं। यह सदाचारपूर्ण जीवन जीने और दूसरों के कल्याण के लिए काम करने के महत्व पर भी जोर देता है।

कर्म की अवधारणा, जो कारण और प्रभाव का नियम है जो सभी जीवित प्राणियों के कार्यों और परिणामों को नियंत्रित करती है। कर्म की अवधारणा, जो कारण और प्रभाव का नियम है जो सभी जीवित प्राणियों के कार्यों और परिणामों को नियंत्रित करती है।

पुनर्जन्म (संसार) का चक्र, जो मुक्ति (मोक्ष) प्राप्त होने तक विभिन्न शरीरों और अस्तित्व के क्षेत्रों के माध्यम से आत्मा के स्थानांतरण की प्रक्रिया है।

धर्म का अभ्यास, जो जीवन में उनकी अवस्था और भूमिका के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति का नैतिक और नैतिक कर्तव्य है।

विविधता और बहुलवाद के प्रति सम्मान, जो आध्यात्मिकता और संस्कृति के विभिन्न मार्गों और अभिव्यक्तियों की अनुमति देता है।

प्रकृति और जीवन के सभी रूपों के प्रति श्रद्धा, जिन्हें पवित्र और परस्पर जुड़ा हुआ माना जाता है। सनातन धर्म में एक और महत्वपूर्ण अवधारणा धर्म है, जिसका अनुवाद "धार्मिकता" या "कर्तव्य" के रूप में किया जा सकता है। धर्म वह सिद्धांत है कि हम सभी की जिम्मेदारी है कि हम अपने वास्तविक स्वरूप के अनुसार जिएं और अपने आसपास की दुनिया की भलाई में योगदान दें। यह अवधारणा सुझाव देती है कि हमें विश्व मामलों को नैतिक जिम्मेदारी की भावना और आम भलाई के प्रति प्रतिबद्धता के साथ देखना चाहिए।

सनातन धर्म हमें सिखाता है कि सभी प्राणी एक ही दिव्य चेतना की अभिव्यक्तियाँ हैं। यह सिद्धांत बताता है कि हमें सभी लोगों के साथ सम्मान और करुणा से व्यवहार करना चाहिए, चाहे उनकी राष्ट्रीयता, नस्ल, धर्म या कोई अन्य कारक कुछ भी हो। यह यह भी सुझाव देता है कि हमें अपने मतभेदों को सुलझाने के लिए हिंसा या जबरदस्ती का इस्तेमाल करने से बचना चाहिए।

धर्म का उपयोग विदेश नीति और अंतर्राष्ट्रीय सहायता कार्यक्रमों के विकास के मार्गदर्शन के लिए किया जा सकता है। उदाहरण के लिए, राष्ट्र अन्य राष्ट्रों के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप न करने की नीति अपना सकते हैं, या वे अपने सहायता कार्यक्रमों को गरीबी उन्मूलन और सतत विकास पर केंद्रित कर सकते हैं।

सभी प्राणियों की एकता का उपयोग राष्ट्रों और संस्कृतियों के बीच शांति और मेल-मिलाप को बढ़ावा देने के लिए किया जा सकता है। इसका उपयोग अंतरराष्ट्रीय संघर्ष समाधान तंत्र के विकास को उचित ठहराने के लिए भी किया जा सकता है जो हिंसा और जबरदस्ती के बजाय मध्यस्थता और कूटनीति पर आधारित हैं।

सनातन धर्म का विश्व कल्याण में योगदान

शिक्षा: सनातन धर्म में शिक्षा का समर्थन करने की एक लंबी परंपरा है। कई प्राचीन हिंदू विश्वविद्यालय, जैसे कि नालंदा और तक्षशिला, अपनी शैक्षणिक उत्कृष्टता के लिए प्रसिद्ध थे। आधुनिक युग में, कई हिंदू संगठनों ने स्कूल और कॉलेज स्थापित किए हैं जो सभी पृष्ठभूमि के छात्रों को उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा प्रदान करते हैं।

स्वास्थ्य सेवा: सनातन धर्म में स्वास्थ्य सेवा को बढ़ावा देने की भी एक मजबूत परंपरा है। आयुर्वेदिक चिकित्सा, जिसकी उत्पत्ति भारत में हुई, दुनिया में समग्र उपचार की सबसे पुरानी और सबसे व्यापक प्रणालियों में से एक है। कई हिंदू संगठन भी अस्पताल और क्लीनिक

संचालित करते हैं जो गरीबों और जरूरतमंदों को मुफ्त या कम लागत वाली स्वास्थ्य सेवा प्रदान करते हैं।

पर्यावरण संरक्षण: सनातन धर्म सिखाता है कि पर्यावरण की रक्षा करना हमारा कर्तव्य है। हिंदू धर्मग्रंथ ऐसी कहानियों और शिक्षाओं से भरे हुए हैं जो प्रकृति के साथ सद्भाव में रहने के महत्व पर जोर देते हैं। पर्यावरण सुरक्षा और संरक्षण को बढ़ावा देने के लिए कई हिंदू संगठन भी काम कर रहे हैं।

सामाजिक कल्याण: सनातन धर्म में सामाजिक सक्रियता और सेवा का एक लंबा इतिहास है। कई हिंदू संगठन गरीबी, भूख, बेघरता और भेदभाव जैसे व्यापक सामाजिक मुद्दों को संबोधित करने के लिए काम करते हैं। वे प्राकृतिक आपदाओं और अन्य संकटों के पीड़ितों को भी राहत प्रदान करते हैं।

यहां हिंदू धर्मग्रंथों के कुछ उद्धरण दिए गए हैं जो विश्व कल्याण पर जोर देते हैं:

"वसुधैव कुटुंबकम" (दुनिया एक परिवार है) - महा उपनिषद

"सर्वे भवन्तु सुखिनः" (सभी प्राणी खुश रहें) - बृहदारण्यक उपनिषद

"लोक संग्रह कामया" (विश्व के कल्याण के लिए) - भगवद गीता

"सर्वे जनः सुखिनो भवन्तु" (सभी प्राणी खुश रहें) - बौद्ध मेत्ता सुत्त

सनातन धर्म का विश्व कल्याण पर एक अद्वितीय और मूल्यवान दृष्टिकोण है। यह सिखाता है कि हम सभी एक दूसरे से जुड़े हुए हैं और सभी प्राणियों की भलाई के लिए काम करना हमारा कर्तव्य है। सनातन धर्म भी सदाचारी जीवन जीने और धर्म के मार्ग पर चलने के महत्व पर जोर देता है।

IITian पीवीआर नरसिम्हा राव अमेरिका स्थित ज्योतिषी ने भविष्यवाणी की है 2024 में जीतेगा तो पीएम मोदी ही, तीसरी बार बनेंगे प्रधानमंत्री। 2024 के आखिर में पाकिस्तान टूटेगा और खंड खंड हो जाएगा। जिसमें से PoK की भारत में वापसी हो जाएगी।

इस्लामिक देशों में फैले दिद्रोह की लहर और कट्टरपंथ के चलते नास्तिक लोगों की तादाद बढती चली जाएगी और अगले दो दशकों में सभी धर्मों के लिए खतरा बन जाएंगे। लेकिन सनातन धर्म वैज्ञानिक मूल और नास्तिकों को संतुष्ट करने की क्षमता के कारण आगे बढ़ेगा।

आने वाला समय सनातन का होगा। दुनिया सनातन को अपनाना शुरू कर देगी, जिसके चलते भारत की ताक़त बढ़ती चली जाएगी। भारत एक विश्व गुरू के तौर पर दुनिया का नेतृत्व करेगा।

इस दुनिया में ख़राब अर्थव्यवस्था, अस्थिरता अराजकता का दायरा बढ़ेगा..लेकिन 2030 तक सनातन में ये तमाम समस्याएं समाहित हो जाएंगी। दुनिया सनातन के रास्ते खुद को बदलेगी सनातनी हो जाएगी। सनातन को विश्व स्तर पर स्वीकारा जाएगा।

पुराणों में लिखा है कि जो व्यक्ति, संगठन या समाज वेद विरुद्ध आचरण कर भारत की धार्मिक और सांस्कृतिक एकता को खंडित करेगा उसका आने वाले समय में समूल नाश हो जाएगा। ऐसे लोग होंगे, जो जनता से झूठ बोलेंगे और अपने कुतर्कों द्वारा एक-दूसरे की आलोचना करेंगे और जिनका कोई धर्म नहीं होगा। ये सभी विधर्मी होंगे। ये सभी मिलकर

भारत को तोड़ेंगे और अंततः भारत को एक अराजक भूमि बनाकर छोड़ देंगे। जाति आधारित जनगणना इसकी सत्यता को उजागर करता है।

"दुनिया भर में उथल-पुथल हो रही है, लेकिन विश्व शांति की गारंटी केवल सनातन धर्म और भारत में है। जब भी कोई संकट आता है या वैश्विक संकट आता है तो हर देश भारत और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की ओर बड़ी आशा से देखता है। जब 140 करोड़ भारतीय इस आशा के पीछे एक साथ आते हैं, तो यह पूरी दुनिया के लिए एक ताकत बन जाती है । अफगानिस्तान, यूक्रेन और गाजा पट्टी से लोग भाग रहे हैं। संकट की इस घड़ी में हर देश और परेशान व्यक्ति भारत और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की ओर आशा भरी नजरों से देख रहा है। उनका मानना है कि भारत ही उनके लिए एकमात्र उम्मीद है । सभी संप्रदाय, पूजा पद्धतियां, परंपराएं और मान्यताएं सनातन धर्म के सार को समझने के लिए समर्पित हैं। भले ही रास्ते अलग-अलग हों, लेकिन मंजिल एक ही थी, एकजुट और मजबूत प्रयासों के माध्यम से सनातन धर्म के शाश्वत सत्य की पुनः स्थापना, " आदित्य नाथ योगी

Britannica के अनुसार "सामान्य तौर पर सनातन धर्म में ईमानदारी, जीवित प्राणियों को चोट पहुँचाने से बचना, पवित्रता, सद्भावना, दया, धैर्य, सहनशीलता, आत्म-संयम, उदारता और तपस्या जैसे गुण शामिल हैं....सनातन शब्द का उपयोग हाल ही में हिंदू नेताओं, सुधारकों और राष्ट्रवादियों द्वारा हिंदू धर्म को एक एकीकृत विश्व धर्म के रूप में संदर्भित करने के लिए किया गया है । इस प्रकार सनातन धर्म हिंदू धर्म के "शाश्वत" सत्य और शिक्षाओं का पर्याय बन गया है, जिसे न केवल इतिहास से परे और अपरिवर्तनीय माना जाता है, बल्कि अविभाज्य और अंततः गैर-सांप्रदायिक भी माना जाता है।"

दिल्ली के भारत मंडपम में जी-20 शिखर सम्मेलन के पहले सत्र को संबोधित करते हुए

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने जब अपनी बात शुरू की वह भी सनातन संस्कृति का जयघोष ही था। पीएम मोदी ने कहा कि ढाई हजार साल पहले भारत की धरती ने मानवता के कल्याण का संदेश पूरी दुनिया को दिया था। 21वीं सदी का यह समय पूरी दुनिया को नई दिशा देने वाला है। पीएम मोदी ने भारतीय संस्कृति पर कहा- इस समय जिस स्थान पर हम एकत्रित हैं। यहां से कुछ ही किलोमीटर के फासले पर लगभग ढाई हजार साल पुराना एक स्तंभ **Ashok Stambh** लगा हुआ है। इस

स्तंभ पर प्राकृत भाषा में लिखा है- "हेवम लोकसा हितमुखे ति, अथ इयम नातिसु हेवम"। अर्थात, मानवता का कल्याण और सुख सदैव सुनिश्चित किया जाए। ढाई हजार साल पहले, भारत की भूमि ने, यह संदेश पूरे विश्व को दिया था। आइए, इस सन्देश को याद कर, इस G-20 समिट का हम आरम्भ करें। अशोकन स्तंभ दिल्ली में फ़िरोज़ शाह कोटला में महल की इमारत के ऊपर बनाया गया है। यह 13 मीटर (43 फीट) ऊंचा है (मंच से एक मीटर नीचे) और बलुआ पत्थर से बना है।

जहां एक तरफ तमिलनाडु के सीएम स्टालिन के बेटे के मंत्री उदयनिधि ने 'सनातन के विनाश' का आह्वान किया, वहीं पीएम मोदी ने जी20 शिखर सम्मेलन के केंद्र मंच पर 'अष्टधातु' (आठ धातुओं) से बनी दुनिया की सबसे बड़ी 27 फीट ऊंची नटराज प्रतिमा रखी।

सनातन पद्धति में है जगत कल्याण का सामर्थ्य: पी एम मोदी ने कोरोना महामारी के समय कहा था, देश के प्रत्येक व्यक्ति को अपनी सुरक्षा करने के साथ जग की सुरक्षा का दायित्व निभाना है। सनातन पद्धति में जगत कल्याण का सामर्थ्य है। कोरोना वायरस के पीड़ितों के उपचार में लगे स्पेन के डॉक्टर और मेडिकल स्टाफ भी ओम (ऊँ) और सतनाम वाहेगुर का

पाठ कर रहे थे। केवल सनातन पद्धति ही विश्व का कल्याण कर सकती हैं।

सेनगोल सनातन धर्म का एक सशक्त प्रतीक: सेनगोल (जिसे संगम भी कहा जाता है) एक सोना चढ़ाया हुआ चांदी का राजदंड है जो वर्तमान में नई दिल्ली, नए संसद भवन में स्थापित है।

सेंगोल राजदंड मूल रूप से भारत की आजादी 15 अगस्त 1947 से पहले 14 अगस्त 1947 की रात को एक निजी धार्मिक समारोह में एक तमिल अधीनम द्वारा भारत के पहले प्रधान मंत्री जवाहरलाल नेहरू को सत्ता हस्तांतरण के रूप में दिया गया था। सेनगोल को 2023 तक सत्तर वर्षों तक इलाहाबाद संग्रहालय में गलत लेबल देकर उसका अपमान किया गया था। अब अब स्वतन्त्रता के स्वर्णिम प्रतीक संगोल को प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा नए संसद भवन के उद्घाटन पर इसे वहां लोकसभाध्यक्ष की सीट के बगल में स्थापित किया गया।

सेनगोल सनातन धर्म का शक्तिशाली प्रतीक है

संस्कृत शब्द "सेनगोल" तमिल शब्द "सेम्मई" से लिया गया है, जिसका अर्थ है "धार्मिकता।" सेनगोल को पारंपरिक रूप से राजा या शासक को न्याय और करुणा के साथ शासन करने के उनके कर्तव्य की याद दिलाने के लिए प्रस्तुत किया जाता है।

यह धर्म का प्रतीक है। सनातन धर्म में धर्म एक प्रमुख अवधारणा है, जो सार्वभौमिक नैतिक व्यवस्था या कानून को संदर्भित करता है। सेनगोल धर्म-राज्य, या धर्म द्वारा शासन के आदर्श का प्रतिनिधित्व करता है।

यह भारत की एकता का प्रतीक है। सेनगोल को एक तमिल अधीनम ने नेहरू को भेंट किया था, लेकिन यह संपूर्ण भारत राष्ट्र का प्रतीक है। यह एक अनुस्मारक है कि भारत एक समृद्ध सांस्कृतिक विरासत वाला एक विविध देश है। लेकिन सभी भारतीय धर्म, धार्मिकता और न्याय के अपने साझा मूल्यों से एकजुट हैं।

सनातन धर्म सेनगोल के प्रतीकवाद को दर्शाता है:

नैतिकता और नैतिकता पर एक क्लासिक तमिल पाठ, थिरुक्कुरल में, सेनगोल की धार्मिक शासन के प्रतीक के रूप में प्रशंसा की गई है:

"लांस नहीं राजाओं को जीत दिलाता है, बल्कि राजदंड समता से प्रभावित होता है।" (थिरुक्कुरल, 546)

सबसे महत्वपूर्ण हिंदू ग्रंथों में से एक, भगवद गीता में, भगवान कृष्ण अर्जुन से कहते हैं कि एक धर्मी शासक को निम्नलिखित गुणों के साथ शासन करना चाहिए:

"निर्भयता, हृदय की पवित्रता, आध्यात्मिक ज्ञान में दृढ़ता, भिक्षा देना, आत्मसंयम, त्याग, वेदों का अध्ययन, तपस्या और सरलता।" (भगवद गीता, 16:1-3)

"सेनगोल सनातन धर्म का एक शक्तिशाली प्रतीक है, और इसे सुरक्षित रखना और भावी पीढ़ियों के लिए इसे संरक्षित करना हमारा कर्तव्य है।" - स्वामी विवेकानंद

"सेंगोल सनातन धर्म की समृद्ध विरासत और मूल्यों की याद दिलाता है। यह हमारी एकता और विविधता और शांति और सद्भाव के प्रति हमारी प्रतिबद्धता का प्रतीक है।" - महात्मा गांधी

"सेंगोल सनातन धर्म के लचीलेपन और सहनशक्ति का एक शक्तिशाली प्रतीक है। यह समय की कसौटी पर खरा उतरा है, और यह दुनिया भर में हिंदुओं को प्रेरित करता रहता है।" - नरेंद्र मोदी

"सेंगोल सनातन धर्म के भविष्य के लिए आशा की किरण है। यह सत्य, करुणा और अहिंसा के मूल्यों का प्रतिनिधित्व करता है जो हमें एक उज्जवल भविष्य की ओर मार्गदर्शन करेगा।" - दलाई लामा

2023 में, जब सेनगोल को नए संसद भवन में स्थापित किया गया, तो **प्रधान मंत्री मोदी ने कहा कि सेनगोल "धर्म-राज्य के आदर्श, या धर्म द्वारा शासन का प्रतिनिधित्व करता है**, जो हमारी प्राचीन सभ्यता की नींव है।"

सेनगोल सनातन धर्म का एक सशक्त प्रतीक है। यह भारतीय समाज में धार्मिक शासन, धर्म और एकता के महत्व की याद दिलाता है।

"माउंटबेटन ने नेहरू से पूछा कि सत्ता के हस्तांतरण का प्रतीक क्या हो। नेहरू ने राजाजी से पूछा। राजाजी ने नेहरू से कहा कि जब तमिल राजा सत्ता संभालें तो राजगुरु सेनगोल का नेतृत्व किये। नेहरू के कहने पर राजाजी ने तिरुवदुथुराई अधीनम के पुजारी से संपर्क किया और उनसे पवित्र अनुष्ठान करने का अनुरोध किया। अधीनम के मुख्य पुजारी की तबीयत ठीक नहीं थी लेकिन उन्होंने सभी व्यवस्थाएं कीं और वुममिडी बंगारू चेट्टी ज्वैलर्स द्वारा बनाया गया सेनगोल - सेनगोल - ऋषभ [बुल] के साथ मिला।"

सनातन धर्म: लगभग 6000 साल पहले पूरे विश्व में केवल एक ही धर्म था, जिसका नाम सनातन धर्म था और इसे वैदिक धर्म भी कहा जाता था। सनातन वैदिक धर्म का सरल अर्थ वेदों में वर्णित रीति से जीवन जीना था।

"चार हजार साल पहले, ऋग्वेद ने इन बारहमासी (सनातन) कानूनों को धर्म के रूप में परिभाषित किया था, कुछ सार्वभौमिक सिद्धांतों के एक सेट के रूप में जो सभी जीवन और प्रकृति का मार्गदर्शन करते हैं। धर्म के लिए मूल शब्द धृ है, जिसका अर्थ है मार्गदर्शक सिद्धांतों का एक सेट जो ले जाता है और ब्रह्मांड में व्यवस्था बनाए रखें।"

“In its simplistic essence, Sanatana means eternal; dharma means law. So, the eternal and timeless laws that govern not only our outer lives but inner sacred lives is Sanatana Dharma. It is a journey of the pure spirit soul, connecting to the divine self, to the Atman and each one’s inherent atma gunas or divine qualities,”

"सेनगोल सनातन धर्म का एक शक्तिशाली प्रतीक है, जो हिंदू आस्था की एकता और विविधता का प्रतिनिधित्व करता है।"

"सेनगोल सनातन धर्म के समृद्ध इतिहास और संस्कृति और उन मूल्यों की याद दिलाता है जिन्हें यह कायम रखता है।"

"सेनगोल दुनिया भर के हिंदुओं के लिए शक्ति और प्रेरणा का स्रोत है।"

"सेनगोल सनातन धर्म के लचीलेपन और सहनशक्ति का एक शक्तिशाली प्रतीक है।"

"सेनगोल सनातन धर्म के भविष्य के लिए आशा की किरण है।"

यहां कुछ उद्धरण दिए गए हैं जिनमें "सेनगोल सनातन धर्म का एक शक्तिशाली प्रतीक है" वाक्यांश का उपयोग किया गया है:

कुछ उदाहरण और उद्धरण जो सनातन धर्म (हिंदू धर्म) के भीतर कुछ प्रतीकों और अवधारणाओं के महत्व को उजागर करते हैं:

"सनातन धर्म में **कमल** पवित्रता और ज्ञानोदय का एक शक्तिशाली प्रतीक है।" कमल को हिंदू धर्म के भीतर एक महत्वपूर्ण प्रतीक के रूप में उजागर करता है, जो आध्यात्मिक विकास और पवित्रता का प्रतिनिधित्व करता है।

"**ओम** प्रतीक, जिसे अक्सर 'ओम्' के रूप में उच्चारित किया जाता है, सनातन धर्म में परम वास्तविकता का एक शक्तिशाली प्रतिनिधित्व है।" यह कथन हिंदू धर्म में ओम प्रतीक की पवित्रता को रेखांकित करता है, जो ब्रह्मांड की ध्वनि और परम सत्य का प्रतीक है।

"सनातन धर्म में **गाय** को देवत्व और मातृत्व के प्रतीक के रूप में पूजा जाता है।"

यह उद्धरण हिंदू संस्कृति में गायों की विशेष स्थिति पर जोर देता है, जहां उन्हें पवित्र माना जाता है और मातृ गुणों का प्रतीक है।

"**स्वस्तिक** सनातन धर्म में शुभता का एक प्राचीन प्रतीक है, जो अच्छे भाग्य और कल्याण को दर्शाता है।"

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी एक सनातन हिंदू हैं। 2018 में एक भाषण में, मोदी ने कहा: "सनातन धर्म भारत का शाश्वत धर्म है। यह ऐसा धर्म नहीं है जो किसी एक हठधर्मिता या विश्वास पर आधारित है। यह जीवन जीने का एक तरीका है जो सहिष्णुता, बहुलवाद और सभी धर्मों के प्रति सम्मान के सिद्धांतों पर आधारित है।"

मोदी ने भारतीय संस्कृति और सभ्यता को आकार देने में सनातन धर्म के महत्व के बारे में भी बताया है। 2019 में एक भाषण में उन्होंने कहा: "सनातन धर्म सदियों से भारतीय संस्कृति

और सभ्यता का आधार रहा है। इसने हमें सार्वभौमिक भाईचारे, करुणा और अहिंसा के मूल्य सिखाए हैं।"

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी अपनी मजबूत हिंदू आस्था और हिंदू मूल्यों को बढ़ावा देने की प्रतिबद्धता के कारण सनातन धर्म के प्रतीक हैं। वे सनातन धर्म के प्रति उनके समर्थन के कई उदाहरण बताते हैं, जिनमें शामिल हैं:

2013 में विनाशकारी बाढ़ के कुछ ही महीनों बाद, जिसने शहर का अधिकांश हिस्सा नष्ट कर दिया था, उन्होंने **केदारनाथ मंदिर** की यात्रा की। उन्होंने 2019 में काशी **विश्वनाथ कॉरिडोर** परियोजना का शुभारंभ किया, जिसका उद्देश्य वाराणसी में काशी विश्वनाथ मंदिर के आसपास के क्षेत्र का सौंदर्यीकरण और विकास करना है।

अयोध्या में राम मंदिर के निर्माण के लिए उनका समर्थन, जो हिंदू कार्यकर्ताओं की लंबे समय से चली आ रही मांग है।

मोदी के बारे में किसी का दृष्टिकोण चाहे जो भी हो, इसमें कोई संदेह नहीं है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सनातन धर्म को भारतीय राजनीति में सबसे आगे लाया है।

पीएम मोदी की सनातन धर्म विचारधारा के उदाहरण:

• पीएम मोदी ने दुनिया में शांति और सद्भाव को बढ़ावा देने में सनातन धर्म के महत्व के बारे में बात की है।

• पीएम मोदी ने हिंदू संस्कृति और परंपराओं को बढ़ावा देने की पहल का समर्थन किया है, जैसे कि मंदिरों का निर्माण और हिंदू त्योहारों का जश्न।

• पीएम मोदी ने भारत की हिंदू विरासत को संरक्षित करने की जरूरत पर भी बात की है।

• पीएम मोदी ने सभी प्रकार की हिंसा और उग्रवाद की निंदा की है, जिसमें धार्मिक घृणा से प्रेरित हिंसा भी शामिल है।

"सनातन धर्म जीवन जीने का एक तरीका है जो हमें सभी धर्मों और संस्कृतियों का सम्मान करना सिखाता है।"

"सनातन धर्म शांति और सद्भाव का धर्म है।"

"सनातन धर्म ने भारत को एक समृद्ध सांस्कृतिक विरासत दी है।"

"सनातन धर्म भारत की शक्ति और लचीलेपन का स्रोत है।"

"सनातन धर्म ही भारत के गौरवशाली भविष्य का मार्ग है।" कुल मिलाकर, पीएम मोदी की सनातन धर्म विचारधारा सार्वभौमिक भाईचारे, सहिष्णुता और बहुलवाद के सिद्धांतों पर आधारित है। उनका मानना है कि सनातन धर्म दुनिया भर के लाखों लोगों के लिए शक्ति और प्रेरणा का स्रोत है।

"पीएम मोदी सनातन धर्म के प्रतीक हैं"। सनातन धर्म, जिसे अक्सर हिंदू धर्म कहा जाता है, दुनिया के सबसे पुराने धर्मों में से एक है। इसमें विभिन्न प्रकार की मान्यताएं और प्रथाएं हैं। पीएम मोदी, या नरेंद्र मोदी, भारत के पूर्व प्रधान मंत्री हैं इसमें और उनका राजनीतिक करियर भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के साथ निकटता से जुड़ा रहा है, जो अक्सर हिंदू राष्ट्रवाद से जुड़ा होता है।

हिंदू मूल्यों को बढ़ावा: पीएम मोदी के कुछ समर्थकों का तर्क है कि उन्होंने हिंदू मूल्यों और परंपराओं को बढ़ावा देने और उनकी रक्षा करने के लिए सक्रिय रूप से काम किया है। उदाहरण के लिए, जम्मू-कश्मीर राज्य को विशेष स्वायत्तता प्रदान करने वाले अनुच्छेद 370 को निरस्त करने के उनकी सरकार के फैसले को कुछ लोगों द्वारा यह सुनिश्चित करने के तरीके के रूप में देखा जाता है कि यह क्षेत्र सनातन धर्म के सिद्धांतों के साथ अधिक निकटता से जुड़ा हुआ है। इसे अक्सर कथित ऐतिहासिक अन्यायों को संबोधित करने के साधन के रूप में तैयार किया जाता है।

योग को बढ़ावा: पीएम मोदी वैश्विक मंच पर योग के प्रबल समर्थक रहे हैं. उन्होंने कहा है, "योग केवल अभ्यासों का एक सेट नहीं है, बल्कि आत्म-प्राप्ति का मार्ग और 'मैं' से 'हम' तक की यात्रा है।" यह संतुलित दिमाग और संतुलित शरीर बनाने का एक साधन है।" यह सनातन धर्म के आध्यात्मिक और समग्र पहलुओं के अनुरूप है।

तीर्थ स्थलों के लिए धन आवंटित: मोदी सरकार ने केदारनाथ और बद्रीनाथ मंदिरों जैसे महत्वपूर्ण हिंदू तीर्थ स्थलों के आसपास बुनियादी ढांचे के विकास के लिए महत्वपूर्ण धन आवंटित किया है। धार्मिक पर्यटन के लिए इस समर्थन को अक्सर सनातन धर्म के प्रति प्रतिबद्धता के रूप में देखा जाता है।

G20 के मंच पर प्रतीकों के जरिए सनातन सन्देश!

जी20 मंच विश्व नेताओं के लिए एक साथ आने और सबसे गंभीर वैश्विक चुनौतियों पर चर्चा करने का एक अनूठा अवसर है। यह दुनिया को आशा और सहयोग का संदेश भेजने का भी मौका है।

G20 मंच के माध्यम से एक सनातन शाश्वत संदेश भेजने के लिए प्रतीकों का उपयोग किया गया है:

G20 का लोगो अपने आप में वैश्विक सहयोग और एकजुटता का एक शक्तिशाली प्रतीक है। 20 इंटरलॉकिंग सर्कल उन 20 देशों का प्रतिनिधित्व करते हैं जो G20 बनाते हैं, और सर्कल की इंटरलॉकिंग प्रकृति वैश्विक अर्थव्यवस्था के अंतर्संबंध का प्रतीक है।

G20 शिखर सम्मेलन स्थल को अक्सर इसके प्रतीकात्मक महत्व के लिए भी चुना जाता है। उदाहरण के लिए, 2018 जी20 शिखर सम्मेलन ब्यूनस आयर्स, अर्जेंटीना में आयोजित किया गया था, जो प्रतिष्ठित गुलाबी राष्ट्रपति महल कासा रोसाडा का घर है। कासा रोसाडा अर्जेंटीना के लोकतंत्र और लचीलेपन का प्रतीक है, और जी20 शिखर सम्मेलन स्थल के रूप में इसके उपयोग ने दुनिया को आशा और आशावाद का संदेश भेजा है।

G20 शिखर सम्मेलन की थीम प्रतीकात्मक संदेश भेजने का एक और तरीका है। उदाहरण के लिए, 2023 G20 शिखर सम्मेलन का विषय "एक साथ पुनर्प्राप्त करें, मजबूत होकर पुनर्प्राप्त करें" है। यह थीम कोविड-19 महामारी पर काबू पाने और अधिक लचीला और टिकाऊ भविष्य बनाने के लिए मिलकर काम करने की वैश्विक प्रतिबद्धता को दर्शाती है।

G20 मंच के माध्यम से एक शाश्वत संदेश भेजने के लिए प्रतीकों के अलावा उद्धरणों का भी उपयोग किया जा सकता है। यहां कुछ उद्धरण दिए गए हैं जिनका उपयोग आशा, सहयोग और लचीलेपन का संदेश भेजने के लिए किया जा सकता है:

"हम सभी इसमें एक साथ हैं।" यह उद्धरण दुनिया के अंतर्संबंध और वैश्विक चुनौतियों को हल करने के लिए वैश्विक सहयोग की आवश्यकता पर जोर देता है।

"उठता हुआ ज्वार सभी नावों को ऊपर उठा देता है।" यह उद्धरण सभी के लिए अधिक समृद्ध और न्यायसंगत दुनिया बनाने के लिए मिलकर काम करने के महत्व पर प्रकाश डालता है।

"हम अलग होने की तुलना में एक साथ अधिक मजबूत हैं।" यह उद्धरण चुनौतियों पर काबू पाने में एकता और सहयोग की शक्ति पर जोर देता है।

प्रतीकों और उद्धरणों का उपयोग करके, G20 दुनिया को आशा, सहयोग और लचीलेपन का एक शक्तिशाली संदेश भेज सकता है। यह संदेश आज की दुनिया में विशेष रूप से महत्वपूर्ण है, जो कई जटिल और परस्पर जुड़ी चुनौतियों का सामना कर रही है।

मोदी ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म- ट्विटर पर नटराज प्रतिमा के बारे में एक पोस्ट साझा करते हुए कहा, “भारत मंडपम में भव्य नटराज प्रतिमा हमारे समृद्ध इतिहास और संस्कृति के पहलुओं को जीवंत करती है। जैसे ही दुनिया जी20 शिखर सम्मेलन के लिए एकत्रित होगी, यह भारत की सदियों पुरानी कलात्मकता और परंपराओं के प्रमाण के रूप में खड़ा होगा।"

लगभग 20 टन वजनी यह भव्य प्रतिमा भगवान शिव का एक प्रतिष्ठित प्रतिनिधित्व है और इसका अत्यधिक कलात्मक, धार्मिक और आध्यात्मिक महत्व है। यह खोई हुई मोम तकनीक से बना है, जो तमिलनाडु के चोल काल की एक प्राचीन मूर्तिकला तकनीक है।

नटराज की योग मुद्रा: भारत में प्राचीन काल से ही शिव की पूजा की जाती रही है। आयोजन स्थल भारत मंडपम के सामने बना नटराज का यह स्वरूप शिव के आनंद तांडव का प्रतीक है। नटराज की मूर्ति में आपको भगवान शिव की नृत्य मुद्रा दिखाई देगी। शिव एक पैर से राक्षस को दबा रहे हैं, जिसका अर्थ बुराई का विनाश माना जाता है। शिव अपने नृत्य से सकारात्मक ऊर्जा के संचार का संदेश देते हैं। नटराज की मूर्ति दक्षिण भारत के कई मंदिरों

जैसे थिल्लई नटराज मंदिर, उमा महेश्वर मंदिर और बृहदेश्वर मंदिर में स्थापित मूर्तियों से प्रेरणा लेकर बनाई गई है। इन मंदिरों का निर्माण 9वीं और 11वीं शताब्दी के बीच चोल साम्राज्य में किया गया था।

जैसा कि संस्कृत नाम मंडपम् से स्पष्ट है। दक्षिण भारत में मंडपम का अर्थ मंदिर में गर्भगृह का अगला भाग होता है। 'भारत मंडपम' भगवान बसवेश्वर के 'अनुभव मंडपम' की अवधारणा से प्रेरित है, जो सार्वजनिक कार्यों के लिए एक मंडप हुआ करता था। सनातन का महिमामंडन करने वाला इसका डिज़ाइन 'शंख' के आकार से लिया गया है। सनातन में शंख का बहुत महत्व है। मंडपम की दीवारों पर सनातन संस्कृत की नक्काशी की गई है, जिसमें सूर्य शक्ति और पंच महाभूत आदि शामिल हैं। सूर्य हमारे प्रमुख देवता रहे हैं और 'पंच महाभूत' ब्रह्मांड के 5 मूल तत्वों, आकाश, वायु, अग्नि, जल और पृथ्वी का प्रतिनिधित्व करते हैं। जो सनातन संस्कृति का मूल आधार रहा है।

हम अपने **वेद और अन्य पुस्तकों में आतंकवाद और फिदायीन का समाधान** खोज सकते हैं। वेदों सहित सभी हिंदू शास्त्रों ने आत्महत्या या सामूहिक आत्महत्या को पाप ही नहीं कहा है, बल्कि इसे ईश्वर का अपमान भी बताया है। 'आत्मवत सर्वभूतेषु' सभी जीवों को अपनी आत्मा समझो। हर कंकड़ में शंकर का वास है, इसलिए हत्या को 'ब्रह्महत्या' माना गया है।

संसार में मुख्यतः दो प्रकार के धर्म हैं। एक कर्म प्रधान और दूसरा आस्था प्रधान। हिन्दू धर्म कर्म प्रधान है। अहिन्दू अर्थात अरूढ़िवादी धर्म आस्था प्रधान है। जैन, बौद्ध, सिक्ख ये तीनों ही सनातन के अंतर्गत हैं। इस्लाम, ईसाई धर्म, यहूदी धर्म, ये तीनों ही अहिन्दू धर्म के अंतर्गत हैं। हिन्दू धर्म लोगों को अपनी मान्यता के अनुसार भगवान या देवी-देवताओं को मानने और उनकी पूजा करने की पूरी आज़ादी देता है और अगर उनकी आस्था नहीं है तो उन्हें न मानने या पूजा न करने की स्वतंत्रता है। गैर-हिंदू धर्म में ऐसी कोई स्वतंत्रता नहीं है।

लोकतांत्रिक वैदिक काल के पतन के बाद राजशाही आई। **दुष्यंत के पुत्र भरत ने फिर लोकतंत्र लाया।** दुष्यंत के पुत्र भरत के 9 पुत्र हुए। उसने अपने पुत्रों को युवराज नहीं बनाया क्योंकि उनमें युवराज बनने का कोई गुण नहीं था। उन्होंने भरद्वाज भूमन्यु को अपने राज्य का युवराज बनाया, जो उनकी एक प्रजा थी, यहीं से लोकतंत्र की नींव पड़ी। वंशवादी शासन

प्रणाली समाप्त हो गई थी। वर्तमान समय में उसी भरत के भारत के शेरों की दहाड़ पूरे विश्व को सुनाई दे रही है। यह वैदिक नेतृत्व है

हमारे देश में प्राचीन काल से ही गौरवशाली लोकतान्त्रिक परंपरा रही है। वर्तमान संसदीय प्रणाली की भाँति प्राचीन काल में भी परिषदों का गठन किया जाता था। गणतंत्र या संघ की नीतियां इन परिषदों द्वारा शासित होती थी। कई जगहों पर सहमति बनाना जरूरी था। किसी भी मुद्दे पर निर्णय लेने से पहले सदस्यों के बीच खुली चर्चा होती। इस विषय पर पक्ष और विपक्ष में जोरदार बहस होती। इसके बाद ही सर्वसम्मति से फैसला सुनाया जाता। जब सभी में सहमति नहीं होती तो बहुमत से निर्णय लिया जाता, जिसे 'भुइसिक्किम' कहा गया। इसके लिए वोटिंग हुई थी।

"विश्व शांति वास्तव में हमारा अंतिम लक्ष्य है। *यह हमारे राष्ट्र के जीवन का मिशन रहा है और हमें इसे पूरा करना है।' विश्व को आध्यात्मिक स्तर पर शांति का पाठ पढ़ाना और संपूर्ण मानवता में एकता की भावना पैदा करना सदियों से हमारा वास्तविक राष्ट्रीय मिशन रहा है। लेकिन ये सब कब संभव होगा? केवल तभी जब हम अपने करोड़ों लोगों को एक साथ लाने और उन्हें अपने उत्कृष्ट सांस्कृतिक मूल्यों और उत्कृष्ट चरित्र से भरने और उस मिशन की उपलब्धि के लिए प्रेरित करने में सफल होते हैं।* - श्री गुरुजी (एमएस गोलवरकर)

वैदिक लोगों के लिए, जीवन ईश्वर है। कार्य करने के साथ-साथ आवश्यक नियम भी आवश्यक होते हैं। जीवन के चार पुरुषार्थ हैं- धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष। इसके लिए अनुशासन और कर्तव्य पालन जरूरी है। सनातन धर्म ने मनुष्य के प्रत्येक क्रियाकलाप को वैज्ञानिक विधान में बाँध रखा है। वैदिक प्रार्थना और ध्यान तथा देश की समाज सेवा भी हमारा धर्म है। अथर्ववेद में सुख-संपत्ति, आरोग्य, शत्रु नाश आदि अनेक मंत्रों का संग्रह है।

अरबिंदो ने चेतावनी दी थी कि अगर हम खुद को यूरोपीय बना लेते हैं, तो हम अपनी आध्यात्मिक क्षमता, अपनी बौद्धिक शक्ति, अपनी राष्ट्रीय लोच और आत्म-पुनर्जन्म की शक्ति को हमेशा के लिए खो देंगे। अरविंद ने देशवासियों से कहा कि आत्मा में ही सनातन शक्ति का वास होता है और आत्मशक्ति के संचार में 'मुश्किल' और 'असंभव' जैसे शब्द गायब हो जाएंगे।

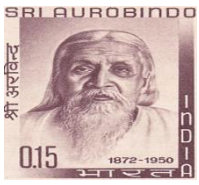

हजारों साल पुराना **शिव लिंग** दक्षिण अफ्रीका, बेबीलोन, काबा, आयरलैंड, वियतनाम, इंडोनेशिया में नंदी, ओबिलिस्क आदि में पाया गया है। बाइबिल में, मूसा ने सोने के बछड़े की पूजा करने से लोगों को मना किया था। ऑस्ट्रिया के इप्रिसेनवेल्ट में एक विशाल बर्फ का शिव लिंगम पाया जाता है। सनातन धर्म कभी अमेरिका में भी फला-फूला। रुटी गांव में मिला।

शिव सार्वभौम अचल आत्मा हैं, शिव की पूजा शक्ति की पूजा है। शिव अव्यक्त हैं, उनके हजारों रूप हैं। "श्री महाकाल लोक" में भारत की अनुपम सांस्कृतिक विरासत को जिस सौन्दर्य से प्रदर्शित किया गया है, वह अतुलनीय है। यहां शिव शांति और शांति के अवतार हैं। "श्री

महाकाल लोक" सनातन संस्कृति की पौराणिक कथाओं, इतिहास और गौरवशाली परंपरा का अद्भुत संगम और एक अनूठा नया रूप है। जिस भव्यता और सुंदरता से इसे प्रदर्शित किया गया है वह अद्भुत है।

भारत मंडपम: आयोजन स्थल का नाम भी संस्कृत नाम पर ही रखा गया है। दक्षिण भारत में मंदिर में गर्भगृह के आगे वाले भाग को मंडपम कहा जात है। 'भारत मंडपम' भगवान बसवेश्वर की 'अनुभव मंडपम' की अवधारणा से प्रेरित है, ये हर समारोहों के लिए मंडप हुआ करता था. इसकी अभिकल्पना 'शंख' के आकार से ली गई है। इसकी दीवारों भारतीय कला से डिजाइन की गई हैं। जिनमें 'सूर्य शक्ति', 'जीरो टू ISRO' और 'पंच महाभूत' को शामिल किया गया है. इस मंडपम में पंच महाभूत' ब्रह्मांड के 5 मूल तत्वों, आकाश, वायु, अग्नि, जल और पृथ्वी को दर्शाया गया है।

सनातन धर्म विश्व का प्राचीनतम धर्म है, इसका प्रमाण वेद हैं। वेद वैदिक काल की वाचिक परंपरा की अनुपम कृति है, जो पिछली 6-7 हजार ईस्वी से पीढ़ी-दर-पीढ़ी चली आ रही है। ध्यान और मोक्ष निर्वाण यानी जीरो जीरो ओ भारत यानी सनातन हिंदू धर्म की देन है।

कोणार्क चक्र: सात घोड़े यानी हफ्ते के सात दिन, 12 पहिये यानी साल के बारह महिने. जबकि इनका जोड़ा यानी 24 पहिए मतलब दिन का 24 घंटा. इसके अलावा 8 मोटी तीलियां 8 प्रहर यानी हर तीन घंटे के समय को दर्शाती हैं।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने प्रगति मैदान के भारत मंडपम में सभी G-20 नेताओं और प्रतिनिधियों का जिस स्थान पर हाथ मिलाकर स्वागत किया, वहां पीछे एक बड़ा-सा चक्र बना हुआ था। ये बेहद खास चक्र है, जिसका नाम 'कोणार्क चक्र' है। ओडिशा के कोणार्क चक्र

को 13वीं शताब्दी के दौरान राजा नरसिम्हादेव-प्रथम के शासनकाल में बनाया गया था। कोणार्क चक्र वही चक्र है, जो भारत के राष्ट्रीय ध्वज में नजर आता है। 24 तीलियों वाले कोणार्क चक्र को भारत के राष्ट्रीय ध्वज में रूपांतरित किया गया, जो भारत के प्राचीन ज्ञान, उन्नत सभ्यता और वास्तुशिल्प उत्कृष्टता का प्रतीक है। समय हमेशा एक सा नहीं रहता, ये बदलता रहता है। कोणार्क चक्र इस समय का ही प्रतीक है, जो कालचक्र के साथ-साथ प्रगति और परिवर्तन को दर्शाता है। 13वीं शताब्दी के आसपास बने कोणार्क के सूर्य मंदिर को जिस तरह से ब्रांड किया गया है, मानो सनातन को वैश्विक पहचान बनानी है। कोणार्क को भारत की एक प्रमुख सांस्कृतिक विरासत माना गया है लेकिन अब तक यह सुर्खियों में नहीं था। भारत मंडपम में स्थापित कोणार्क चक्र भारत के प्राचीन ज्ञान, उन्नत सभ्यता और स्थापत्य उत्कृष्टता का प्रतीक है। जिसे अब दुनिया जान सकेगी। यह मंदिर सूर्य के विशाल रथ की तरह बनाया गया है, जिसे सात घोड़े खींचते हैं। इस रथ में 12 जोड़ी पहिए हैं। यानी कुल 24 पहिये. हर पहिये पर बेहतरीन नक्काशी है। ये पहिये हमारी जीवनशैली से जुड़ी कई वैज्ञानिक बातें बताते हैं।

वसुधैव कुटुंबकम: भारत ने G20 आयोजन के लिए जो आदर्श वाक्य रखा वह वसुधैव कुटुंबकम है, जो महौपनिषद से लिया गया है। जिसका अर्थ है कि पूरा विश्व एक परिवार की तरह है। चीन ने शुरू से ही इसका विरोध किया. उनकी आपत्ति थी कि यह संस्कृत से लिया गया है. संस्कृत संयुक्त राष्ट्र की अधिकृत भाषा नहीं है इसलिए इसका प्रयोग गलत है। वसुधैव कुटुंबकम सनातन की दार्शनिक अवधारणा है जो सार्वभौमिक भाईचारे और सभी प्राणियों के परस्पर संबंध के विचार का पोषण करती है।

G 20 LOGO और संसद भवन में अंकित वसुधैव कुटुम्बकम की एक झलक: वसुधैव कुटुम्बकम सनातन धर्म का मूल संस्कार और विचारधारा है, जो महा उपनिषद सहित कई ग्रंथों में लिखा गया है। इसका अर्थ है- पृथ्वी परिवार है (वसुधैव कुटुम्बकम) पीएम @narendramodi जी ने G-20 के LOGO का अनावरण करते हुए कहा कि इसमें कमल का फूल भारत की पौराणिक विरासत, हमारी आस्था और हमारी बौद्धिकता को चित्रित कर रहा है. हमारे यहां अद्वैत का चिंतन जीव की एकता का दर्शन रहा

भारत सनातन 'विश्वगुरु' है, इसलिए वसुधैव कुटुम्बकम
वेदों की देन योग: विश्व को भारत की देन

भारत का नाम: G-20 शिखर सम्मेलन के देशों के साथ अपनी पहली बैठक में पीएम की मेज के सामने रोमन भाषा में भारत लिखकर संदेश दिया कि देश की वैश्विक पहचान सनातन से आया नाम भारत है।

हमारे देश में प्राचीन काल से ही गौरवशाली लोकतान्त्रिक परंपरा रही है। वर्तमान संसदीय प्रणाली की भाँति प्राचीन काल में भी परिषदों का गठन किया जाता था। गणतंत्र या संघ की नीतियां इन परिषदों द्वारा शासित होती थी। कई जगहों पर सहमति बनाना जरूरी था। किसी भी मुद्दे पर निर्णय लेने से पहले सदस्यों के बीच खुली चर्चा होती। इस विषय पर पक्ष और विपक्ष में जोरदार बहस होती। इसके बाद ही सर्वसम्मति से फैसला सुनाया जाता। जब सभी में सहमति नहीं होती तो बहुमत से निर्णय लिया जाता, जिसे 'भुइसिक्किम' कहा गया। इसके लिए वोटिंग हुई थी। Bharat Mandapam Cultural Corridor: बीते दिनों भारत ने जी20 की मेजबानी की, जिसका आयोजन राजधानी दिल्ली के भारत मंडपम में हुआ. यहां सांस्कृतिक मंत्रालय की ओर से कल्चर कॉरिडोर का आयोजन किया गया था. **इस कल्चर कॉरिडोर में तमाम देश के सांस्कृतिक चिन्ह, राजनीतिक निशानियां, देश की ऐतिहासिक धरोहरों से जुड़ी प्रदर्शनी लगाई गई थी**।

कोरिया की तरफ से हट, जापान की तरफ से उनकी राष्ट्रीय पोशाक, बांग्लादेश से मुजीबुर रहमान की मूर्ति, इंडोनेशिया की तरफ से उनका पोशाक, ब्राजील की तरफ से उनका पार्लियामेंट, रूस की ओर से उनका एथेनिक गाउन प्रदर्शनी में लगाए गए थे।

जो देश वहां पर आता, जिस देश के डेलिगेट्स वहां पर पहुंचते, उनके हिसाब से उनका वीडियो चला दिया जा रहा था। यह सब कुछ डिजिटल म्यूजियम रिमोट से कंट्रोल किया जा रहा था।

चार भारतीय बैंकों ने G20 प्रतिनिधियों के लिए समर्पित यूनाइटेड पेमेंट्स इंटरफ़ेस (UPI) ऐप लॉन्च किए हैं, अर्थात् SBI, एक्सिस, केनरा और ICICI बैंक ने 2,000 रुपये की डिजिटल मुद्रा के साथ, सांकेतिक रूप से जिसका उपयोग करके प्रतिनिधि QR कोड को स्कैन करके सामान खरीद सकते हैं।

भारत की ओर से गंगा नदी की झलक, गंगा आरती, योग, ऋषि मुनियों की तपस्या, हिमालयन रेंज और भारत के तमाम जंगल वीडियो में शामिल किए गए थे। उद्देश्य केवल यह था कि तमाम देश एक दूसरे को और बेहतर जाने एक दूसरे को बेहतर समझें। हम एक छत पर एक अर्थ के नीचे सभी एक हैं।

कल्चरल कॉरिडोर में भारत की तरफ से अष्टध्यायी, ऋग्वेद, भीम बेटका की पेंटिंग, योगा, कुंभ, वैदिक चांटिंग, हिमालय, गंगा, इंडियन ओसियन, रॉयल बंगाल टाइगर अलग-अलग

श्रेणियों में लगाए जाएंगे. दिल्ली में 9 और 10 सितंबर 2023 को G 20 सम्मेलन संपन्न हुआ। जी20 सम्मेलन का मुख्य आयोजन स्थल 'भारत मंडपम' में कल्चरल कॉरिडोर बनाया गया था।

लोकतंत्र की दीवार (वॉल ऑफ डेमोक्रेसी):

वॉल ऑफ डेमोक्रेसी में 5 हजार साल के लोकतांत्रिक इतिहास का वर्णन किया गया है। यहां आपको मुगल काल या सल्तनत काल की कहानियां नहीं मिलेंगी। वॉल ऑफ डेमोक्रेसी में विदेशी मेहमान भारत के 5 हजार साल के लोकतांत्रिक इतिहास को देखेंगे, जिसमें मुगल काल से लेकर अकबर तक का इतिहास शामिल है.

इनमें भारतीय संविधान, आधुनिक भारत में चुनाव, भारत - लोकतंत्र की जननी, सिंधु घाटी सभ्यता, वैदिक काल, रामायण, महाभारत, महाजनपद और गणतंत्र, जैन धर्म, बौद्ध धर्म, कौटिल्य और अर्थशास्त्र, मेगस्थनीज, सम्राट अशोक, फाह्यान, पाल साम्राज्य शामिल हैं। . खलीमपुर ताम्रपत्र, संघ, तमिलनाडु का प्राचीन शहर, उथिरामेरूर, लोकतंत्र का दार्शनिक आधार, कृष्णदेव राय, अकबर, छत्रपति शिवाजी, स्थानीय स्वशासन को शामिल किया गया है।

G 20 देशों के राष्ट्रपति या प्रधानमंत्री के स्वागत के लिए भारत मंडपम में स्वागत द्वार पर प्रदर्शन कर रही है **गीता AI ;** वह भी शुद्ध भारतीय परंपरा के अनुसार। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस टूल हमारे प्राचीन धार्मिक ग्रंथ गीता की शिक्षाओं के आधार पर हर प्रश्न का उत्तर देता है। अगर आप गीता के किसी श्लोक का अर्थ जानना चाहते हैं तो उसका उत्तर भी यही होगा।

G 20 देशों के राष्ट्रपति या प्रधानमंत्री का स्वागत भारत मंडपम में गीता AI कर रही है जो आपके हर सवाल का जवाब देगी। हर सवाल का हमारे सनातन काल से चली आ रहे धार्मिक ग्रंथ गीता की शिक्षाओं के आधार पर आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस टूल जवाब देता है।

नृत्य संगीत: G20 के मेहमानों के स्वागत के लिए आयोजित डांस कॉन्सर्ट में 'वसुधैव

कुटुंबकम' थीम सॉन्ग पर परफॉर्मेंस में सनातन की झलक देखने को मिली। शास्त्रीय संगीत वाद्ययंत्रों के साथ-साथ प्राचीन वैदिक संगीत वाद्ययंत्रों, जनजातीय संगीत वाद्ययंत्रों और लोक वाद्ययंत्रों का संयोजन था। देश भर से भाग लेने वाले कलाकारों और संगीतकारों ने अपनी पारंपरिक वेशभूषा में

संगीत वाद्ययंत्र बजाया। कार्यक्रम स्थल पर सुरबहार, जलतरंग, नलतरंग, विचित्र वीणा, रुद्र वीणा, सरस्वती वीणा, धंगाली, सुंदरी, भपंग और दिलरुबा जैसे कई संगीत वाद्ययंत्र प्रदर्शित किए गए जो भारतीय संस्कृति और सभ्यता से परिपूर्ण थे।

महर्षि: भारत की जी-20 में बाजरे के लिए अनुसंधान सहयोग को मजबूत करने के मकसद से मोटे अनाज से जुड़ी पहल को महर्षि (मिलेट्स ऐंड अदर एनशिएंट ग्रेन्स इंटरनैशनल रिसर्च इनिशिएटिव) का नाम दिया है। सनातन संस्कृति सभ्यता में सांसारिक मोहमाया को त्याग कर तपस्या में लीन लोगों को महर्षि की संज्ञा दी गई है।

घेरंड संहिता की 32 योग मुद्राएं: भारत मंडपम में प्रवेश करते ही दीवारों पर अंकित विभिन्न योग मुद्राएं देखने को मिलती हैं। दीवारों पर 32 अनिवार्य योग आसन प्रदर्शित किए गए हैं जो घेरंड संहिता के 17वीं शताब्दी के उत्तरार्ध के पाठ से लिए गए हैं. संहिता कहती है कि इस जगत में जितने भी प्राणी हैं, उन सभी की सामान्य शारीरिक स्थिति को आधार बनाकर एक-एक आसन की खोज की गई है।

G20 Summit Delhi: G20 शिखर सम्मेलन (G20 Summit) में बिहार (Bihar) की नालंदा यूनिवर्सिटी (Nalanda University) की झलक दिखाई दी. बल्कि, सम्मेलन (Summit) में पहुंचे विदेशी मेहमानों (foreign guests) को देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी (Prime Minister Narendra Modi) ने इस यूनिवर्सिटी (Nalanda University) के बारे में कई महत्वपूर्ण जानकारियां (important information) भी दीं

मध्य प्रदेश के रायसेन जिले में एक ऐसी जगह है जिसे दुनिया में मानव विकास का आरंभिक स्थान माना जाता है। यहां गुफाओं में बनाए गए चित्र हज़ारों वर्ष पहले का जीवन

दर्शाते हैं. यहां बनाए गए चित्र मुख्यतः नृत्य, संगीत, आखेट, घोड़ों और हाथियों की सवारी, आभूषणों को सजाने तथा शहद जमा करने के बारे में हैं

G 20 के कल्चर कॉरिडोर में रखने के लिए ऋग्वेद की सबसे पुरानी पांडुलिपि मंगवाई गई. देश-विदेश से आए डिप्लोमेट इसे देख और इस बारे में समझ सकेंगे. साल 2007 में यूनेस्को ने ऋग्वेद को वर्ल्ड रजिस्टर में शामिल किया।.

G 20 सम्मेलन से पहले आयोजित होने वाली 'सांस्कृतिक गलियारा' प्रदर्शनी में भंडारकर ओरिएंटल रिसर्च इंस्टीट्यूट (बीओआरआई), पुणे से ऋग्वेद की एक पांडुलिपि दिखाई जाएगी। पांच शताब्दियों पहले शारदा लिपि में लिखी गई ऋग्वेद की ऋचाएं कश्मीरी बर्च-छाल पर उकेरी गई हैं। इन्हें 1875 में जॉर्ज ब्यूहलर द्वारा कश्मीर से प्राप्त की गई थी।

पूणे स्थित बीओआरआई कार्यकारी बोर्ड के अध्यक्ष भूपाल पटवर्धन ने कहा, "यह ऋग्वेद

सबसे पुराना जीवित पांडुलिपियां है। यह मनुष्य और समग्र विश्व के कल्याण पर आधारित दस्तावेज है। यह विचार जी-20 शिखर सम्मेलन के आदर्श वाक्य 'वसुधैव कुटुंबकम' (दुनिया एक परिवार है) के अनुरूप है। ऋग्वेद में राजा को नियंत्रित करने वाली दो संस्थाओं के रूप में 'सभा', विशेषज्ञों की एक समिति और 'समिति', लोगों की एक सभा का उल्लेख है। इस प्रकार, यह लोकतंत्र के पहले प्रतीक के रूप में लोगों के सामने आता है।"

राष्ट्रीय पांडुलिपि मिशन के निदेशक अनिर्बान दास ने हाल ही में प्रदर्शनी आयोजकों की ओर से बीओआरआई, पुणे में रखी ऋग्वेद की प्राचीन पांडुलिपि को स्वीकार किया। प्रदर्शनी के बाद पांडुलिपि विधिवत बीओआरआई को वापस कर दी।

सनातन धर्म का प्रत्येक कार्य सैद्धांतिक एवं सिद्ध है।आइए वृक्ष लगाए विश्व पृथ्वी दिवस को हरित क्रांति से स्वच्छ सुंदर एवं स्वस्थ प्रकृति के निर्माण में अपना योगदान दें: पी एम मोदी

गणतंत्र शब्द का प्रयोग ऋग्वेद में चालीस बार, अथर्ववेद में नौ बार और ब्राह्मण ग्रंथों में कई बार हुआ है: तृणि राजना विदे परी विश्वानि भुष्ठ: ॥-ऋग्वेद मन-3 सू-38-6

अर्थ: भगवान उपदेश देते हैं कि तीन सभाओं को नियुक्त करके। विद्यार्य सभा, धर्मर्य सभा, राजर्य सभा, राजा और प्रजा के सुख तथा विज्ञान की वृद्धि के सम्बन्ध में सब ओर से अनेक प्रकार के मनुष्यों को शिक्षित करना चाहिए। स्वतंत्रता, धर्म, अच्छी शिक्षा और धन से सुशोभित करें।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने जी-20 शिखर सम्मेलन का समापन 'स्वस्ति अस्तु विश्व' के संदेश के साथ किया। प्रधानमंत्री मोदी ने अपने समापन संबोधन में कहा, *'मैं जी-20 शिखर सम्मेलन की समाप्ति की घोषणा करता हूं। उम्मीद है कि एक पृथ्वी, एक परिवार और एक भविष्य का रोडमैप आनंदमय होगा; धन्यवाद!'*

भारत में आध्यात्मिक और दार्शनिक विचारों का एक लंबा और समृद्ध इतिहास है, और इसकी सनातन धर्म परंपरा ने देश की संस्कृति और मूल्यों को आकार देने में प्रमुख भूमिका निभाई है। सनातन धर्म, जिसे हिंदू धर्म के नाम से भी जाना जाता है, एक विविध और जटिल परंपरा है जिसमें मान्यताओं और प्रथाओं की एक विस्तृत श्रृंखला शामिल है। हालाँकि, इसके मूल में, सनातन धर्म वसुधैव कुटुंबकम के सिद्धांत पर आधारित है, जिसका अर्थ है "दुनिया एक परिवार है।"

यह सिद्धांत उन कई तरीकों से परिलक्षित होता है जिनसे भारत ने पूरे इतिहास में विश्व कल्याण में योगदान दिया है। उदाहरण के लिए, भारत अहिंसा या अपरिग्रह की अवधारणा विकसित करने वाली पहली सभ्यताओं में से एक था। इस सिद्धांत को महात्मा गांधी और मार्टिन लूथर किंग जूनियर सहित कई विश्व नेताओं और कार्यकर्ताओं ने सामाजिक और राजनीतिक परिवर्तन के एक शक्तिशाली उपकरण के रूप में अपनाया है।

सनातन धर्म का एक अन्य महत्वपूर्ण सिद्धांत धर्म है, जिसे किसी के कर्तव्य या सही आचरण के रूप में समझा जा सकता है। यह सिद्धांत सिखाता है कि हम सभी की जिम्मेदारी है कि हम ऐसे तरीके से जिएं जो हमारे और दूसरों के लिए फायदेमंद हो। यह उन कई तरीकों से परिलक्षित होता है जिनमें भारतीयों ने विज्ञान, चिकित्सा, शिक्षा और कला के क्षेत्र में योगदान दिया है।

उदाहरण के लिए, भारतीय गणितज्ञों ने कैलकुलस और बीजगणित के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया। भारतीय चिकित्सकों ने नई शल्य चिकित्सा तकनीकें और हर्बल उपचार विकसित किए जिनका उपयोग आज भी किया जाता है। भारतीय शिक्षकों ने दुनिया के पहले विश्वविद्यालयों का विकास किया, और भारतीय कलाकारों ने कला के अब तक के सबसे सुंदर और प्रेरक कार्यों में से कुछ का निर्माण किया।

अपने भौतिक योगदान के अलावा, भारत ने विश्व कल्याण में महत्वपूर्ण आध्यात्मिक और दार्शनिक योगदान भी दिया है। उदाहरण के लिए, सनातन धर्म परंपरा सिखाती है कि सभी प्राणी आपस में जुड़े हुए हैं और हमें सभी प्राणियों के साथ दया का व्यवहार करना चाहिए। इस सिद्धांत ने दुनिया भर में कई लोगों को पर्यावरण संरक्षण और पशु कल्याण के लिए काम करने के लिए प्रेरित किया है।

सनातन धर्म के माध्यम से विश्व कल्याण

"सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः, सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चित् दुःखभाग भवेत्" (सभी सुखी हों, सभी रोगमुक्त हों, सभी मंगल देखें, किसी को कष्ट न हो) - यह हिंदू प्रार्थना विश्व कल्याण की कामना करती है ।

"धर्मो रक्षति रक्षितः" (धर्म उन लोगों की रक्षा करता है जो इसकी रक्षा करते हैं) - यह हिंदू सिद्धांत सिखाता है कि हमें अपने जीवन में धर्म, या धार्मिकता को बनाए रखने का प्रयास करना चाहिए, और ऐसा करने से अंततः हमारा अपना कल्याण होगा और कल्याण होगा। दूसरों का होना.

"लोकः समस्तः सुखिनो भवन्तु"(सभी प्राणी सुखी हों)-यह हिंदू मंत्र सभी प्राणियों के कल्याण के लिए एक सार्वभौमिक प्रार्थना है, चाहे उनका धर्म, जाति या राष्ट्रीयता कुछ भी हो।

* वसुधैव कुटुंबकम की हिंदू अवधारणा है, जिसका अर्थ है "दुनिया एक परिवार है"।

* अहिंसा की हिंदू प्रथा, जिसका अर्थ है "अहिंसा" या "चोट न पहुँचाना"। यह सिद्धांत इस मान्यता पर आधारित है कि सभी जीवित प्राणियों में आत्मा (आत्मान) है और वे सर्वोच्च आत्मा (ब्राह्मण) का हिस्सा हैं। इसलिए किसी भी जीव को नुकसान पहुंचाना स्वयं को और परमात्मा को नुकसान पहुंचाना है। अहिंसा न केवल हिंसा से बचने का एक नकारात्मक आदेश है, बल्कि दया, प्रेम और सेवा के साथ कार्य करने का एक सकारात्मक कर्तव्य भी है। अहिंसा को सर्वोच्च गुण और धर्म की नींव माना जाता है। कई हिंदू संतों, संतों और नेताओं, जैसे कि महात्मा गांधी, ने सामाजिक न्याय,

* मानवाधिकार और विश्व शांति प्राप्त करने के तरीके के रूप में अहिंसा की वकालत की है और इसका अभ्यास किया है।

*लोक संग्रह की हिंदू अवधारणा है, जिसका अर्थ है "विश्व का कल्याण" या "विश्व व्यवस्था को कायम रखना"। यह विचार भगवद गीता में पाया जाता है, जहां भगवान कृष्ण अर्जुन को दुनिया की खातिर एक योद्धा के रूप में अपना कर्तव्य (स्वधर्म) निभाने का निर्देश देते हैं, भले ही इसमें अपने ही रिश्तेदारों के खिलाफ लड़ना शामिल हो। कृष्ण समझाते हैं कि अपना कर्तव्य निभाने से, अर्जुन को कोई पाप नहीं लगेगा, बल्कि वह धर्म के रखरखाव में योगदान देगा, जो कि ब्रह्मांड का नियम है जो ब्रह्मांड को बनाए रखता है। लोकसंग्रह का तात्पर्य यह भी है कि व्यक्ति को दूसरों के लिए एक आदर्श और नेता के रूप में कार्य करना चाहिए, उन्हें धर्म के मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करना चाहिए।

* शिक्षा: सनातन धर्म में जाति, पंथ या लिंग की परवाह किए बिना सभी के लिए शिक्षा का

समर्थन करने का एक लंबा इतिहास है। कई प्राचीन हिंदू विश्वविद्यालय, जैसे कि नालंदा और तक्षशिला, शिक्षण और विद्वता में अपनी उत्कृष्टता के लिए प्रसिद्ध थे। आधुनिक समय में, कई हिंदू संगठन और व्यक्ति दुनिया भर में शैक्षिक पहल का समर्थन करना जारी रखते हैं।

* स्वास्थ्य देखभाल: सनातन धर्म स्वास्थ्य देखभाल और कल्याण के महत्व पर भी जोर देता है। कई हिंदू अस्पताल और क्लीनिक गरीबों और जरूरतमंदों को मुफ्त या रियायती दर पर देखभाल प्रदान करते हैं। हिंदू संगठन विभिन्न सार्वजनिक स्वास्थ्य पहलों में भी शामिल हैं, जैसे टीकाकरण अभियान और एड्स रोकथाम कार्यक्रम।

* पर्यावरण संरक्षण: सनातन धर्म सिखाता है कि सारी सृष्टि पवित्र है और इसका सम्मान किया जाना चाहिए। हिंदू प्रकृति के साथ सद्भाव से रहने और पर्यावरण को नुकसान पहुंचाने वाले किसी भी कार्य से बचने में विश्वास करते हैं। कई हिंदू संगठन और व्यक्ति पर्यावरण

संरक्षण प्रयासों में सक्रिय हैं, जैसे पेड़ लगाना, नदियों और समुद्र तटों की सफाई करना और उनके कार्बन पदचिह्न को कम करना।

*संवाद और सहयोग: सनातन धर्म एक सहिष्णु और समावेशी धर्म है जो अन्य धर्मों के साथ संवाद और सहयोग को महत्व देता है। हिंदुओं का मानना है कि सभी धर्मों में सत्य का एक समान सार है, और हम अपनी आध्यात्मिक यात्राओं में एक-दूसरे से सीख सकते हैं और उनका समर्थन कर सकते हैं। हिंदू संगठन प्रार्थना सेवाओं, शांति सम्मेलनों और सामाजिक सेवा परियोजनाओं जैसी विभिन्न अंतरधार्मिक पहलों में शामिल हैं।

* योग: योग एक मन-शरीर अभ्यास है जिसकी उत्पत्ति 5,000 साल पहले भारत में हुई थी। अब दुनिया भर में लाखों लोग इसके कई स्वास्थ्य लाभों के लिए इसका अभ्यास करते हैं, जिनमें तनाव में कमी, लचीलेपन और ताकत में सुधार और आत्म-जागरूकता में वृद्धि शामिल है।

*ध्यान: ध्यान एक और प्राचीन भारतीय अभ्यास है जो हाल के वर्षों में दुनिया भर में लोकप्रिय हो गया है। यह देखा गया है कि ध्यान से कई स्वास्थ्य लाभ होते हैं, जिनमें तनाव कम करना, नींद में सुधार और एकाग्रता बढ़ाना शामिल है।

आयुर्वेद: आयुर्वेद एक पारंपरिक भारतीय चिकित्सा प्रणाली है जो बीमारी को रोकने और समग्र स्वास्थ्य और कल्याण को बढ़ावा देने पर केंद्रित है। स्वास्थ्य और उपचार के प्रति इसके समग्र दृष्टिकोण के लिए अब इसे दुनिया भर के लोगों द्वारा अभ्यास किया जाता है।

* शाकाहारवाद: शाकाहार एक आहार पद्धति है जिसकी उत्पत्ति 2,500 वर्ष पहले भारत में हुई थी। नैतिक, पर्यावरणीय और स्वास्थ्य कारणों से अब दुनिया भर में लाखों लोग इसका अभ्यास करते हैं।

भारत ने किस प्रकार सनातन धर्म के माध्यम से विश्व कल्याण का मार्ग दिखाया है, ये उसके कुछ उदाहरण मात्र हैं। भारत की समृद्ध आध्यात्मिक और दार्शनिक परंपरा में हर किसी को देने के लिए कुछ न कुछ है, चाहे उनकी पृष्ठभूमि या मान्यता कुछ भी हो।

* वेदांत और दर्शन: भारतीय दर्शन, विशेष रूप से वेदांत, अस्तित्व, स्वयं और वास्तविकता के गहन प्रश्नों की पड़ताल करता है। स्वामी शिवानंद ने कहा, "वेदांत वास्तविकता का विज्ञान है। यह अस्तित्व की एकता का विज्ञान है, मनुष्य की दिव्यता का विज्ञान है, ब्रह्मांड की दिव्यता का विज्ञान है।"

पर्यावरण संरक्षण: भारत की आध्यात्मिक परंपराएँ पर्यावरण की पवित्रता और टिकाऊ जीवन की आवश्यकता पर भी जोर देती हैं। ऐसे ही मूल्यों से प्रेरित चिपको आंदोलन ने पर्यावरण संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। प्रमुख पर्यावरणविद् सुंदरलाल बहुगुणा ने कहा, "पारिस्थितिकी स्थायी अर्थव्यवस्था है।"

महात्मा गांधी, जो सनातन धर्म के अनुयायी थे, ने कहा था: *"मेरा मानना है कि भारत ने जो सभ्यता विकसित की है, उसे दुनिया में हराया नहीं जा सकता। हमारे पूर्वजों द्वारा बोए गए बीजों की बराबरी कोई नहीं कर सकता। रोम गया; ग्रीस का भी यही हश्र हुआ; फिरौन की शक्ति टूट गई; जापान पश्चिमीकृत हो गया है; चीन के बारे में कुछ नहीं कहा जा सकता; लेकिन भारत अभी भी, किसी न किसी तरह, नींव पर मजबूत है।"*

"सनातन धर्म का सार संपूर्ण ब्रह्मांड का कल्याण है।" - स्वामी शिवानंद, एक प्रमुख हिंदू आध्यात्मिक शिक्षक।

"सनातन धर्म का उद्देश्य दुनिया को हिंदू धर्म में परिवर्तित करना नहीं है, बल्कि दुनिया को सद्भाव से रहना और अपनी आध्यात्मिक क्षमता का एहसास करना सिखाना है" - सतगुरु सिवाया सुब्रमुनियास्वामी, एक हिंदू गुरु और शिक्षक।

सनातन धर्म के एक अन्य प्रमुख प्रतिपादक, स्वामी विवेकानन्द ने कहा था: "हिंदू धर्म किसी निश्चित सिद्धांत या हठधर्मिता पर विश्वास करने के लिए संघर्ष और प्रयासों में शामिल नहीं है, बल्कि इसे साकार करने में है - विश्वास करने में नहीं, बल्कि अस्तित्व और बनने में।..... पूरा विश्व एक ही वृक्ष है; विभिन्न देश फूलों के समूह की तरह हैं और जड़ भगवान है; जैसे सभी फूल पौधे से जुड़े हुए हैं.... दूसरों की ख़ुशी ही हमारी अपनी ख़ुशी है. दूसरों का दुःख हमारा अपना दुःख है. दूसरों का कल्याण ही हमारा अपना कल्याण है। यही सनातन धर्म का सार है,"

एक दूरदर्शी दार्शनिक और योगी, श्री अरबिंदो ने कहा: "दुनिया को भारत के आध्यात्मिक उपहार को यूरोप और अमेरिका के कई प्रतिष्ठित विचारकों ने पहले ही मान्यता दे दी है; लेकिन अभी भी इसका पूरा दायरा, अर्थ और उद्देश्य सामने आना बाकी है। यह एक नई विश्व-व्यवस्था से कम नहीं है जिसे वह मानवता के लिए अपनी आंतरिक भावना से विकसित करना चाहती है।"

"योग स्वयं की, स्वयं के माध्यम से, स्वयं तक की यात्रा है।" - भगवत गीता

"आत्मा न तो जन्मती है और न ही मरती है।" - भगवत गीता

"सत्य एक है, बुद्धिमान लोग उसे अनेक नामों से पुकारते हैं।" – ऋग्वेद

"दुनिया एक परिवार है।" - संस्कृत कहावत

"सभी प्राणी सुखी हों और कष्टों से मुक्त हों।" - बौद्ध प्रार्थना

"सभी प्राणी एक ही दिव्य चेतना की अभिव्यक्तियाँ हैं।" (भगवद गीता 6.29)

"विश्व एक परिवार है।" (वसुधैव कुटुंबकम)

"धर्म विश्व व्यवस्था की नींव है।" (मनु स्मृति 1.108)

"दुनिया के कल्याण को बढ़ावा देना सभी लोगों का कर्तव्य है।" (महाभारत 12.110.32)

"शांति सर्वोच्च अच्छाई है।" (अथर्ववेद 19.18.1)

ये उद्धरण हमें याद दिलाते हैं कि हम सभी एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं और हमारी जिम्मेदारी है कि हम इस तरह से जिएं जो हमारे और दूसरों के लिए फायदेमंद हो। यह वसुधैव कुटुंबकम का सनातन मंत्र है, और यह एक संदेश है जिसे भारत ने सदियों से दुनिया के साथ साझा किया है।

सनातन धर्म की अवधारणाएँ और उद्धरण किसी विश्व सरकार का स्पष्ट समर्थन नहीं हैं, लेकिन ये एक दार्शनिक और नैतिक दृष्टिकोण को दर्शाते हैं जो वैश्विक एकता, अहिंसा और न्याय को बढ़ावा देता है। यह ध्यान रखना आवश्यक है कि इन सिद्धांतों की व्याख्या और कार्यान्वयन विभिन्न तरीकों से किया गया है, और समकालीन वैश्विक शासन के लिए उनकी प्रासंगिकता किसी के दृष्टिकोण के आधार पर भिन्न हो सकती है।

अफगानिस्तान, यूक्रेन और गाजा पट्टी से लोग भाग रहे हैं। संकट की इस घड़ी में हर देश और परेशान व्यक्ति भारत और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की ओर आशा भरी नजरों से देख रहा है। दुनिया की सबसे लोकप्रिय राजनीतिक हस्तियों में शामिल नरेंद्र मोदी जी का नाम उनके व्यक्तित्व, कार्यशैली, दृढ़निश्चय और क्षमता के कारण न सिर्फ भारत में, बल्कि विश्व पटल पर गूंज रहा है। यही कारण है कि अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर होने वाले सर्वेक्षणों में नरेंद्र मोदी को दुनिया के सबसे शक्तिशाली और लोकप्रिय व्यक्ति के रूप में शुमार किया जा रहा है। "वैश्विक नेता के रूप में पी एम मोदी" इसकी समीक्षा विस्तार से अगले अध्याय में प्रस्तुत है।

वैश्विक नेता पीएम मोदी

अक्सर संघर्षों और राजनीतिक तनावों से जूझती दुनिया में, विश्व नेताओं के लिए किसी एक व्यक्ति की प्रशंसा में एकजुट होना एक दुर्लभ घटना है। भारत के प्रधान मंत्री, नरेंद्र मोदी, एक वैश्विक शांतिदूत के रूप में उभरने और दुनिया भर के नेताओं से प्रशंसा अर्जित करने में सफल रहे हैं।

दुनिया के सबसे ताकतवर देश अमेरिका के प्रेसीडेंट बाइडेन द्वारा नरेंद्र मोदी से ऑटोग्राफ मांगना, ऑस्ट्रेलिया के पी एम द्वारा उन्हें बॉस कहना और पापुआ न्यू गिनी के पीएम का पी एम मोदी के कदमों के समक्ष झुक कर उन्हें गुरु कहना दर्शाता है कि भारत के प्रधानमंत्री विश्व शांति के लिए विश्व कल्याण के लिए विश्व को नेतृत्व प्रदान कर सकते हैं।

"हमें अपने समय की चुनौतियों से निपटने के लिए बहुपक्षवाद और अंतर्राष्ट्रीय सहयोग को मजबूत करने की आवश्यकता है। कोई भी देश अकेले इन समस्याओं का समाधान नहीं कर सकता है।" -पीएम मोदी

मोदी के वैश्विक नेतृत्व को विश्व के अन्य नेताओं ने भी मान्यता दी है। अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडेन, जापानी प्रधान मंत्री फुमियो किशिदा और ऑस्ट्रेलियाई प्रधान मंत्री एंथनी अल्बानीज़ ने उनकी प्रशंसा की है। उन्हें कई देशों द्वारा सर्वोच्च नागरिक सम्मान से भी सम्मानित किया गया है।

"पीएम मोदी एक मजबूत और दूरदर्शी नेता हैं। वह भारत-प्रशांत क्षेत्र और उससे परे शांति और समृद्धि को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।" - अमेरिकी राष्ट्रपति जो बिडेन पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति बराक ओबामा ने एक बार टिप्पणी की थी, *"विश्व मंच पर भारत का उदय 21वीं सदी की परिभाषित विशेषताओं में से एक है, और प्रधान मंत्री मोदी वैश्विक मंच पर एक*

गतिशील और महत्वपूर्ण नेता के रूप में उभरे हैं।" मोदी के वैश्विक नेतृत्व को जनता ने भी स्वीकार किया है। मॉर्निंग कंसल्ट के एक हालिया सर्वेक्षण में पाया गया कि 76% की अप्रूवल रेटिंग के साथ मोदी दुनिया के सबसे लोकप्रिय नेता हैं। प्रतिष्ठित ब्रिटिश पत्रिका, द इकोनॉमिस्ट ने पीएम मोदी को *"दुनिया का सबसे लोकप्रिय नेता" कहा और राजनीतिक कथानक को पकड़ने और जनता से अपील करने की उनकी क्षमता की प्रशंसा की।*

भारत में सबसे लोकप्रिय और प्रभावशाली हस्तियों में से एक, अभिनेत्री आलिया भट्ट ने कहा कि *पीएम मोदी के शब्द कि कोई भी कभी हारा नहीं है, केवल विजेता और सीखने वाला है, उन्हें पसंद आया और उन्हें अपने जीवन और करियर में चुनौतियों से उबरने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि जब पीएम मोदी ने 2023 में एचटी लीडरशिप समिट में अपना भाषण दिया तो वह आश्चर्यचकित रह गईं।*

पीएम मोदी ने **वर्ल्ड फूड इंडिया 2023** कार्यक्रम में भारत की खाद्य विविधता और पाक उत्कृष्टता का भी प्रदर्शन किया, जहां उन्होंने भारत मंडपम का उद्घाटन किया, एक मंडप जिसने भारत के 28 राज्यों और आठ केंद्र शासित प्रदेशों के समृद्ध और विविध व्यंजनों को प्रदर्शित किया।

मोदी का वैश्विक नेतृत्व भारत के लिए वरदान है। उन्होंने वैश्विक मंच पर भारत का मान बढ़ाया है और अन्य देशों के साथ भारत के रिश्ते मजबूत किये हैं। वह विदेशी निवेश को आकर्षित करने और भारत को व्यापार और निवेश गंतव्य के रूप में बढ़ावा देने में भी सफल रहे हैं।

विश्व मित्र मोदी एक वैश्विक नेता हैं जिन्होंने भारत की स्थिति और भूमिका को "विश्व मित्र" (दुनिया का मित्र) और "विश्व गुरू" (विश्व शिक्षक) के रूप में स्थापित किया है। उन्होंने अपनी सक्रिय कूटनीति और पहुंच के माध्यम से विभिन्न देशों और क्षेत्रों के साथ भारत के संबंधों को बढ़ाया है। उन्होंने कई वैश्विक पहलों और प्लेटफार्मों की शुरुआत और नेतृत्व भी किया है, जैसे कि अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन, आपदा प्रतिरोधी बुनियादी ढांचे के लिए गठबंधन, मिशन LiFE, आदि। उन्होंने संयुक्त राष्ट्र जैसे विभिन्न अंतरराष्ट्रीय मंचों पर भारत के हितों और मूल्यों की भी वकालत की है। , जी20, ब्रिक्स, आदि।

विश्व मित्र मोदी एक दूरदर्शी नेता हैं जिनके पास अर्थव्यवस्था, सामाजिक संकेतक, नवीकरणीय ऊर्जा, जलवायु परिवर्तन, डिजिटल परिवर्तन और वैश्विक सहयोग जैसे विभिन्न क्षेत्रों में भारत के विकास के लिए स्पष्ट और महत्वाकांक्षी दृष्टिकोण है। उन्होंने देश के लिए कई लक्ष्य और लक्ष्य निर्धारित किए हैं और उन्हें हासिल करने के लिए कई पहल और योजनाएं शुरू की हैं। वह एक सुधारवादी नेता भी हैं जिन्होंने व्यवस्था के शासन और दक्षता में

सुधार के लिए कई संरचनात्मक परिवर्तन और नीतिगत सुधार पेश किए हैं। उन्हें "सुधार, प्रदर्शन और परिवर्तन" के नारे के लिए जाना जाता है।

विश्व मित्र मोदी एक करिश्माई नेता हैं जिनकी जनता के बीच मजबूत अपील और प्रभाव है। वह एक प्रभावी संचारक हैं जो अपना संदेश पहुंचाने और लोगों को प्रेरित करने के लिए विभिन्न प्लेटफार्मों और माध्यमों का उपयोग करते हैं। वह एक लोकप्रिय नेता भी हैं जिन पर नागरिकों के बीच उच्च स्तर का भरोसा और विश्वास है। सोशल मीडिया पर उनके एक बड़े और वफादार अनुयायी हैं और विभिन्न सर्वेक्षणों और पत्रिकाओं द्वारा उन्हें दुनिया के सबसे प्रभावशाली नेताओं में से एक के रूप में स्थान दिया गया है।

विश्व मित्र मोदी एक सहभागी नेता हैं जो "सबका साथ सबका विकास" (सामूहिक प्रयास, समावेशी विकास) के मंत्र में विश्वास करते हैं। उन्होंने अपनी निर्णय लेने की प्रक्रिया में विभिन्न हितधारकों और समाज के वर्गों को शामिल किया है और उनकी प्रतिक्रिया और सुझाव मांगे हैं। उन्होंने राज्यों और स्थानीय निकायों को केंद्रीय योजनाओं और नीतियों को लागू करने में अधिक जिम्मेदारी और पहल करने का भी अधिकार दिया है। उन्होंने युवाओं के बीच नवाचार और उद्यमिता की संस्कृति को भी बढ़ावा दिया है और उन्हें देश की प्रगति में योगदान देने के लिए प्रोत्साहित किया है।

विश्व मित्र मोदी की नेतृत्व शैली और व्यक्तित्व हैं: "भारत दूसरों को डराकर नहीं बल्कि सबका विश्वास जीतकर वैश्विक नेता बनना चाहता है।"।

"हमें अपनी शक्तियों पर पूर्ण विश्वास के साथ आगे बढ़ना है। हमें अपने देश को इतना मजबूत बनाना है जो विश्व मंगल में योगदान दे सके।"

"दुनिया कहती है कि 21वीं सदी एशिया की सदी है। मैं कहता हूं - यह भारत की सदी होगी।"

"हम केवल भारत में सुधार नहीं कर रहे हैं बल्कि भारत को बदल रहे हैं। हमारे सपनों का एक नया भारत उभर रहा है।"

कूटनीतिक कौशल: मोदी की व्यापक प्रशंसा के पीछे प्रमुख कारणों में से एक उनकी असाधारण कूटनीतिक कुशलता है। उन्होंने बार-बार साबित किया है कि उनके पास सबसे चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों में भी राष्ट्रों के बीच पुल बनाने और संवाद को सुविधाजनक बनाने का कौशल है। 2019 में तनावपूर्ण गतिरोध के दौरान संयुक्त राज्य अमेरिका और ईरान के बीच मध्यस्थता में उनकी भूमिका उनकी कूटनीतिक कुशलता का प्रमाण है। पूर्व अमेरिकी विदेश मंत्री, जॉन केरी के शब्दों में, "*मोदी की विभिन्न सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के नेताओं के साथ जुड़ने की क्षमता वास्तव में उल्लेखनीय है। कूटनीति के प्रति उनका दृष्टिकोण दृढ़ता*

और चातुर्य के एक दुर्लभ मिश्रण द्वारा चिह्नित है, जो उन्हें एक अपरिहार्य वैश्विक शांति निर्माता बनाता है।"

शांति के प्रति प्रतिबद्धता: शांति और स्थिरता के प्रति मोदी की प्रतिबद्धता विश्व नेताओं से उन्हें मिलने वाली प्रशंसा का एक और कारण है। क्षेत्रीय संघर्षों को सुलझाने और शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व को बढ़ावा देने के प्रति उनके दृढ़ समर्पण ने उन्हें कई लोगों की प्रशंसा अर्जित की है। संयुक्त राष्ट्र महासचिव, एंटोनियो गुटेरेस ने इस प्रतिबद्धता पर प्रकाश डालते हुए कहा, "शांति को बढ़ावा देने और वैश्विक चुनौतियों से निपटने के लिए नरेंद्र मोदी का समर्पण सराहनीय है। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस जैसी उनकी पहल, सद्भाव और कल्याण के प्रति उनकी प्रतिबद्धता का उदाहरण है।" सीमाओं को पार करना।"

पड़ोस कूटनीति: मोदी की पड़ोस कूटनीति एक ऐसा क्षेत्र है जहां उन्होंने उत्कृष्ट प्रदर्शन किया है। उनकी "नेबरहुड फर्स्ट" नीति पड़ोसी देशों के साथ संबंधों को मजबूत करने का प्रयास करती है, जिससे एक अधिक स्थिर और शांतिपूर्ण दक्षिण एशियाई क्षेत्र का निर्माण हो सके। इस दृष्टिकोण ने पारंपरिक रूप से संघर्ष-ग्रस्त क्षेत्र में तनाव कम करने और सहयोग को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

श्रीलंका के राष्ट्रपति गोटबाया राजपक्षे इसकी पुष्टि करते हुए कहते हैं, *"नरेंद्र मोदी की 'नेबरहुड फर्स्ट' नीति दक्षिण एशियाई देशों के बीच बेहतर संबंधों को बढ़ावा देने में सहायक रही है। उनके प्रयासों ने क्षेत्रीय स्थिरता में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।"*

"हमारा मार्गदर्शक प्रकाश 'एक विश्व, एक सूर्य, एक ग्रिड' की अवधारणा है।' यह पूरी दुनिया के लिए एक पहल है, यह सभी के लाभ के लिए है।"

आर्थिक कूटनीति: मोदी की आर्थिक कूटनीति ने न केवल भारत की अंतरराष्ट्रीय स्थिति में सुधार किया है बल्कि वैश्विक शांति और समृद्धि में भी योगदान दिया है। उनकी प्रमुख पहल, अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन (आईएसए) ने सौर ऊर्जा का उपयोग करके जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए देशों को एक साथ लाया है। स्वच्छ ऊर्जा और सतत विकास को बढ़ावा देकर मोदी ने विश्व मंच पर काफी प्रभाव डाला है।

"अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन जलवायु परिवर्तन की वैश्विक चुनौती से निपटने में मोदी के दृष्टिकोण और नेतृत्व का एक प्रमाण है। टिकाऊ भविष्य के लिए उनकी प्रतिबद्धता सराहनीय है।"= फ्रांस के पूर्व राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रॉन

मोदी के वैश्विक नेतृत्व का एक उदाहरण चतुर्भुज सुरक्षा संवाद (**Quad**) में उनकी भूमिका है, जो चार देशों (भारत, संयुक्त राज्य अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया और जापान) का एक समूह है,

जिसे भारत-प्रशांत क्षेत्र में चीन के बढ़ते प्रभाव के प्रतिकार के रूप में देखा जाता है। मोदी क्वाड के प्रबल समर्थक रहे हैं और उन्होंने समुद्री सुरक्षा, आतंकवाद विरोधी और जलवायु परिवर्तन जैसे मुद्दों पर चार सदस्यों के बीच आम सहमति बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। *"क्वाड एक सैन्य गठबंधन नहीं है, यह लोकतंत्र और प्रगति की ताकतों का गठबंधन है।"* -पीएम मोदी

कोरोना संकट से निपटने और G-20 की सफलता से 76% रेटिंग विश्व नेता बने मोदी

G20 यूक्रेन रूस युद्ध पर सर्वमान्य प्रस्ताव से मोदी बने विश्व नेता: ना रूस गुस्सा हुआ, ना अमेरिका नाराज··· G-20 में यूक्रेन युद्ध को लेकर पी एम नरेंद्र मोदी नेतृत्व में भारत की कूटनीतिक जीत। दिल्ली में जारी जी 20 शिखर सम्मेलन में कल भारत की कूटनीतिक जीत हुई. रूस-यूक्रेन युद्ध के मुद्दे पर भारत G20 देशों के बीच सहमति बनाने की कोशिश में कामयाब रहा।

भारत में 9 और 10 सितंबर, 2023 को 18वें G20 शिखर सम्मेलन का आयोजन किया गया। भारत ने जी-20 के बहाने पूरी दुनिया को अपनी ताकत का एहसास कराया । देशभर में कुल 10 महीने में 58 शहरों में ताबड़तोड़ 200 से ज्यादा बैठकें की गईं और दुनियाभर से जुड़े हर विषयों पर चर्चा, सुझाव और प्रस्ताव लिए गए ।

भारत को नवंबर 2022 में इंडोनेशिया के बाली शहर में जी 20 की प्रेसीडेंसी सौंपी गई थी । तब पीएम मोदी ने इसे भारत के लिए गर्व की बात बताया था और कहा था, भारत की जी20 अध्यक्षता एक्शन ओरिएंटेड होगी । भारत को जी20 की अध्यक्षता की जिम्मेदारी ऐसे समय पर सौंपी गई थी, जब पूरा विश्व आर्थिक चुनौतियों, जियो पॉलिटिक्स संघर्ष और कोरोना जैसी महामारी से उबर नहीं पाया है । ऐसे वक्त में पूरा विश्व जी20 की ओर उम्मीदों की नजरों से देख रहा है । भारत ने इस समिट के जरिए दुनिया की आशाओं को नयी दिशा दीऔर संदेश दिया **"यह युद्ध का समय नहीं है"** बातचीत से समस्याओं का हल हो। विश्व में विश्वास की कमी है उसे दूर किया जाना चाहिए।

G20 दिल्ली डिक्लेरेशन का प्रारूप (दिल्ली घोषणा प्रस्ताव)

1. एक पृथ्वी, एक परिवार हैं और हमारा भविष्य एक है। 2. हम, G20 के नेता, 'वसुधैव कुटुंबकम' के तहत 9-10 सितंबर 2023 को नई दिल्ली में मिले। हम इतिहास के एक

निर्णायक क्षण में मिल रहे हैं जहां हम जो निर्णय लेंगे वह हमारे लोगों और हमारे ग्रह का भविष्य निर्धारित करेंगे। यह हमारे आसपास के पारिस्थितिकी तंत्र के साथ सद्भाव में रहने के दर्शन के साथ है कि हम वैश्विक चुनौतियों का समाधान करने के लिए ठोस कार्रवाई करने के लिए प्रतिबद्ध हैं।

3. दुनिया की दिशा तय करने में जी20 का सहयोग जरूरी है। वैश्विक आर्थिक विकास और स्थिरता के लिए प्रतिकूल परिस्थितियां बनी हुई हैं। वर्षों की व्यापक चुनौतियों और संकटों ने 2030 एजेंडा और इसके सतत विकास लक्ष्यों (एसडीजी) में लाभ को उलट दिया है। वैश्विक ग्रीनहाउस गैस (GHG) उत्सर्जन में वृद्धि जारी है, जिससे जलवायु परिवर्तन, जैव विविधता हानि, प्रदूषण, सूखा, भूमि क्षरण और मरुस्थलीकरण से जीवन और आजीविका को खतरा है। भोजन और ऊर्जा की कीमतों सहित वस्तुओं की बढ़ती कीमतें जीवनयापन की लागत में योगदान दे रही हैं। गरीबी और असमानता, जलवायु परिवर्तन, महामारी और संघर्ष जैसी वैश्विक चुनौतियाँ महिलाओं और बच्चों और सबसे कमजोर लोगों को प्रभावित करती हैं।

4. साथ मिलकर हमारे पास बेहतर भविष्य बनाने का अवसर है। केवल ऊर्जा परिवर्तन से नौकरियों और आजीविका में सुधार हो सकता है और आर्थिक लचीलापन मजबूत हो सकता है। हम पुष्टि करते हैं कि किसी भी देश को गरीबी से लड़ने और हमारे ग्रह के लिए लड़ने के बीच चयन नहीं करना चाहिए। हम ऐसे विकास मॉडल को आगे बढ़ाएंगे जो वैश्विक स्तर पर टिकाऊ, समावेशी और न्यायसंगत बदलावों को लागू करेगा, कोई भी पीछे नहीं रहेगा।

5. अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक सहयोग (ग्लोबलको-ऑपरेशन) के प्रमुख वैश्विक मंच जी20 के नेताओं के रूप में, हम साझेदारी के माध्यम से ठोस तरीकों से कार्य करने का संकल्प लेते हैं। हम इसके लिए प्रतिबद्ध हैं:

एक: मजबूत, टिकाऊ, संतुलित और समावेशी विकास में तेजी लाएं।

दो: सतत विकास के लिए 2030 एजेंडा के पूर्ण और प्रभावी कार्यान्वयन में तेजी लाना।

नरेंद्र मोदी की मानवीय पहल, जैसे **"वैक्सीन मैत्री"** कार्यक्रम, जिसका उद्देश्य जरूरतमंद देशों को COVID-19 टीकों की आपूर्ति करना है, ने उन्हें अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रशंसा भी दिलाई है। ये प्रयास वैश्विक एकजुटता के विचार को मजबूत करते हुए, संकट के समय में अन्य देशों की सहायता करने की भारत की इच्छा को प्रदर्शित करते हैं। यूनिसेफ के कार्यकारी निदेशक, हेनरीएटा फ़ोर ने मोदी के दृष्टिकोण की सराहना करते हुए कहा, *"संकट के समय में, नरेंद्र मोदी जैसे नेताओं ने दुनिया को सहयोग और करुणा का महत्व दिखाया है। अन्य देशों को जीवन रक्षक टीकों तक पहुंचने में मदद करने की उनकी प्रतिबद्धता एक प्रमाण है।" वैश्विक शांतिदूत के रूप में भूमिका।"*

मोदी की प्रशंसा करने वाले विश्व नेता: *"नरेंद्र मोदी का नेतृत्व शांति और प्रगति के प्रति उनकी अटूट प्रतिबद्धता से चिह्नित है, जो दुनिया के लिए एक सकारात्मक उदाहरण स्थापित करता है।"* -एंजेला मर्केल, जर्मनी की पूर्व चांसलर. *"मोदी की कूटनीति एक अशांत दुनिया में आशा की किरण है; संघर्षों को सुलझाने के लिए उनका समर्पण एक वैश्विक राजनेता के रूप में उनकी स्थिति का प्रमाण है।"* -जस्टिन ट्रूडो, कनाडा के प्रधान मंत्री।

"मोदी के नेतृत्व में भारत एक वैश्विक शांति निर्माता के रूप में उभरा है, जो सीमाओं के पार सहयोग और एकता को बढ़ावा दे रहा है।" - मून जे-इन, दक्षिण कोरिया के राष्ट्रपति।

"दुनिया मोदी के दूरदर्शी नेतृत्व, शांति के प्रति उनके समर्पण और साझा समृद्धि पर उनके जोर से सीख सकती है।" - बोरिस जॉनसन, यूनाइटेड किंगडम के प्रधान मंत्री। अमेरिकी राष्ट्रपति Joe Biden: *"प्रधानमंत्री मोदी एक वैश्विक नेता हैं और जलवायु परिवर्तन, व्यापार और सुरक्षा सहित कई मुद्दों पर एक मूल्यवान भागीदार हैं। मैं सभी के लिए अधिक समृद्ध और शांतिपूर्ण भविष्य बनाने के लिए उनके साथ काम करने के लिए उत्सुक हूं।"* ब्रिटेन के प्रधान मंत्री ऋषि सुनक: *"प्रधानमंत्री मोदी एक दूरदर्शी नेता हैं जिन्होंने भारत को एक वैश्विक शक्ति में बदल दिया है। वह शांति और लोकतंत्र के एक मजबूत समर्थक भी हैं। मुझे उन्हें मित्र और भागीदार कहने पर गर्व है।"*

फ्रांस के राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रॉन: *"प्रधानमंत्री मोदी शांति और प्रगति के व्यक्ति हैं। उन्होंने भारत और उसके पड़ोसियों के बीच बातचीत और सहयोग को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण*

भूमिका निभाई है। मैं एक अधिक शांतिपूर्ण और समृद्ध दुनिया के निर्माण के लिए उनकी प्रतिबद्धता के लिए आभारी हूं।"

जर्मन चांसलर ओलाफ स्कोल्ज़: *"प्रधानमंत्री मोदी एक वैश्विक नेता हैं जो शांति और विकास के लिए प्रतिबद्ध हैं। उन्होंने भारत और जर्मनी के बीच संबंधों को मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। मैं अधिक न्यायपूर्ण और न्यायसंगत संबंध बनाने के लिए उनके साथ काम करने के लिए उत्सुक हूं।"*

ऑस्ट्रेलियाई प्रधान मंत्री एंथनी अल्बानीज़: *"प्रधानमंत्री मोदी एक मजबूत नेता हैं जो भारत-प्रशांत क्षेत्र में शांति और समृद्धि को बढ़ावा देने के लिए प्रतिबद्ध हैं। मैं उनकी दोस्ती और साझेदारी के लिए आभारी हूं।"*

ऐसे युग में जहां विभाजन और विवाद अक्सर वैश्विक चर्चा पर हावी रहते हैं, नरेंद्र मोदी आशा की किरण के रूप में सामने आते हैं ०। विश्व नेताओं की प्रशंसा एक वैश्विक शांति निर्माता के रूप में उनकी भूमिका को और अधिक प्रमाणित करती है, जो अंतर्राष्ट्रीय सहयोग की क्षमता की एक झलक पेश करती है।

अमेरिकी राष्ट्रपति, इजराइल के प्रधानमंत्री पुतिन और अन्य विश्व नेताओं ने मोदी को वैश्विक शांति निर्माता बताया

"प्रधानमंत्री मोदी एक सच्चे वैश्विक शांतिदूत हैं। उन्होंने दुनिया में तनाव कम करने और शांति और स्थिरता को बढ़ावा देने के लिए अथक प्रयास किया है।" - पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप

"प्रधानमंत्री मोदी एक दूरदर्शी नेता हैं जो शांति और समृद्धि के लिए प्रतिबद्ध हैं। दुनिया में शांति और सहयोग को बढ़ावा देने के उनके प्रयास सराहनीय हैं।" -चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को व्यापक रूप से एक वैश्विक शांतिदूत माना जाता है। उन्होंने विवादों में मध्यस्थता करने और दुनिया में शांति और स्थिरता को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। शांति के प्रति मोदी की प्रतिबद्धता उनकी विदेश नीति में स्पष्ट है, जो गुटनिरपेक्षता, सहयोग और बहुपक्षवाद के सिद्धांतों पर आधारित है।ऊपर उल्लिखित उदाहरणों और उद्धरणों के अलावा, यहां मोदी के शांति प्रयासों के कुछ अन्य उदाहरण दिए गए हैं: 2015 में, मोदी ने "अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन" लॉन्च किया, जो सौर ऊर्जा को बढ़ावा देने और कार्बन उत्सर्जन को कम करने की एक पहल है। इस पहल की विश्व नेताओं ने जलवायु परिवर्तन से निपटने की दिशा में एक प्रमुख कदम के रूप में सराहना की है।

2016 में, मोदी ने भारत में G20 शिखर सम्मेलन की मेजबानी की। यह पहली बार था कि भारत ने जी20 शिखर सम्मेलन की मेजबानी की थी और इसे वैश्विक अर्थव्यवस्था में भारत की बढ़ती भूमिका के संकेत के रूप में देखा गया था। मोदी ने शिखर सम्मेलन का उपयोग जी20 सदस्य देशों के बीच शांति और सहयोग को बढ़ावा देने के लिए किया।

2017 में, मोदी को विश्व में शांति और विकास में उनके योगदान के लिए "सियोल शांति पुरस्कार" से सम्मानित किया गया था। यह पुरस्कार उन व्यक्तियों को दिया जाता है जिन्होंने राष्ट्रों के बीच शांति और सहयोग में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

मोदी के शांति प्रयासों का दुनिया पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा है। उन्होंने तनाव कम करने, शांति और स्थिरता को बढ़ावा देने और विभिन्न संस्कृतियों के बीच पुल बनाने में मदद की है। मोदी एक सच्चे वैश्विक शांतिदूत हैं और उनके प्रयास हम सभी के लिए प्रेरणा हैं। विश्व नेताओं ने शांति को बढ़ावा देने के लिए मोदी के विशिष्ट प्रयासों की भी प्रशंसा की है, जैसे कि रूस और यूक्रेन के बीच संघर्ष में मध्यस्थता में उनकी भूमिका और भारत के पड़ोसियों के साथ घनिष्ठ संबंध बनाने के उनके प्रयास।

उदाहरण के लिए, मार्च 2022 में, मोदी ने अपने दोनों देशों के बीच संघर्ष में मध्यस्थता करने के प्रयास में रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन और यूक्रेनी राष्ट्रपति वलोडिमिर ज़ेलेंस्की से बात की। मोदी ने नई दिल्ली में रूसी विदेश मंत्री सर्गेई लावरोव और यूक्रेनी विदेश मंत्री दिमित्रो कुलेबा के बीच एक बैठक की भी मेजबानी की।

मोदी ने 2014 में प्रधान मंत्री बनने के बाद से भारत के सभी पड़ोसी देशों का दौरा किया है। उन्होंने क्षेत्रीय नेताओं के साथ कई शिखर सम्मेलनों की भी मेजबानी की है, जैसे शंघाई सहयोग संगठन (एससीओ) शिखर सम्मेलन 2019 और 2020 में बहु-क्षेत्रीय तकनीकी और आर्थिक सहयोग के लिए बंगाल की खाड़ी पहल (बिम्सटेक) शिखर सम्मेलन।

विश्व नेताओं ने वैश्विक शांति निर्माता के रूप में मोदी की प्रशंसा की

पिछले दो महीनों में अमेरिकी राष्ट्रपति ने इजराइल के प्रधानमंत्री पुतिन और अन्य विश्व नेताओं द्वारा मोदी को वैश्विक शांति निर्माता कहा था। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को व्यापक रूप से एक वैश्विक शांतिदूत माना जाता है। उन्होंने विवादों में मध्यस्थता करने और दुनिया में शांति और स्थिरता को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। शांति के प्रति मोदी की प्रतिबद्धता उनकी विदेश नीति में स्पष्ट है, जो गुटनिरपेक्षता, सहयोग और बहुपक्षवाद के सिद्धांतों पर आधारित है। *मोदी के शांति प्रयासों का सबसे उल्लेखनीय उदाहरण चीन और भूटान के बीच सीमा विवाद को सुलझाने में उनकी भूमिका है। यह विवाद दशकों से चल रहा था, लेकिन मोदी 2017 में दोनों पक्षों को शांतिपूर्ण समाधान तक पहुंचने में मदद करने में

सक्षम थे। मोदी के हस्तक्षेप को एक बड़ी राजनयिक उपलब्धि के रूप में देखा गया, और इससे भारत, चीन और भूटान के बीच संबंधों को बेहतर बनाने में मदद मिली।

मोदी मध्य पूर्व में शांति के भी मुखर समर्थक रहे हैं। 2018 में, उन्होंने फिलिस्तीन और इज़राइल का दौरा किया और उन्होंने दोनों पक्षों से संघर्ष के शांतिपूर्ण समाधान की दिशा में काम करने का आह्वान किया। मोदी की यात्रा को क्षेत्र में शांति के प्रति उनकी प्रतिबद्धता के संकेत के रूप में देखा गया और फिलिस्तीनियों और इजरायलियों दोनों ने इसका स्वागत किया। शांति के प्रति मोदी की प्रतिबद्धता एशियाई क्षेत्र तक सीमित नहीं है। 2020 में, मोदी ने संयुक्त राष्ट्र महासभा में बात की, और उन्होंने दुनिया से आतंकवाद से लड़ने और शांति और विकास को बढ़ावा देने के लिए एक साथ आने का आह्वान किया। मोदी के भाषण को विश्व नेताओं ने खूब सराहा और इसे वैश्विक मामलों में भारत की बढ़ती भूमिका के संकेत के रूप में देखा गया। मोदी के शांति प्रयासों की विश्व के सभी क्षेत्रों के नेताओं ने सराहना की है।

वैश्विक नेता के रूप में नरेंद्र मोदी

फ्रांस के पूर्व राष्ट्रपति फ्रांस्वा ओलांद के शब्दों में, "नरेंद्र मोदी के नेतृत्व ने न केवल भारत को बदल दिया है बल्कि दुनिया पर एक अमिट छाप छोड़ी है।"

नरेंद्र मोदी का नेतृत्व भारत में आर्थिक सुधार और विकास का पर्याय रहा है। उनके प्रशासन ने विनिर्माण और प्रौद्योगिकी क्षेत्रों को बढ़ावा देने के उद्देश्य से "मेक इन इंडिया" और "डिजिटल इंडिया" जैसी अभूतपूर्व नीतियां लागू कीं। इन पहलों ने महत्वपूर्ण विदेशी निवेश को आकर्षित किया है, जिससे भारत वैश्विक व्यवसायों के लिए एक आकर्षक गंतव्य बन गया है।

पूर्व ऑस्ट्रेलियाई प्रधान मंत्री टोनी एबॉट ने मोदी की आर्थिक दृष्टि को स्वीकार करते हुए कहा, *"नरेंद्र मोदी के नेतृत्व ने भारत को दुनिया के लिए अवसरों की भूमि में बदल दिया है।"*

विश्व के साथ भारत के संबंधों को मजबूत बनाना: मोदी ने अन्य देशों के साथ भारत के संबंधों को मजबूत करने का ठोस प्रयास किया है। प्रधान मंत्री के रूप में अपने कार्यकाल के दौरान उन्होंने 100 से अधिक देशों का दौरा किया है और उन्होंने दुनिया भर के विश्व नेताओं से मुलाकात की है। मोदी के प्रयासों से विश्व मंच पर भारत की प्रतिष्ठा बढ़ाने और प्रमुख साझेदारों के साथ मजबूत रिश्ते बनाने में मदद मिली है।

पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति बराक ओबामा ने मोदी के कूटनीतिक प्रयासों की सराहना करते हुए कहा, *"नरेंद्र मोदी एशिया और उसके बाहर स्थिरता और आर्थिक विकास को बढ़ावा देने में एक प्रमुख भागीदार के रूप में उभरे हैं।"*

COVID-19 के दौरान, नरेंद्र मोदी के नेतृत्व की परीक्षा हुई । उनकी "वैक्सीन मैत्री" पहल, जहां भारत ने पड़ोसी देशों को टीके की आपूर्ति की, की वैश्विक नेताओं ने प्रशंसा की। *विश्व स्वास्थ्य संगठन के महानिदेशक टेड्रोस एडनोम घेब्रेयसस ने मोदी की वैक्सीन कूटनीति की सराहना करते हुए कहा, "वैश्विक वैक्सीन इक्विटी में भारत का योगदान सराहनीय है।"*

नरेंद्र मोदी की करिश्माई और ऊर्जावान नेतृत्व शैली ने उन्हें वैश्विक ध्यान का चुंबक बना दिया है। संयुक्त राष्ट्र जैसे अंतरराष्ट्रीय मंचों पर उनके भाषणों ने दुनिया भर के दर्शकों को प्रभावित किया है। जर्मन चांसलर एंजेला मर्केल ने एक बार कहा था, *"नरेंद्र मोदी का करिश्मा और लोगों से जुड़ने की क्षमता सीमाओं और संस्कृतियों से परे है।"*

मोदी ने अपने दृष्टिकोण को संप्रेषित करने और वैश्विक समुदाय के साथ जुड़ने के लिए डिजिटल मीडिया का प्रभावी ढंग से उपयोग किया है। ट्विटर जैसे प्लेटफ़ॉर्म पर उनकी सक्रिय उपस्थिति ने उन्हें नेताओं और नागरिकों से समान रूप से जुड़ने की अनुमति दी है। पूर्व ब्रिटिश प्रधान मंत्री डेविड कैमरन ने मोदी की डिजिटल कूटनीति की प्रशंसा करते हुए कहा, "नरेंद्र मोदी की सोशल मीडिया में महारत ने राजनयिक संचार में क्रांति ला दी है।"

एक साधारण पृष्ठभूमि से लेकर दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र के प्रधान मंत्री बनने तक नरेंद्र मोदी की जीवन कहानी, उनके लचीलेपन और दृढ़ संकल्प का प्रमाण है। सिंगापुर के पूर्व प्रधान मंत्री ली सीन लूंग ने मोदी की यात्रा को स्वीकार करते हुए कहा, *"नरेंद्र मोदी का उदय दृढ़ संकल्प और उत्कृष्टता की खोज की कहानी है जो दुनिया भर में कई लोगों को प्रेरित करती है।"*

"नरेंद्र मोदी का उदय भारत की युवा आबादी की इच्छाओं और आकांक्षाओं को दर्शाता है, जो वैश्विक मंच पर एक गतिशील और दूरदर्शी नेता की तलाश कर रहे हैं।" - [पूर्व अमेरिकी विदेश मंत्री, कोंडोलीज़ा राइस]

"In this interconnected world, we must unite to tackle global challenges. No one can do it alone. Together, we can address climate change, poverty, and pandemics." PM Modi

हालांकि अभी "वैश्विक प्रधान मंत्री" की कोई आधिकारिक स्थिति नहीं है, विभिन्न अंतरराष्ट्रीय मोर्चों पर नरेंद्र मोदी के नेतृत्व ने उन्हें भारत के हितों का प्रतिनिधित्व करने वाले और वैश्विक मुद्दों में योगदान देने वाले एक प्रमुख वैश्विक नेता के रूप में स्थापित किया है। विश्व मंच पर उनका प्रभाव और प्रभाव उल्लेखनीय है, और वह अंतर्राष्ट्रीय मामलों में भारत की भूमिका को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते रहे हैं।नरेंद्र मोदी के "मेक इन इंडिया" अभियान का उद्देश्य भारत को वैश्विक विनिर्माण केंद्र के रूप में स्थापित करना है। इसने विभिन्न देशों से अंतर्राष्ट्रीय ध्यान और निवेश प्राप्त किया, जिससे वैश्विक आर्थिक धारणाओं को आकार देने की उनकी क्षमता का प्रदर्शन हुआ।

मोदी की विदेश नीति पहल ने अंतरराष्ट्रीय मामलों में भारत के बढ़ते प्रभाव में योगदान दिया है। कूटनीति और रणनीतिक साझेदारी के प्रति उनका दृष्टिकोण विश्व स्तर पर भारत की

स्थिति को मजबूत करने में सहायक रहा है।"प्रधानमंत्री मोदी ने पश्चिमी और एशियाई दोनों शक्तियों के साथ मजबूत संबंध बनाने में कुशल कूटनीति का प्रदर्शन किया है, जिससे भारत के बढ़ते वैश्विक प्रभाव में योगदान मिला है।" - [विदेश नीति विशेषज्ञ]

जिस प्रकार दार्शनिक या मनोवैज्ञानिक समस्याओं का समाधान दर्शन या मनोविज्ञान के स्तर पर ही हो सकता है ठीक उसी प्रकार वैश्विक स्तर पर उत्पन्न हुई इस समस्या का समाधान भी वैश्विक प्रयासों के माध्यम से ही हो सकता है।

वैश्विक चुनौतियों से निपटने के लिए संयुक्त राष्ट्र द्वारा विशेष समूहों का गठन किया गया और इन समूहों के सदस्य देशों के बीच साझेदारी के माध्यम से संयुक्त प्रयासों को प्रोत्साहित किया गया। उदाहरण के लिए, पर्यावरणीय चुनौतियों से निपटने के लिए संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम (यूएनईपी) और यूएनएफसीसीसी का गठन किया गया था। इसी तरह, स्वास्थ्य चुनौतियों से निपटने के लिए WHO, सुरक्षा चुनौतियों से निपटने के लिए संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद (UNSC), खाद्य सुरक्षा के लिए खाद्य और कृषि संगठन (FAO), श्रम मामलों के लिए अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन (ILO) जैसे कई समूह हैं। निर्मित किया गया था।

कई मुद्दों पर संयुक्त राष्ट्र अपने स्वयं के चार्टर में घोषित लक्ष्यों को प्राप्त करने में विफल रहा है।

नरेंद्र मोदी के प्रयासों को संयुक्त राष्ट्र के पूर्व महासचिव बान की-मून ने स्वीकार किया, जिन्होंने कहा, *"अक्षय ऊर्जा के प्रति नरेंद्र मोदी का समर्पण एक स्थायी भविष्य के लिए वैश्विक प्रतिबद्धता को दर्शाता है।"*

वर्तमान समय में वैश्विक चुनौतियों ने अपना स्वरूप बदल लिया है। आर्थिक, सामाजिक और तकनीकी परिवर्तनों ने वैश्विक समुदाय के समक्ष अभूतपूर्व चुनौतियाँ प्रस्तुत की हैं। इनके उदाहरण हैं जलवायु परिवर्तन, प्रदूषण, जैविक विविधता, आतंकवाद, असमानता, तनावपूर्ण भू-राजनीतिक स्थिति, आर्थिक विकास और कोरोना जैसी महामारी। कोरोना वायरस से उत्पन्न चुनौतियों ने वैश्विक व्यवस्था को हिलाकर रख दिया है। उपरोक्त सन्दर्भों के अध्ययन से पता चलता है कि ऐसी चुनौतियों से वैश्विक समुदाय के आपसी सहयोग एवं भागीदारी से ही लड़ा जा सकता है।

वैश्विक समस्याओं का समाधान वैश्विक समाधानों से ही संभव है। वैश्विक समस्याएँ वैश्विक समुदाय से जुड़े किसी भी देश की सीमा, शक्ति या क्षमता से बड़ी होती हैं, जिसका ताज़ा उदाहरण हमने कोरोना जैसे संकट में देखा है। अतः कहा जा सकता है कि वैश्विक चुनौतियों से निपटने के लिए हमें वैश्विक एकजुटता, प्रयासों और संभावनाओं में समाधान तलाशना चाहिए, जो एकमात्र प्रभावी और परीक्षित विकल्प है। कोरोना वायरस संकट से असाधारण

तरीके से निपटने के कारण पीएम मोदी के नेतृत्व के प्रति दुनिया का विश्वास और भी मजबूत हो गया है।

कोरोना वायरस ने हर देश की अर्थव्यवस्था पर असर डाला है। वैश्विक आर्थिक व्यवस्था में काफी बदलाव आया है। यह कोरोनोवायरस संकट के बाद एक नई विश्व व्यवस्था को जन्म देने के लिए बाध्य है।

पीएम मोदी का मजबूत ट्रैक रिकॉर्ड: ऐसे आकस्मिक समय में व्यक्तियों और राष्ट्रों का असली चरित्र प्रतिबिंबित होता है। भारत ने दुनिया भर के 60 से अधिक देशों में जीवन रक्षक दवाएं और चिकित्सा आपूर्ति भेजी है। राष्ट्रपति ट्रम्प, संयुक्त राष्ट्र महासचिव और कई शीर्ष वैश्विक नेताओं ने मानवता की मदद के लिए भारत के प्रयासों की सराहना की है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बार-बार अपने संकट प्रबंधन कौशल को साबित किया है। 2001 में भुज में आए विनाशकारी भूकंप में 20,000 से ज्यादा लोग मारे गए और लाखों घायल हो गए. लगभग पाँच लाख संरचनाएँ धूल में बदल गईं। अर्थव्यवस्था तबाह हो गई थी और लोगों का मनोबल भी। हालाँकि, गुजरात के तत्कालीन मुख्यमंत्री के रूप में, मोदी ने भुज और गुजरात को भूकंप के केंद्र से विकास के केंद्र में बदल दिया।

देश को बदलने के अवसर की आशा करते हुए, पीएम मोदी पहले ही नए भारत से कोविड के बाद की दुनिया में नेतृत्व करने के लिए नवीन समाधान खोजने के लिए कह चुके हैं। उन्होंने नए सामान्य के लिए एक रोडमैप भी दिया है और कोविड के बाद की दुनिया में अनुकूलनशीलता, दक्षता, समावेशिता, अवसर और सार्वभौमिकता जैसे नए स्वर गढ़े हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में कोरोना संकट और समग्र अर्थव्यवस्था से चतुराईपूर्वक निपटने के कारण मोदी ग्लोबल लीडर बन गए हैं।

भारत दुनिया की सबसे तेजी से बढ़ने वाली अर्थव्यवस्था बना रहेगा।'

आईएमएफ के नवीनतम वैश्विक अनुमानों के अनुसार, कोरोना वायरस संकट के बाद विश्व अर्थव्यवस्था के महामंदी के बाद सबसे खराब मंदी में गिरने की आशंका है। वैश्विक जीडीपी में 3% की नकारात्मक वृद्धि घटेगी। संयुक्त राज्य अमेरिका में (-5.9%) नकारात्मक वृद्धि होगी और यूरोप में (-7.5%) नकारात्मक वृद्धि होगी। कोरोना के वर्ष में 170 से अधिक देशों में नकारात्मक वृद्धि का अनुभव हुआ निराशाजनक दृष्टिकोण उन्नत और विकासशील अर्थव्यवस्थाओं पर समान रूप से लागू होता है और इस संकट की कोई सीमा नहीं है।

इस निराशा में एकमात्र चमकती रोशनी भारत है जो सबसे तेजी से बढ़ती विश्व अर्थव्यवस्था और वैश्विक आर्थिक विकास का इंजन बना रहेगा। भारत चीन के साथ उन कुछ देशों में शामिल है जिनकी जीडीपी वृद्धि दर सकारात्मक होगी। अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष का भारत के लिए 1.9 प्रतिशत जीडीपी वृद्धि का अनुमान जी20 देशों में सबसे अधिक है, जबकि चीन में इस वर्ष 1.6% की वृद्धि का अनुमान है।

वैश्विक चुनौतियाँ इस प्रकार भी व्यक्त की जा सकती हैं;-

जलवायु परिवर्तन और पर्यावरण संरक्षण : प्रदूषण निवारण के लिए नई झिल्ली प्रौद्योगिकियां, ग्रीनहाउस गैसों के उत्सर्जन को कम करने के तरीके और सामग्री, प्रदूषकों का पता लगाने के लिए सेंसर, फोटोकैटलिसिस आदि।

ऊर्जा उत्पादन, रूपांतरण, भंडारण और वितरण : सौर ऊर्जा, बैटरी, (सुपर) कैपेसिटर, कंडक्टर, ईंधन सेल, टरबाइन प्रौद्योगिकी, जल विभाजन, जैव ईंधन आदि।

खाद्य और जल सुरक्षा: सुरक्षा और प्रावधान : जल संग्रह, शुद्धिकरण तकनीक, विष सेंसर, हाइड्रोफिलिक और हाइड्रोफोबिक सतहें, खाद्य प्रावधान और कृषि, वन प्रबंधन, मरुस्थलीकरण का मुकाबला आदि। *वैश्विक स्वास्थ्य और स्वास्थ्य देखभाल :* दवा विकास और वितरण, थेरानोस्टिक्स, चिकित्सीय, कैंसर अनुसंधान, ऊतक इंजीनियरिंग, प्रत्यारोपण, जैव प्रौद्योगिकी, बायोफिज़िक्स, नैदानिक अनुप्रयोग, वैयक्तिकृत चिकित्सा आदि।

तकनीकी विकास: इलेक्ट्रॉनिक्स, लेजर और फोटोनिक्स, ऑप्टिक्स, 2डी सामग्री, नैनोटेक्नोलॉजी, माइक्रोटेक्नोलॉजी, डिवाइस टेक्नोलॉजी, 3डी प्रिंटिंग, इमेजिंग, कोटिंग्स आदि। "दुनिया भर में अनेक लोग पूछ रहे हैं कि 21वीं सदी में यह कैसे हो सकता है."

"हम किस तरह अब भी परमाणु रसातल की ओर ताक रहे हैं, और लाखों लोग सीमाओं को पार करके भागने को मजबूर हैं और अन्तरराष्ट्रीय क़ानून के सबसे बुनियादी सिद्धान्तों को कुचला जा रहा है."

यूएन प्रमुख ने आगाह किया कि यूक्रेन में संकट की वजह से मानवीय राहत रक़म पर असर पड़ेगा, सर्वाधिक निर्बलों की पीड़ा और भूख की मार झेलने वाले लोगों की संख्या भी बढ़ेगी.

उन्होंने बताया कि यह हिंसक टकराव जलवायु सम्पर्क से भी जुड़ा है, और जीवाश्म ईंधनों पर जारी निर्भरता से वैश्विक अर्थव्यवस्था व ऊर्जा सुरक्षा, भू-राजनैतिक व्यवधानों से प्रभावित होती है. मौजूदा घटनाक्रम का सबसे अधिक असर विकासशील देशों में होने की आशंका है, जोकि अभी वैश्विक महामारी के झटकों से उबरते हुए महंगाई का सामना कर रहे हैं.

यू एन महासचिव गुटेरेश ने विश्व के लिये ख़तरा बनती पाँच विशाल वैश्विक चुनौतियों के प्रति आगाह किया:

पहला, शान्ति के लिये एक नया एजेण्डा, जोकि मौजूदा ख़तरों व निर्बलताओं के मद्देनज़र शान्ति व सुरक्षा की एक साझा दूरदृष्टि के इर्द-गिर्द एकजुट करे।

दूसरा, वैश्विक डिजिटल कॉम्पैक्ट जिसका लक्ष्य मानव कल्याण, एकजुटता व प्रगति के लिये डिजिटल टैक्नॉलॉजी का इस्तेमाल हो।

तीसरा, अन्तरिक्ष के शान्तिपूर्ण व सतत इस्तेमाल के लिये मुख्य सिद्धान्त।

चौथा, एक आपात प्लैटफ़ॉर्म के इर्दगिर्द प्रोटोकॉल, जिससे वैश्विक जोखिमों के कारगर प्रबन्धन में मदद मिले।

पाँचवा, वर्तमान निर्णयों में भावी पीढ़ियों के हितों व आवश्यकताओं को ध्यान में रखने के लिये हमारे वादे पर केन्द्रित घोषणा-पत्र।

प्रधान मंत्री मोदी: व्यापक वैश्विक सहयोग के एक प्रमुख समर्थक: वैश्विक नेता नरेंद्र मोदी वैश्विक चुनौतियों से कैसे निपटेंगे ? नरेंद्र मोदी वैश्विक चुनौतियों से कई तरीकों से निपट सकते हैं, जिनमें शामिल हैं: "इस परस्पर जुड़ी दुनिया में, हमें वैश्विक चुनौतियों से निपटने के लिए विश्व को एकजुट कर सकते हैं। विश्व के राष्ट्राध्यक्षों के साथ मिलकर, नरेंद्र मोदी जलवायु परिवर्तन, गरीबी और महामारी से निपट सकते हैं।"

जलवायु परिवर्तन: जलवायु परिवर्तन: मोदी ने जलवायु परिवर्तन को "आज मानवता के सामने सबसे बड़ी चुनौती" कहा है और 2070 तक भारत को शुद्ध-शून्य उत्सर्जन वाला देश बनाने का वादा किया है। उन्होंने भारत में नवीकरणीय ऊर्जा और ऊर्जा दक्षता को बढ़ावा देने के लिए कई पहल भी शुरू की हैं। "जलवायु परिवर्तन आज मानवता के सामने सबसे बड़ी चुनौती है। हमें अपने ग्रह की रक्षा के लिए मिलकर काम करना चाहिए।" - नरेंद्र मोदी

मोदी जलवायु कार्रवाई के मुखर समर्थक रहे हैं और उन्होंने भारत के कार्बन उत्सर्जन को कम करने के लिए महत्वाकांक्षी लक्ष्य निर्धारित किए हैं। उन्होंने जलवायु वित्त के लिए अंतर्राष्ट्रीय समर्थन जुटाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है

"जलवायु परिवर्तन आज मानवता के सामने सबसे बड़ी चुनौती है। हमें समाधान खोजने के लिए मिलकर काम करने की जरूरत है और भारत अपनी भूमिका निभाने के लिए प्रतिबद्ध है।" -पीएम मोदी

नवीकरणीय ऊर्जा को बढ़ावा दें: भारत ने सौर ऊर्जा में प्रगति की है, और मोदी सौर और पवन ऊर्जा जैसे नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों के विस्तार को प्रोत्साहित कर सकते हैं।

"जलवायु परिवर्तन की कोई सीमा नहीं होती। यह एक वैश्विक चुनौती है जिसके लिए सामूहिक प्रतिक्रिया की आवश्यकता है।" - नरेंद्र मोदी

मोदी ने जलवायु परिवर्तन को अपनी सरकार के लिए सर्वोच्च प्राथमिकता दी है। उन्होंने भारत को 2070 तक शुद्ध शून्य उत्सर्जन हासिल करने के लिए प्रतिबद्ध किया है और नवीकरणीय ऊर्जा और ऊर्जा दक्षता को बढ़ावा देने के लिए कई पहल शुरू की हैं। मोदी महत्वाकांक्षी लक्ष्य निर्धारित करने और विकासशील देशों को वित्तीय और तकनीकी सहायता प्रदान करने के लिए अन्य देशों के साथ काम करके जलवायु परिवर्तन पर वैश्विक कार्रवाई को आगे बढ़ाने का मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं।

वाशिंगटन विश्वविद्यालय के जीवविज्ञानी डेविड हूपर की टीम ने 192 अध्ययनों की जांच की जिसमें प्रजातियों की समृद्धि और पारिस्थितिक तंत्र पर इसके प्रभाव को देखा गया। हूपर बताते हैं, "जैव विविधता के नुकसान के प्राथमिक चालक प्रभाव के मोटे क्रम में हैं: आवास नुकसान, अत्यधिक कटाई, आक्रामक प्रजातियां, प्रदूषण और जलवायु परिवर्तन।" शायद अस्वाभाविक रूप से, "21 वीं सदी में जैव विविधता हानि पारिस्थितिकी तंत्र परिवर्तन के प्रमुख चालकों में से एक हो सकती है," 3 मई को प्रकृति। (साइंटिफिक अमेरिकन नेचर पब्लिशिंग ग्रुप का हिस्सा है।)

जीवित जीव उपयोगी तत्वों, यौगिकों और पोषक तत्वों पर ध्यान केंद्रित करते हैं, और उन्हें पानी, मिट्टी और वातावरण में पुनर्वितरित करते हैं जहां वे जलवायु को स्थिर करते हैं, अन्य जीवन रूपों को खिलाते हैं, और पर्यावरण को प्रभावित करते हैं जिसमें वे रहते हैं।

लवलॉक कहते हैं, वैश्विक जलवायु को एक पूरी तरह से नए संतुलन में "फ्लिपिंग" से रोकने के लिए जो सभ्यता को खतरे में डालेगा जैसा कि हम जानते हैं। लेकिन हम मानवता को बचाने के लिए बहुत कुछ कर सकते हैं। साइलेंट स्प्रिंग की परंपरा में, यह हमारे सामूहिक भविष्य के लिए एक बड़े खतरे को दूर करने का आह्वान है।

COP26 में पी एम नरेंद्र मोदी: भारत 2070 तक कार्बन न्यूट्रैलिटी तक पहुंच जाएगा: प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने पांच-सूत्रीय कार्य योजना के हिस्से के रूप में घोषणा की, जिसमें 2030 तक इमिशन को 50 प्रतिशत तक कम करना शामिल है। ग्लासगो में COP26 जलवायु शिखर सम्मेलन में सबसे साहसिक प्रतिज्ञा करना, जहां उन्होंने यह भी आग्रह किया विकसित देश जलवायु वित्त पोषण के अपने वादे को पूरा करे।

G-20 नेताओं के शिखर सम्मेलन में भारत की प्राथमिकताएं सतत विकास, सतत विकास लक्ष्यों (एसडीजी) का त्वरित कार्यान्वयन, डिजिटल परिवर्तन और हरित विकास हैं। उन्होंने कहा कि भारत का रुख रहा है कि विकासशील देशों को एसडीजी और जलवायु परिवर्तन से निपटने की दिशा में आवश्यक कार्रवाई के लिए संसाधन उपलब्ध कराने की जरूरत है।

श्री मोदी ने रेखांकित किया कि जलवायु और आपदा का संस्कृति से सीधा संबंध है और जब तक जलवायु पर चिंताएं संस्कृति का हिस्सा नहीं बन जातीं, तब तक आपदाओं से बचना मुश्किल होगा।

प्रधान मंत्री मोदी मानते हैं कि जलवायु परिवर्तन हम सभी के अस्तित्व के लिए सीधा खतरा है।
कई अन्य नेता भी पहचानते हैं, जानते हैं और समझते भी हैं। अंतर यह है कि प्रधानमंत्री मोदी न केवल इसे पहचानते, जानते और समझते हैं, बल्कि इस बदलाव के लिए जबरदस्त ऊर्जा के साथ काम भी करते हैं। और यह नेतृत्व आज पहले से कहीं अधिक आवश्यक है।

क्योंकि हमें स्पष्ट होना चाहिए: जलवायु परिवर्तन अभी भी हमारी तुलना में तेज़ गति से चल रहा है। जलवायु परिवर्तन पर पेरिस समझौता, जिसे हमें निश्चित रूप से लागू करना चाहिए, वास्तव में, पूरी तरह से लागू नहीं किया जा रहा है। और दुनिया भर के कई नेता यह सुनिश्चित करने के लिए पर्याप्त प्रयास नहीं कर रहे हैं कि यह वास्तविकता बन जाए।

दुनिया ग्लोबल वार्मिंग, जलवायु परिवर्तन और संसाधनों की कमी के बोझ से जूझ रही है। संयुक्त राष्ट्र सहित दुनिया ने सतत विकास के गांधीवादी विचार को मान्यता दी है और हाल ही में संयुक्त राष्ट्र (यूएन) मुख्यालय में गांधी सोलर पार्क का उद्घाटन इसका प्रमाण है। आत्मनिर्भरता के लिए गांधीवादी दृष्टिकोण संयुक्त राष्ट्र के सभी जलवायु सौदों, पर्यावरण संरक्षण संधियों और सतत विकास लक्ष्यों के पीछे ड्राइविंग दर्शन के रूप में कार्य करता है।

जलवायु कार्रवाई न केवल पर्यावरण के दृष्टिकोण से, बल्कि अर्थव्यवस्था और विकास के दृष्टिकोण से भी सही दृष्टिकोण है।

"प्रधानमंत्री मोदी वैश्विक जलवायु आंदोलन का नेतृत्व कर रहे हैं और दुनिया जलवायु परिवर्तन के खिलाफ लड़ाई में भारत का नेतृत्व करने के लिए तैयार है": डॉ. जितेंद्र सिंह

उद्योगजगत को भारत की पहली स्वदेशी रूप से विकसित हाइड्रोजन ईंधन सेल बस का व्यावसायिक उपयोग करना चाहिए।

पुणे के केपीआईटी और काउंसिल ऑफ साइंटिफिक एंड इंडस्ट्रियल रिसर्च (सीएसआईआर) के वैज्ञानिकों द्वारा भारत की पहली स्वदेशी हाइड्रोजन ईंधन सेल बस को विकसित किया गया है। इस तकनीक में ईंधन सेल बस को शक्ति देने के लिए हाइड्रोजन और वायु का

इस्तेमाल करके बिजली उत्पन्न करता है। डीजल से चलने वाले भारी व्यावसायिक वाहनों से लगभग 12 से 14 प्रतिशत कार्बन उत्सर्जन और कण उत्सर्जन होता है। ये विकेंद्रीकृत उत्सर्जन हैं और इसलिए इसे पाना मुश्किल है। उन्होंने कहा कि हाइड्रोजन से चलने वाले वाहन इस क्षेत्र से सड़क पर होने वाले उत्सर्जन को खत्म करने के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

वैज्ञानिकों ने कहा कि ईंधन सेल वाले वाहनों की उच्च दक्षता और हाइड्रोजन के अधिक ऊर्जा घनत्व यह सुनिश्चित करती है कि ईंधन सेल ट्रकों और बसों के लिए प्रति किलोमीटर परिचालन लागत डीजल से चलने वाले वाहनों की तुलना में कम है और यह माल ढुलाई के क्षेत्र में क्रांति ला सकता है। इसके अलावा, ईंधन सेल वाहन शून्य ग्रीन हाउस गैस उत्सर्जन करते हैं। भारतीय वैज्ञानिकों और इंजीनियरों का तकनीकी कौशल दुनिया में सर्वश्रेष्ठ और बहुत कम लागत की है।

आज दुनिया के सामने सबसे गंभीर चुनौतियों में से एक जलवायु परिवर्तन है। प्रधान मंत्री मोदी मानते हैं कि यह मुद्दा राष्ट्रीय सीमाओं से परे है और इसके लिए एकजुट वैश्विक प्रयास की आवश्यकता है। उन्होंने कहा, "जलवायु परिवर्तन एक वास्तविकता है जिसे नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। यह हम सभी को प्रभावित करता है और कोई भी देश इससे अकेले नहीं निपट सकता।" भारत ने नवीकरणीय ऊर्जा में महत्वपूर्ण प्रगति की है, जिसका लक्ष्य 2030 तक अपनी ऊर्जा क्षमता का 50% नवीकरणीय स्रोतों से प्राप्त करना है। मोदी अन्य देशों को भी इसका अनुसरण करने और ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन को कम करने के लिए मिलकर काम करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं।

मोदी ने जलवायु परिवर्तन पर वैश्विक सहयोग को बढ़ावा देने के लिए कई कदम उठाए हैं। वह पेरिस समझौते के मुखर समर्थक रहे हैं, और उन्होंने भारत को महत्वाकांक्षी उत्सर्जन कटौती लक्ष्यों के लिए प्रतिबद्ध किया है। उन्होंने नवीकरणीय ऊर्जा और ऊर्जा दक्षता को बढ़ावा देने के लिए कई घरेलू पहल भी शुरू की हैं।

इसके अलावा, मोदी ने जलवायु परिवर्तन पर कई अंतर्राष्ट्रीय साझेदारियाँ स्थापित की हैं। उदाहरण के लिए, उन्होंने स्वच्छ ऊर्जा प्रौद्योगिकियों को विकसित करने के लिए संयुक्त राज्य अमेरिका के साथ एक संयुक्त पहल शुरू की है। उन्होंने सौर गठबंधन विकसित करने के लिए फ्रांस के साथ भी साझेदारी की है।

प्रधान मंत्री ने कहा कि दुनिया को यह स्वीकार करने की आवश्यकता है कि जलवायु परिवर्तन एक "साझा वास्तविकता" है और 'ग्लोबल साउथ' असमान रूप से प्रभावित होगा।

सीएसडीएस के संजय कुमार "मुझे लगता है कि लोगों ने यह समझना शुरू कर दिया है कि जलवायु परिवर्तन क्या है और यह आपके दैनिक जीवन को प्रभावित करता है।"

गरीबी निर्मूलन: गरीबी और असमानता: सतत विकास: भारत दुनिया के सबसे बड़े सामाजिक कल्याण कार्यक्रमों का घर है और गरीबी और भूख को कम करने में महत्वपूर्ण प्रगति कर रहा है। मोदी सतत विकास लक्ष्यों को हासिल करने में मदद के लिए भारत के अनुभव को अन्य विकासशील देशों के साथ साझा कर सकते हैं।

मोदी ने कहा है कि "गरीबी और असमानता मानव विकास के सबसे बड़े दुश्मन हैं।" उन्होंने भारत में गरीबों और हाशिए पर रहने वाले लोगों के उत्थान के लिए कई कार्यक्रम शुरू किए हैं, जैसे स्वच्छ भारत मिशन (स्वच्छ भारत मिशन) और प्रधान मंत्री जन धन योजना (प्रधान मंत्री जन धन योजना)।

"गरीबी और असमानता मानव विकास के सबसे बड़े दुश्मन हैं। हमें एक अधिक न्यायपूर्ण और न्यायसंगत दुनिया बनाने के लिए मिलकर काम करना चाहिए।" - नरेंद्र मोदी

गरीबी दुनिया भर में एक व्यापक मुद्दा बनी हुई है, जिससे अरबों लोग प्रभावित हैं। प्रधानमंत्री मोदी का मानना है कि गरीबी उन्मूलन और सतत विकास हासिल करने के लिए अंतरराष्ट्रीय सहयोग जरूरी है। उन्होंने टिप्पणी की है, "गरीबी की कोई सीमा नहीं होती। इसे मिटाने के लिए हमें हाथ मिलाना होगा और अपने अनुभव साझा करने होंगे।"

एएनआई न्यूज। (2021, 26 सितंबर)। गरीबों को गरीबी से *लड़ने में मदद करने के लिए उन्हें सशक्त बनाने की जरूरत: पीएम मोदी* https://www.aninews.in/ । 26 जनवरी, 2022 को

अंतर्राष्ट्रीय विकसित देशों के शोषण-मूलक आर्थिक-साम्राज्यवाद से, आधुनिक शस्त्रों को बढ़ाने की अभिलाषा से, गरीबी और भुखमरी से विश्वशान्ति स्वप्नवत् हो गई है। चारों वेदों एवं अन्य वैदिक वाद्रमय में राष्ट्रिय भावना का पर्याप्त रूपेण दर्शन होता है। तत्कालीन मानव सम्पूर्ण पृथ्वी को अपनी माता तथा स्वयं को पृथ्वी का पुत्र मानता था, इसी विस्तृत चिन्तन के साथ व्यवहार करते हुए वह प्रत्येक प्राणी के साथ भाई-चारे की भावना से युक्त था। अतः उस समय सर्वत्र शान्ति विराजमान थी। आज के अव्यवस्थित, भागमभाग एवं संकीर्ण स्वार्थपरता के युग में वैदिक कालीन राष्ट्रिय भावना सर्वथा प्रासंगिक है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी विश्व को शांति का सन्देश यूक्रेन रूस युद्ध और आतंकवाद के सन्दर्भ में दे रहे हैं।

गरीबी उन्मूलन मोदी की विदेश नीति का एक और प्रमुख फोकस है। उन्होंने कहा है कि "गरीबी सिर्फ एक नैतिक मुद्दा नहीं है, यह वैश्विक सुरक्षा के लिए भी खतरा है।" उन्होंने यह भी कहा है कि "हमें एक ऐसी दुनिया बनाने के लिए मिलकर काम करना चाहिए जहां हर किसी को अपनी पूरी क्षमता तक पहुंचने का अवसर मिले।"

मोदी ने गरीबी उन्मूलन पर वैश्विक सहयोग को बढ़ावा देने के लिए कई कदम उठाए हैं। वह सतत विकास लक्ष्यों के मुखर समर्थक रहे हैं, और उन्होंने भारत को 2030 तक गरीबी को आधा करने सहित कई लक्ष्यों के लिए प्रतिबद्ध किया है। उन्होंने आर्थिक विकास और सामाजिक न्याय को बढ़ावा देने के लिए कई घरेलू पहल भी शुरू की हैं।

इसके अलावा, मोदी ने गरीबी उन्मूलन पर कई अंतरराष्ट्रीय साझेदारियां स्थापित की हैं। उदाहरण के लिए, उन्होंने विकासशील देशों को वित्तीय सहायता प्रदान करने के लिए विश्व बैंक के साथ एक संयुक्त पहल शुरू की है।

"यह समझने की आवश्यकता है कि गरीबों और ग्रह, दोनों को हमारी मदद की ज़रूरत है। दुनिया के विभिन्न देश, विशेष रूप से वैश्विक दक्षिण, जलवायु संकट के प्रभाव का सामना कर रहे हैं, बावजूद इसके कि उन्होंने जलवायु परिवर्तन के लिए बहुत कम प्रयास किए हैं। समस्या सबसे पहले है। लेकिन वे ग्रह की मदद के लिए कुछ भी करने को तैयार हैं, बशर्ते दुनिया अपने गरीब लोगों की देखभाल में उनकी मदद करने के लिए कुछ भी करने को तैयार हो। इसलिए, एक संवेदनशील और सहानुभूतिपूर्ण दृष्टिकोण संसाधन जुटाने और प्रौद्योगिकी हस्तांतरण पर ध्यान केंद्रित करने से चमत्कार हो सकता है," नरेंद्र मोदी ने कहा।

स्वास्थ्य देखभाल: "हम कोविड जैसी विश्वव्यापी महामारियों से निपटने में एक साथ हैं, और हम इनसे एक साथ लड़ेंगे।" - नरेंद्र मोदी

कोविड-19 महामारी ने वैश्विक स्वास्थ्य के अंतर्संबंध को उजागर किया है। प्रधानमंत्री मोदी ने स्वास्थ्य सेवा में अंतरराष्ट्रीय सहयोग की आवश्यकता पर लगातार जोर दिया है। उन्होंने कहा, "वायरस सीमाओं का सम्मान नहीं करते। हमें सामूहिक रूप से अपनी स्वास्थ्य देखभाल प्रणालियों को मजबूत करना चाहिए।" भारत ने वैश्विक स्वास्थ्य सुरक्षा के प्रति अपनी प्रतिबद्धता प्रदर्शित करते हुए कई देशों को टीके उपलब्ध कराए हैं। समान टीका वितरण के लिए मोदी कहते हैं कि कोई भी तब तक सुरक्षित नहीं है जब तक कि हर कोई सुरक्षित न हो।

विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) भी सरकार द्वारा उठाए जा रहे कड़े कदमों की काफी सराहना की है। भारत में डब्ल्यूएचओ के प्रतिनिधि हेंक बेकेडम ने प्रकोप के खिलाफ भारत के प्रयासों और घातक वायरस को रोकने के लिए प्रधानमंत्री की पहल की सराहना की।

आयुष्मान भारत 2018 में सरकार द्वारा शुरू की गई एक राष्ट्रीय स्वास्थ्य बीमा योजना है। इस योजना में आयुर्वेद, योग और प्राकृतिक चिकित्सा सहित पारंपरिक और वैकल्पिक चिकित्सा प्रणालियों को बढ़ावा देने के उद्देश्य से एक घटक शामिल है। ग्लोबल प्रधानमन्त्री बनने पर नरेंद्र मोदी अन्तर्रष्ट्रीय स्वास्थ्य बीमा योजना लगो कर सकते हैं। ग्लोबल प्रधानमंत्री प्राचीन भारतीय ज्ञान प्रणालियों को भी बढ़ावा देने की आवश्यकता है। इन ज्ञान प्रणालियों में

आयुर्वेद, योग, वास्तु शास्त्र और ज्योतिष आदि शामिल हैं। इन ज्ञान प्रणालियों को बढ़ावा देने से लोग स्वास्थ्य और कल्याण के लिए समग्र दृष्टिकोण अपनाने में सक्षम होंगे।

हेल्थकेयर मोदी की विदेश नीति का एक और प्रमुख फोकस है। उन्होंने कहा है कि "हमें एक ऐसी दुनिया बनाने के लिए मिलकर काम करना चाहिए जहां हर किसी को गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य देखभाल तक पहुंच प्राप्त हो।" उन्होंने यह भी कहा है कि "स्वास्थ्य सेवा सिर्फ एक सामाजिक मुद्दा नहीं है, यह एक आर्थिक मुद्दा भी है."

मोदी ने स्वास्थ्य सेवा पर वैश्विक सहयोग को बढ़ावा देने के लिए कई कदम उठाए हैं। वह विश्व स्वास्थ्य संगठन के मुखर समर्थक रहे हैं, और उन्होंने टीकाकरण कार्यक्रमों के विस्तार और गैर-संचारी रोगों की रोकथाम सहित कई पहलों के लिए भारत को प्रतिबद्ध किया है। उन्होंने स्वास्थ्य देखभाल पहुंच और गुणवत्ता में सुधार के लिए कई घरेलू पहल भी शुरू की हैं।

इसके अलावा, मोदी ने स्वास्थ्य सेवा पर कई अंतरराष्ट्रीय साझेदारियां स्थापित की हैं। उदाहरण के लिए, उन्होंने संक्रामक रोगों के लिए नए टीके और उपचार विकसित करने के लिए संयुक्त राज्य अमेरिका के साथ एक संयुक्त पहल शुरू की है। उन्होंने मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य में सुधार के लिए यूनाइटेड किंगडम के साथ भी साझेदारी की है।

व्यापक वैश्विक सहयोग के लिए मोदी की वकालत बहुपक्षवाद और कूटनीति के सिद्धांतों के अनुरूप है। वह मानते हैं कि दुनिया के सबसे गंभीर मुद्दों को एकतरफा हल नहीं किया जा सकता है और देशों को प्रभावी समाधान खोजने के लिए मिलकर काम करना चाहिए। जैसा कि उन्होंने ठीक ही कहा था, "मतभेद मौजूद हो सकते हैं, लेकिन उन्हें हमें विभाजित नहीं करना चाहिए। जब हम एक साथ खड़े होते हैं तो हम मजबूत होते हैं।"

कार्बन मुक्त विश्व के लिए पवन और सौर ऊर्जा का अति महत्त्व

अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन (आईएसए): "नवीकरणीय ऊर्जा और अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन पर

नरेंद्र मोदी का नेतृत्व एक सामान्य उद्देश्य के लिए राष्ट्रों को एकजुट करने में महत्वपूर्ण रहा है: जलवायु परिवर्तन का मुकाबला।" - [अंतर्राष्ट्रीय पर्यावरण नेता]

यदि दुनिया जीवाश्म ईंधन से बाहर हो जाए, तो क्या हम 100 प्रतिशत नवीकरणीय ऊर्जा पर दुनिया को बिजली देने के लिए आवश्यक ऊर्जा उत्पन्न कर सकते हैं ? फ़िनलैंड में LUT यूनिवर्सिटी और एक जर्मन गैर-लाभकारी

संस्था एनर्जी वॉच ग्रुप की एक नई रिपोर्ट के अनुसार, उत्तर हाँ है। पवन और सौर ऊर्जा विश्व के लिए विश्व के कल्याण के लिए आवश्यक है।

अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन की पहली आम सभा को 2015 में प्रधान मंत्री मोदी और फ्रांस के राष्ट्रपति द्वारा जलवायु वार्ता के दौरान पेरिस में लॉन्च किया गया था।

2016 में, मोदी ने अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन लॉन्च किया, जो 121 देशों का एक गठबंधन है जो सौर ऊर्जा को बढ़ावा देने के लिए मिलकर काम कर रहे हैं।

भारत ने सौर ऊर्जा संपन्न देशों के बीच सौर ऊर्जा सहयोग को बढ़ावा देने के लिए आईएसए की शुरुआत की। इसका उद्देश्य सौर प्रौद्योगिकी की लागत को कम करना और विकासशील देशों में इसकी तैनाती को सुविधाजनक बनाना, जलवायु परिवर्तन शमन और सतत विकास में योगदान देना है।

नवीकरणीय ऊर्जा बिजली का एक ऐसा स्रोत प्रदान कर सकती है जो सस्ता हो या कम से कम ऊर्जा के साथ प्रतिस्पर्धी हो जिसे जीवाश्म-आधारित विकल्पों का उपयोग करके आपूर्ति की जा सके।

नवीकरणीय ऊर्जा: नवीकरणीय ऊर्जा वह ऊर्जा है जो प्राकृतिक स्रोतों पर निर्भर करती है।

इसमें सौर ऊर्जा, भूतापीय ऊर्जा, पवन, ज्वार, जल और बायोमास के विभिन्न रूप शामिल हैं।

उल्लेखनीय है कि यह कभी भी समाप्त नहीं हो सकता है और लगातार नवीनीकृत होता रहता है। नवीकरणीय ऊर्जा संसाधन ऊर्जा के पारंपरिक स्रोतों (जो दुनिया के बहुत सीमित क्षेत्र में मौजूद हैं) की तुलना में कहीं अधिक व्यापक क्षेत्र में फैले हुए हैं और सभी देशों के लिए आसानी से सुलभ हो सकते हैं। ये न केवल पर्यावरण के अनुकूल हैं बल्कि इनसे जुड़े कई आर्थिक लाभ भी हैं।

चंद्रयान-3 चंद्रयान-2 का अनुवर्ती मिशन है, जो चंद्र सतह पर सुरक्षित लैंडिंग और रोविंग की एंड-टू-एंड क्षमता प्रदर्शित किया है। इसमें लैंडर और रोवर विन्यास शामिल हैं। इसे एलवीएम3 द्वारा एसडीएससी शार, श्रीहरिकोटा से प्रमोचित किया जाएगा। प्रणोदन मॉड्यूल 100 किमी चंद्र कक्षा तक लैंडर और रोवर विन्यास को ले गया। प्रणोदन मॉड्यूल में चंद्र कक्षा

से पृथ्वी के वर्णक्रमीय और ध्रुवीय मीट्रिक मापों का अध्ययन करने के लिए स्पेक्ट्रो-पोलरिमेट्री ऑफ हैबिटेबल प्लैनेट अर्थ (एसएचएपीई) नीतभार है।

"The success of Chandrayaan 3 is not just India's alone but it belongs to all of humanity", the Prime Minister remarked and underlined that the explorations of the mission will open new doors of possibilities for moon missions of every country.

सूर्य के अध्यन हेतु "आदित्य L 1" सूर्य देव का वरदान है सौर ऊर्जा: पीएम मोदी ने कहा, "यह सूर्य देव का वरदान है- 'सौर ऊर्जा'. सौर ऊर्जा आज एक ऐसा विषय है, जिसमें पूरी दुनिया अपना भविष्य देख रही है और भारत के लिए सूर्य देव न केवल उपासना बल्कि सदियों से जीवन पद्धति के केंद्र में रहे हैं। भारत आज अपने परंपरागत अनुभवों को आधुनिक विज्ञान से जोड़ रहा है, इसलिए आज हम सौर ऊर्जा से बिजली पैदा करने वाले सबसे बड़े देशों में से एक बन गए हैं। सौर ऊर्जा हमारे देश के गरीब और मध्यम वर्ग के जीवन को कैसे बदल रही है, यह भी अध्ययन का विषय है।न केवल वैदिक साहित्य में बल्कि आयुर्वेद, ज्योतिष, हस्तरेखा शास्त्र में भी सूर्य के महत्व को प्रतिपादित किया गया है। सूर्य सिद्धांत के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति का बल, वैभव, यश, ज्ञान, क्रोध और हिंसा सूर्य के प्रभाव से निर्धारित होता है। नरेंद्र मोदी ने कहा कि सौर ऊर्जा देश के गरीब और मध्यम वर्ग के जीवन को कैसे बदल रही है, यह भी अध्ययन का विषय है।

जलवायु परिवर्तन का डाटा विश्व के लिए विश्व के कल्याण के लिए आवश्यक है। "आदित्य-एल1 का डाटा जलवायु परिवर्तन अध्ययन में सहायता करेगा" - पूर्व इसरो प्रमुख माधवन नायर

नरेंद्र मोदी ने ट्वीट किया था, 'सूरज की पहली किरण कोणार्क के सूर्य मंदिर को प्रणाम करती है, पश्चिम में सूर्य की आखिरी किरण मोढेरा, गुजरात के सूर्य मंदिर को प्रणाम करती है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 9 अक्टूबर, 2022 को गुजरात के मोढेरा में सूर्य मंदिर का दौरा किया। उनके आगमन पर प्रधानमंत्री का अभिनंदन किया गया। श्री मोदी ने सूर्य मंदिर में हेरिटेज लाइटिंग का उद्घाटन किया। यह भारत का पहला विरासत स्थल बन गया है जो पूरी तरह से सौर ऊर्जा से संचालित है।अडाणी न्यू इंडस्ट्रीज लिमिटेड ने बताया कि गुजरात के मुंद्रा में देश का सबसे बड़ा पवन टर्बाइन जनरेटर लगाया गया है। जर्मनी की तरह पवन टर्बाइनों का महत्व भी भारत की आर्थिक व्यवस्था और पर्यावरण के लिए महत्वपूर्ण है। जर्मनी में

कोयले और पेट्रोल के स्थान पर सौर और पवन ऊर्जा को बढ़ावा दिया जा रहा है। पिछले वर्षों में जर्मनी ने जीवाश्म ऊर्जा पर निर्भरता कम करने और नवीकरणीय ऊर्जा को बढ़ावा देने का फैसला किया और इसके लिए वहां लगातार कदम उठाए जा रहे हैं।

कोविड-19 पर वैश्विक प्रतिक्रिया: COVID-19 महामारी के दौरान, मोदी ने "ग्लोबल वैक्सीन हब" की अवधारणा शुरू की। हालाँकि यह वैश्विक प्रधान मंत्री पद के रूप में साकार नहीं हुआ है, लेकिन यह वैश्विक चुनौतियों का समाधान करने की उनकी इच्छा को दर्शाता है।

डिजिटलीकरण अप्रत्याशित कोविड-19 महामारी से निपटने के लिए यह एक और सामयिक और उन्नत कदम रहा है।

"ग्लोबल वैक्सीन हब के लिए मोदी का प्रस्ताव संकटों से निपटने के लिए सामूहिक वैश्विक प्रयासों के प्रति उनके दृष्टिकोण को प्रदर्शित करता है।" - [अंतर्राष्ट्रीय स्वास्थ्य विशेषज्ञ]

भारत की वैक्सीन उत्पादन क्षमताओं और वैक्सीन कूटनीति प्रयासों ने कई देशों को वैक्सीन की आपूर्ति करने में भूमिका निभाई, जो वैश्विक स्वास्थ्य में भारत के नेतृत्व को प्रदर्शित करता है।

भारत ने COVAX पहल में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जिसका उद्देश्य वैश्विक स्तर पर COVID-19 टीकों तक समान पहुंच सुनिश्चित करना है। अपनी वैक्सीन कूटनीति के माध्यम से, भारत ने कई देशों, विशेष रूप से अफ्रीका, दक्षिण पूर्व एशिया और लैटिन अमेरिका में टीकों की आपूर्ति की।

2020 में, मोदी ने COVID-19 वैक्सीन ग्लोबल एक्सेस फैसिलिटी (COVAX) लॉन्च की, जिसका उद्देश्य सभी देशों के लिए COVID-19 टीकों की समान पहुंच सुनिश्चित करना है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) भी सरकार द्वारा उठाए जा रहे सख्त कदमों की काफी सराहना कर रहा है। भारत में डब्ल्यूएचओ के प्रतिनिधि हेंक बेकेडम ने प्रकोप के खिलाफ भारत के प्रयासों और घातक वायरस को रोकने के लिए प्रधान मंत्री की पहल की सराहना की। "सरकार, प्रधान मंत्री कार्यालय और स्वयं प्रधान मंत्री की प्रतिबद्धता बहुत बड़ी और अत्यधिक प्रभावशाली रही है। यही कारण है कि भारत अच्छा प्रदर्शन कर रहा है।" ब्राजील के राष्ट्रपति बोल्सोनारो ने COVID टीकों के लिए पीएम मोदी को धन्यवाद दिया। बोल्सोनारो ने अपने ट्वीट में भगवान हनुमान की भारत से ब्राजील में 'संजीवनी बूटी' लाते हुए एक तस्वीर भी शामिल की।

आतंकवाद: मोदी ने आतंकवाद के सभी रूपों की निंदा की है और इस खतरे से निपटने के लिए वैश्विक सहयोग का आह्वान किया है। उन्होंने आतंकवाद के खतरे से निपटने के लिए भारत के सुरक्षा बलों और खुफिया एजेंसियों को भी मजबूत किया है।

पीएम मोदी ने आतंकवाद के खिलाफ व्यापक वैश्विक प्रतिक्रिया का आह्वान किया, और दुनिया को "विस्तारवाद" से मुक्त रखने की दिशा में काम करने को भी कहा।..आतंकवाद एक वैश्विक खतरा है, और हमें इसे हराने के लिए मिलकर काम करना चाहिए। हमें गरीबी, असमानता और शिक्षा की कमी जैसे आतंकवाद के मूल कारणों पर भी ध्यान देना चाहिए।"।

मानवता की रक्षा, "वसुधैव कुटुम्बकम" की विरासत आज समय और दुनिया की जरूरत है। एक ऐसी दुनिया में जो हिंसा और आतंकवाद से त्रस्त युद्ध के चरणों से गुजर रही है, गांधीवादी अहिंसा के विचार को अतीत की तुलना में आज अधिक से अधिक बनने की आवश्यकता है। ऐसी दुनिया में जो हिंसा और आतंकवाद से त्रस्त यूक्रेन रूस युद्ध की त्रासदी से गुजर रही है, अतीत की तुलना में आज अहिंसा के गांधीवादी विचार की अधिक से अधिक आवश्यकता है।

हम अपने वेद और अन्य पुस्तकों में आतंकवाद और फिदायीन का समाधान खोज सकते हैं। वेदों सहित सभी हिंदू शास्त्रों ने आत्महत्या या सामूहिक आत्महत्या को पाप ही नहीं कहा है, बल्कि इसे ईश्वर का अपमान भी बताया है। 'आत्मवत सर्वभूतेषु' सभी जीवों को अपनी आत्मा समझो। हर कंकड़ में शंकर का वास है, इसलिए हत्या को 'ब्रह्महत्या' माना गया है।

पीएम मोदी दुनिया के पहले नेता हैं जिन्होंने आतंकवाद के खिलाफ अंतर्राष्ट्रीय जगत को एकजुट किया। यह नरेंद्र मोदी ही थे जिन्होंने दुनिया को समझाया कि आतंकवाद कानून और व्यवस्था, किसी एक राज्य या देश का विषय नहीं है, बल्कि यह एक वैश्विक समस्या है। पीएम मोदी ने ही तरराष्ट्रीय जगत को समझाया कि आतंकवाद अच्छा या बुरा नहीं होता। मोदी जी ने धीरे-धीरे आतंकवाद की समस्या का धीरे-धीरे अंतर्राष्ट्रीयकरण किया, जबकि पहले आतंकवाद को अच्छे और बुरे के रूप में परिभाषित किया जा रहा था, उन्होंने दुनिया को समझाया कि आतंकवाद क्या है, आतंकवाद मानवता का दुश्मन है, न गुड है न बैड।

बहुपक्षवाद और नियम-आधारित अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था को बढ़ावा देना। मोदी ने वैश्विक चुनौतियों से निपटने के लिए बहुपक्षवाद और नियम-आधारित अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था के पक्ष में बात की है। उन्होंने अंतरराष्ट्रीय संस्थानों को अधिक प्रतिनिधित्वपूर्ण और प्रभावी बनाने के लिए उनमें सुधार का भी आह्वान किया है। मोदी बहुपक्षवाद के प्रबल समर्थक रहे हैं। उन्होंने अंतरराष्ट्रीय संस्थानों को अधिक प्रतिक्रियाशील बनाने के लिए उनमें सुधार का आह्वान किया है। बहुपक्षवाद के दो प्रमुख सिद्धांत हैं- हितधारकों के बीच हितों की अविभाज्यता, विवाद निपटान की एक व्यवहार्य प्रणाली, जो समस्या समाधान में तार्किक दृष्टिकोण का पालन करती है।

भारत की विदेश नीति 'वसुधैव कुटुम्बकम' और 'गुड समैरिटन' (किसी की सहायता करने की भावना) के लोकाचार पर आधारित है। बहुपक्षवाद के प्रति भारत की दीर्घकालिक प्रतिबद्धता संयुक्त राष्ट्र संघ में सुधारों के आह्वान के रूप में परिलक्षित हो सकती है।

द्विपक्षीय दृष्टिकोण को पुनः स्थापित करने में भारत की भूमिका: विशेषज्ञों का मानना है कि बहुपक्षवाद की बहाली में भारत की प्रभावी भूमिका को नकारा नहीं जा सकता क्योंकि भारत ने समय के साथ अपनी गुटनिरपेक्ष नीति को बदला है और बहुपक्षवाद की नीति अपनाई है (भारत लगभग सभी प्रमुख शक्तियों के साथ मैत्रीपूर्ण संबंध रखता है)। इसका फायदा उठा रहा है) फॉलो कर रहा है.

वर्तमान में, भारत एक वैश्विक मध्यस्थ बन सकता है और वैश्विक मुद्दों पर एक रूपरेखा विकसित करने के लिए विभिन्न हितधारकों के बीच समन्वय कर सकता है।

भारत एक प्रमुख जी-20 सदस्य देश और दुनिया की पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था (क्रय शक्ति समानता के आधार पर तीसरी सबसे बड़ी) है, जिसमें अंतरराष्ट्रीय सक्रियता और नियम-आधारित बहुपक्षवाद को बढ़ावा देने की एक लंबी परंपरा है।

भारत की विदेश नीति 'वसुधैव कुटुंबकम' और 'अच्छे सामरी' के लोकाचार पर आधारित है।

बहुपक्षवाद के प्रति भारत की दीर्घकालिक प्रतिबद्धता संयुक्त राष्ट्र में सुधारों के आह्वान में परिलक्षित हो सकती है।

भारत ने विभिन्न बहुपक्षीय पहलों जैसे अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन (आईएसए), आतंकवाद का मुकाबला करने के लिए अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद पर व्यापक सम्मेलन (सीसीआईटी) का प्रस्ताव और एशिया-अफ्रीका विकास गलियारे को बढ़ावा देने के लिए लगातार प्रयास किए हैं। कर चुके है।

भारत पूरी दुनिया के लिए फार्मेसी का केंद्र (दुनिया का सबसे बड़ा उत्पादक और लागत प्रभावी जेनेरिक दवाओं का निर्यातक) है।

विकसित और विकासशील देशों के समूह के साथ मिलकर काम करने की क्षमता ने भारत का कद बढ़ाया है, जिसके परिणामस्वरूप दुनिया के कई देश भारत द्वारा रखे गए प्रस्तावों का समर्थन करते हैं।

भारत अलायंस फॉर मल्टीलेटरलिज्म के साथ मिलकर काम कर सकता है ताकि दोनों बड़े पैमाने पर सुधार एजेंडे को आकार दे सकें। **व्यापार साझेदारी:** आर्थिक विकास को बढ़ावा देने

के लिए अन्य देशों के साथ व्यापार संबंधों को बढ़ावा देना। "आर्थिक विकास को सभी की खुशी और प्रगति में तब्दील होना चाहिए।" - नरेंद्र मोदी

ग्लोबल प्रीमियर नरेंद्र मोदी व्यापार बाधाओं को कम कर सकते हैं एवं भेदभाव रहित सिद्धांत के अंतर्गत कार्य कर सकते हैं।

वे आर्थिक विकास एवं रोज़गार को प्रोत्साहित कर सकते हैं। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर व्यापार करने की लागत में कटौती कर सकते हैं। सुशासन को प्रोत्साहित कर सकते हैं। पारदर्शिता, साझा जानकारी एवं ज्ञान तथा निष्पक्ष वाणिज्यिक वातावरण तैयार सकते हैं।

नियमों से निरंकुशता एवं भ्रष्टाचार के अवसरों में कमी आती है।

ग्लोबल प्रीमियर नरेंद्र मोदी देशों को विकसित करने में मदद सकते हैं: अधिक मुक्त व्यापार आर्थिक विकास को बढ़ावा दे सकते हैं तथा देशों को विकसित करने में सहायक हो सकते हैं।

इस मायने में वाणिज्य एवं विकास एक दूसरे के लिये अच्छे होते हैं।

नरेंद्र मोदी शक्तिहीन देशों की आवाज़ बन सकते हैं: छोटे देश विश्व व्यापार संगठन के बिना कमज़ोर होंगे। सहमत नियमों, सर्वसम्मति से निर्णय लेने एवं गठबंधन निर्माण से मोलभाव की शक्ति के अंतर कम हो जाते हैं।

गठबंधन समझौतों में विकासशील देशों की एक मज़बूत आवाज़ बनता है।

परिणामी समझौतों का अर्थ है कि सबसे शक्तिशाली देशों सहित सभी देशों को नियमों पर चलना होगा। शक्ति के शासन के बजाय कानून का शासन स्थान लेता है।

ग्लोबल प्रीमियर नरेंद्र मोदी पर्यावरण एवं स्वास्थ्य को प्रोत्साहित कर सकते हैं: व्यापार एक साधन से अधिक कुछ नहीं है। नरेंद्र मोदी शांति एवं स्थिरता में योगदान दे सकता है: जब विश्व अर्थव्यवस्था में उतार-चढ़ाव होता है तो बहुपक्षीय व्यापार प्रणाली स्थिरता में योगदान कर सकते हैं।

व्यापार नियम नीति निर्माण में अति मंद गति को हतोत्साहित करके एवं व्यापार नीति को और अधिक पूर्वानुमानित करके विश्व अर्थव्यवस्था को स्थिर बनाते हैं। वे संरक्षणवाद को रोकते हैं एवं निश्चितता बढ़ाते हैं। व्यापार नियम विश्वास निर्माता होते हैं।

भूराजनीतिक तनाव: भूराजनीतिक जोखिम का एक विशिष्ट उदाहरण दो देशों के बीच संघर्ष है, जो उनके बीच वस्तुओं और सेवाओं के प्रवाह को बाधित कर सकता है और आपूर्ति श्रृंखला में व्यवधान पैदा कर सकता है और व्यवसायों के लिए लागत बढ़ सकती है।

भू-राजनीतिक संघर्षों का मुकाबला करने के लिए बहुपक्षीय अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था जरूरी है।

वैश्विक नेताओं को शांति और स्थिरता बनाए रखने के लिए भू-राजनीतिक चुनौतियों का समाधान करना चाहिए। मोदी इस दिशा में काम कर सकते हैं:

वैश्वीकरण और भू-अर्थशास्त्र द्वारा दशकों से व्यवस्थित दुनिया तेजी से भू-राजनीतिक जोखिम में फंसी दुनिया बन गई है। रूस -यूक्रेन संघर्ष 2023 में एक महत्वपूर्ण भू-राजनीतिक जोखिम पैदा कर रहा है। साइबर हमले एक बढ़ता हुआ भूराजनीतिक जोखिम है, जो बड़ा, अधिक जटिल और अधिक निरंतर होता जा रहा है। वे व्यक्तिगत संगठनों और राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए एक महत्वपूर्ण खतरा हैं।

कई अनसुलझे संघर्ष और प्रतिस्पर्धाएं भू-राजनीतिक जोखिम का स्रोत होंगी। इनमें से प्रमुख अमेरिका और मुख्य भूमि चीन के बीच जोखिम कम करना है। दक्षिण चीन सागर में चीन की बढ़ती सैन्य उपस्थिति, तकनीकी प्रगति और अमेरिका के साथ चल रहे व्यापार तनाव ने भू-राजनीतिक तनाव को जन्म दिया है।

नवीनीकृत व्यावहारिकता - सहयोग, विवैश्वीकरण नहीं: हाल के वर्षों में वस्तुओं, सेवाओं, लोगों, पूंजी, प्रौद्योगिकी और विचारों के बढ़ते अंतरराष्ट्रीय आंदोलनों के लाभों के बारे में विभिन्न कारकों ने सवालों को जन्म दिया है।

जलवायु जोखिम दुनिया के सबसे राजनीतिक रूप से ध्रुवीकरण वाले विषयों में से एक है। जलवायु जोखिम का राष्ट्रीय सुरक्षा और वैश्विक स्थिरता पर दूरगामी प्रभाव पड़ेगा, और जलवायु परिवर्तन के प्रभाव पहले से ही स्पष्ट हैं चरम मौसम की घटनाएं, प्रजातियों का विलुप्त होना, समुद्र का बढ़ता स्तर और विकासशील देशों में बढ़ती गरीबी।

उपलब्ध और सुलभ ऊर्जा संसाधनों का होना किसी देश के आर्थिक विकास के लिए महत्वपूर्ण है। कोविड-19 महामारी के परिणाम, भविष्य में संभावित पैन/महामारी: महामारी का सामाजिक और आर्थिक प्रभाव अभी भी महसूस किया जा रहा है। संप्रभु ऋण संकट: रिकॉर्ड ऋण स्तर, बढ़ती ब्याज दरें, खाद्य और ऊर्जा की बढ़ती कीमतें जैसे अन्य भूराजनीतिक जोखिम लगभग आधी सदी के सबसे बड़े संप्रभु ऋण संकट को भड़काने वाले कारण हैं।

वैश्विक जियोपॉलिटिकल भू-राजनीति चुनौतियों और नरेंद्र मोदी ?

2 वर्षों के लिये संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद के गैर-स्थायी सदस्य के रूप में भारत ने अपने विचारों को प्रस्तुत करने और वैश्विक बातचीत में योगदान देने की मांग की है।

चीन के आक्रामक रुख को दक्षिण चीन सागर में उसकी हालिया गतिविधियों में देखा जा सकता है, जहाँ उसे एक द्वीप पर निर्माण कार्य करते देखा गया है।

हालाँकि भारत ने अतिवाद के खतरे, अल्पसंख्यकों और महिलाओं के अधिकारों पर अपनी धारणा स्पष्ट कर दी है, इसके अतिरिक्त भारत ने अफगानिस्तान के भविष्य के लिये दीर्घकालिक प्रतिबद्धता का भी संकेत दिया है।

भारत ने अफगानों के जीवन में सुधार के लिये पिछले दो दशकों में अपनी 3 बिलियन अमेरिकी डॉलर की प्रतिबद्धता के अलावा 80 मिलियन अमेरिकी डॉलर की भी प्रतिबद्धता जताई है।

संकट में पड़ोस श्रीलंका। म्याँमार के साथ बातचीत सीमित महत्त्वपूर्ण यात्राओं और सैन्य जुंटा शासन को सहायता के रूप में जारी रही है।

कूटनीति और संघर्ष समाधान: संघर्ष वाले क्षेत्रों में तनाव कम करने के लिए संवाद और बातचीत में संलग्न रहें। "विदेशी मामलों में हमारा दृष्टिकोण विश्व परिवार की दृष्टि से निर्देशित है।" - नरेंद्र मोदी

मोदी का आह्वान है की यह युद्ध का समय नहीं है कूटनीति और संघर्ष समाधान होना चाहिए। विश्व मके देशों में एक दूसए के प्रति विश्वास की कमी हो गई है। विश्वास की कमी को दूर करना चाहिए।

प्रौद्योगिकी और नवाचार: तकनीकी प्रगति को अपनाने और नवाचार को बढ़ावा देने से वैश्विक चुनौतियों का समाधान करने में मदद मिल सकती है। मोदी यह कर सकते थे:

अनुसंधान और विकास का समर्थन करें: स्वच्छ ऊर्जा और स्वास्थ्य देखभाल समाधान जैसी वैश्विक समस्याओं को हल करने के लिए विज्ञान और प्रौद्योगिकी में निवेश करें।

डिजिटल कनेक्टिविटी: डिजिटल समावेशिता और कनेक्टिविटी को बढ़ावा देना, विशेष रूप से दूरदराज और कम सेवा वाले क्षेत्रों में। "प्रौद्योगिकी के इस युग में, हम डिजिटल विभाजन बर्दाश्त नहीं कर सकते।" - नरेंद्र मोदी

शिक्षा एवं कौशल विकास: वैश्विक प्रगति के लिए एक सुशिक्षित और कुशल कार्यबल महत्वपूर्ण है। मोदी इन पर कर सकते हैं फोकस:

शिक्षा की गुणवत्ता बढ़ाना और व्यावसायिक प्रशिक्षण को बढ़ावा देना।

वैश्विक भागीदारी: ज्ञान और विशेषज्ञता का आदान-प्रदान करने के लिए अन्य देशों के साथ सहयोग करें।

"शिक्षा केवल अवसर की सीढ़ी नहीं है, बल्कि यह हमारे भविष्य में एक निवेश भी है।" - मोदी

भारत के बढ़ते आर्थिक और राजनीतिक प्रभाव का लाभ उठाना। भारत अब दुनिया की पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है और 2030 तक तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने का अनुमान है। मोदी वैश्विक मुद्दों पर आम सहमति बनाने और सभी देशों को लाभ पहुंचाने वाली नीतियों को बढ़ावा देने के लिए भारत के बढ़ते आर्थिक और राजनीतिक प्रभाव का उपयोग कर सकते हैं।

भारत के ज्ञान और विशेषज्ञता को साझा करना। भारत के पास सतत विकास, जलवायु परिवर्तन और स्वास्थ्य देखभाल सहित कई क्षेत्रों में ज्ञान और विशेषज्ञता का खजाना है। मोदी इस ज्ञान और विशेषज्ञता को अन्य देशों के साथ साझा कर सकते हैं ताकि उन्हें वैश्विक चुनौतियों से निपटने में मदद मिल सके।

यहां ग्लोबल प्राइम मिनिस्टर मोदी के कुछ उद्धरण दिए गए हैं:

"जलवायु परिवर्तन एक वैश्विक चुनौती है और इसके लिए वैश्विक प्रतिक्रिया की आवश्यकता है। भारत जलवायु परिवर्तन से निपटने के वैश्विक प्रयास में अपनी भूमिका निभाने के लिए तैयार है।"

"हमें अधिक टिकाऊ और समावेशी दुनिया बनाने के लिए मिलकर काम करने की ज़रूरत है। भारत सतत विकास लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए अन्य देशों के साथ काम करने के लिए प्रतिबद्ध है।"

"स्वास्थ्य सेवा एक मौलिक मानव अधिकार है। हमें यह सुनिश्चित करने की आवश्यकता है कि हर किसी को गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य देखभाल तक पहुंच मिले, चाहे उनकी आय या सामाजिक स्थिति कुछ भी हो।"

नरेंद्र मोदी में वैश्विक चुनौतियों से निपटने में वैश्विक नेता बनने की क्षमता है। उनके पास अधिक टिकाऊ और समावेशी दुनिया के लिए एक स्पष्ट दृष्टिकोण है, और वह इस दृष्टिकोण को बढ़ावा देने के लिए भारत के बढ़ते प्रभाव का उपयोग करने के इच्छुक हैं। हालाँकि, यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि मोदी को घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय दोनों तरह की कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। वैश्विक चुनौतियों से निपटने में सफल होने के लिए उन्हें इन चुनौतियों से पार पाना होगा।

2018 में, मोदी ने स्विट्जरलैंड के दावोस में विश्व आर्थिक मंच में मुख्य भाषण दिया। अपने भाषण में, मोदी ने एक "नये भारत" के लिए अपने दृष्टिकोण को रेखांकित किया जो समृद्ध, समावेशी और टिकाऊ हो। मोदी के भाषण की व्यापक सराहना हुई और इससे वैश्विक नेता के रूप में उनकी प्रतिष्ठा मजबूत करने में मदद मिली।

मोदी के वैश्विक नेतृत्व को विश्व नेताओं और अंतर्राष्ट्रीय संगठनों ने मान्यता दी है। उन्हें कई देशों द्वारा सर्वोच्च सम्मान से सम्मानित किया गया है, और उन्हें कई मौकों पर टाइम पत्रिका की दुनिया के 100 सबसे प्रभावशाली लोगों की सूची में नामित किया गया है।

मोदी के वैश्विक नेतृत्व के बारे में विश्व नेताओं और अंतर्राष्ट्रीय संगठनों के कुछ उद्धरण यहां दिए गए हैं:

"प्रधानमंत्री मोदी एक दूरदर्शी नेता हैं जिन्होंने भारत को एक वैश्विक शक्ति में बदल दिया है। वह विकास और सहयोग के प्रबल समर्थक हैं और वह दुनिया को एक बेहतर जगह बनाने के लिए प्रतिबद्ध हैं।" - संयुक्त राष्ट्र महासचिव एंटोनियो गुटेरेस

"प्रधानमंत्री मोदी एक वैश्विक नेता हैं जिन्होंने भारत और संयुक्त राज्य अमेरिका के बीच संबंधों को मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। वह संयुक्त राज्य अमेरिका के सच्चे मित्र हैं, और मैं उनकी साझेदारी को महत्व देता हूं।" - पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति बराक ओबामा

"प्रधानमंत्री मोदी एक गतिशील और दूरदर्शी नेता हैं जिन्होंने भारत को एक वैश्विक शक्ति में बदल दिया है। वह सतत विकास के चैंपियन और गरीबों और हाशिए पर रहने वाले लोगों के लिए एक अथक वकील हैं।" - विश्व बैंक के अध्यक्ष डेविड माल्पास

मोदी का वैश्विक नेतृत्व भारत और दुनिया के लिए जरूरी है।' वह विकास, सहयोग और शांति के लिए एक मजबूत आवाज हैं। मोदी का नेतृत्व भारत और दुनिया के लिए बेहतर भविष्य को आकार देने में मदद कर रहा है।

उपरोक्त के अलावा, यहां कुछ अन्य विशिष्ट तरीके दिए गए हैं जिनसे मोदी ने अपने वैश्विक नेतृत्व का प्रदर्शन किया है:

उन्होंने नवीकरणीय ऊर्जा के उपयोग को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। भारत अब सौर ऊर्जा उत्पादन में अग्रणी है, और मोदी ने आने वाले वर्षों में सौर क्षमता बढ़ाने के लिए महत्वाकांक्षी लक्ष्य निर्धारित किए हैं।

वह महिलाओं और लड़कियों के अधिकारों के प्रबल समर्थक रहे हैं। उन्होंने महिलाओं और लड़कियों को सशक्त बनाने के लिए कई पहल शुरू की हैं और उन्होंने लैंगिक असमानता के खिलाफ आवाज उठाई है। वह सतत विकास के चैंपियन रहे हैं। उन्होंने जलवायु परिवर्तन को सर्वोच्च प्राथमिकता दी है और उन्होंने 2070 तक भारत को कार्बन-तटस्थ देश बनाने का संकल्प लिया है।

**वह आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई में एक अग्रणी आवाज रहे हैं। उन्होंने आतंकवाद से निपटने के लिए अन्य देशों के साथ मिलकर काम किया है और उन्होंने भारत को एक सुरक्षित स्थान बनाने का संकल्प लिया है।

"एक महान व्यक्ति लोगों को आकर्षित करता है और जानता है कि उन्हें एक साथ कैसे रखना है। नेतृत्व लोगों को काम करने वाले विचारों को फैलाने के लिए एक मंच देने की कला है।" पी एम मोदी को महान बनाने में उनकी नेतृत्व शैली और उनके व्यक्तित्व का सर्वाधिक योगदान है।

वैश्विक नेता पीएम मोदी: विविध चुनौतियों से भरी दुनिया में, विश्व नेता की भूमिका महत्वपूर्ण और जटिल दोनों है। वैश्विक मंच पर ऐसे व्यक्तियों की मांग है जिनमें दूरदर्शी सोच से लेकर कूटनीतिक कुशलता तक गुणों का अनूठा मिश्रण हो।

एक विश्व नेता के पास भविष्य के लिए एक स्पष्ट दृष्टिकोण होना चाहिए, जो उनके राष्ट्र और अंतर्राष्ट्रीय समुदाय दोनों को प्रेरित करे। जैसा कि हेलेन केलर ने एक बार कहा था, **"अंधे होने से भी बदतर एकमात्र चीज़ दृष्टि है लेकिन Vision नहीं है।"** दूरदृष्टि वाले एक अनुकरणीय नेता नरेंद्र मोदी हैं, जिन्होंने 2020 में, मोदी ने संयुक्त राष्ट्र महासभा में बात की, और उन्होंने दुनिया से आतंकवाद से लड़ने और शांति और विकास को बढ़ावा देने के लिए एक साथ आने का आह्वान किया। मोदी के भाषण को विश्व नेताओं ने खूब सराहा और इसे वैश्विक मामलों में भारत की बढ़ती भूमिका के संकेत के रूप में देखा गया।

वैश्विक संबंधों की जटिलताओं से निपटने के लिए प्रभावी कूटनीति आवश्यक है। विंस्टन चर्चिल के शब्द प्रतिध्वनित होते हैं: "खड़े होने और बोलने के लिए साहस की आवश्यकता होती है; बैठने और सुनने के लिए भी साहस की आवश्यकता होती है।" पी एम मोदी इसके उदाहरण हैं।

"अंधे होने से भी बदतर एकमात्र चीज़ दृष्टि है लेकिन Vision नहीं है।" दूरदृष्टि वाले एक अनुकरणीय नेता नरेंद्र मोदी हैं। उनकी नेतृत्व शैली और व्यक्तित्व का सम्पूर्ण दर्शन अगले अध्याय में है। मोदी एक ऐसे विश्व नेता हैं जो विविध आबादी की जरूरतों और चिंताओं को हैं। स्पष्ट और समन्वित दृष्टिकोण के साथ महामारी से लड़ाई लड़ी। भरत के पी एम मोदी ने गरीबों और कमजोर लोगों की जरूरतों का ख्याल रखा। डिजिटल सार्वजनिक बुनियादी ढांचे ने हमें कल्याणकारी सहायता के साथ सीधे उन तक पहुंचने में मदद की। मोदी की कार्यशैली में लचीलापन और दृढ़ संकल्प झलकता है।

विश्व नेतृत्व का पद उन लोगों से सुशोभित होता है जो दूरदर्शी सोच से लेकर अनुकूलनशीलता और सहानुभूति तक गुणों का एक अनूठा मिश्रण अपनाते हैं। प्रेरक उद्धरणों और वास्तविक दुनिया के उदाहरणों के माध्यम से, यह स्पष्ट हो जाता है कि पी एम मोदी ऐसे प्रभावी विश्व नेता हैं जो न केवल अपने राष्ट्र भारत की नियति को आकार देते हैं बल्कि मानवता की सामूहिक प्रगति में भी योगदान देते हैं।

नेतृत्व शैली और व्यक्तित्व

"एक महान व्यक्ति लोगों को आकर्षित करता है और जानता है कि उन्हें एक साथ कैसे रखना है। नेतृत्व लोगों को काम करने वाले विचारों को फैलाने के लिए एक मंच देने की कला है।"

वो देखते कैसे है... वो बोलते कैसे हैं...वो चलते कैसे हैं.... वो मिलते कैसे हैं... वो खाते क्या हैं वो पहनते क्या हैं सभी पर भारत ही नहीं दुनिया की निगाहें रहती हैं। अमेरिकी मार्केटिंग गुरु और ब्रांडिंग पर कई पुस्तकों के लेखक डेविड आकर ने अप्रैल 2012 के ब्लॉग पोस्ट में लिखा था कि प्रत्येक व्यक्ति का एक ब्रांड होता है जो प्रभावित करता है कि उस व्यक्ति को कैसे देखा जाता है और क्या उसे पसंद किया जाता है और उसका सम्मान किया जाता है।

"एक महान व्यक्ति लोगों को आकर्षित करता है और जानता है कि उन्हें एक साथ कैसे रखना है। नेतृत्व लोगों को काम करने वाले विचारों को फैलाने के लिए एक मंच देने की कला है।"

PM Modi's bold leadership style is laying the foundation of New India

"With PM Modi at the helm, one can truly imagine that the foundation of a strong and prosperous New India is being laid swiftly in real-time — its positive impact will be felt across generations. We take inspiration from the extraordinary life of our PM and pledge to work for the nation and the welfare of its citizens," Anil Bulani.

आर्थिक सुधार, बड़े सुधार, दैनिक आधार पर हुए हैं। चाहे वह हालिया राष्ट्रीय मुद्रीकरण पाइपलाइन हो, या जीएसटी, आईबीसी, जेएएम ट्रिनिटी के कार्यान्वयन और कंपनी अधिनियम को गैर-अपराधीकरण जैसे महत्वपूर्ण फैसले हों, पीएम मोदी ने ऐसे फैसले लेने का साहस किया है जो अल्पावधि में घर्षण पैदा करने की क्षमता रखते हैं, केवल इसलिए क्योंकि वह जानते हैं कि वे दीर्घकालिक रूप से देश की मदद करेंगे।

स्पष्ट रूप से, राष्ट्रीय हित और दूरदर्शिता बड़ी समस्याओं से निपटने के लिए पीएम मोदी के साहस को रेखांकित करती है। भारत के लिए यह बड़ा दृष्टिकोण "आत्मनिर्भर भारत" जैसे कदम में भी परिलक्षित होता है, जिसने "मेक इन इंडिया" की अपनी भव्य महत्वाकांक्षा से दुनिया को चकित कर दिया है।

राष्ट्रीय हित का मतलब यह भी है कि सभ्यतागत और विरासत संबंधी मुद्दों को हाशिये पर नहीं छोड़ा गया है। जो राष्ट्र विरासत के मुद्दों को पनपने देता है वह कभी भी अपनी क्षमता हासिल नहीं कर सकता। राम मंदिर निर्णय, जम्मू-कश्मीर का पूर्ण एकीकरण और ब्रू-रियांग, बोडो और कार्बी-आंगलोंग जैसी ऐतिहासिक शांति समझौते - इनमें से प्रत्येक अपने आप में बड़ी उपलब्धियां हैं, यह सुनिश्चित करने की पीएम मोदी की इच्छा का प्रतीक है कि आने वाली पीढ़ियों को एक स्थिर राष्ट्र विरासत में मिले, भले ही उन्हें यह सुनिश्चित करने के लिए बड़े जोखिम उठाने पड़ें। "मेरा भारत अरबों लोगों की भूमि है, जो एक समान सूत्र से बंधा हुआ है।" उदाहरण: मोदी का नेतृत्व अक्सर राष्ट्रीय गौरव और एकता पर जोर देता है, जैसा कि "मेक इन इंडिया" जैसी पहल और वैश्विक मंच पर भारतीय उत्पादों को बढ़ावा देने पर उनके फोकस में देखा गया है।

पीएम मोदी की साहसिक नेतृत्व शैली ने नए भारत की नींव रख रही है। नरेंद्र मोदी ने प्रधान मंत्री के रूप में "भारत की महत्वाकांक्षा को गति दी और इसकी ताकत को बढ़ाया"। मोदी ने अपने नौ साल के कार्यकाल में और इससे भी अधिक अपने दूसरे कार्यकाल के चार वर्षों में हासिल की गई लगभग हर चीज में इन गुणों का पर्याप्त मात्रा में प्रदर्शन किया है। मोदी जी की नेतृत्व शैली की कुछ प्रमुख विशेषता: परिवर्तनकारी नेता, रणनीतिक नेता, सहयोगी नेता, नवोन्वेषी नेता। परियोजना उन्मुख नेता और परिणामोन्मुख नेता। महान नेतृत्व की प्रशंसा करने, सराहना करने और उसे अपनाने में हिचक नहीं होनी चाहिए, चाहे वह कहीं भी हो, कोई भी हो। नरेंद्र मोदी की विशेषता: साहसी नेता, आक्रामक कदम, रातोंरात परिवर्तन और सुदृढ़ नेतृत्व।

नरेंद्र मोदी परियोजना उन्मुख नेता हैं। दूसरों को सीखने, बढ़ने और अधिक बनने में मदद करते हैं। उनके प्रभावी, मार्गदर्शन से कार्यान्वयन में लोगों और संगठनों की क्षमता का निर्माण होता है। परियोजनाओं और लोगों में सर्वश्रेष्ठ लाने के लिए संरचनाएं और प्रक्रिया बनाकर सफलता प्राप्त करना उनका ध्येय है। मोदी जी इस बात से चिंतित होते हैं कि लोग क्या करते हैं, न कि उनके परिणामों से।

नरेंद्र मोदी कार्य-उन्मुख नेता है जो लक्ष्य प्राप्त करने के लिए हाथ में लिए गए कार्यों पर ध्यान केंद्रित करना पसंद करते हैं। वे ध्यान केंद्रित करते हैं; मौजूदा मुद्दों और समस्याओं के चरण-दर-चरण समाधान पर।

मोदी जी परिस्थितिजन्य नेता हैं जो स्थिति के वर्तमान संदर्भ पर ध्यान केंद्रित करते हैं और जो आवश्यक है उसे करने का प्रयास करते हैं। कार्य को सफलतापूर्वक पूरा करने के लिए. मोदी जी लोगों की परिपक्वता का आकलन करने में सक्षम हैं।

रणनीतिक नेतृत्व को पूर्वानुमान लगाने, कल्पना करने, लचीलापन बनाए रखने और सशक्त बनाने की क्षमता के रूप में परिभाषित करें। अन्य लोग आवश्यकतानुसार रणनीतिक परिवर्तन करें। श्री मोदी पूरे देश को प्रेरित करने में सक्षम रहे हैं।

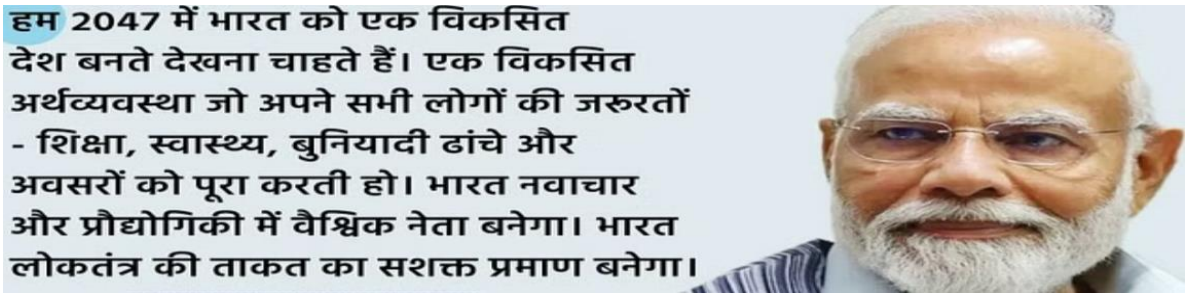

लोगों को विश्वास है कि उनके नेतृत्व में अच्छे दिन दूर नहीं हैं। भरोसेमंद और सक्षम नेतृत्व सफलता के लिए महत्वपूर्ण है कोई भी संगठन के लिए। (स्पिनेली, 2006)। आज देश की जनता को नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व पर पूरा भरोसा है, उनके हाथों में ही देश की सीमाएं सुरक्षित हैं , गरीब सशक्त हो रहा है ,नारी सशक्त हो रही है। बुजुर्गों को उनका सम्मान मिल रहा है। युवाओं को मनचाहा भविष्य बनाने की ताकत मिल रही है, भ्रष्टाचारियों, आतंकवादियों व उनके संरक्षणदाताओं में भय व्याप्त है। प्रधानमंत्री मोदी ने देशकी राजनीतिक संस्कृति को ही बदल दिया है। आज देश में योजनाओं की केवल घोषणा ही नहीं होती अपितु उनका समयबद्ध क्रियान्वयन भी हो रहा है।

क्षमता निर्माण: जब हम नरेंद्र मोदी की नेतृत्व शैली को देखते हैं तो वे सामने आते हैं: एक 'सहयोगी' नेता के रूप में। वे चाहते हैं कि राज्यों के मुख्यमंत्री राष्ट्र निर्माण में भागीदार बनें। वे कल्याणकारी योजनाओं को लागू करने के लिए हर राज्य के हाथों में आवश्यकता अनुसार अधिक पैसा देने को तैयार रहते हैं। यह राज्यों को लगभग 10% अधिक धनराशि के आवंटन से स्पष्ट हुआ है। मुख्यमंत्री राष्ट्र के लिए नीति निर्माण में योगदान दें इसके लिए उनके शासनकाल में योजना आयोग को समाप्त कर दिया गया और नीति आयोग की स्थापना की गई।

नरेंद्र मोदी एक अधिक **नवोन्वेषी नेता** के रूप में सामने आते हैं। वह जनता के लाभ के लिए सोशल मीडिया का उपयोग कर रहे हैं और राष्ट्रीय फोकस में बने रहने के लिए कई नवीन विचारों के साथ सोशल मीडिया में बने रहते हैं। 'स्टैच्यू ऑफ यूनिटी' बनाने की रणनीति एक ऐसा ही अभिनव विचार है। गुजरात राज्य में राष्ट्रीय एकता का प्रतीक बना रहा है (बिजनेस रिपोर्टर, 2013)। उन्होंने 'जन धन योजना', 'प्रधानमंत्री बीमा सुरक्षा योजना' और 'अटल पेंशन योजना' जैसी कई नवीन योजनाओं की घोषणा की है। अपने "मन की बात" में राष्ट्र से संवाद कर रेडियो का बहुत ही अभिनव प्रयोग किया।

एक प्रशासक के तौर पर पीएम मोदी कभी भी बड़ी समस्याओं से निपटने से पीछे नहीं हटे हैं। बड़े, साहसी और नवोन्मेषी - ये शब्द उन प्रशासनिक समस्याओं के प्रति उनके दृष्टिकोण का सार प्रस्तुत करते हैं जिनका उन्होंने सामना किया है। लोग अक्सर आश्चर्य करते हैं: बड़े सपने देखने की यह इच्छा कहाँ से आती है? उनकी जीवन कहानी से, कोई यह देख सकता है कि कैसे मोदी ने सरल रवैये के साथ जटिल समस्याओं का सामना किया।

लक्ष्यों को प्राप्त करना: श्री नरेंद्र मोदी एक परियोजना-उन्मुख नेता प्रतीत होते हैं। उनके द्वारा निश्चित समय सीमा के साथ अनेक परियोजनाएं शुरू की गई हैं। उन्होंने 100 स्मार्ट सिटी बनाने, हाई स्पीड ट्रेन चलाने और नदियों को जोड़ने की घोषणा की है. उन्होंने विनिर्माण क्षेत्र में युवाओं के लिए रोजगार पैदा करने के लिए एक बेहद महत्वाकांक्षी 'मेक इन इंडिया' अभियान की घोषणा की है।

श्री मोदी एक **परिणामोन्मुख नेता** हैं। वह अच्छे और सौम्य होने के बोझ से दबे नहीं रहेंगे। वह लगभग 13 वर्षों तक गुजरात राज्य के मुख्यमंत्री रहे और उनके बारे में आम धारणा है कि वह एक गतिशील, निर्णायक और विकासोन्मुख नेता हैं। उनके विकास पर ध्यान केंद्रित करने, विस्तार पर नज़र रखने और लाने के प्रयासों के कारण भारतीय लोगों को आशा की किरण दिखाई देती है। गरीबों के जीवन में गुणात्मक अंतर।

श्री नरेन्द्र मोदी एक **रणनीतिक नेता** हैं। यह नेतृत्व शैली प्रतिस्पर्धी प्रकृति पर जोर देती है लोमड़ी को परास्त करने और प्रतिस्पर्धियों को मात देने की क्षमता। रणनीतिक नेताओं में भी प्रभावित करने की क्षमता होती है।
Syed Ata Hasnain- रॉयल कॉलेज ऑफ डिफेंस स्टडीज (आरसीडीएस), लंदन अपने सभी उपस्थित अध्येताओं से अपेक्षा करता है कि वे अपनी पसंद के रणनीतिक नेता पर भाषण लिखें और प्रस्तुत करें। इसके लिए मुख्य मार्गदर्शन यह है कि किसी को यह बताना होगा कि संबंधित व्यक्तित्व के नेतृत्व का उसके देश पर, अंतरराष्ट्रीय स्तर पर और समग्र रूप से मानवता पर रणनीतिक प्रभाव कैसे पड़ा। क्या प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी उस ढांचे में फिट बैठते हैं।

अपनी सभी यात्राओं में प्रवासी भारतीयों के साथ जुड़ने के निर्णय के परिणामस्वरूप विश्व का भारत को देखने का नजरिया बदला। आज भारत और भारतियों को विश्व के सभी देशों में सम्मान की दृष्टि से देहा जा रहा है। भारत के राजनीतिक परिदृश्य में एक दुर्लभ स्थिरता देखी जा रही थी जिसका श्रेय श्री मोदी को दिया गया। कुछ शोधकर्ताओं ने नेता-अनुयायी संबंधों पर ध्यान केंद्रित किया है। इस सिद्धांत में शोधकर्ताओं ने

उनके पारस्परिक दायित्वों और उनके मनोवैज्ञानिक अनुबंध को देखा (इलीज़ एट अल 2007)।

फ्यूचर ग्रुप की ब्रांड कंसल्टेंसी शाखा, फ्यूचर ब्रांड्स के प्रमुख संतोष देसाई कहते हैं, "वह जो आदर्श पेश करते हैं वह एक मजबूत, सर्वज्ञ पिता तुल्य है जो अटूट है।" मोदी जी की छवि इस कथन को लाँघ कर आगे बढ़ चुकी है। मोदी जी जनता के सभी वरेजों के लिए भ्राता, अभिभावक, मार्गदर्शक, साथी सबकुछ हैं। राजनीतिक विश्लेषक मनीषा प्रियम का कहना है कि "मैंने छोटे बच्चों को भी, जो किसी तरह की बहस से दूर हैं, 'नमो' शब्द का जिक्र करते हुए सुना है।" आईआईएम-बैंगलोर के प्रतिष्ठित प्रोफेसर, सामाजिक वैज्ञानिक रामाधार सिंह कहते हैं, "उन्होंने (मोदी) एक ईमानदार, विश्वसनीय और प्रतिबद्ध नेता होने की छवि बनाई। उन्होंने लोगों को आश्वस्त किया कि वह उनकी स्थिति में सुधार कर सकते हैं।"

संज्ञानात्मक नेतृत्व इस बात पर जोर देता है कि नेता कैसे सोचते हैं और जानकारी को कैसे संसाधित करते हैं (लॉर्ड और हॉल, 2005)। नेतृत्व के संज्ञानात्मक पहलुओं पर शोध नेताओं और अनुयायियों के तरीके की व्याख्या करता हैजानकारी के बारे में सोचें और प्रक्रिया करें (लॉर्ड एंड हॉल, 2005; ममफोर्ड एट अल., 2007)।)

व्यक्तियों के बीच होने वाली अंतःक्रियाओं पर केंद्रित है। संज्ञानात्मक की एक सीमा होती है।

किसी व्यक्ति में कौन से गुण निष्क्रिय रहते हैं और कौन से गुण सक्रिय होते हैं।

दिया गया समय संज्ञानात्मक नेतृत्व क्षेत्र में शोधकर्ताओं के लिए प्रासंगिक है।

पेशेवर नेताओं में अनुभव, ज्ञान, समझ आदि का लाभ उठाने की क्षमता होती है।

संगठन और उसके लोगों में निहित ज्ञान। ऐसे नेताओं को बहुत अच्छी दिक्कत है।

समाधान कौशल (नॉर्थहाउस, 2012)। गुणी नेता प्रत्येक शास्त्रीय मानव पर जोर देते हैं; नेतृत्व के लिए सबसे आवश्यक गुण उदारता, नम्रता, विवेक, साहस, आत्मसंयम और न्याय (हावर्ड, 2007)। ये सभी गुण मोदी में हैं और यही उनके नेतृत्व की विशेषता है।

प्रोफेसर श्रीधर सामू का कहना है कि एकमात्र अन्य राष्ट्रीय ब्रांड, कांग्रेस के कमजोर पड़ने और बदलाव की एक आम अंतर्निहित आवश्यकता ने भी मोदी को मदद की। उन्होंने कहा, "यदि कोई ब्रांड एक सामान्य अंतर्निहित आवश्यकता को पूरा कर सकता है और इसे लाभ से जोड़ सकता है, तो यह राष्ट्रीय स्तर पर जा सकता है। हम देखते हैं कि हल्दीराम और सरवाना भवन दोनों ने इसे कैसे प्रबंधित किया है। उन्होंने स्वादिष्ट स्नैक्स और दक्षिण भारतीय भोजन की अंतर्निहित आवश्यकता को लक्षित किया है।"

आईआईएम-बैंगलोर के मूर्ति भी कहते हैं कि कांग्रेस नेतृत्व की कमजोरी ने भी ब्रांड मोदी को बढ़ावा देने में मदद की। वे कहते हैं, "जब क्षेत्र में ब्रांड खराब दिखाई देते हैं, तो प्रतिस्पर्धी ब्रांड तुलनात्मक रूप से चमक सकता है। मोदी के मामले में, उन्हें कांग्रेस नेतृत्व की अड़ियल प्रकृति और दूसरे कार्यकाल में उनके उदासीन प्रदर्शन से मदद मिली।"

नरेंद्र मोदी, जनता के आदमी, एक व्यापक और विशाल दृष्टिकोण के साथ, वह साधारण जड़ों से उठकर नेतृत्व तक पहुंचे और देश में तेजी से बदलाव लाए। एडमैन और लॉबिस्ट सुहेल सेठ कहते हैं, "आज भारत अपनी कमजोरी और असफलता का श्रेय कांग्रेस को देता है।" "मोदी सुशासन के पक्षधर हैं।"

नरेंद्र मोदी की राजनीतिक छवि एक साहसी कर्मठ व्यक्ति की है, जो भारत को आधुनिक बनाने और समृद्धि लाने के अपने प्रयास में कठोर, विघटनकारी निर्णय लेने के इच्छुक हैं। उनकी परिधान शैली ने इस व्यक्तिगत ब्रांड को पूरक बनाया है।

17 सितम्बर उनका जन्म दिन है। इस उम्र में भी पीएम मोदी न सिर्फ देश बल्कि दुनियाभर के युवाओं के लिए राजनीतिक प्रतीक (पॉलिटिकल आइकन) हैं। फिटनेस मंत्र हों, फैशन ट्रेंड या फिर सोशल मीडिया पर पॉपुलरिटी..हर जगह पीएम मोदी का दबदबा है। 17 सितंबर 1950 को गुजरात के वडनगर में जन्मे मोदी आज लोकप्रियता के सबसे ऊंचे मुकाम पर हैं लीक से हटकर फैसले लेना और मिशन मोड में काम करना पीएम मोदी की पहचान है। उनकी वर्किंग स्टाइल और लाइफस्टाइल का पूरा विश्व कायल है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी आज 17 सितंबर, 2023 को अपना 74 वां जन्मदिन मनायेंगे। जब से 2014 से नरेंद्र मोदी ने भारत के प्रधान मंत्री का पद संभाला है, उन्होंने भारत को विकास के पथ पर ले जाने और भारतीयों को भारत को एक विकसित देश बनाने के लिए उनकी वास्तविक क्षमता का एहसास कराने में कोई कसर नहीं छोड़ी है। बिना किसी से डरे साहसिक निर्णय लेने और लागू करने के लिए जाने जाने वाले मोदी ने न केवल अपने मजबूत नेतृत्व के लिए दुनिया भर में प्रशंसा अर्जित की है, बल्कि भारत को उभरती विश्व व्यवस्था का आधार भी बनाया है।

अन्य भारतीय राजनेताओं के विपरीत, जो आम तौर पर स्वतंत्रता संग्राम को याद करते हुए सफेद, हाथ से बुने हुए सूती कपड़े पहनते हैं, मोदी ने अच्छी तरह से फिट होने वाले कुर्ते की एक विशिष्ट पोशाक विकसित की, जो अक्सर आधी आस्तीन के साथ, चमकीले रंगों या आकर्षक पैटर्न में स्लीवलेस जैकेट के साथ जोड़ी जाती है।

उनकी अच्छी तरह से कटी हुई दाढ़ी ने उनके लुक को पूरा किया, जो उनकी लोकप्रिय अपील के लिए आवश्यक मर्दानगी को उजागर कर रहा था। 2013 में मोदी की जीवनी के लेखक नीलांजन मुखोपाध्याय कहते हैं, "यह एक अच्छी तरह से तैयार कॉर्पोरेट मुखिया था - बिना सूट के।" "मोदी नेता मोदी ऋषि बन गए हैं." "वह यह दिखाना चाहते हैं कि वह एक ऐसे व्यक्ति हैं जो भारत को पूरी तरह से अभूतपूर्व स्थिति में ले जाने की क्षमता रखते हैं।"

उनकी नेतृत्व शैली में सर्व प्रथम उनकी नित नवीन अपरंपरागत ड्रेस शैली को शामिल करना उचित है। जब नरेंद्र मोदी कपड़े पहनते हैं, तो दुनिया देखती है। पीएम मोदी के फैशन सेंस ने न केवल ध्यान खींचा है बल्कि यह उनकी अनूठी शैली का प्रतीक भी है। जीवंत कुर्ता और नेहरू जैकेट सहित उनकी विशिष्ट पोशाक, परंपरा और आधुनिकता के मिश्रण को दर्शाते हुए एक ट्रेंडसेटर बन गई है।

भारत ही नहीं पूरी दुनिया पीएम मोदी को भारतीय फैशन के नए चेहरे के रूप में देखती है। आधी बांह के कुर्ते (और चूड़ीदार) को नजरअंदाज करना मुश्किल है। उन्होंने एक समय कहा था कि जब वे RSS में प्रचारक थे तब एककाभी कभी पूरी बांह के कुर्ते को कैंची से काट कर हाफ बांह का कुरता बना लेते थे। विदेशी यात्राओं पर स्टाइल स्टेटमेंट बनाने की बात आती है, तो पी एम मोदी का 'उचित' कपड़े पहनने का शौक - ज्यादातर लिनेन और खादी कुर्ते, हल्के रंगों में, तेज-तर्रार जैकेट के साथ - देखने को मिलता है। दुनिया ने उनके जैसा भारतीय प्रधान मंत्री शायद ही कभी देखा है। वे अपने स्टाइलिश ब्ल्लाग्री चश्मे के फ्रेम, महंगी मोवाडो घड़ी और शानदार मोंट ब्लांक पेन संग्रह का प्रदर्शन कर सबको आश्चर्यचकित करते है।

पीएम मोदी का फैशन स्टाइल सभी उम्र के लोगों के लिए जल्द ही फैशन बन जाता है। लाल किले पर अलग-अलग रंग के साफे, रंग-बिरंगी सदरी, मोदी कुर्ता, मोदी गमछा जो भी पीएम मोदी ने अपनाया, लोगों के बीच ट्रेंड बनता चला गया। पीएम मोदी का आधी बाजू का कुर्ता आज युवाओं के लिए भी स्टाइल स्टेटमेंट बन गया है और फैशन शो रूम की शोभा बन गया

है। विदेशी नेताओं के बीच भी मोदी जैकेट का कई मौकों पर ट्रेंड दिखा. 2016 में ब्रिक्स समिट में रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन, चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग, ब्राजील के राष्ट्रपति माइकेल टेमर और जैकब जूमा डिनर के दौरान मोदी जैकेट में नजर आए थे।

अन्य भारतीय पुरुष राजनेताओं के विपरीत, जो आम तौर पर स्वतंत्रता संग्राम को याद करते हुए सफेद, हाथ से बुने हुए सूती कपड़े पहनते हैं, मोदी ने अच्छी तरह से फिट होने वाले कुर्ते की एक विशिष्ट पोशाक विकसित की, जो अक्सर आधी आस्तीन के साथ, चमकीले रंगों या आकर्षक पैटर्न में स्लीवलेस जैकेट के साथ जोड़ी जाती है।

इसी तरह दक्षिण कोरिया के राष्ट्रपति मून जे-इन को पीएम मोदी ने कुछ विशेष कुर्ते गिफ्ट किए थे जिन्हें वे अपने दफ्तर पहनकर पहुंचे थे और अपनी तस्वीर शेयर की थी। हालांकि, अपने कई तरह के कुर्ते, जैकेट को लेकर कई बार प्रधानमंत्री मोदी विपक्षी नेताओं के निशाने पर भी आते रहे हैं. जिनमें राहुल गांधी के द्वारा दिया गया सूटबूट की सरकार का भी नारा शामिल है। लोकसभा ही नहीं, राज्यों के विधानसभा चुनावों तक के अभियान में बीजेपी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के काम के भरोसे मैदान में उतरती है और लगातार जीत भी हासिल करती है। विपक्ष हर बार मोदी को मुद्दा बनाकर भाजपा पर निशाना साधता है। लेकिन मोदी इसी का फायदा उठाकर जनता का विश्वास जीत लेते हैं।

एंटी मोदी के स्लोगन के साथ अधिकांश विपक्षी दाल UPA के स्थान पर अब I.N.D.I.A. अलायन्स किये हैं। मोदी ने कहा कि आजादी के आंदोलन के दौरान महात्मा गांधी ने नारा दिया था- 'अंग्रेजों भारत छोड़ो' और अंग्रेजों को भारत छोड़ कर जाना पड़ा था. वैसे ही आज का नारा है-

जैसे गांधीजी ने भारत छोड़ो का नारा दिया था, वैसे ही आज का मंत्र है- भ्रष्टाचार छोड़ो इंडिया, परिवारवाद छोड़ो इंडिया, तुष्टिकरण छोड़ो इंडिया। यह क्विट इंडिया ही देश को बचाएगा।

एंटी मोदी के स्लोगन के साथ अधिकांश विपक्षी दाल UPA के स्थान पर अब I.N.D.I.A. अलायन्स किये हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने विपक्षी दलों के नए गठबंधन I.N.D.I.A को लेकर 27 जुलाई, 2023 को निशाना साधते हुए कहा कि यूपीए के कुकर्मों पर पर्दा डालने के लिए कांग्रेस और उसके साथियों ने अपना नाम यू.पी.ए. से बदलकर I.N.D.I.A कर दिया है, लेकिन जनता इनका एक बार फिर से वही हाल करेगी जो पहले किया था।

प्रधानमंत्री मोदी ने कहा, "इनका तरीका वही है जो हमेशा देश के दुश्मनों ने अपनाया है। पहले भी 'इंडिया' के नाम के पीछे अपने पाप को छुपाने का प्रयास किया गया है। इंडिया नाम तो ईस्ट इंडिया कंपनी में भी था, लेकिन वहां इंडिया नाम अपनी भारत भक्ति दिखाने के लिए नहीं बल्कि भारत को लूटने के इरादे से लगाया गया था। कांग्रेस के शासनकाल में सिमी

यानी स्टूडेंट इस्लामिक मूवमेंट आफ इंडिया बना था। नाम में इंडिया था लेकिन उसका मिशन, इंडिया को आतंकी हमलों से बर्बाद करने का था। जब इसके कुकर्म सामने आए तो सिमी पर प्रतिबंध लगाया गया और जब यह प्रतिबंध लगा तो फिर नया नाम लेकर आए। सिमी बन गया पीएफआई यानी पॉपुलर फ्रंट आफ इंडिया... नए नाम में फिर इंडिया लेकिन काम वहीं पुराना. '

मोदी ने कहा," I.N.D.I.A के नाम के लेबल से ये अपने पुराने काम को छुपाना चाहते हैं। यूपीए के कारनामों को छुपाना चाहते हैं। अगर इन्हें इंडिया की परवाह होती तो क्या ये विदेश में जाकर विदेशियों से भारत में दखल देने की बात करते? अगर इन्हें इंडिया की परवाह होती

तो क्या ये सर्जिकल स्ट्राइक और एयर स्ट्राइक पर सवाल उठाते। अगर इन्हें इंडिया की चिंता होती तो क्या गलवान में भारतीय सेना के शौर्य को कटघरे में रखते ? ये वही चेहरे हैं, जो आतंकी हमला होने पर दुनिया के आगे रोते थे, कुछ नहीं करते थे। इन्हें देश के सुरक्षा बलों के सामर्थ्य पर भरोसा नहीं है। इन्होंने सैनिकों का हक मारा है.. "

प्रधानमंत्री ने कहा," जो लोग टुकड़े टुकड़े गैंग को गले लगाते हैं, जो लोग भारत में भाषा के आधार पर बंटवारा करते हैं, जो लोग विदेशों से संबंध भी इस आधार पर बनाते हैं कि उनका वोट बैंक नाराज न हो जाए- उनके लिए राष्ट्रहित नहीं बल्कि वोट बैंक सर्वोपरि है. "," एक बार इन्होंने नारा दिया था 'इंदिरा इज इंडिया' व 'इंडिया इज इंदिरा' तब देश की जनता ने उनका हिसाब चुकता कर दिया था... "

अपरंपरागत नेतृत्व शैली: पीएम मोदी की नेतृत्व शैली उनकी लीक से हटकर सोचने और अपरंपरागत दृष्टिकोण अपनाने की क्षमता से चिह्नित है। दिवाली के दौरान सैनिकों के साथ भोजन करना, बॉलीवुड हस्तियों के साथ पोज देना और वैश्विक मंच पर योग का प्रतिनिधित्व करना शासन के प्रति उनके साहसिक और अभिनव दृष्टिकोण को दर्शाता है।

नरेंद्र मोदी ने पांच 'आई' पर जोर दिया जो भारत के आत्मनिर्भर होने के लिए आवश्यक हैं- इरादा, समावेश, निवेश, बुनियादी ढांचा और नवाचार। हमारी सरकार ने विकास के लिए आवश्यक सभी पांच सुविधाओं पर साहसिक निर्णय लिए हैं।

भारत के 14वें प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी मई 2014 से देश के नेतृत्व की कमान संभाले हुए हैं। अपने करिश्माई व्यक्तित्व और साहसिक दृष्टिकोण के साथ, मोदी ने भारत के राजनीतिक परिदृश्य को महत्वपूर्ण रूप से बदल दिया है और विभिन्न क्षेत्रों में महत्वपूर्ण बदलाव लाए हैं।

नरेंद्र मोदी भारतीय राजनीति में एक **परिवर्तनकारी व्यक्ति** हैं। उनकी साधारण शुरुआत से लेकर प्रधान मंत्री के पद तक, उनकी यात्रा दृढ़ संकल्प, महत्वाकांक्षा और विकास के प्रति

प्रतिबद्धता की विशेषता रही है। हालांकि उनके नेतृत्व के बारे में राय भिन्न हो सकती है, लेकिन भारत की अर्थव्यवस्था, बुनियादी ढांचे और सामाजिक कल्याण पर उनके प्रभाव को नकारा नहीं जा सकता है। जैसे-जैसे वह देश का नेतृत्व करते रहेंगे, नरेंद्र मोदी की विरासत निस्संदेह भारत के भविष्य को आकार देगी।

परिवर्तनकारी नेताओं में इसके बारे में बारीक और सूक्ष्म जानकारी को समझने की क्षमता होती है। स्थिति और लोगों की क्षमताएं और भावनाएं। बर्न्स के अनुसार परिवर्तनकारी नेता होते हैं जो अपने फ़ॉलोअर्स को बढ़ाकर उम्मीद से परे प्रदर्शन करने के लिए प्रेरित करते हैं। *आत्मविश्वास का स्तर और प्रदर्शन के उच्च स्तर विकसित करने के लिए सहायता प्रदान करके* (बर्न्स, 1978) ।

अवसरों से लाभ उठाना:
मोदी स्वयं भी अवसरों से लाभ उठाते हैं और ऐसा करने के लिए अपनी जनता से आग्रह भी करती हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा, वैश्विक अनिश्चितता के बीच उत्पन्न अवसरों का लाभ उठाने के लिए सार्वजनिक और निजी क्षेत्र को तालमेल के साथ काम करने के अलावा लीक से अलग हटकर सोचने की जरूरत है। 15 जुलाई, 2023 को पीएम मोदी ने फ्रांसीसी बिजनेस लीडर्स से भारत में अवसरों का फायदा उठाने को कहा है।

"एक उद्यमशील नेता में अवसरों की पहचान करने और कार्रवाई शुरू करने की क्षमता होती है, ऐसे अवसरों से लाभ उठाएं।" (मैकग्राथ और मैकमिलन, 2000)

करिश्मा और मतदाताओं से जुड़ाव, लोकप्रियता और अथक परिश्रम की अदम्य क्षमता ऐसे कारक हैं जो प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी को एक ऐसा नेता बनाते हैं जो अपनी ही श्रेणी में आता है।

2021 में लगातार दूसरी बार असम जीतना, प्रचंड बहुमत के साथ, बंगाल में बीजेपी की संख्या 3 से 77 सीटें करना, पुडुचेरी में सरकार बनाना, गुजरात में स्थानीय निकाय चुनावों में 84% स्ट्राइक रेट के साथ 576 सीटों में से 483 सीटें जीतना, ग्रेटर हैदराबाद नगर निगम चुनावों में सीटें बढ़ाना। 4 से 48 सीटों तक का प्रतिशत, तेलंगाना में दुब्बाका और महाराष्ट्र में पंढरपुर जैसे पूर्व, अभेद्य गढ़ों को जीतना, पीएम मोदी की बेजोड़, जीतने की क्षमता का प्रतिबिंब है।

नई-नई तकनीक से लगाव: पीएम मोदी को आधुनिक तकनीकों से बहुत लगाव है. वे सोशल मीडिया का इस्तेमाल लोगों से जुड़े रहने के लिए करते हैं। नमो ऐप के जरिए वे लोगों से सीधा संवाद करते हैं। तमाम मंत्रियों, विभागों के अधिकारियों को भी उन्होंने तकनीक के जरिए लोगों के सीधे संपर्क में रहने को प्रेरित किया। फेसबुक-ट्विटर और इंस्टाग्राम जैसे सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म के जरिए और तकनीक के प्रति लगाव के जरिए पीएम मोदी युवा

पीढ़ी के सीधे संपर्क में रहते हैं। विपक्षी दल जबतक सोशल मीडिया को समझने में लगे रहे, तबतक पीएम मोदी सोशल मीडिया के किंग बन चुके थे।

ब्रांडिंग में माहिर: केंद्र की चुनावी जंग में पीएम मोदी की एंट्री 2013 में हुई तबसे देश के चुनावी कैंपेन में बड़े बदलाव देखने को मिले। 3-डी कैंपेन, रेडियो पर मन की बात, चाय पर चर्चा, चुनावी कैंपेन का प्रोफेशनल मैनेजमेंट, विदेशों में बड़ी जनसभाएं आदि कर पीएम मोदी ने न सिर्फ पार्टी और खुद को एक ब्रांड में बदला बल्कि देश की चुनावी तस्वीर भी बदलकर रख दी। विपक्ष ने जब चौकीदार चोर है का आरोप लगाया, तब पीएम मोदी ने उसी का इस्तेमाल अपने चुनावी अभियान में कर लिया और खुद को ट्विटर पर 'चौकीदार नरेंद्र मोदी' बना लिया। समर्थक भी उनके इस कैंपेन से जुड़ गए और विपक्ष के हथियार से उसी को

विपरीत परिस्थितियों में भी अटल रहना: विपरीत परिस्थितियों में जब कोई आम आदमी आलोचनाओं से आहत होकर निराश हो जाता है, ऐसे मौके पर भी पीएम मोदी स्थिति को आगे आकर खुद संभालते और मिसाल पेश करते हैं। पुलवामा हमले के बाद कार्रवाई के लिए चारों ओर के दबाव के बीच देश को संबोधित करना और बाद में एयरस्ट्राइक से पाकिस्तान को सबक सिखाना इसका उदाहरण है। चंद्रयान-2 मिशन की निराशा के दौरान देश को संबोधित कर वैज्ञानिक समुदाय के प्रति समर्थन का माहौल बनाने समेत कई ऐसे मौके आए जब पीएम मोदी ने विपरित परिस्थितियों को भी अलग तरीके से हैंडल कर मिसाल पेश की। इसके उपरांत चंद्रयान - 3 सफलता पूर्वक चांद पर उतरने को तत्पर है।

आत्मविश्वासमय नेतृत्व शैली: प्रधानमंत्री मोदी ने july 26, 2023 को नई दिल्ली में

रीडेवलप किए गए इंटरनेशनल एग्जीबिशन-कम-कन्वेंशन सेंटर (IECC) का इनॉगरेशन करने के बाद कहा है कि मेरे तीसरे टर्म में दुनिया की पहली तीन इकोनॉमीज में एक नाम भारत का होगा। ये मोदी की गारंटी है। उन्होंने कहा कि 2024 के बाद तीसरे टर्म में देश की विकास यात्रा तेजी से बढ़ेगी। देशवासी अपने सपने अपनी आंखों के सामने पूरे होते देखेंगे।

प्रधानमंत्री ने कहा, 'दुनिया का सबसे बड़ा सोलर विंड पार्क, सबसे ऊंचा रेल ब्रिज, दुनिया की सबसे लंबी टनल, दुनिया की सबसे ऊंची मोटरेबल रोड, दुनिया का सबसे बड़ा क्रिकेट स्टेडियम, दुनिया की सबसे ऊंची प्रतिमा, एशिया का दूसरा सबसे बड़ा रेल रोड ब्रिज भारत में है। जल्द ही दिल्ली में दुनिया का सबसे बड़ा म्यूजियम भी बनने जा रहा है।'

नोट बंदी: शार्ट नोटिस के साथ 500 रुपये और 1000 रुपये के नोट का फिर बाद में 2000 रुपये के नोट का विमुद्रीकरण करने का क्रांतिकारी और साहसिक कदम उठाया। अगर मोदी ने अपनी पार्टी के सभी नेताओं से सलाह-मशविरा करने का फैसला किया होता और

आम सहमति का रास्ता अपनाया होता तो शायद यह बदलाव कभी नहीं होता। मजबूत नेता जानते हैं कि स्वतंत्र कार्यकारी निर्णय कब लेने हैं बनाम। निर्णय लेने में बड़े संगठन को कब शामिल करना है!

सफल नेता जोखिम लेते हैं, वे संभावित विफलता बिंदुओं को जानते हैं और दीर्घकालिक रूप से संगठनात्मक सफलता प्राप्त करने के लिए इससे निपटने के लिए तैयार रहते हैं। उक्त कदम एक बड़ा जोखिम था लेकिन मोदी ने यह कदम उठाया। वह जानते हैं कि दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र के बदलाव का यही एकमात्र रास्ता है।

प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी के पास एक छोटी लेकिन एक भरोसेमंद टीम थी जिसने पूरे कार्यान्वयन की योजना बनाई और इसे तब तक गोपनीय रखा गया जब तक कि प्रधान मंत्री ने स्वयं टीवी पर राष्ट्र को इसकी घोषणा नहीं की। सच ही कहा गया है, सफल नेता सफल लोगों से घिरे रहते हैं।

एक अरब भारतीयों को आधार "विशिष्ट पहचान" **बायोमेट्रिक डेटाबेस** में नामांकित करने का लक्ष्य एक नेता के रूप में श्री मोदी की मानसिकता को प्रकट करता है। उन्हें एक सीईओ, या एक टास्कमास्टर के रूप में देखा जाता है जो दूसरों को लागू करने के लिए ठोस लक्ष्य निर्धारित करता है।

मोदी सरकार के कार्यकाल में भारतीय की **संस्कृति रक्षण और संवर्धन** के लिए ऐतिहासिक प्रयास किये जा रहे हैं जिसमें माननीय न्यायपालिका के आदेश के बाद अयोध्या में भव्य मंदिर निर्माण, भव्य और दिव्य काशी हो, महाभारत सर्किट, रामायण सर्किट काविकास किया जा रहा है। केदारनाथ धाम और गुजरात के सोमनाथ मंदिर का भी भव्य विकास किया जा रहा है। भारतीय कलाकृतियाँ विदेशों से ढूंढ ढूंढ कर वापस लायी जा रही है, इसी क्रम में बीते वर्ष माँ अन्नपूर्णा वापस काशी पधारीं ।

गुजरात में सरदार वल्लभ भाई पटेल की सबसे ऊंची प्रतिमा **Statue of Unity** से सरदार पटेल को ही सम्मान मिला अपितु इसके माध्यम से पूरे भारत में सरदार पटेल के विचारों को स्थापित करने का प्रयास किया जा रहा है और उन्होंने एक भारत श्रेष्ठ भारत का जो सपना संजोया था उसेपूरा करने का प्रयास मोदी सरकार द्वारा किया जा रहा है। डॉ. अम्बेडकर से जुड़े पांच तीर्थस्थलों को विकसित करने का काम भी मोदी सरकार द्वारा किया गया। संविधान दिवस, सामाजिक समसरसता दिवस , राष्ट्रीय एकता दिवस, जनजतीय गौरव दिवस भी मोदी सरकार ने ही तय किये हैं। दिल्ली में राष्ट्रीय रक्षा स्मारक और प्रधानमंत्री संग्रहालय जैसी महत्वपूर्ण धरोहरों का विकास हो रहा है ।

मोदी अविश्वसनीय रूप से साहसी हैं। जब पूरा देश सितंबर 2016 में उरी हमले में हमारे 18 बहादुरों की मौत के दर्द से जूझ रहा था, तब 10 दिन बाद पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर में मोदी की **सर्जिकल स्ट्राइक** ने भारत को एक दुर्लभ खुशी और गर्व का अनुभव कराती है।

70 वर्षों तक केंद्र में कोई भी सरकार **अनुच्छेद 370** पर निर्णय नहीं ले सकी - संविधान में एक अस्थायी प्रावधान जो जम्मू और कश्मीर को विशेष दर्जा प्रदान करता था। हालाँकि, प्रधान मंत्री मोदी के नेतृत्व वाली सरकार ने 5 अगस्त, 2019 को जम्मू-कश्मीर की तथाकथित विशेष स्थिति को खत्म करने की राजनीतिक इच्छाशक्ति और साहस का प्रदर्शन किया, ताकि भारत संघ के साथ हिमालयी क्षेत्र के पूर्ण एकीकरण का मार्ग प्रशस्त हो सके। इस क्षेत्र पर शासन करने के लिए नियमों को बदलने के लिए कदम उठाए, एक ऐसा निर्णय जिसका राज्य के लोगों, देश की राजनीति और इसके संबंधों पर प्रभाव पड़ेगा।

सहनीय सीमा के भीतर, निर्वाचन क्षेत्रों का परिसीमन, अब गैर-कश्मीरी कश्मीर निवासियों को **मतदान का अधिकार** देना और चरण-दर-चरण- चरणबद्ध तरीके से वह कश्मीर को उन **कश्मीरी राजनीतिक नेताओं** के चंगुल से मुक्त कराने की राह पर है, जिन्होंने प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से उग्रवाद को बढ़ावा दिया है।

इस कदम से स्थिरता फिर से स्थापित हुई और पाकिस्तान प्रायोजित सीमा पार आतंकवाद के प्रभाव पर अंकुश लगा, जिसने 30 वर्षों तक जम्मू-कश्मीर को प्रभावित किया।

अनुच्छेद 370 को ख़त्म करके, केंद्र ने उस कमज़ोरी को संबोधित किया जिसका पाकिस्तान ने वर्षों तक शोषण किया और आतंकवाद को अमान्य कर दिया।

अनुच्छेद 370 हटाए जाने के बाद पाकिस्तान ने भारत के फैसले के खिलाफ समर्थन जुटाने में कोई कसर नहीं छोड़ी लेकिन अंतरराष्ट्रीय समुदाय ने पाकिस्तान के नखरे पर कोई ध्यान नहीं दिया.

दुनिया भर के कई देशों ने इस मुद्दे पर भारत के दृष्टिकोण को समझा है, और इतने वर्षों से आतंक को प्रायोजित करने के लिए पाकिस्तान की निंदा की है।

षटकोणीय भव्य नए संसद भवन का 28 मई, 2023 को उद्घाटन प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की नेतृत्व शैली का स्पष्ट रूप से प्रतीक है। यह परिसर उल्लेखनीय गति से बना,

और शुरुआत से ही लगभग लागू होने वाले कोविड प्रतिबंधों के बावजूद इसे पूरा होने में केवल ढाई साल लगे। फिर पैमाना है. नई इमारत में संसद के दोनों सदनों के लिए 1,272 लोगों के बैठने की क्षमता है। यह मूल संरचना की 790 सीटों से 60 प्रतिशत अधिक है, और अगली शताब्दी तक सांसदों की संख्या में किसी भी विस्तार को समायोजित करने के लिए पर्याप्त है।

उनके पहले कार्यकाल ने, कई मायनों में, आगे क्या होने वाला है इसकी नींव रखी। उन्हें एहसास हुआ कि अगर उन्हें भारत को बदलना है, तो - मेहनतकश जनता - में बदलाव लाना होगा। बैंक खाते खोलने के लिए जन धन योजना, एक विशिष्ट पहचान स्थापित करने के लिए आधार और डिजिटलीकरण के लिए मोबाइल कनेक्टिविटी। इसे स्वच्छ भारत अभियान के साथ जोड़ा गया, जिसके हिस्से के रूप में पूरे भारत में 110 मिलियन शौचालय बनाए गए, जिससे लाखों लोगों, विशेषकर महिलाओं के जीवन में बदलाव आया। इसके बाद गैस कनेक्शन, किफायती आवास और बिजली जैसी बुनियादी आवश्यकताओं से संबंधित योजनाएं शुरू की गईं।

मई 2019 में अपने नए जनादेश से उत्साहित होकर, उन्होंने शानदार शुरुआत की। जुलाई 2019 में, उन्होंने तीन तलाक को अपराध घोषित कर दिया; अगस्त में, उन्होंने साहसपूर्वक जम्मू-कश्मीर की विशेष स्थिति को रद्द करने के लिए अनुच्छेद 370 को निरस्त कर दिया; दिसंबर में, उन्होंने नागरिकता (संशोधन) अधिनियम पारित किया। 2020 की शुरुआत में, कोविड-19 महामारी के प्रबंधन में मोदी 2.0 पूरी तरह से सामने आया।

आत्मनिर्भर भारत अभियान के अंतर्गत भारत सरकार ने रक्षा क्षेत्र में कई ऐतिहासिक फैसले लिये है जिन पर अमल किया जा रहा है । रक्षा क्षेत्र में भारत मिसाइलों की दुनिया में आत्मनिर्भर बन चुका है और अब कई छोटे देश अपनी सुरक्षा के लिए भारत से ब्रहमोस जैसी मिसाइलां की खरीद का समझौता कर रहे हैं। आत्मनिर्भर भारत अभियान के तहत ही 118 अर्जुन टैंकों का निर्माण चल रहा है।

स्वास्थ्य व **खेलों** मे भी भारत को आत्मनिर्भर बनाने के लिए अभियान प्रगति पर है। भारत में सड़क निर्माण का कार्य प्रगति पर है। संचार के क्षेत्र में भी नयी क्रांति आ रही है ।

एक समय था जब भारत का युवा चीनी मोबाइल पर ही निर्भर था लेकिन अब वह दौर समाप्त हो चुका है। अब भारत में ही मोबाइल का निर्माण हो रहा है तथा जिसके कारण हजारो युवाओं को रोजगार भी उपलब्ध हो रहा है। भारत में आज 80 करोड़ से अधिक मोबाइल यूज़र्स हैं।

पी एम मोदी के आलोचक उन्हेंअधिनायकवादी नेता कहते हैं। वे सारी सत्ता शक्ति अपने में केंद्रित कर रखे हैं। उनके बाद कौन यह प्रश्न अभी बना हुआ है। इन आलोचकों का सटीक उत्तर tfipost में प्रकाशित राहुल गुप्ता के एक आर्टिकल में है।

बीजेपी मोदी नहीं है। भाजपा राष्ट्रवाद की विचारधारा को संस्थागत बनाने के लिए बनाया गया संगठन है। इस तरह का संगठन बनाने का उद्देश्य उन लोगों को एक मंच पर लाना है जो राष्ट्रवाद और राष्ट्रीय एकता को अपना आदर्श मानते हैं।

मोदी बस एक बड़े संगठन का हिस्सा हैं जो समान विचारधारा को प्रतिध्वनित करता है। विचारधारा भारत को मजबूत और अक्षुण्ण बनाने की है। देश की अखंडता एवं एकता किसी भी कीमत पर अटूट रहेगी। यह संस्थागत प्रक्रिया है जो ऐसे नेताओं का निर्माण करती है जो एकात्म मानववाद के सिद्धांतों पर काम करते हुए, चाहे कुछ भी हो, भारत माता के हितों की रक्षा करते हैं।

भाजपा जैसे संगठन खुद को बनाए रखते हैं क्योंकि, डॉ.,श्यामा प्रसाद मुखर्जी, पं. दीन दयाल उपाध्याय, अटल बिहारी वाजपेई और लालकृष्ण आडवाणी जैसे नेताओं ने (और RSS ने)भावी पीढ़ियों को राष्ट्रवाद के रास्ते पर चलने और आखिरी सांस तक भारत की रक्षा के लिए प्रेरित किया। इसी तरह, मोदी ने भाजपा के विचार में योगदान दिया लेकिन वे स्वयं संगठन नहीं बने।

मोदी की तरह, कई नेताओं की विचारधारा और भाजपा के सिद्धांत पार्टी का नेतृत्व करने की कमान के उत्तराधिकार में हैं। मूल राष्ट्रवाद के विचार का पालन करने वाले योगी आदित्यनाथ, हिमंत बिस्वा सरमा या शिवराज सिंह चौहान जैसे नेताओं ने स्वयं अपने अनुयायी बनाए हैं। न केवल विचारधारा बल्कि संबंधित राज्यों में वे जो काम कर रहे हैं वह सराहनीय है और मोदी के आवर्ती प्रभाव ने मोदी जैसे नेताओं को बढ़ाया है।

यह सच है कि किसी पार्टी के किसी खास नेता में केंद्रीकृत सत्ता शक्ति संतुलन को बिगाड़ देती है और इसका जीता जागता उदाहरण कांग्रेस (भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस) है। लेकिन बीजेपी ने अपने संगठन में ऐसा नहीं होने दिया।

पार्टी में आंतरिक लोकतंत्र को बनाए रखना तब मुश्किल हो जाता है जब मोदी जैसे नेता, जिनकी विचारधारा को लाखों लोग मानते हों, पार्टी में हों। उनके अनुयायियों की सूची ने पार्टी में शक्ति संतुलन को बाधित नहीं किया है और इसका श्रेय उनके चरित्र को भी जाता है कि वह प्रसिद्धि और शक्ति को अपनी विचारधारा पर हावी नहीं होने देते। वह अपने पूरे करियर में

विनम्र, दृढ़ और मजबूत रहे और पार्टी में समान रूप से योगदान दिया। भाजपा और मोदी दोनों एक दूसरे के पूरक बने और मोदी को भाजपा और भाजपा को मोदी नहीं बनने दिया।

लक्ष्य निर्धारित

2014 में NDA को 39 फीसदी वोट देश भर से मिला था, लेकिन 2019 में काम पर भरोसा करते हुए 45 फीसदी वोट मिला। यही नहीं पीएम नरेंद्र मोदी ने 225 सीटों का जिक्र करते हुए बताया कि यहां तो हम 50 फीसदी से ज्यादा वोट हासिल करके जीते थे। इस तरह उन्होंने स्पष्ट कर दिया कि विपक्ष के लिए इन सीटों पर जीत हासिल करना एक कठिन टास्क होगा। यही नहीं पीएम नरेंद्र मोदी ने एक कदम और आगे बढ़ते हुए 2024 में एनडीए के लिए 50 फीसदी वोटों का टारगेट तय किया है।

15 August, 2022

पीएम नरेंद्र मोदी के लालकिले से दिए ये 10 बड़े संदेश पढ़े? देश के बच्चों से लेकर बूढ़ों तक को खिलाई ये 5 कसम

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 76वें स्वतंत्रता दिवस पर सोमवार लालकिले से देश को संबोधित करते हुए अगले 25 साल का विजन दिया।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी (Narendra Modi) ने सोमवार को लालकिले (Red Fort) से नवीं बार फिर देश को संबोधित किया। स्वतंत्रता (Independence) के 75वें साल जब पूरा देश आजादी का अमृत महोत्सव मना रहा है, पीएम मोदी के लालकिले से संबोधन पर सबकी नजर थी। पीएम मोदी के भाषण से निकली 10 अहम बातें :

"विकास पहले" नरेंद्र मोदी का संदेश

1 - पच्चीस साल का रोडमैप इस साल भी

पिछले साल की तरह इस बार भी पीएम ने लालकिले से अपने भाषण के केंद्र में अगले 25 सालों के रोडमैप को रखा। साल 2037 तक भारत कैसे विकसित हो, कौने से अजेंडे अहम होंगे, चाहे पंच प्रण हों या बाकी मुद्दे, पीएम मोदी ने विस्तार से अपनी बात रखी। उन्होंने इसके लिए अपने विजन और रोडमैप की एक झलक दिखाई। पिछली बार उन्होंने कहा था कि हमारे देश को भी बदलना होगा और हमें एक नागरिक के नाते अपने आपको भी बदलना होगा। दरअसल, पिछले कुछ समय से पीएम मोदी 2047 में कैसा होगा भारत, इस पर एक बहस की शुरुआत कर चुके हैं। कई मौकों पर इस पर बोल भी चुके हैं। सोमवार को लालकिले से भी उन्होंने इसे विस्तार दिया।

2 - परिवारवाद पर बहस को व्यापक बनाने की मंशा

पीएम मोदी ने लालकिले से एक बार फिर परिवारवाद का मुद्दा उठाया। जब से पीएम मोदी राष्ट्रीय राजनीति में आए हैं, उन्होंने इस मुद्दे को हमेशा उठाया है।

3 - करप्शन पर मुखर होकर दिया संकेत

करप्शन के आरोप में सजा पाए नेताओं को जनता पसंद न करे, इसकी भी मांगकर एक बड़ा राजनीतिक संदेश देने की कोशिश की।

4 - जल जीवन मिशन (JJM),: जिसे 15 अगस्त 2019 को पीएम मोदी द्वारा लॉन्च किया गया पीएम मोदी ने लालकिले से अगले कुछ बरसों तक हर घर तक पानी पहुंचाने के महत्वाकांक्षी मिशन को और बढ़ाने की बात कही। मोदी सरकार की योजना के तहत 2024 तक सभी घर तक पानी की पाइपलाइन और नल से पानी पहुंचाने का टारगेट रखा गया है। मोदी की मंशा है कि वह सबको ऐसा घर दें, जिसमें बिजली-पानी-शौचालय और गैस सिलिंडर की पहुंच हो। दरअसल, मोदी सरकार को पहले टर्म में प्रधानमंत्री आवास योजना, शौचालय और उज्ज्वला जैसी योजनाओं का बड़ा लाभ गरीबों के बड़े तबके को दिया।

6- महिलाओं पर खास ध्यान

प्रधानमंत्री ने अपने भाषण में महिलाओं के सम्मान से लेकर महिलाओं को ज्यादा मौके देने तक की बात की। पीएम ने लालकिले से कहा कि बोलचाल में, व्यवहार में, शब्दों में नारी का अपमान करने की जो विकृति है, उससे मुक्ति का संकल्प लें। उन्होंने कहा कि हर क्षेत्र में महिलाएं देश का नाम रोशन कर रही हैं। जितने ज्यादा अवसर बेटियों को दिए जाएंगे, देश उतनी ही तेजी से प्रगति करेगा

7- अपनी संस्कृति पर जोर

पीएम ने भारतीय संस्कृति पर फिर जोर दिया। उन्होंने कहा कि हमें हमारी विरासत पर गर्व होना चाहिए। यही विरासत है जिसने भारत को कभी स्वर्णिम काल दिया था। पीएम ने नई शिक्षा नीति का भी जिक्र किया और कहा कि उसमें हमारे संस्कार मिले हुए हैं। साथ ही कहा कि नया कौशल प्रबंधन हमें गुलामी की मानसिकता से आजादी देगा। उन्होंने हर भारतीय भाषा पर गर्व करने की बात भी कही।

8- आदिवासी समाज पर फोकस जारी: मोदी सरकार का फोकस आदिवासी समाज पर काफी रहा है। मुर्मू अब देश की पहली आदिवासी महिला राष्ट्रपति बन गई हैं। साथ ही बिरसा मुंडा के जन्म दिन को जनजातीय गौरव दिवस के रूप में मनाने का फैसला किया है।

9- जनभागीदारी का संदेश

पीएम ने कहा कि कोराना काल में एकजुटता दिखाने के लिए थाली बजाने से लेकर, कोरोना योद्धाओं को सपोर्ट देने के लिए दिया जलाने तक और जिस तरह तिरंगा यात्रा में लोग तिरंगा लेकर घरों से निकले, उसने दिखाया कि भारत में सामूहिक चेतना का पुनर्जागरण हुआ है। पीएम ने इसी बहाने कोरोना वैक्सीन में भारत की सफलता का जिक्र भी कर दिया। उन्होंने कहा कि जब दुनिया वैक्सीन को लेकर असमंजस में थी, तब भारत के लोगों ने 200 करोड़ डोज लगवाईं। पीएम ने कहा कि राजनीतिक स्थिरता का क्या महत्व होता है और नीतियों में कैसा सामर्थ्य होता है,यह भारत ने दिखाया है। दरअसल 2014 से जब से पीएम मोदी सत्ता में आए हैं,तब से जनभागीदरी उनकी सबसे बड़ी ताकत रही है।

10- आत्मनिर्भर भारत से राष्ट्रवाद पर निशाना

पीएम के आत्मनिर्भर भारत के नारे की गूंज लालकिले से भी सुनाई दी।

अगले 25 साल के लिए पंच प्रण गिनाए

- देश को विकसित बनाना है।

- गुलामी की हर सोच से मुक्ति पानी है।

- अपनी विरासत पर गर्व करना है।

- एकता और एकजुटता बनाए रखनी है।

- नागरिक कर्तव्य का पालन करना है।

व्यक्तिगत लोकप्रियता

स्वामी विवेकानंद के कथन "उठो, जागो और तब तक मत रुको, जब तक लक्ष्य की प्राप्ति न हो जाए। अपना जीवन एक लक्ष्य पर निर्धारित करो, अपने पूर्ण शरीर कौस एक लक्ष्य से भर दो, यही सफलता की कुंजी है। " को मोदी जी ने अपने में अक्षर सहित उतारा है।

मोदी दिन रात बिना थके बिना रुके अपने लक्ष्य प्राप्ति के लिए अग्रसर है। प्रधानमंत्री कार्यालय के अधिकारी प्रवेश कुमार ने एक RTI का जवाब देते हुए कहा कि प्रधानमंत्री ने अब तक कोई छुट्टी नहीं ली है और हमेशा नियत समय पर ऑफिस आते हैं। ऐसा नहीं है कि पहली बार पीएमओ ने इस तरह की जानकारी साझा की है। 2016 में भी इसी तरह की जानकारी पीएम कार्यालय से मांगी गयी थी, जिसका जवाब भी बिल्कुल इसी तरह का है।

बिना रुके, बिना थके… पीएम मोदी के तीन दिन का व्यस्त कार्यक्रम देख चकरा जाएंगे आप।

9 और 10 सितंबर को दिल्ली में वसुधैव कुटुंबकम का महा-आयोजन यानी G20 का समिट हुआ। इससे पहले पीएम मोदी के तीन दिन का शेड्यूल सामने आया ..

शेड्यूल की शुरुआत 6 सितंबर से होती है। पीएम मोदी जकार्ता रवाना होने से पहले मिनिस्टर्स काउंसिल की मीटिंग में शामिल हुए। दोपहर में हुई इस मीटिंग के बाद वे कैबिनेट की बैठक में भी पहुंचते हैं। 6 सितंबर यानी बुधवार शाम को ही वे जकार्ता के लिए रवाना हो जाते हैं।

7 सितंबर। 2024 शाम दिल्ली लौटे पीएम मोदी

करीब 7 घंटे की यात्रा के बाद पीएम मोदी आज यानी 7 सितंबर को तड़के करीब 3 बजे जकार्ता पहुंचते हैं। सुबह 7 बजे वे आसियान-भारत शिखर सम्मेलन में शामिल होते हैं।

बैठक के बाद पीएम मोदी करीब 11:45 बजे जकार्ता से दिल्ली के लिए रवाना हुए। करीब 7 घंटे बाद यानी 6 बजकर 45 मिनट पर पीएम मोदी दिल्ली में लैंड किये।

आठ सितंबर 2024 यानी शुक्रवार को पीएम मोदी अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडेन के साथ मीटिंग किये। फिर अगले दिन 9 सितंबर को G20 की बैठक शुरू हुई, जिसमें पीएम मोदी मौजूद रहे।

नरेंद्र मोदी की छवि स्वच्छ, ईमानदार और गरीबों तथा वंचितों की सेवा के प्रति प्रतिबद्ध है।

नरेंद्र मोदी 2014 से भारत के प्रधान मंत्री हैं। अपने कार्यकाल के दौरान, उन्होंने खुद को एक स्वच्छ, ईमानदार नेता के रूप में पेश किया है जो गरीबों और हाशिए पर रहने वाले लोगों की सेवा के लिए प्रतिबद्ध है। यह छवि उनकी व्यक्तिगत पृष्ठभूमि, उनकी राजनीतिक वक्तव्य और उनकी सरकार की नीतियों सहित कई कारकों के माध्यम से बनी है।

नरेंद्र मोदी का जन्म गुजरात के एक गरीब परिवार में हुआ था और राजनीति में प्रवेश करने से पहले उन्होंने चाय बेचने का काम किया था। इससे उन्हें जनता के बीच एक निश्चित विश्वसनीयता मिलती है, जो उन्हें एक ऐसे व्यक्ति के रूप में देखते हैं जो साधारण शुरुआत से देश के सर्वोच्च पद तक पहुंचा है। प्रधानमंत्री अक्सर सुशासन और पारदर्शिता की आवश्यकता के बारे में बोलते हैं और उन्होंने भ्रष्टाचार से लड़ने का वादा किया है। यह वक्तव्य कई भारतीयों के साथ मेल खाती है, जो सरकार में भ्रष्टाचार और अक्षमता से थक चुके हैं।

मोदी सरकार की नीतियों ने गरीबों और वंचितों की सेवा के लिए प्रतिबद्ध नेता के रूप में उनकी छवि को भी मजबूत किया है। उदाहरण के लिए, उनकी सरकार ने प्रधानमंत्री जन धन योजना और प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना जैसे कई सामाजिक कल्याण कार्यक्रम शुरू किए हैं। इन कार्यक्रमों से लाखों भारतीयों, विशेषकर गरीबों और हाशिए पर रहने वाले लोगों को लाभ हुआ है।

स्वच्छ शासन और गरीबों तथा हाशिए पर मौजूद लोगों की सेवा के प्रति मोदी की प्रतिबद्धता के उदाहरण

• प्रधानमंत्री जन धन योजना (पीएमजेडीवाई): पीएमजेडीवाई एक वित्तीय समावेशन योजना है जिसे 2014 में शुरू किया गया था। यह गरीबों और हाशिए पर रहने वाले लोगों को बैंकिंग सुविधाएं प्रदान करती है, जिन्हें पहले औपचारिक वित्तीय प्रणाली से बाहर रखा गया था। सितंबर 2023 तक, PMJDY के तहत 450 मिलियन से अधिक खाते खोले जा चुके हैं।

• प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना (पीएमयूवाई): पीएमयूवाई एक ऐसी योजना है जो गरीब परिवारों को मुफ्त एलपीजी कनेक्शन प्रदान करती है। इसे 2016 में खाना पकाने के लिए जलाऊ लकड़ी और अन्य बायोमास ईंधन के उपयोग को कम करने के उद्देश्य से लॉन्च किया गया था, जो स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हैं। सितंबर 2023 तक, पीएमयूवाई के तहत 90 मिलियन से अधिक एलपीजी कनेक्शन प्रदान किए गए हैं।

• स्वच्छ भारत मिशन (एसबीएम): एसबीएम एक स्वच्छता मिशन है जिसे 2014 में भारत को स्वच्छ और खुले में शौच मुक्त (ओडीएफ) बनाने के उद्देश्य से शुरू किया गया था। एसबीएम के तहत ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में 100 मिलियन से अधिक शौचालयों का निर्माण किया गया है। सितंबर 2023 तक, भारत के 99% से अधिक गांवों को ओडीएफ घोषित किया जा चुका है।

• प्रधानमंत्री आवास योजना (पीएमएवाई): पीएमएवाई एक आवास योजना है जिसे गरीबों को किफायती आवास उपलब्ध कराने के उद्देश्य से 2015 में शुरू किया गया था। पीएमएवाई के तहत, 20 मिलियन से अधिक घरों का निर्माण या मंजूरी दी गई है।

• प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि (पीएम-किसान): पीएम-किसान एक योजना है जो छोटे और सीमांत किसानों को आय सहायता प्रदान करती है। पीएम-किसान के तहत, पात्र किसानों को तीन किस्तों में ₹6,000 की वार्षिक आय सहायता मिलती है। सितंबर 2023 तक, 110 मिलियन से अधिक किसानों को PM-KISAN से लाभ हुआ है।

ये स्वच्छ शासन और गरीबों और हाशिए पर मौजूद लोगों की सेवा के प्रति मोदी की प्रतिबद्धता के कुछ उदाहरण हैं। उनकी सरकार ने कई अन्य कार्यक्रम शुरू किए हैं जिनसे लाखों भारतीयों, विशेषकर गरीबों और हाशिए पर रहने वाले लोगों को लाभ हुआ है। इन कार्यक्रमों ने लाखों भारतीयों के जीवन की गुणवत्ता में सुधार करने में मदद की है और एक स्वच्छ, ईमानदार और प्रतिबद्ध नेता के रूप में मोदी की छवि में योगदान दिया है।

यहां पीएम मोदी की व्यक्तिगत लोकप्रियता के मुख्य कारणहैं:

• उच्च अनुमोदन रेटिंग। पीएम मोदी भारत और दुनिया भर में लगातार उच्च अनुमोदन रेटिंग बनाए रखते हैं। मॉर्निंग कंसल्ट के एक हालिया सर्वेक्षण के अनुसार, उनकी अनुमोदन रेटिंग 76% है, जो किसी भी विश्व नेता की तुलना में सबसे अधिक है।

• करिश्माई एवं लोकप्रिय नेता। पीएम मोदी एक करिश्माई और लोकप्रिय नेता हैं जो व्यक्तिगत स्तर पर लोगों से जुड़ने में सक्षम हैं। वह अपने ऊर्जावान भाषणों और अपने दृष्टिकोण के पीछे लोगों को एकजुट करने की क्षमता के लिए जाने जाते हैं।

• सशक्त व्यक्ति की छवि. पीएम मोदी को अक्सर एक मजबूत नेता के रूप में देखा जाता है जो कठोर निर्णय लेने और काम पूरा करने में सक्षम हैं। यह छवि कई मतदाताओं को आकर्षित करती है, खासकर संकट के समय में।

• राष्ट्रवादी छवि. पीएम मोदी को एक राष्ट्रवादी नेता के रूप में भी देखा जाता है जो भारत को पहले स्थान पर रखने के लिए प्रतिबद्ध हैं। यह छवि कई मतदाताओं को पसंद आती है, खासकर हिंदू बहुसंख्यक देश में।

• सोशल मीडिया प्रेमी. पीएम मोदी सोशल मीडिया पर काफी सक्रिय हैं और इसका इस्तेमाल अपने समर्थकों से जुड़ने और अपनी नीतियों को बढ़ावा देने के लिए करते हैं। ट्विटर पर उनके 89 मिलियन से अधिक फॉलोअर्स हैं, जो उन्हें इस मंच पर सबसे लोकप्रिय विश्व नेताओं में से एक बनाते हैं।

इन बिंदुओं के अलावा, पीएम मोदी की व्यक्तिगत लोकप्रियता उनकी कथित ईमानदारी और गरीबों और हाशिये पर पड़े लोगों की सेवा करने की उनकी प्रतिबद्धता के कारण भी है। उन्हें एक साफ़-सुथरे नेता के रूप में भी देखा जाता है जो भ्रष्टाचार के घोटालों में शामिल नहीं है।

कुल मिलाकर, पीएम मोदी एक मजबूत व्यक्तिगत ब्रांड के साथ एक बहुत लोकप्रिय नेता हैं। यह उनके करिश्मे, उनकी ताकतवर छवि, उनकी राष्ट्रवादी छवि, उनकी सोशल मीडिया समझ और उनकी कथित ईमानदारी के कारण है।

देश और दुनिया भर में मोदी की लोकप्रियता Approval Rating-2014-2023

भारत

| वर्ष | अनुमोदन रेटिंग | |---|---|---| | 2014 | 67% | | 2015 | 71% | | 2016 | 65% | | 2017 | 63% | | 2018 | 62% | | 2019 | 69% | | 2020 | 73% | | 2021 | 63% | | 2022 | 67% | | 2023 | 75% |

2014	67%
2015	71%
2016	65%
2017	63%
2018	62%
2019	69%
2020	73%
2021	63%
2022	67%
2023	75%

Worldwide

| वर्ष | अनुमोदन रेटिंग | |---|---|---| | 2019 | 66% | | 2020 | 72% | | 2021 | 75% | | 2022 | 78% | | 2023 | 76% |

Worldwide

| Year | Approval rating
|---|---|---|
| 2019 | 66% |
| 2020 | 72% |
| 2021 | 75% |
| 2022 | 78% |
| 2023 | 76% |

मोदी की उच्च अनुमोदन रेटिंग को कई कारकों के लिए जिम्मेदार ठहराया जा सकता है, जिसमें COVID -19 महामारी के दौरान उनका मजबूत नेतृत्व, आर्थिक विकास पर उनका ध्यान और उनकी राष्ट्रवादी बयानबाजी शामिल है। कई भारतीयों द्वारा उन्हें एक करिश्माई और निर्णायक नेता के रूप में भी देखा जाता है।

• उनका करिश्मा और मतदाताओं से जुड़ने की क्षमता. मोदी एक प्रतिभाशाली वक्ता हैं जो व्यक्तिगत स्तर पर मतदाताओं से जुड़ने में सक्षम हैं। उन्हें एक मजबूत और निर्णायक नेता के रूप में भी देखा जाता है, जिसे कई भारतीय महत्व देते हैं।

• उनका फोकस विकास पर है। मोदी ने विकास को अपनी सरकार की प्रमुख प्राथमिकता बनाया है। उन्होंने स्वच्छ भारत अभियान (स्वच्छ भारत मिशन) और मेक इन इंडिया पहल जैसी कई महत्वाकांक्षी परियोजनाएं शुरू की हैं। ये परियोजनाएँ कई भारतीयों के बीच लोकप्रिय रही हैं, जो इन्हें इस बात के प्रमाण के रूप में देखते हैं कि मोदी उनके जीवन को बेहतर बनाने के लिए प्रतिबद्ध हैं।

• राष्ट्रीय सुरक्षा पर उनकी कथित ताकत: राष्ट्रीय सुरक्षा के मुद्दों पर मोदी को एक मजबूत नेता के रूप में देखा जाता है। उन्होंने पाकिस्तान और चीन पर सख्त रुख अपनाया है, जो कई भारतीयों के बीच लोकप्रिय रहा है। उन्होंने भारत की सैन्य और सुरक्षा क्षमताओं में सुधार के लिए कई पहल भी शुरू की हैं।

• विश्वसनीय विकल्प का अभाव. भारत में मुख्य विपक्षी दल भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस इस समय असमंजस की स्थिति में है। इससे "कोई विकल्प नहीं है" (टीना) फैक्टर पैदा हुआ है, जिसका फायदा मोदी को हुआ है।

पीएम मोदी एक करिश्माई और लोकप्रिय नेता हैं:

• उन्होंने लगातार दो आम चुनावों में भारी जीत हासिल की है, जो भारतीय राजनीति में एक दुर्लभ उपलब्धि है।

• उनके मजबूत नेतृत्व, विकास के प्रति उनकी प्रतिबद्धता और उनकी राष्ट्रवादी बयानबाजी के लिए उनके समर्थकों द्वारा उनकी व्यापक रूप से प्रशंसा की जाती है।

• जनता के साथ उनका गहरा जुड़ाव है और वह भावनात्मक स्तर पर लोगों से जुड़ने में सक्षम हैं।

• वह एक कुशल संचारक है, और वह लोगों को प्रेरित करने और प्रोत्साहित करने के लिए अपने करिश्मे का उपयोग करने में सक्षम है।

• उन्होंने भारत में तीव्र आर्थिक वृद्धि और विकास के दौर की देखरेख की है।

• उन्होंने वैश्विक मंच पर भारत का मान बढ़ाया है और उन्होंने भारत को अंतरराष्ट्रीय मामलों में अधिक प्रभावशाली खिलाड़ी बनाया है।

यहां पीएम मोदी के करिश्मे और लोकप्रियता के कुछ विशिष्ट उदाहरण हैं:

• सोशल मीडिया पर उनके बहुत सारे फॉलोअर्स हैं, अकेले ट्विटर पर उनके 280 मिलियन से अधिक फॉलोअर्स हैं।

• उनकी रैलियों में अक्सर सैकड़ों हजारों लोग शामिल होते हैं, और वह अपने समर्थकों के बीच काफी उत्साह और उत्साह पैदा करने में सक्षम होते हैं।

• उनके समर्थकों द्वारा उन्हें अक्सर "मोदीजी" कहा जाता है, जो सम्मान और स्नेह का शब्द है।

• उन्हें कई बार टाइम पत्रिका के कवर पर दिखाया गया है।

• अमेरिकी राष्ट्रपति बराक ओबामा और जापानी प्रधान मंत्री शिंजो आबे जैसे विश्व नेताओं ने उनकी प्रशंसा की है।

ताकतवर नेता: • निर्णायक नेतृत्व: मोदी विवादास्पद मुद्दों पर भी त्वरित और निर्णायक निर्णय लेने के लिए जाने जाते हैं। इससे विमुद्रीकरण और वस्तु एवं सेवा कर (जीएसटी) जैसे कुछ प्रमुख नीतिगत बदलाव हुए हैं।

• राष्ट्रवादी छवि: मोदी ने एक मजबूत और निर्णायक नेता के रूप में अपनी छवि बनाई है जो भारत को पहले स्थान पर रखता है। इसने कई मतदाताओं, विशेषकर हिंदू बहुसंख्यकों को आकर्षित किया है।

• लोकप्रियता: हाल की कुछ असफलताओं के बावजूद, मोदी भारतीय जनता के बीच बहुत लोकप्रिय बने हुए हैं। उन्होंने 2019 में फिर से भारी बहुमत से चुनाव जीता और उनकी भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने हाल के वर्षों में कई राज्य चुनावों में जीत हासिल की है।

पीएम मोदी के निर्णायक नेतृत्व के लिए बिंदु

• कोविड-19 महामारी के दौरान मजबूत नेतृत्व: पीएम मोदी ने भारत में कोविड-19 महामारी से निपटने के लिए कई निर्णायक कदम उठाए, जिनमें देशव्यापी लॉकडाउन लगाना, परीक्षण क्षमता बढ़ाना और बड़े पैमाने पर टीकाकरण अभियान शुरू करना शामिल है। इन कदमों से वायरस के प्रसार को सीमित करने और जीवन बचाने में मदद मिली।

• आर्थिक सुधार: पीएम मोदी ने कई आर्थिक सुधार लागू किए हैं, जैसे माल और सेवा कर (जीएसटी) और दिवाला और दिवालियापन संहिता (आईबीसी)। इन सुधारों ने कारोबारी माहौल को सुव्यवस्थित करने और आर्थिक विकास को बढ़ावा देने में मदद की है।

• बुनियादी ढांचे का विकास: पीएम मोदी ने सड़क, रेलवे और हवाई अड्डों जैसे बुनियादी ढांचे के विकास में भारी निवेश किया है। इससे कनेक्टिविटी में सुधार और आर्थिक गतिविधियों को बढ़ावा देने में मदद मिली है।

• विदेश नीति: पीएम मोदी ने अधिक मुखर विदेश नीति अपनाई है, जिसमें प्रमुख शक्तियों के साथ घनिष्ठ संबंध बनाने और वैश्विक मंच पर भारत के हितों को बढ़ावा देने पर ध्यान केंद्रित किया गया है।

• सामाजिक कल्याण योजनाएं: पीएम मोदी ने कई सामाजिक कल्याण योजनाएं शुरू की हैं, जैसे कि प्रधान मंत्री जन धन योजना (पीएमजेडीवाई) और प्रधान मंत्री उज्ज्वला योजना (पीएमयूवाई)। इन योजनाओं ने लाखों गरीबों और हाशिए पर रहने वाले भारतीयों के जीवन को बेहतर बनाने में मदद की है।

पीएम मोदी के निर्णायक नेतृत्व के कुछ उदाहरण हैं:• विमुद्रीकरण: 2016 में, पीएम मोदी ने उच्च मूल्य वाले मुद्रा नोटों के अचानक विमुद्रीकरण की घोषणा की। यह कदम विवादास्पद था, लेकिन इसे भ्रष्टाचार और काले धन से निपटने के लिए एक साहसिक कदम के रूप में देखा गया।

• पाकिस्तान में सर्जिकल स्ट्राइक: 2016 में पीएम मोदी ने पाकिस्तान में आतंकी कैंपों पर सर्जिकल स्ट्राइक का आदेश दिया था। 1971 के युद्ध के बाद यह पहली बार था कि भारत ने पाकिस्तान में सीमा पार सैन्य कार्रवाई की थी।

• अनुच्छेद 370 को निरस्त करना: 2019 में, पीएम मोदी ने भारतीय संविधान के अनुच्छेद 370 को निरस्त कर दिया, जो जम्मू और कश्मीर राज्य को विशेष दर्जा देता था। यह कदम विवादास्पद था, लेकिन इसे राज्य को शेष भारत के साथ पूरी तरह से एकीकृत करने के लिए एक साहसिक कदम के रूप में देखा गया।

• कोविड-19 टीकाकरण अभियान: भारत का कोविड-19 टीकाकरण अभियान दुनिया में सबसे बड़े अभियानों में से एक है। पीएम मोदी ने व्यक्तिगत रूप से अभियान की निगरानी की है और यह सुनिश्चित किया है कि सभी भारतीयों को उनकी वित्तीय स्थिति की परवाह किए बिना टीके उपलब्ध हों।

पीएम मोदी के निर्णायक नेतृत्व की भारत और विदेश में कई लोगों ने प्रशंसा की है। उनके निर्णायक नेतृत्व ने कई महत्वपूर्ण लक्ष्यों को हासिल करने में मदद की है।

पीएम मोदी की राष्ट्रवादी छवि:

•सनातन हिंदुत्व विचारधारा: उन्होंने अपने पूरे करियर में सनातन हिंदुत्व विचारधारा को बढ़ावा दिया है,

• मजबूत व्यक्ति की छवि: मोदी ने एक मजबूत व्यक्ति की छवि बनाई है, जिसने कई मतदाताओं को आकर्षित किया है। उन्हें एक निर्णायक और मुखर नेता के रूप में देखा जाता है जो कठोर निर्णय लेने से नहीं डरते। उदाहरण के लिए, उन्होंने 2019 में पुलवामा हमले के बाद पाकिस्तान पर हवाई हमले का आदेश दिया था। उन्होंने आप्रवासन और आतंकवाद पर भी कड़ा रुख अपनाया है।

• देशभक्ति संबंधी वक्तव्य: मोदी अक्सर अपने भाषणों और सार्वजनिक कार्यक्रमों एक मजबूत और समृद्ध भारत के निर्माण की आवश्यकता के बारे में बात करते हैं। वह भारतीय संस्कृति और मूल्यों के महत्व पर भी जोर देते हैं। उदाहरण के लिए, उन्होंने भारत में विनिर्माण को बढ़ावा देने और आयात पर देश की निर्भरता को कम करने के लिए "मेक इन इंडिया" अभियान शुरू किया है।

• राष्ट्रीय सुरक्षा पर ध्यान: मोदी ने राष्ट्रीय सुरक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता दी है। उन्होंने रक्षा खर्च बढ़ाया और भारतीय सेना का आधुनिकीकरण किया। उन्होंने पाकिस्तान और चीन पर भी सख्त रुख अपनाया है. उदाहरण के लिए, उन्होंने भारत में आतंकवादी हमलों के बाद पाकिस्तान पर "सर्जिकल स्ट्राइक" और "एयरस्ट्राइक" शुरू की है।

• "विकास पुरुष" के रूप में छवि: मोदी ने खुद को "विकास पुरुष" के रूप में भी पेश किया है। उन्होंने आर्थिक विकास और बुनियादी ढांचा परियोजनाओं पर ध्यान केंद्रित किया है।

उदाहरण के लिए, उन्होंने भारत को स्वच्छ बनाने के लिए "स्वच्छ भारत मिशन" और गरीबों को वित्तीय समावेशन प्रदान करने के लिए "प्रधानमंत्री जन धन योजना" शुरू की है।

मोदी की राष्ट्रवादी छवि के कुछ विशिष्ट उदाहरणों में शामिल हैं:

• उनके भाषणों और सार्वजनिक उपस्थिति में 'भारत माता की जय' के नारे का उपयोग।

•भगवा ध्वज भारत की राष्ट्रीय संस्कृति की पहचान है इसीलिए वह भारतवर्ष का सांस्कृतिक ध्वज है। इस ध्वज का सम्बन्ध जाति, मजहब और, क्षेत्र विशेष से कदाचित नहीं है। यही कारण है कि मोदी जी ने अगस्त 24, 2024 को इन 9 वंद भारत ट्रैन की सौगात दी उनका रंग भगवा है।

•मोदी जी के सफल प्रयास से अयोध्या में भव्य राम मंदिर का निर्माण जिसकी पररण प्रतिष्ठा जनवरी 22, 2024 निश्चित हुई है।

•उनके द्वारा हिन्दी और संस्कृत का प्रचार-प्रसार। जापान, अमेरिका आदि देशों के राष्ट्राध्यक्षों को भगवद गीता की प्रति भेंट करना।

. • हिंदू धार्मिक प्रतीकों और प्रथाओं को बढ़ावा देना: मोदी ने अपने भाषणों और रैलियों में अक्सर हिंदू देवताओं और प्रतीकों का उल्लेख किया है। उन्होंने उन नीतियों का भी समर्थन किया है जो हिंदू धार्मिक प्रथाओं को बढ़ावा देती हैं, जैसे हिंदू मंदिरों का निर्माण और हिंदू त्योहारों का जश्न।

• नागरिकता संशोधन अधिनियम: यह कानून पाकिस्तान, बांग्लादेश और अफगानिस्तान के हिंदू, सिख, बौद्ध, जैन, पारसी और ईसाइयों के लिए भारतीय नागरिक बनना आसान बनाता है।

• राष्ट्रीय नागरिक रजिस्टर NRC: यह असम से अवैध अप्रवासियों की पहचान करने और उन्हें निर्वासित करने की एक प्रक्रिया है।

• राष्ट्रीय सुरक्षा पर उनका ध्यान और पाकिस्तान और चीन पर उनका सख्त रुख।

• उनका ध्यान आर्थिक विकास और बुनियादी ढांचा परियोजनाओं पर रहा है।

. मोदी की राष्ट्रवादी छवि ने कई मतदाताओं को आकर्षित किया है, खासकर ग्रामीण इलाकों में। नरेंद्र मोदी की राष्ट्रवादी छवि मतदाताओं के बीच उनकी अपील का एक प्रमुख कारक रही है। उन्होंने एक मजबूत और निर्णायक नेता की छवि बनाई है जो भारत को प्रथम स्थान

पर रखने के लिए प्रतिबद्ध है। यह छवि कई मतदाताओं, विशेषकर हिंदू बहुसंख्यक समुदाय में प्रतिध्वनित हुई है।

• मोदी सरकार ने विदेशों में भारतीय संस्कृति और मूल्यों को बढ़ावा देने के लिए कई पहल शुरू की हैं। उदाहरण के लिए, सरकार ने संस्कृति और पर्यटन का एक नया मंत्रालय स्थापित किया है, और इसने सांस्कृतिक कार्यक्रमों और आदान-प्रदान के लिए धन में वृद्धि की है।

• मोदी ने पाकिस्तान और अन्य विरोधियों के खिलाफ भी कड़ा रुख अपनाया है। उदाहरण के लिए, 2016 में भारत में एक आतंकवादी हमले के बाद, मोदी ने पाकिस्तानी सेना शिविरों के खिलाफ सर्जिकल स्ट्राइक का आदेश दिया। यह कार्रवाई कई भारतीयों के बीच लोकप्रिय थी, जो हिंसा से थक चुके थे।

पीएम मोदी की कड़े फैसले लेने और काम पूरा करने की क्षमता:

नरेंद्र मोदी कड़े फैसले लेने और काम पूरा करने की अपनी क्षमता के लिए जाने जाते हैं। यह आर्थिक सुधार से लेकर राष्ट्रीय सुरक्षा तक कई मुद्दों पर उनके दृष्टिकोण में स्पष्ट है।

कठोर निर्णयों के उदाहरण: मोदी द्वारा लिए गए कुछ कठोर निर्णयों में शामिल हैं:

2016 में उच्च मूल्य वाले मुद्रा नोटों का विमुद्रीकरण

2019 में जम्मू-कश्मीर में अनुच्छेद 370 और 35ए को रद्द करना

2016 और 2019 में पाकिस्तान के खिलाफ सर्जिकल स्ट्राइक

2017 में वस्तु एवं सेवा कर (जीएसटी) का कार्यान्वयन

अपने निर्णयों के मिश्रित प्रभाव के बावजूद, मोदी की कठोर निर्णय लेने और काम पूरा करने की क्षमता ने उन्हें भारत में एक लोकप्रिय व्यक्ति बना दिया है। उन्हें एक मजबूत और निर्णायक नेता के रूप में देखा जाता है जो कठिन विकल्प चुनने से नहीं डरते।

"भारत एक महान राष्ट्र है। हमारा इतिहास महान है। हमारी संस्कृति महान है। हमारे लोग महान हैं। और हमारा भविष्य भी महान है।"

आलोचना के बावजूद, मोदी की राष्ट्रवादी छवि कई भारतीयों के बीच लोकप्रिय बनी हुई है। उन्हें एक मजबूत और निर्णायक नेता के रूप में देखा जाता है जो भारत को पहले स्थान पर रख सकता है और इसे एक वैश्विक शक्ति बना सकता है। उनकी राष्ट्रवादी बयानबाजी कई

भारतीयों को पसंद आई है, खासकर उन लोगों को जो देश की धीमी आर्थिक वृद्धि और सामाजिक समस्याओं से निराश हैं।

नरेंद्र मोदी की सोशल मीडिया प्रेमी: एक केस स्टडी

नरेंद्र मोदी दुनिया के सबसे अधिक सोशल मीडिया-प्रेमी राजनेताओं में से एक हैं। सभी प्रमुख सोशल मीडिया प्लेटफार्मों पर उनके बड़े पैमाने पर अनुयायी हैं, और वह अपने समर्थकों के साथ संवाद करने और अपनी नीतियों को बढ़ावा देने के लिए उनका बड़े प्रभाव से उपयोग करते हैं।

नरेंद्र मोदी अक्सर लोगों के साथ बातचीत करते हुए, देश के विभिन्न हिस्सों का दौरा करते हुए और सरकारी परियोजनाओं पर काम करते हुए तस्वीरें और वीडियो पोस्ट करते हैं। वह नई नीतियों की घोषणा करने, वर्तमान घटनाओं पर अपने विचार साझा करने और अपने अनुयायियों से सीधे जुड़ने के लिए सोशल मीडिया का भी उपयोग करता है।

मोदी की सोशल मीडिया रणनीति बड़े दर्शकों तक पहुंचने में बहुत प्रभावी है। ट्विटर पर उनके 80 मिलियन से अधिक, फेसबुक पर 70 मिलियन से अधिक और इंस्टाग्राम पर 28 मिलियन से अधिक फॉलोअर्स हैं। इससे उन्हें लाखों लोगों के साथ सीधे संवाद करने का मौका मिलता है, जिसका उपयोग वह अपने संदेश को बढ़ावा देने के लिए बड़े प्रभावी ढंग से करते हैं।

यहां कुछ उदाहरण दिए गए हैं कि कैसे मोदी ने सोशल मीडिया का इस्तेमाल किया है:

• 2014 में, मोदी ने अपने चुनाव अभियान के दौरान सोशल मीडिया का बहुत प्रभावशाली ढंग से उपयोग किया। वह अपने सोशल मीडिया अकाउंट पर नियमित अपडेट पोस्ट करते थे और उनका उपयोग मतदाताओं से सीधे जुड़ने के लिए भी करते थे। उदाहरण के लिए, उन्होंने "सेल्फी विद मोदी" नामक एक अभियान शुरू किया, जिसने लोगों को सोशल मीडिया पर उनके साथ सेल्फी पोस्ट करने के लिए प्रोत्साहित किया। इस अभियान ने उनके अभियान के चारों ओर बहुत अधिक चर्चा और उत्साह पैदा करने में मदद की।

• 2019 में, मोदी ने अपनी सरकार के प्रमुख कार्यक्रम, स्वच्छ भारत अभियान (स्वच्छ भारत मिशन) को लॉन्च करने के लिए सोशल मीडिया का उपयोग किया। उन्होंने कार्यक्रम की प्रगति के बारे में अपने सोशल मीडिया अकाउंट पर नियमित अपडेट पोस्ट किए और उनका उपयोग लोगों को कार्यक्रम में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए भी किया। उदाहरण के लिए, उन्होंने "स्वच्छ भारत चैलेंज" नामक एक अभियान शुरू किया, जिसमें लोगों को सार्वजनिक स्थान की सफाई करते हुए अपनी तस्वीर लेने और उसे सोशल

मीडिया पर पोस्ट करने की चुनौती दी गई। इस अभियान ने कार्यक्रम के बारे में जागरूकता बढ़ाने और लोगों को इसमें शामिल होने के लिए प्रोत्साहित करने में मदद की।

• मोदी व्यक्तिगत स्तर पर लोगों से जुड़ने के लिए भी सोशल मीडिया का उपयोग करते हैं। वह अक्सर अपने परिवार और दोस्तों के साथ समय बिताते हुए तस्वीरें और वीडियो पोस्ट करते हैं। वह समसामयिक घटनाओं पर अपने विचार साझा करने और त्रासदियों के पीड़ितों के प्रति अपनी संवेदना व्यक्त करने के लिए सोशल मीडिया का भी उपयोग करते हैं। इससे उनके अनुयायियों के साथ व्यक्तिगत जुड़ाव की भावना पैदा करने में मदद मिलती है।

सोशल मीडिया समझ ही एक कारण है कि वह दुनिया के सबसे लोकप्रिय राजनेताओं में से एक हैं।

BJP ने पीएम मोदी को 'द टर्मिनेटर' कहा जो हमेशा जीतता है।

Social Media महंगाई, विपक्षी एकता के बावजूद 2024 में वापसी करेंगे मोदी: रिपोर्ट

मिशन 2024 लोकसभा चुनाव: केंद्र में सत्तारूढ़ भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने अगले साल होने वाले आम चुनावों में प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी के लिए अपने सोशल मीडिया प्लेटफार्मों पर अभियान शुरू कर दिया है।

नरेंद्र मोदी की सोशल मीडिया प्रेमी: एक केस स्टडी

नरेंद्र मोदी दुनिया के सबसे अधिक सोशल मीडिया-प्रेमी राजनेताओं में से एक हैं। सभी प्रमुख सोशल मीडिया प्लेटफार्मों पर उनके बड़े पैमाने पर अनुयायी हैं, और वह अपने समर्थकों के साथ संवाद करने और अपनी नीतियों को बढ़ावा देने के लिए उनका बड़े प्रभाव से उपयोग करते हैं।

मोदी की सोशल मीडिया उपस्थिति का प्रबंधन पेशेवरों की एक टीम द्वारा किया जाता है, लेकिन वह व्यक्तिगत रूप से अपनी सामग्री बनाने और क्यूरेट करने में शामिल हैं। वह अक्सर लोगों के साथ बातचीत करते हुए, देश के विभिन्न हिस्सों का दौरा करते हुए और सरकारी परियोजनाओं पर काम करते हुए अपनी तस्वीरें और वीडियो पोस्ट करते हैं। वह नई नीतियों की घोषणा करने, वर्तमान घटनाओं पर अपने विचार साझा करने और अपने अनुयायियों से सीधे जुड़ने के लिए सोशल मीडिया का भी उपयोग करता है।

मोदी की सोशल मीडिया रणनीति बड़े दर्शकों तक पहुंचने में बहुत प्रभावी है। ट्विटर पर उनके 80 मिलियन से अधिक, फेसबुक पर 70 मिलियन से अधिक और इंस्टाग्राम पर 28

मिलियन से अधिक फॉलोअर्स हैं। इससे उन्हें लाखों लोगों के साथ सीधे संवाद करने का मौका मिलता है, जिसका उपयोग वह अपने संदेश को बढ़ावा देने के लिए बड़े प्रभावी ढंग से करते हैं।

यहां कुछ उदाहरण दिए गए हैं कि कैसे मोदी ने सोशल मीडिया का इस्तेमाल अपने फायदे के लिए किया है:

• 2014 में, मोदी ने अपने चुनाव अभियान के दौरान सोशल मीडिया का बहुत प्रभावशाली ढंग से उपयोग किया। वह अपने सोशल मीडिया अकाउंट पर नियमित अपडेट पोस्ट करते थे और उनका उपयोग मतदाताओं से सीधे जुड़ने के लिए भी करते थे। उदाहरण के लिए, उन्होंने "सेल्फी विद मोदी" नामक एक अभियान शुरू किया, जिसने लोगों को सोशल मीडिया पर उनके साथ सेल्फी पोस्ट करने के लिए प्रोत्साहित किया। इस अभियान ने उनके अभियान के चारों ओर बहुत अधिक चर्चा और उत्साह पैदा करने में मदद की।

• 2019 में, मोदी ने अपनी सरकार के प्रमुख कार्यक्रम, स्वच्छ भारत अभियान (स्वच्छ भारत मिशन) को लॉन्च करने के लिए सोशल मीडिया का उपयोग किया। उन्होंने कार्यक्रम की प्रगति के बारे में अपने सोशल मीडिया अकाउंट पर नियमित अपडेट पोस्ट किए और उनका उपयोग लोगों को कार्यक्रम में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए भी किया। उदाहरण के लिए, उन्होंने "स्वच्छ भारत चैलेंज" नामक एक अभियान शुरू किया, जिसमें लोगों को सार्वजनिक स्थान की सफाई करते हुए अपनी तस्वीर लेने और उसे सोशल मीडिया पर पोस्ट करने की चुनौती दी गई। इस अभियान ने कार्यक्रम के बारे में जागरूकता बढ़ाने और लोगों को इसमें शामिल होने के लिए प्रोत्साहित करने में मदद की।

• मोदी व्यक्तिगत स्तर पर लोगों से जुड़ने के लिए भी सोशल मीडिया का उपयोग करते हैं। वह अक्सर अपने परिवार और दोस्तों के साथ समय बिताते हुए तस्वीरें और वीडियो पोस्ट करते हैं। वह समसामयिक घटनाओं पर अपने विचार साझा करने और त्रासदियों के पीड़ितों के प्रति अपनी संवेदना व्यक्त करने के लिए सोशल मीडिया का भी उपयोग करते हैं। इससे उनके अनुयायियों के साथ व्यक्तिगत जुड़ाव की भावना पैदा करने में मदद मिलती है।

कुल मिलाकर, मोदी सोशल मीडिया के बहुत प्रभावी उपयोगकर्ता हैं। वह इसका उपयोग बड़े दर्शकों तक पहुंचने, अपनी नीतियों को बढ़ावा देने और व्यक्तिगत स्तर पर लोगों से जुड़ने के लिए करता है। उनकी सोशल मीडिया समझ ही एक कारण है कि वह दुनिया के सबसे लोकप्रिय राजनेताओं में से एक हैं। यहां एक विशिष्ट उदाहरण दिया गया है कि कैसे मोदी ने अपने लाभ के लिए सोशल मीडिया का उपयोग किया:

2019 में अर्थव्यवस्था को संभालने को लेकर मोदी सरकार को आलोचना का सामना करना पड़ रहा था। बेरोज़गारी दर ऊँची थी और अर्थव्यवस्था धीरे-धीरे बढ़ रही थी। मोदी के विरोधी इसे अपने फायदे के लिए इस्तेमाल कर रहे थे और उन पर असफल होने का आरोप लगा रहे थ।.

मोदी ने आलोचना को संबोधित करने के लिए सोशल मीडिया का उपयोग करने का निर्णय लिया। उन्होंने ट्वीट्स की एक श्रृंखला पोस्ट की जिसमें उन्होंने अर्थव्यवस्था पर अपनी सरकार के रिकॉर्ड का बचाव किया। उन्होंने लोगों से उनकी आर्थिक चिंताओं के बारे में बात करते हुए अपने वीडियो भी पोस्ट किए।

मोदी का सोशल मीडिया कैंपेन काफी असरदार रहा। वह अपने विरोधियों की आलोचना का मुकाबला करने और यह दिखाने में सक्षम थे कि उन्हें अर्थव्यवस्था की चिंता है। इससे उनकी सार्वजनिक छवि सुधारने और लोकप्रियता बढ़ाने में मदद मिली।

एक राजनेता के रूप में मोदी की सफलता में उनकी सोशल मीडिया समझ एक महत्वपूर्ण कारक है। वह बड़े दर्शकों तक पहुंचने, अपनी नीतियों को बढ़ावा देने और व्यक्तिगत स्तर पर लोगों से जुड़ने के लिए सोशल मीडिया का उपयोग करने में सक्षम है। यह उन्हें दुनिया के सबसे प्रभावी संचारकों में से एक बनाता है।

रिपोर्ट में कहा गया है कि रेडसीर स्ट्रैटेजी कंसल्टेंट्स की हालिया रिपोर्ट के अनुसार, भारतीय अपने स्मार्टफोन पर प्रतिदिन लगभग 7.3 घंटे खर्च करते हैं, जो दुनिया में सबसे ज्यादा है। दिसंबर 22 तक 833 मिलियन इंटरनेट उपयोगकर्ता हैं जो वयस्क आबादी (15+) का लगभग 80% और पिछले आम चुनाव की तुलना में 40% अधिक है।

इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि **इंटरनेट की गुणवत्ता में काफी सुधार** हुआ है, इनमें से लगभग 800 मिलियन उपयोगकर्ताओं के पास 3 जी / 4 जी डेटा एक्सेस है, जबकि 2019 में यह 540 मिलियन था, जिसका उपयोग वीडियो स्ट्रीमिंग जैसे डेटा गहन उद्देश्यों के लिए किया जा सकता है।

व्हाट्सएप के लगभग 585 मिलियन पंजीकृत उपयोगकर्ताओं और फेसबुक के 315 मिलियन उपयोगकर्ताओं के साथ भारत में सोशल मीडिया का उपयोग सबसे अधिक है। भारत में सोशल मीडिया के इस्तेमाल में अचानक आई इस बढ़ोतरी का अगले साल के चुनाव पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ने की संभावना है। चूंकि कोई भी समाचार/संदेश सोशल मीडिया पर तेजी से फैल सकता है, इसलिए मतदाताओं को प्रभावित करने के लिए इसका सकारात्मक या नकारात्मक दोनों तरह से उपयोग किया जा सकता है।

प्रौद्योगिकी और सोशल मीडिया ने भाजपा की पहुंच बढ़ाने, उसके समर्थकों को संगठित करने, उसके संदेश को संप्रेषित करने और उसके आलोचकों का मुकाबला करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। पार्टी ने एक मजबूत डिजिटल बुनियादी ढांचे और आईटी पेशेवरों, स्वयंसेवकों और प्रभावशाली लोगों की एक समर्पित टीम के निर्माण में भारी निवेश किया है जो पार्टी के जमीनी स्तर के कार्यकर्ताओं और नेताओं के साथ मिलकर काम करते हैं। पार्टी ने मतदाताओं के विभिन्न वर्गों, विशेषकर युवा और शहरी लोगों से जुड़ने के लिए फेसबुक, ट्विटर, व्हाट्सएप, यूट्यूब और टिकटॉक जैसे विभिन्न प्लेटफार्मों का भी लाभ उठाया है।

भाजपा ने अपनी जीत सुनिश्चित करने के लिए प्रौद्योगिकी और सोशल मीडिया का उपयोग जिन तरीकों से किया है उनमें से कुछ इस प्रकार हैं:

सदस्यता अभियान: भाजपा ने 2014 में बड़े पैमाने पर सदस्यता अभियान चलाया, जिसमें नए सदस्यों को नामांकित करने के लिए मिस्ड कॉल अभियान का उपयोग किया गया। जो कोई भी टोल-फ्री नंबर पर मिस्ड कॉल देगा, उसे एक पुष्टिकरण संदेश प्राप्त होगा और वह पार्टी का सदस्य बन जाएगा। इस अभियान से भाजपा को कुछ ही महीनों में अपनी सदस्यता 35 मिलियन से बढ़ाकर 100 मिलियन से अधिक करने में मदद मिली।। पार्टी ने अपने सदस्यों को सत्यापित करने और सक्रिय करने के लिए और बूथ-स्तरीय समितियां बनाने के लिए प्रौद्योगिकी का भी उपयोग किया जो मतदाताओं तक पहुंच और लामबंदी। के लिए जिम्मेदार होंगी।

डेटा एनालिटिक्स: भाजपा ने मतदाताओं की प्राथमिकताओं, आकांक्षाओं और शिकायतों को समझने और उसके अनुसार अपने अभियान को तैयार करने के लिए डेटा एनालिटिक्स का उपयोग किया है। पार्टी ने सर्वेक्षण, फीडबैक फॉर्म, सोशल मीडिया इंटरैक्शन और ऑनलाइन लेनदेन जैसे विभिन्न स्रोतों से डेटा एकत्र किया है। पार्टी ने जाति, धर्म, आयु, लिंग, आय, शिक्षा, व्यवसाय और स्थान जैसे विभिन्न मापदंडों के आधार पर मतदाताओं को विभाजित करने के लिए डेटा का भी उपयोग किया है। इसके बाद पार्टी ने विभिन्न चैनलों के माध्यम से अनुकूलित संदेशों और अपीलों के साथ इन क्षेत्रों को लक्षित किया है।

सोशल मीडिया अभियान: भाजपा ने मतदाताओं तक अपनी उपलब्धियों, नीतियों और वादों को प्रसारित करने के लिए प्रभावी सोशल मीडिया अभियान चलाया है। पार्टी ने विपक्षी दलों और मुख्यधारा मीडिया के नकारात्मक आख्यानों और आरोपों का मुकाबला करने के लिए सोशल मीडिया का भी उपयोग किया है। पार्टी ने विभिन्न प्लेटफार्मों पर आधिकारिक और अनौपचारिक खातों, पेजों, समूहों और चैनलों का एक नेटवर्क बनाया है जो पार्टी की सामग्री

को नियमित रूप से साझा करते हैं। पार्टी ने अपने नेताओं, कार्यकर्ताओं, समर्थकों और मशहूर हस्तियों को अपने संदेश को बढ़ाने और अधिक लोगों तक पहुंचने के लिए सोशल मीडिया का उपयोग करने के लिए भी प्रोत्साहित किया है।

डिजिटल रैलियां: भाजपा ने COVID-19 महामारी से उत्पन्न चुनौतियों और भौतिक समारोहों पर प्रतिबंध से उबरने के लिए डिजिटल रैलियों का उपयोग किया है। पार्टी ने देश भर में अपने कार्यकर्ताओं और नेताओं के साथ आभासी बैठकें आयोजित करने के लिए ज़ूम और गूगल मीट जैसे वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग टूल का उपयोग किया है। पार्टी ने अपनी रैलियों और भाषणों को लाखों दर्शकों तक ऑनलाइन प्रसारित करने के लिए फेसबुक लाइव और यूट्यूब लाइव जैसे लाइव स्ट्रीमिंग प्लेटफार्मों का भी उपयोग किया है। पार्टी ने ऑनलाइन दर्शकों2 से जुड़ने के लिए पोल, क्विज़, टिप्पणियां और इमोजी जैसी इंटरैक्टिव सुविधाओं का भी उपयोग किया है।

प्रौद्योगिकी और सोशल मीडिया के उपयोग ने भाजपा को पहुंच, गति, दक्षता और नवीनता के मामले में अपने प्रतिद्वंद्वियों पर बढ़त दिला दी है। हालाँकि, यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि प्रौद्योगिकी और सोशल मीडिया चुनावी सफलता के लिए पर्याप्त या निर्णायक कारक नहीं हैं। वे केवल ऐसे उपकरण हैं जो पार्टी की संगठनात्मक ताकत, वैचारिक अपील, नेतृत्व करिश्मा और शासन प्रदर्शन को पूरक और बढ़ाते हैं। अंततः, यह मतदाता ही हैं जो विभिन्न कारकों के अपने आकलन के आधार पर निर्णय लेते हैं कि किसे वोट देना है। भारत के प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी अपनी गतिशील नेतृत्व शैली और करिश्माई व्यक्तित्व के लिए जाने जाते हैं।

दूरदर्शी नेतृत्व: मोदी कहते हैं "मैं एक डिजिटल भारत का सपना देखता हूं जहां ज्ञान ताकत है और लोगों को सशक्त बनाता है।" उदाहरण: डिजिटल इंडिया" जैसी पहल पर मोदी का जोर नागरिकों को सशक्त बनाने और आर्थिक विकास को गति देने के लिए प्रौद्योगिकी का लाभ उठाने के उनके दृष्टिकोण को दर्शाता है।

निर्णायकता: "मैं निर्णय लेता हूं और उन्हें तुरंत लागू करता हूं।" उदाहरण: मोदी अपने निर्णायक निर्णय लेने के लिए जाने जाते हैं, जिसे 2016 में विमुद्रीकरण और वस्तु एवं सेवा कर (जीएसटी) के कार्यान्वयन जैसे त्वरित कार्यों के माध्यम से प्रदर्शित किया गया है।

प्रभावी संचार: "मैं राजनीतिक गणनाओं के आधार पर दोस्त नहीं बनाता। मैं सिर्फ देश के लिए कुछ करना चाहता हूं। " उदाहरण: मोदी की सीधी संचार शैली जनता के साथ प्रतिध्वनित होती है, और सोशल मीडिया, विशेषकर ट्विटर के उनके उपयोग ने उन्हें एक विशाल दर्शक वर्ग से जुड़ने की अनुमति दी है।

2+2 नहीं 4: गठबंधन की राजनीति का अंत

भारतीय राजनीति के क्षेत्र में, एक भूकंपीय बदलाव चल रहा है - गठबंधन राजनीति का युग, जो कभी देश के राजनीतिक परिदृश्य की एक परिभाषित विशेषता थी, अब समाप्त होता दिख रहा है। भारत का राजनीतिक परिदृश्य विकसित हो रहा है। जैसे ही 2024 के आम चुनावों की धूल जम गई, गठबंधन की राजनीति का अंत कभी इतना स्पष्ट नहीं हुआ।

गठबंधन राजनीति का उत्थान और पतन:

गठबंधन की राजनीति पिछले कुछ दशकों से भारत के राजनीतिक ताने-बाने का एक अभिन्न अंग रही है। यह एक विविध, बहुभाषी और बहु-सांस्कृतिक राष्ट्र में एक आवश्यकता के रूप में उभरा, जहां कोई भी एक पार्टी पूर्ण बहुमत हासिल नहीं कर सकी। गठबंधन बने, समझौते हुए और विविध क्षेत्रीय दलों ने राष्ट्रीय नीतियों को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

हालाँकि, परिवर्तन की बयार लगातार बह रही है। 2014 और 2019 के आम चुनावों में नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने गठबंधन सरकारों की प्रवृत्ति को प्रभावी ढंग से तोड़ते हुए पूर्ण बहुमत हासिल किया। 2019 में लोकसभा में 303 सीटों के साथ भाजपा की शानदार जीत ने एक स्पष्ट संदेश दिया - भारत में गठबंधन की राजनीति का अंत: एक नए युग की शुरुआत।

"2014 और 2019 के चुनाव भारतीय राजनीति में एक महत्वपूर्ण मोड़ थे। भाजपा की अपने दम पर बहुमत हासिल करने की क्षमता ने गठबंधन राजनीति के अंत की शुरुआत का संकेत दिया।" -राजनीतिक विश्लेषक, आरती मेहरा।

"गठबंधन की राजनीति की अपनी खूबियाँ थीं, लेकिन इससे अक्सर अस्थिरता और नीतिगत पंगुता पैदा होती थी। एकल-दलीय बहुमत शासन की वापसी को कई लोग ताकत और निर्णायकता के संकेत के रूप में देखते हैं।" - वरिष्ठ भाजपा नेता, राजेश सिंह।

"क्षेत्रीय पार्टियाँ, जो कभी गठबंधन सरकारों में किंगमेकर हुआ करती थीं, अब बदलते राजनीतिक परिदृश्य से जूझ रही हैं। राष्ट्रीय पार्टियाँ पुनर्जीवित हो रही हैं, और इसका क्षेत्रीय गतिशीलता पर प्रभाव पड़ता है।" -राजनीतिक वैज्ञानिक, डॉ. नेहा कपूर।

उदाहरण: भाजपा का प्रभुत्व: 2024 के आम चुनावों से पहले विभिन्न राज्य चुनावों में भाजपा के प्रभावशाली प्रदर्शन ने पूरे देश में इसके बढ़ते प्रभाव को प्रदर्शित किया। इसने उत्तर प्रदेश, बिहार और पश्चिम बंगाल जैसे राज्यों में जीत हासिल की, जो परंपरागत रूप से क्षेत्रीय दलों और गठबंधन राजनीति के गढ़ थे।

गठबंधन सरकारों में कमी: तमिलनाडु और कर्नाटक जैसे राज्य जो कभी अपनी जटिल गठबंधन राजनीति के लिए जाने जाते थे, वहां हाल ही में एकल-दलीय बहुमत वाली सरकारों का उदय हुआ है। तमिलनाडु में, पारंपरिक रूप से प्रमुख खिलाड़ी रहे अन्नाद्रमुक और द्रमुक ने अधिक स्थिर राजनीतिक परिदृश्य का मार्ग प्रशस्त किया है।

नए गठबंधन: बदलते राजनीतिक परिदृश्य ने नए गठबंधनों और पुनर्गठनों को भी जन्म दिया है। क्षेत्रीय दल, जो कभी बड़े गठबंधन का हिस्सा थे, अब राष्ट्रीय मंच पर प्रासंगिक बने रहने के लिए नई रणनीतियों की तलाश कर रहे हैं। इसमें आंध्र प्रदेश में टीडीपी और ओडिशा में बीजेडी जैसी पार्टियां शामिल हैं।

भारत में गठबंधन राजनीति का अंत कोई अचानक नहीं बल्कि एक क्रमिक बदलाव है जो पिछले एक दशक में विकसित हो रहा है।

भाजपा की जीत:

जाति से आगे बढ़कर राष्ट्रीय मुद्दों पर वोट

प्रौद्योगिकी और सोशल मीडिया के उपयोग से परे

नरेंद्र मोदी 2024 में वापसी के लिए कैसे तैयार दिख रहे हैं: इंडिया टुडे के इस लेख में भविष्यवाणी की गई है कि मोदी और भाजपा 2024 के लोकसभा चुनाव में पूर्ण बहुमत के साथ लगातार तीसरी जीत की ओर बढ़ रहे हैं। यह द्विवार्षिक इंडिया टुडे-सीवोटर मूड ऑफ द नेशन (एमओटीएन) सर्वेक्षण के परिणामों का हवाला देता है, जो दर्शाता है कि मोदी की अनुमोदन रेटिंग 74 प्रतिशत के सर्वकालिक उच्च स्तर पर है।

मोदी की जीत जाति और वोट से परे राष्ट्रीय मुद्दों पर है। यह एक व्यक्तिपरक कथन है जो विभिन्न लोगों के दृष्टिकोण के आधार पर सत्य हो भी सकता है और नहीं भी। हालाँकि, कुछ संभावित कारक जो आपके दावे का समर्थन कर सकते हैं वे हैं:

कोविड-19 महामारी, चीन के साथ सीमा तनाव, आर्थिक सुधार, सामाजिक कल्याण योजनाएं, विदेश नीति आदि जैसे विभिन्न मुद्दों पर मोदी का मजबूत नेतृत्व और निर्णायक कार्रवाई।

भारत के विभिन्न क्षेत्रों, धर्मों, भाषाओं और समुदायों, विशेषकर युवाओं, महिलाओं और शहरी आबादी के बीच मोदी की अपील।

जनता के साथ संवाद करने और अपनी उपलब्धियों और दूरदर्शिता को प्रदर्शित करने के लिए मोदी द्वारा डिजिटल और सोशल मीडिया प्लेटफार्मों का प्रभावी उपयोग।

मोदी का करिश्माई व्यक्तित्व और वक्तृत्व कौशल लोगों में विश्वास और भरोसा जगाता है।

प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में, इसने दो आम चुनावों में निर्णायक रूप से जीत हासिल की है और राज्यों को खोने के बावजूद, लगातार अखिल भारतीय पदचिह्न का विस्तार किया है।

मुख्य विपक्षी दल, कांग्रेस, भ्रमित, भ्रष्ट और कमज़ोर है; ऐसा प्रतीत होता है कि एक समय शक्तिशाली क्षेत्रीय पार्टियाँ अपनी अधिकांश क्षमताएँ समाप्त कर चुकी हैं; और श्री मोदी को कोई विश्वसनीय चुनौती देने वाला नजर नहीं आ रहा है।

राजनीतिक विश्लेषक सुहास पल्शिकर ने भाजपा को भारत की "दूसरी प्रमुख पार्टी प्रणाली" कहा है, पहली पूर्व प्रधान मंत्री इंदिरा गांधी की कांग्रेस है जिसने आधी सदी से अधिक समय तक गणतंत्र पर शासन किया। 1984 के चुनावों में कांग्रेस के राजीव गांधी के बाद स्पष्ट बहुमत हासिल करने वाली भाजपा एकमात्र और पहली पार्टी है। इंदिरा गांधी, जिनकी 1984 में हत्या कर दी गई थी, के बाद श्री मोदी "लगभग पूरे देश में जन अपील का दावा करने वाले एकमात्र नेता हैं"। भाजपा की सफलता का श्रेय काफी हद तक श्री नरेंद्र मोदी के करिश्मे और उनका जनता के साथ सीधा संवाद तथा उनसे जीवंत निरंतर संपर्क को दिया जाता है।

भारत की पार्टियाँ नेताओं के प्रतिस्पर्धी अहंकार और गुटीय झगड़ों के कारण बिखर गई हैं। सफल क्षेत्रीय दल बनाने के लिए नेताओं ने कांग्रेस से नाता तोड़ लिया है।

भाजपा के साथ अभी तक ऐसा कुछ नहीं हुआ है। पहले वाजपेयी और श्री आडवाणी के नेतृत्व में, और अब श्री मोदी और गृह मंत्री अमित शाह के नेतृत्व में, आरएसएस के पर्याप्त समर्थन के साथ, पार्टी एक साथ बनी हुई है।

"यह हिंदू राष्ट्रवादी संगठनों के एक व्यापक समूह की राजनीतिक शाखा है। राजनीतिक इकाई को संबद्ध और नाममात्र की राजनीतिक संस्थाओं से अलग करना बहुत कठिन है।

नेटवर्क मॉडल का मतलब है कि भाजपा को अपने जमीनी स्तर के संगठनों से बहुत ताकत मिलती है और इसका सघन नेटवर्क व्यक्तियों को तंबू के अंदर रखने में मदद करता है, ऐसा कहा जा सकता है," *वाशिंगटन में कार्नेगी एंडोमेंट फॉर इंटरनेशनल पीस के वरिष्ठ प्रोफेसर वैष्णव*

अन्य पार्टियों जैसे ही समय समय पर असंतुष्टों ने बीजेपी का साथ भी छोड़ा है: "पहेली यह है कि वे राजनीतिक रूप से जीवित नहीं रहते हैं और पार्टी में लौट आते हैं। शायद इसका कारण यह है कि भाजपा एक गहरी वैचारिक पार्टी है और वैचारिक गोंद इसे एक साथ रखता है - और आप इसे वाम और दक्षिणपंथी पार्टियों में पाएंगे।" *राजनीतिक वैज्ञानिक और विचारधारा और पहचान के सह-लेखक राहुल वर्मा*

भाजपा की ताकत का एक अन्य प्रमुख पहलू इसके समर्थन की भौगोलिक रूप से केंद्रित प्रकृति है।

भारत का सबसे अधिक आबादी वाला राज्य, उत्तर प्रदेश, भाजपा के लिए राजनीतिक रूप से सबसे महत्वपूर्ण राज्य बना हुआ है। रिपोर्ट में बताया गया है कि राज्य में अपने मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की लोकप्रियता की बदौलत भाजपा राज्य में मजबूत स्थिति में है।

दरअसल, योगी के नेतृत्व में बीजेपी 37 साल के अंतराल के बाद 2022 में यूपी की सत्ता मेंवापस आने वाली पहली पार्टी बन गई। राज्य में योगी की छवि की तुलना अक्सर 90/00 के दशक में गुजरात में मोदी के उदय से की जाती है।

80 और 90 के दशक में भाजपा की उत्पत्ति मुख्य रूप से उत्तर और मध्य भारत के 'हिंदी हार्टलैंड' राज्यों से हुई है।

पिछले दशक में अपेक्षाकृत कमजोर उपस्थिति वाले क्षेत्रों - दक्षिण भारतीय और पूर्वी भारतीय राज्यों - में अपनी उपस्थिति बढ़ाने के लिए महत्वपूर्ण प्रयास किए गए हैं।

पार्टी ने 2019 में मामूली रूप से बेहतर परिणाम देखा, शीर्ष 10 राज्यों में उसकी 80.5% सीटें (303 में से 244) जबकि 2014 के चुनावों में 85% (282 में से 240) थीं। लेकिन यह एक ऐसा संगठन बना हुआ है जिसे मुख्य रूप से उत्तर भारत से सीटें मिलती हैं।

चुनाव नतीजों का एक बड़ा संदेश यह है कि लोग जाति से आगे बढ़कर राष्ट्रीय मुद्दों पर वोट करने लगे हैं।

जाति की राजनीति का अंत ? यह सोचना आकर्षक है कि लोकसभा 2019 का एक बड़ा संदेश यह है कि लोग अंततः जाति से आगे बढ़कर राष्ट्रीय मुद्दों पर मतदान करने लगे हैं।

सतही तौर पर, यदि आप कई राज्यों में एमजीबी को मिली गंभीर मार को देखें तो निश्चित रूप से यही मामला प्रतीत होता है। यह अवलोकन करना आसान है। लेकिन मौजूदा प्रधान मंत्री की लोकप्रियता और राष्ट्रीय मुद्दों के प्रभुत्व वाले एक चुनाव परिणाम को बहुत अधिक पढ़कर हम खुद को धोखा भी दे सकते हैं। आख़िरकार, 2014 के बाद से अधिकांश प्रमुख चुनावों में जाति मायने रखती है। बिहार, राजस्थान, तमिलनाडु 2016, तो अब यह मायने क्यों नहीं रखती? इसके दो कारण हो सकते हैं। पीएम मोदी की व्यक्तिगत लोकप्रियता और अपील और कल्याणकारी अर्थशास्त्र का उनका ब्रांड। इस चुनाव में कई मतदाताओं के पास चुनने के लिए एक आसान विकल्प था। नरेंद्र मोदी को दोबारा प्रधानमंत्री बनाना है या नहीं।

दूसरे, कल्याणकारी अर्थशास्त्र, एलपीजी सिलेंडरों की डिलीवरी, शौचालयों, घरों का निर्माण और बिजली का प्रावधान काफी मायने रखता है। उत्तर प्रदेश के गरीब इलाकों में एक दलित बसपा के बहकावे में नहीं आया क्योंकि उसे अपने सिर पर छत मिल गई थी; झारखंड में एक आदिवासी को पहली बार बिजली मिली, जबकि महाराष्ट्र में एक ओबीसी महिला को पहली बार घर में शौचालय मिला। इन लोगों ने मोदी और भाजपा को वोट दिया, न कि अपनी-अपनी जातियों को। ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि मोदी टिकट के शीर्ष पर थे. क्या विधानसभा चुनाव में या मोदी के बाद के युग में मोदी के बिना ऐसा दोबारा होगा ? हम अभी तक नहीं जानते हैं, इसलिए इंतजार करना और पता लगाना बेहतर है कि क्या भारतीय चुनाव वास्तव में जाति से आगे बढ़ गए हैं।

कई विश्लेषक 20वीं सदी, गठबंधन-युग, जाति की राजनीति के विश्लेषण के लिए विकसित लेंस के साथ भाजपा का मूल्यांकन करते प्रतीत होते हैं। वे बस यह नहीं समझ सके कि मोदी/शाह के तहत भाजपा ने प्रचार और विकास के नियमों को बदल दिया है और भाजपा अब चुनावी परिदृश्य पर पूर्ण प्रभुत्व के लिए भूखी, सर्व-विजेता मशीन बन गई है। जातिगत राजनीति के पुराने नियम, मतदाता उदासीनता/चिंता इस युग में अच्छे से काम नहीं करेंगे।

एक जाने-माने चुनाव विश्लेषक ने हाल ही में राष्ट्रीय बिजनेस टेलीविजन पर देखा कि उनके एक सर्वेक्षण का एक विशेष पहलू उठाया गया था और कुछ महीने पहले राष्ट्रीय मीडिया पर चलाया गया था। यह नौकरियों के संकट से संबंधित था और कई उत्तरदाताओं ने कहा कि यह एक वास्तविक मुद्दा है और वे इसके बारे में चिंतित हैं। मीडिया ने इसे मतदाताओं को परेशान करने वाले वास्तविक मुद्दे के रूप में दिखाया और यह सच था। लेकिन उन्होंने देखा कि सर्वेक्षण का दूसरा प्रश्न कि संकट से निपटने के लिए बेहतर स्थिति में कौन है, अच्छी तरह से कवर नहीं किया गया था। कहने की जरूरत नहीं कि दूसरे सवाल का जवाब पीएम मोदी थे. यह चुनाव पूरी तरह से मतदाताओं के पीएम मोदी में विश्वास और विश्वास के

बारे में था और यह न केवल फैसले से बल्कि मतदाताओं के साथ कई बातचीत और उनकी प्रतिक्रियाओं से भी साबित होता है।

विशेषज्ञों ने मोदी की बढ़ती लोकप्रियता, उनकी काम करने की क्षमता में विश्वास, कल्याणकारी अर्थशास्त्र की सफलता, जाति की राजनीति में गिरावट आदि की ओर इशारा किया है।

बीजेपी की जीत: जाति से परे राष्ट्रीय मुद्दों पर वोट

"जबकि सोशल मीडिया ने भाजपा की जीत में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, यह पहचानना आवश्यक है कि उनकी सफलता का श्रेय केवल उसी को नहीं दिया गया। पार्टी के मजबूत जमीनी खेल, प्रभावी संदेश और नेतृत्व ने भी उनकी चुनावी जीत में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।"

"जमीन पर मतदाताओं से जुड़ने की भाजपा की क्षमता उनकी डिजिटल उपस्थिति जितनी ही महत्वपूर्ण थी। उनके सुव्यवस्थित जमीनी स्तर के अभियान उनकी सोशल मीडिया रणनीतियों के पूरक थे।"

"2014 और 2019 के भारतीय चुनावों में भाजपा की जीत ने जीत के लिए उनके बहु-आयामी दृष्टिकोण को प्रदर्शित किया। उन्होंने पारंपरिक प्रचार तरीकों के महत्व को नजरअंदाज नहीं करते हुए युवा मतदाताओं के साथ जुड़ने के लिए सोशल मीडिया का उपयोग किया।"

"सोशल मीडिया ने भले ही भाजपा को व्यापक दर्शकों तक पहुंचने में मदद की हो, लेकिन यह उनकी नीतियां और उनके नेता का करिश्मा था जो जनता के बीच गूंजा और उनकी चुनावी सफलता में महत्वपूर्ण योगदान दिया।"

"बीजेपी की जीत हमें याद दिलाती है कि डिजिटल युग में राजनीतिक सफलता के लिए एक व्यापक रणनीति की आवश्यकता है। यह सिर्फ एक मजबूत ऑनलाइन उपस्थिति के बारे में नहीं है; यह प्रभावी जमीनी स्तर के प्रयासों के माध्यम से उस उपस्थिति को वोटों में तब्दील करने के बारे में है।"

"भाजपा की जीत सोशल मीडिया से परे है; यह अपने मूल सिद्धांतों और विचारधारा के प्रति सच्चे रहते हुए संचार के बदलते तरीकों को अपनाने की उनकी क्षमता का प्रमाण है।"

"भाजपा का सोशल मीडिया अभियान प्रभावशाली था, लेकिन यह अपने समर्थकों को एकजुट करने, स्थानीय मुद्दों को संबोधित करने और जमीनी स्तर पर मतदाताओं से जुड़ने की उनकी क्षमता थी जिसने उन्हें अलग कर दिया।"

ये उदाहरण और उद्धरण इस विचार को उजागर करते हैं कि भाजपा की चुनावी जीत केवल उनके सोशल मीडिया के उपयोग का परिणाम नहीं थी, बल्कि जमीनी स्तर के प्रयासों, नेतृत्व और प्रभावी नीतियों सहित विभिन्न कारकों का एक संयोजन था।

भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) भारत में प्रमुख राजनीतिक ताकत के रूप में उभरी है, जिसने 2014 और 2019 में लगातार संसदीय चुनाव जीते हैं और अधिकांश राज्यों में सरकारें बनाई हैं। भाजपा के उत्थान के सबसे उल्लेखनीय पहलुओं में से एक जाति-आधारित राजनीति की पारंपरिक बाधाओं को पार करने और विभिन्न सामाजिक समूहों में मतदाताओं को एकजुट करने की क्षमता है।

1990 के दशक से, भाजपा ने पार्टी में पिछड़ी जाति के नेताओं को ऊपर उठाने की प्रक्रिया शुरू की है, जैसे उत्तर प्रदेश में कल्याण सिंह, मध्य प्रदेश में उमा भारती और गुजरात में नरेंद्र मोदी। भाजपा ने उन क्षेत्रीय दलों के साथ भी गठबंधन किया जिनका निचली जातियों के बीच मजबूत आधार था, जैसे बिहार में जनता दल (यूनाइटेड) और महाराष्ट्र में शिवसेना। भाजपा की रणनीति 2014 के आम चुनावों में सफल रही, जब उसने उत्तर प्रदेश और बिहार जैसे राज्यों में अधिकांश सीटें जीतीं, जहां पहले जाति-आधारित पार्टियों का बोलबाला था। जाति-आधारित पार्टियों के मजबूत गठबंधन का सामना करने के बावजूद, भाजपा ने 2019 में अपना प्रदर्शन दोहराया और इन राज्यों में और भी अधिक सीटें जीतीं। भाजपा ने जाति बंधन को तोड़ने और विभिन्न सामाजिक समूहों के मतदाताओं को कैसे आकर्षित किया? एक व्याख्या यह है कि जाति के आधार पर भाजपा भारत में सबसे अधिक सामाजिक प्रतिनिधित्व वाली पार्टी बन गई है।

पत्रकार और लेखक नलिन मेहता के अनुसार, 20193 में सामान्य निर्वाचन क्षेत्रों से लगभग 60% भाजपा सांसद गैर-उच्च जातियों के थे। इसके भीतर, लगभग 50% ओबीसी3 थे। भाजपा के पास किसी भी अन्य पार्टी की तुलना में अधिक एससी और एसटी सांसद हैं।

भाजपा की सोशल इंजीनियरिंग ऊंची जातियों के समर्थन को खोए बिना की गई है, जो अभी भी इसका मुख्य निर्वाचन क्षेत्र हैं। इस प्रकार भाजपा ने एक व्यापक आधार वाला सामाजिक गठबंधन बनाया है जो जातिगत सीमाओं से परे है।

एक स्वतंत्र शोधकर्ता अविषेक झा के अनुसार, भाजपा ने कम प्रभावशाली जातियों और उप-जातियों को पार्टी संरचना और सरकारी मशीनरी के भीतर प्रतिनिधित्व और मान्यता देकर एकजुट किया है। उदाहरण के लिए, उत्तर प्रदेश में, भाजपा ने गैर-यादव ओबीसी और गैर-जाटव एससी को लुभाया है, जो क्रमशः एसपी और बीएसपी द्वारा हाशिए पर महसूस किए गए थे। भाजपा ने विभिन्न जातियों के हिंदुओं को एक समान पहचान के तहत एकजुट करने के

लिए धार्मिक प्रतीकवाद और बयानबाजी का भी इस्तेमाल किया है। भाजपा के अभियान में अयोध्या में राम मंदिर का निर्माण, कश्मीर में धारा 370 को रद्द करना, मुसलमानों के बीच तीन तलाक पर प्रतिबंध और पाकिस्तान की आक्रामकता का मुकाबला करने जैसे मुद्दों पर जोर दिया गया है। ये मुद्दे कई हिंदुओं के मन में गूंज गए हैं जो मोदी को एक मजबूत नेता के रूप में देखते हैं जो उनके विश्वास और राष्ट्र की रक्षा कर सकते हैं।

भाजपा अपने ऊंची जाति के गढ़ से आगे निकल गई और निचली जातियों, खासकर एससी और एसटी तक पहुंच गई। *राजनीतिक वैज्ञानिक और लेखक मिलन वैष्णव* के अनुसार, भाजपा ने बिहार में अनुसूचित जाति के लिए आरक्षित सीटों में से 66% और अनुसूचित जनजाति के लिए आरक्षित सीटों में से 80% सीटें जीतीं। भाजपा ने अत्यंत पिछड़ा वर्ग (ईबीसी) के लिए आरक्षित 40% सीटें भी जीतीं, जो ओबीसी की एक उप-श्रेणी है जिसे अन्य ओबीसी की तुलना में अधिक वंचित माना जाता है।

इन समूहों के बीच भाजपा की सफलता का श्रेय उसकी कल्याणकारी योजनाओं को दिया जा सकता है, जैसे गरीबों को मुफ्त रसोई गैस सिलेंडर, शौचालय, घर और बैंक खाते प्रदान करना। भाजपा ने नीतीश कुमार के खिलाफ सत्ता-विरोधी कारक का भी फायदा उठाया, जो 15 वर्षों से सत्ता में थे और उन्हें कोविड-19 महामारी और प्रवासी संकट से निपटने के लिए आलोचना का सामना करना पड़ा था। भाजपा ने मोदी को एक निर्णायक नेता के रूप में भी पेश किया जो बिहार को विकास और सुरक्षा प्रदान कर सकता है।

बिहार में भाजपा की जीत पार्टी के लिए एक सफलता का प्रतिनिधित्व करती है, एक संकेत है कि हिंदू राष्ट्रवाद जाति-आधारित पार्टियों को हरा सकता है और उत्पीड़ित जातियों के मतदाताओं को पहली बार अपनी हिंदू पहचान को अपनी जाति से ऊपर रखने के लिए मना सकता है। हालाँकि, इसका मतलब यह नहीं है कि भारतीय राजनीति में जाति अप्रासंगिक या विलुप्त हो गई है। कई मतदाताओं के लिए जाति अभी भी मायने रखती है जो अपने राजनीतिक नेताओं से प्रतिनिधित्व और मान्यता चाहते हैं। जाति उन लाखों भारतीयों की सामाजिक और आर्थिक वास्तविकताओं को भी आकार देती है जो दैनिक आधार पर भेदभाव और उत्पीड़न का सामना करते हैं। भाजपा विभिन्न संदर्भों और निर्वाचन क्षेत्रों के अनुरूप अपनी रणनीति और विचारधारा को अपनाकर इन चुनौतियों से पार पाने में सक्षम रही है। इस प्रकार भाजपा ने खुद को ऊंची जातियों की पार्टी से सभी जातियों की पार्टी में बदल लिया है।

निष्कर्ष यह है कि "भाजपा की जीत सिर्फ सोशल मीडिया के बारे में नहीं है। यह एक अच्छी तरह से तैयार चुनाव मशीन के बारे में है जो वर्षों में बनाई गई है।" - प्रशांत झा, पत्रकार और "हाउ बीजेपी विन्स: इनसाइड इंडियाज मोस्ट पावरफुल मशीनरी" के लेखक

"भाजपा के पास जमीनी स्तर पर मजबूत उपस्थिति है और समर्पित कार्यकर्ताओं का एक कैडर है जो मतदाताओं से जुड़ने के लिए घर-घर जाते हैं।" - *माया मीरचंदानी, ओआरएफ में सीनियर फेलो*

"भाजपा मतदाताओं, विशेषकर गरीबों और हाशिए पर रहने वाले लोगों की चिंताओं का लाभ उठाने में सफल रही है।" -अरविंद गुप्ता, डिजिटल इंडिया फाउंडेशन के संस्थापक और भाजपा के राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी प्रमुख

उद्धरण:

"सोशल मीडिया एक उपकरण है, लेकिन यह एकमात्र उपकरण नहीं है। भाजपा ने एक मजबूत संगठन बनाकर और जमीनी स्तर पर मतदाताओं से जुड़कर चुनाव जीता है।" - प्रशांत झा

"भाजपा की जीत मतदाताओं को एकजुट करने और विजयी गठबंधन बनाने की उसकी क्षमता का प्रमाण है।" -माया मीरचंदानी

"भाजपा ने दिखाया है कि केवल सोशल मीडिया पर निर्भर हुए बिना भी चुनाव जीतना संभव है।" -अरविंद गुप्ता

यहां भाजपा की चुनावी रणनीतियों के कुछ विशिष्ट उदाहरण दिए गए हैं जो सोशल मीडिया के उपयोग से परे सफल रहे हैं:

भाजपा के "मिस्ड कॉल सदस्यता अभियान" से उसे अपना सदस्यता आधार बढ़ाने में काफी मदद मिली है। इससे भाजपा को स्वयंसेवकों का एक बड़ा समूह मिल गया है जो चुनाव प्रचार और मतदाता पहुंच में मदद कर सकता है।

भाजपा ने जमीनी स्तर पर संगठन में भारी निवेश किया है। इसके पार्टी कार्यकर्ता घर-घर जाकर मतदाताओं से मिलते हैं और उनकी चिंताओं पर चर्चा करते हैं। इससे भाजपा को मतदाताओं के साथ संबंध बनाने और उनकी जरूरतों को समझने में मदद मिलती है।

भाजपा गरीबों और हाशिए पर रहने वाले लोगों जैसे विशिष्ट मतदाता समूहों की चिंताओं का लाभ उठाने में भी सफल रही है। उदाहरण के लिए, भाजपा ने गरीबों को मुफ्त अनाज देने और सभी के लिए शौचालय बनाने का वादा किया है।

ये उन तरीकों के कुछ उदाहरण हैं जिनसे भाजपा सोशल मीडिया के इस्तेमाल से परे चुनाव जीतने में सफल रही है। भाजपा की चुनावी मशीन जटिल और बहुआयामी है, और सोशल

मीडिया उन उपकरणों में से एक है जिसका उपयोग वह मतदाताओं तक पहुंचने के लिए करती है।

2+2 नहीं 4: गठबंधन की राजनीति का अंत

विपक्षी नेताओं और पार्टियों को यह एहसास होना चाहिए कि मतपेटी में जीतने का कोई आसान तरीका नहीं है। आप उन कार्यकर्ताओं के बिना नहीं जीत सकते जो बाहर निकलते हैं और मतदाताओं को संगठित करते हैं, ऐसे नेता जो प्रतिभा को प्रेरित और आकर्षित करते हैं और एक संदेश जो मतदाताओं को प्रभावित करता है। 'मोदी हटाओ' महज एक संदेश नहीं है और जैसा कि हमने पिछले हफ्ते देखा, यह काफी अच्छा नहीं है।

अमित शाह के कथनानुसार:

अक्सर प्रधानमंत्री अपने मोबाइल ऐप के माध्यम से समाज के उन वर्गों तक पहुंचते हैं जो गुमनाम नायक हैं, उन्हें बताते हैं कि उन्हें सबसे अधिक महत्व दिया जाता है और राष्ट्र निर्माण में उनका काम अनमोल है। स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं के अलावा, वह हाल ही में शिक्षकों के पास पहुंचे और उन्हें समाज में उनके योगदान के लिए धन्यवाद दिया।

यह एक बेहतरीन गुण है जो मैंने मोदी में तब से देखा है जब मुझे उनके साथ काम करने का मौका मिला था। संगठन या सरकार में किसी भी प्रकार की भूमिका निभाने वाले प्रत्येक व्यक्ति को उनके द्वारा व्यक्तिगत रूप से प्रोत्साहित किया जाएगा और विशेष महसूस कराया जाएगा। सेवा के महत्व को पहचानने और इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि दूसरों की सेवा करने के लिए प्रयास करने वालों का सम्मान करने का यह गुण अनुकरणीय है। इससे उनकी अपनी सेवा भावना का भी पता चलता है; वह हर पल भारत को एक बेहतर जगह बनाने में शामिल होना चाहते हैं।

यह एक उत्कृष्ट संगठन और संस्था निर्माता की भी पहचान है। संगठन और संस्थाएँ, आख़िरकार, ऐसे लोगों द्वारा संचालित होती हैं जो व्यक्तिगत हितों से ऊपर अपनी साझा दृष्टि रखते हैं। ऐसे बलिदान, जब बड़े लोगों द्वारा पहचाने जाते हैं, तो मनोबल बढ़ाकर संगठन को मजबूत बनाते हैं।

वह बारीकियों पर भी बहुत ध्यान देने वाले व्यक्ति थे। उदाहरण के लिए, हमारे कई कार्यक्रमों में दीप प्रज्वलन समारोह होता था, जिसके साथ कार्यक्रम शुरू होता था। दीपक में उपयोग की जाने वाली रुई की बाती को अगर पहले से घी में डुबाया जाए तो जब कोई मेहमान उसे जलाने की कोशिश करता है तो वह तुरंत जल उठती है। हालाँकि, यदि वही बाती सूखी है, तो इसमें थोड़ा अधिक समय लगता है। वह इस बात का ध्यान रखेगा कि ऐसी छोटी-छोटी बातें भी यथावत

रहें। बाद में, 2000 के पहले दशक में वह गुजरात के मुख्यमंत्री बने और खुद को एक उत्कृष्ट प्रशासक के रूप में स्थापित किया, जिसे गुजरात सरकार के अन्य लोगों ने उनसे सीखा।

मोदी हमेशा कानून-व्यवस्था को लेकर बेहद सतर्क रहे हैं। वह निष्पक्षता और न्याय में विश्वास करते हैं और हमें बिना किसी डर या पक्षपात के कानून के अनुसार काम करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। बड़ा सोचने और उसे ज़मीन पर लागू करने की उनकी क्षमता अनुकरणीय है। उनका सपना हर घर के लिए एक बैंक खाते का था। उस दृष्टिकोण से कार्रवाई और कार्यान्वयन हुआ और जन धन योजना के तहत 32 करोड़ से अधिक बैंक खाते खोले गए हैं। धुएं से भरी रसोई को प्रत्यक्ष रूप से देखने के बाद, वह गरीब महिलाओं के लिए धुआं मुक्त जीवन सुनिश्चित करना चाहते थे। इसके बाद गरीब महिलाओं को 5 करोड़ से अधिक मुफ्त एलपीजी कनेक्शन दिए गए।

उनकी एक और महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि वह घटनाओं के संदर्भ में नहीं बल्कि संस्थानों के संदर्भ में सोचते हैं। यहां की घटना या वहां की घटना के संदर्भ में व्यक्तिगत योगदान अच्छा है, लेकिन भारत जैसे विशाल देश के लिए यह पर्याप्त नहीं है। उदाहरण के लिए, भ्रष्टाचार के खिलाफ उनकी लड़ाई को लीजिए। यह तथ्य कि उनकी ईमानदारी और सत्यनिष्ठा निर्विवाद है, इस तथ्य को उनके कई विरोधियों ने भी स्वीकार किया है। हालाँकि, उन्होंने आराम नहीं किया। इसके बजाय, उन्होंने भारत को बेहतर कानूनों और संस्थानों से लैस करने की योजना बनाई जो ईमानदारी को संस्थागत बना रहे हैं और पारदर्शिता को बढ़ावा दे रहे हैं।

चाहे वह काले धन के बड़े आश्रय स्थल के खिलाफ कार्रवाई के लिए बेनामी संपत्ति अधिनियम की अधिसूचना हो या विदेशों में जमा धन के बराबर संपत्ति को जब्त करने के लिए धन शोधन निवारण अधिनियम में संशोधन हो, चाहे भगोड़ा आर्थिक अपराधी अधिनियम लाना हो या नोटबंदी या साक्षात्कार को समाप्त करना हो कुछ सरकारी नौकरियों के लिए, हमारे चारों ओर ईमानदारी के लिए अनुकूल और समर्थक माहौल बनाया जा रहा है।

अटलजी भी एक ऐसे नेता थे जिन्होंने कई संस्थागत सुधारों के माध्यम से देश को विकास के पथ पर आगे बढ़ाया और हमारी अर्थव्यवस्था में जान फूंक दी। सड़क, दूरसंचार, शिक्षा, नौकरियाँ, अर्थव्यवस्था कुल मिलाकर उनके प्रभावी नेतृत्व की बदौलत आगे बढ़ी। भाजपा को सुशासन वाली पार्टी और अलग पार्टी के रूप में जाना जाने लगा।

इसी तरह, मोदी के नेतृत्व में भी ग्रामीण सड़कें दोगुनी गति से बन रही हैं, राजमार्ग पहले की तुलना में दोगुनी गति से बन रहे हैं। गरीब घरों में बिजली पहुंच रही है और एलपीजी भी; सुरक्षित स्वच्छता तक पहुंच को बढ़ावा देने के लिए करोड़ों घरों में शौचालय बनाए जा रहे हैं और

कुपोषण के खिलाफ लड़ाई शुरू की गई है। विशाल स्वास्थ्य देखभाल गेम चेंजर - आयुष्मान भारत - की भी शुरुआत की गई है।

ऐसा विकास सिर्फ एक या दो राज्यों या क्षेत्रों में नहीं बल्कि पूरे भारत में हो रहा है। इस तथ्य पर विचार करें कि उत्तर-पूर्व के कुछ राज्य पहली बार रेल से जुड़े हैं। पहली बार, भारत में लगभग हर घर के पास एक बैंक खाता है। यह शासन में एक आदर्श बदलाव है जो भाजपा के लिए बहुत सद्भावना और विश्वास लेकर आया है। जब लोग भाजपा के 'चुनावी मशीन' होने की बात करते हैं, तो वास्तव में विकास और प्रगति ही भाजपा की चुनावी मशीन है।

प्रधानमंत्री ने भाजपा को उन क्षेत्रों में भी एक ताकत बनने में मदद की है जहां पार्टी की सरसरी उपस्थिति हुआ करती थी, उदाहरण के लिए उत्तर-पूर्व में। यदि भाजपा और उसके सहयोगियों को राज्य दर राज्य, विभिन्न क्षेत्रों में लोगों द्वारा चुना गया है, तो यह उस सुशासन के कारण है जिसे मोदी ने सफलतापूर्वक लागू किया है और नए भारत की 'कर सकते हैं' भावना को प्रतिध्वनित करते हैं।

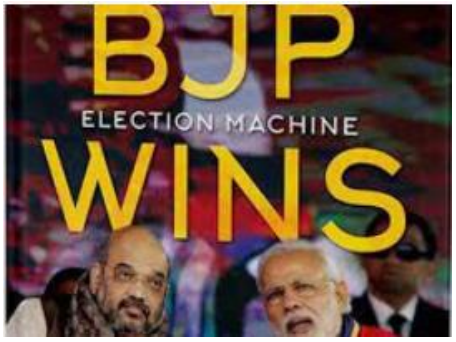

भाजपा की जीत: प्रौद्योगिकी और सोशल मीडिया के उपयोग से परे

"हाउ बीजेपी विन्स: इनसाइड इंडियाज मोस्ट पावरफुल मशीनरी" पुस्तक जिसे पत्रकार प्रशांत झा ने लिखा है, जिनके पास 2014 के संसदीय चुनावों और उसके बाद के चुनावों को कवर करने का प्रत्यक्ष अनुभव रहा है। झा ने कहा कि प्रौद्योगिकी अमित शाह द्वारा बनाए गए दुर्जेय चुनाव तंत्र का केवल एक पहलू है। इस मशीनरी के निर्माण में मूलभूत कदम सदस्यता की मात्रा का विस्तार करना था। यह उनके "मिस्ड कॉल सदस्यता अभियान" की मदद से किया गया, जिससे पार्टी आधार का महत्वपूर्ण मात्रात्मक विस्तार हुआ। 2014 के संसदीय चुनावों के दौरान भाजपा की लामबंदी प्रक्रिया का एक अन्य पहलू "बूथ लेवल कमेटी लामबंदी" था। प्रत्येक बूथ अपने स्थानिक स्थान के भीतर सौ सदस्यों को लाने के लिए जिम्मेदार था। इस प्रक्रिया ने अकेले उत्तर प्रदेश में भाजपा की सदस्यता को 10 मिलियन के लक्ष्य से अधिक बढ़ा दिया। चुनाव पोस्ट करें, बूथ समिति और भाजपा कैडर के नए शामिल सदस्यों के बीच संबंध बनाए रखा गया, जिससे सदस्यता की गुणवत्ता में सुधार हुआ। झा ने कहा, "संगठन पर निरंतर ध्यान, सदस्यों के साथ लगातार संपर्क, प्रौद्योगिकी का उपयोग, मुद्दों की पहचान करने के लिए स्वतंत्र प्रतिक्रिया तंत्र और अभियान की कहानी को गढ़ने के लिए मुद्दों को आत्मसात करना और आंतरिक बनाना भाजपा की चुनावी सफलता के लिए योगदान कारक रहे हैं"।

अरविंद गुप्ता ने 2014 के चुनावों के दौरान इंटरनेट और अन्य डिजिटल माध्यम से पार्टी अभियान के प्रबंधन के बारे में बताया। उनके अनुसार, भाजपा का चुनावी रथ 2012 के राज्य चुनावों से शुरू हुआ, और तब से, भाजपा ने लगभग 80 प्रतिशत राज्य चुनावों में जीत हासिल की है।

मौजूदा जमीनी कैडर और प्रौद्योगिकी ने बड़े पैमाने पर अभियान और चुनावों के बड़े पैमाने

पर संगठन को पूरक बनाया। गुप्ता के अनुसार, भाजपा द्वारा इस्तेमाल किया जाने वाला आदर्श वाक्य था, **"ऑफ़लाइन सफलता** के लिए ऑनलाइन व्यवस्थित करें"। उन्होंने डिजिटल और इंटरनेट अभियानों के बीच भी अंतर किया। डिजिटल अभियान में मुख्य रूप से संगठनात्मक उद्देश्य के लिए डेटा संग्रह शामिल था जबकि इंटरनेट अभियान सोशल मीडिया के माध्यम से आउटरीच से संबंधित था। गुप्ता ने कहा कि इन उपकरणों का विस्तार करते हुए, भाजपा पार्टी अध्यक्ष अमित शाह ने सदस्यता अभियान शुरू किया, जिससे 12 करोड़ सदस्यों की राष्ट्रीय संख्या निर्मित हुई।

कुछ विपथन के बावजूद, "बूथ समिति जुटाना" भारत में किसी राजनीतिक दल द्वारा किया गया सबसे बड़ा डेटा संग्रह अभ्यास बन गया। गुप्ता ने बताया कि कैसे डेटा ने जमीनी स्तर पर पार्टी और कैडर के प्रदर्शन को विनियमित और प्रबंधित करने में मदद की। प्रौद्योगिकी प्रमुख प्रवर्तक थी, जिसने प्रधानमंत्री और पार्टी अध्यक्ष के अंतिम क्षण तक प्रचार करने और हर वोट को महत्वपूर्ण बनाने के अभियान के साथ-साथ पहले से मौजूद पार्टी कैडर को संगठित और संगठित करने में मदद की।

झा की नजर में प्रधानमंत्री की अपील को उनके करियर को तीन चरणों में ले जाकर समझा जा सकता है। 2002 और 2007 के बीच पहले चरण के दौरान, मोदी, जो गुजरात के मुख्यमंत्री थे, को बड़े पैमाने पर एक हिंदू नेता के रूप में देखा जाता था। 2007 के बाद, उन्होंने "विकास पुरुष" या "विकास पुरुष" बनने के लिए एक सचेत बदलाव किया।

2014 के चुनाव में जीत इन दोनों छवियों की परस्पर क्रिया के कारण हुई थी। 2015 में, दिल्ली और बिहार में भाजपा की हार और गरीबों की समस्याओं से दूर सरकार की कॉर्पोरेट समर्थक छवि के विकास ने प्रधान मंत्री मोदी को खुद को "गरीबों के नेता" के रूप में फिर से स्थापित करने के लिए मजबूर किया। इससे लोगों में प्रधानमंत्री की मंशा और निष्ठा के प्रति विश्वास पैदा हुआ।

पिछले साल के प्रधान मंत्री के भाषणों का विश्लेषण करने पर, झा ने ईमानदार गरीबों और भ्रष्ट अमीरों की एक स्पष्ट बाइनरी की ओर इशारा किया, जो देश में प्रचलित वर्ग आक्रोश

को सफलतापूर्वक छूती है। झा ने यह भी उल्लेख किया कि भाजपा सरकार ने राजनीतिक लाभ के लिए शासन का उपयोग करते हुए, अपनी स्वयं की कल्याणकारी योजनाओं को चलाने के लिए आधार, प्रत्यक्ष लाभ हस्तांतरण और सामाजिक आर्थिक जनगणना जैसे यूपीए द्वारा स्थापित बुनियादी ढांचे का लाभ उठाया है। इससे लोगों में प्रधानमंत्री की मंशा और निष्ठा के प्रति विश्वास पैदा हुआ।

झा ने यह भी उल्लेख किया कि भाजपा सरकार ने राजनीतिक लाभ के लिए शासन का उपयोग करते हुए, अपनी स्वयं की कल्याणकारी योजनाओं को चलाने के लिए आधार, प्रत्यक्ष लाभ हस्तांतरण और सामाजिक आर्थिक जनगणना जैसे यूपीए द्वारा स्थापित बुनियादी ढांचे का लाभ उठाया है। जो देश में व्याप्त वर्ग आक्रोश पर सफलतापूर्वक प्रहार करता है। झा ने यह भी उल्लेख किया कि भाजपा सरकार ने राजनीतिक लाभ के लिए शासन का उपयोग करते हुए, अपनी स्वयं की कल्याणकारी योजनाओं को चलाने के लिए आधार, प्रत्यक्ष लाभ हस्तांतरण और सामाजिक आर्थिक जनगणना जैसे यूपीए द्वारा स्थापित बुनियादी ढांचे का लाभ उठाया है।

अरविंद गुप्ता ने बताया कि कैसे राजनीतिक ब्रांडिंग में नेतृत्व, विचारधारा, शासन और नीतियों में प्रदर्शन का संचार शामिल है। उनके अनुसार, औसत भारतीय मतदाता बहुत साक्षर है और उन्हें प्रदान की जा रही योजनाओं से अवगत है और इसलिए कल्याणकारी उपायों के वितरण के बिना, ग्रामीण भारत में चुनाव नहीं जीता जा सकता है। उनका विचार था कि भाजपा का चुनाव तंत्र, प्रधानमंत्री मोदी की व्यापक छवि से कहीं अधिक, कल्याण वितरण और विकास में निहित है।

2014 का चुनाव समाज के सभी वर्गों के समर्थन से शासन और विकास की बहस पर जीता गया था। यूपीए के बुनियादी ढांचे के उपयोग पर टिप्पणी करते हुए, गुप्ता ने बताया कि कैसे एनडीए शासन की "जेएएम ट्रिनिटी" जैसी अभिनव योजनाएं कल्याणकारी योजनाओं की सफलता के पीछे वास्तविक सार थीं।

मोदी सरकार की सफलता के 9 साल: मोदी-शाह की जुगलबंदी के तहत चुनावी युद्ध के मैदान में बीजेपी ने खुद को गरीब, अमीर और वंचित वर्ग के अगुआ के रूप में पेश किया है।

डेटा में रुचि भाजपा के उच्चतम स्तर तक फैली हुई

है। मामले से परिचित दो लोगों ने कहा, इसके आधिकारिक सर्वेक्षण से परे, केंद्रीय गृह मंत्री और पार्टी के मास्टर रणनीतिकार अमित शाह व्यक्तिगत रूप से जमीनी स्तर की जानकारी प्राप्त करने और पार्टी नेताओं द्वारा प्रदान किए गए विवरणों की जांच करने के लिए पेशेवर टीमों पर निर्भर हैं। राजनीतिक विश्लेषकों और पार्टी सदस्यों के अनुसार, श्री शाह आमतौर पर मुद्दों की पहचान करने, जोखिम की गणना करने, ब्लूप्रिंट तैयार करने और सामाजिक गठबंधन बनाने पर ध्यान केंद्रित करते हैं।

मोदी-शाह भाजपा (करिश्माई नेता और उनके संगठनात्मक "चाणक्य") एक उल्लेखनीय रूप से अलग प्रतिभाशाली नेता है। मोदी-शाह भाजपा ने पिछले दशक में दो कदमों से अपना वर्चस्व का लक्ष्य हासिल किया है। सबसे पहले, राष्ट्रीय नेतृत्व के भीतर राजनीतिक शक्ति (केवल पार्टी की नहीं, बल्कि राजनीतिक व्यवस्था की बड़ी मात्रा) की एकाग्रता। दूसरा, उस संकेंद्रित शक्ति का उपयोग, अन्य बातों के अलावा, एक मजबूत चुनावी मशीन बनाने के लिए, जो पीएम की करिश्माई अपील पर केंद्रित हो।

राजनीतिक वर्चस्व का यह "पुण्य" चक्र मोदी-शाह की चुनाव जीतते रहने की "बेजोड़ क्षमता" की धारणा पर आधारित है। यह चुनावी अजेयता की आभा है जो नेतृत्व को राजनीतिक वैधता प्रदान करती है। जैसा कि प्रधानमंत्री ने अडानी मुद्दे पर अपने संसदीय बचाव में कहा था, उन्हें विपक्ष के सवालों का जवाब देने की ज़रूरत नहीं है क्योंकि उन्होंने अपनी वैधता सीधे लोगों ("जनता का आशीर्वाद") से प्राप्त की है, जो उनके बेहतर चुनावी रिकॉर्ड द्वारा समर्थित है।

मोदी के व्यक्तित्व के प्रति आरएसएस की असहजता की रिपोर्टों को अत्यधिक बढ़ा-चढ़ाकर पेश किया गया है, जैसा कि वाल्टर एंडरसन जैसे विशेषज्ञों ने बार-बार दावा किया है। वास्तव में, जैसा कि एंडरसन ने दावा किया है, इससे पहले कभी भी आरएसएस और भाजपा ने मोदी युग में इतनी एकजुटता से काम नहीं किया था। भाजपा के प्रभुत्व ने आरएसएस को राज्य की सत्ता तक अभूतपूर्व पहुंच और जमीनी स्तर पर विस्तार के अवसर प्रदान किए हैं।

मोदी के करिश्मे के आधार पर बनी चुनावी जीत, विशेष रूप से नए इलाकों में, मोदी-शाह की जोड़ी के लिए अपनी अपरिहार्य स्थिति को मजबूत करने और आरएसएस स्वयंसेवकों की शक्ति को बनाए रखने के लिए महत्वपूर्ण है।यह सत्य है कि भाजपा अभी भी उन राज्यों में संघर्ष कर रही है जहां उसके पास आरएसएस कैडर का हार्डवेयर नहीं है।

"प्रधानमंत्री मोदी ने भारत को एक नई दिशा और एक नया उद्देश्य दिया है। उन्होंने दुनिया को दिखाया है कि भारत एक ऐसा देश है।" शशि थरूर, संसद सदस्य और पूर्व विदेश राज्य मंत्री

"भारत अब एक वैश्विक शक्ति है, और इसका अधिकांश श्रेय प्रधान मंत्री मोदी को जाता है। उन्होंने भारत को एक ऐसे देश में बदल दिया है जो विश्व मंच पर आत्मविश्वासी और मुखर है।"
- श्री फरीद ज़कारिया, सीएनएन होस्ट और लेखक

राम मंदिर शिलान्यास से लेकर सर्जिकल स्ट्राइक

भ्रष्टाचार के मुद्दे पर विपक्ष बेअसर

लोगों तक पहुंची योजनाएं

मोदी सरकार की पिछले 9 वर्षों की सबसे बड़ी खासियत समय रहते जरूरत के हिसाब से कदम पीछे खींचना भी रहा। मजबूत सरकार की छवि के साथ ही किसी फैसले का व्यापक विरोध पर सरकार दो कदम पीछे भी हुई। किसान आंदोलन इसका सबूत था।

मोदी सरकार की सफलता के 9 साल

मोदी कार्यकाल की हिट योजनाएं: केंद्र में पीएम मोदी ने नेतृत्व में एनडीए सरकार के 9 साल पूरे हो गए हैं। इस वर्षों में सरकार ने कई ऐसे मुकाम हासिल किए। ये फैसले नरेंद्र मोदी और उनकी सरकार के लिए गेमचेंजर साबित हुए।

2014 में सता में आने के बाद मोदी सरकार ने साफ संदेश दिया कि वह किसी भी तरह के फैसले लेने में नहीं हिचकेगी। आम लोगों के बीच मोदी और उनकी सरकार की लोकप्रियता के पीछे ये सबसे अहम फैक्टर बना। इसकी शुरुआत पहले कार्यकाल में नोटबंदी का फैसला था। इसके बाद सरकार ने आतंकवादियों के ठिकानों पर हमला किया। कोरोना महामारी के दौरान सरकार ने सख्त लॉकडाउन का फैसला किया। लोगों ने सरकार के फैसले लेने की तरीकों को पसंद किया। विदेशों की कोरोना में पूरी दुनिया में टीका भेजने पहल। इससे पीएम की ग्लोबल इमेज उभरी।

सरकार ने जम्मू-कश्मीर से धारा 370 को हटाने जैसे फैसले भी लिए ।

पीएम नरेंद्र मोदी बीते 9 साल में लोगों से संपर्क के लिए नई संवाद शैली अपनाई। 2014 से ही उन्होंने लोगों के बीच अधिक से अधिक पहुंचने की परंपरा शुरू की। 9 वर्ष पूरा होने के बावजूद यह सिलसिला जारी। सरकार के 9 साल पूरा होने पर अब बीजेपी के नेता 51 रैलियां की। इनमें पीएम नरेंद्र मोदी की भी कुछ रैलियां शामिल हैं। इससे पीएम नरेंद्र मोदी को ऐसा प्रतिनिधि बनाया जो उनके जैसा ही सोचता है, उनके सुख-दुख का ख्याल मन की बात रखता है। मन की बात जैसे कार्यक्रम भी आम लोगों से सीधे संवाद का नया जरिया बना। बड़ी बात यह है कि जो ग्लोबल इवेंट में पीएम मोदी की बड़ी रैलियों और कई अहम ग्लोबल इवेंट में

भारत के दखल को देश की बढ़ती ताकत के रूप में पेश किया गया। चाहे यूक्रेन युद्ध के समय वहां फंसे भारतीय को वहां से लाना हो और कूटनीति देश की आम जन तक नहीं जाती थी उसे पीएम मोदी और BJP लोगों एक बीच ले जाने में सफल रहे। इन वर्षों में भारत की छवि एक ग्लोबल ताकत की बनी।

जन धन योजना, उज्ज्वला योजना, पीएम गरीब कल्याण योजना, पीएम किसान सम्मान निधि योजना: प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के अब तक के कार्यकाल में ऊपर बताई गई योजनाओं के अलावा भी कई ऐसी योजनाएं हैं, जो सफल रही हैं। इनमें आयुष्मान भारत योजना (Ayushman Bharat Yojana) का नाम शामिल है। इसके तहत गरीबी रेखा से नीचे (BPL) आने वाले परिवारों को 5 लाख रुपये तक का नकदी रहित (कैशलेस) स्वास्थ्य बीमा उपलब्ध कराया जा रहा है. इसके अलावा स्वच्छ भारत मिशन (Swachh Bharat Mission) योजना के जरिए देशभर में 'एक स्वच्छ भारत' राष्ट्रीय आंदोलन की शुरुआत की गई थी। देश के गांव-गांव में इसकी तारीफ होती है। अगला नाम जल जीवन मिशन (Jal Jeevan Mission) का आता है।

मोदी सरकार की सफलता का 4 M फार्मुला

इकनोमिक टाइम्स के अनुसार योजनाबद्ध तरीके से काम करने में 4-एम दृष्टिकोण का पालन किया गया, ये हैं Mindset change (मानसिकता परिवर्तन), Mission mode (मिशन मोड), Monitoring (निगरानी) and Mass participation (जन भागीदारी).

मानसिकता परिवर्तन Mindset change: मोदी ने 2019 तक सभी घरों में शौचालय उपलब्ध कराने की चुनौती ली. पांच साल, यूपीए के लक्ष्य से तीन साल आगे. व्यापक कवरेज हासिल करने पर समान जोर अन्य योजनाओं जैसे बैंक खाते खोलने या सफल कोविड-19 टीकाकरण अभियान भी इसी तरह सफल हो सके. इस लिए ज़रूरी है कार्य के प्रति मानसिकता में बदलाव लाना।

मिशन मोड़ में काम (Mission mode): 2014 में अपने पहले स्वतंत्रता दिवस भाषण में, मोदी ने एक वर्ष के भीतर सभी स्कूलों के लिए शौचालय उपलब्ध कराने के लिए प्रतिबद्ध स्वच्छ विद्यालय पहल की घोषणा की। यह बाद में स्वच्छ भारत मिशन में परिवर्तित किया गया। इसी तरह, उन्होंने 2015 में 1,000 दिनों के भीतर देश के सभी गांवों को

विद्युतीकृत करने का संकल्प लिया, लक्ष्य से पहले लगभग 19,000 अविद्युतीकृत गांवों को सफलतापूर्वक विद्युतीकृत किया। 2019 में, उन्होंने जल जीवन मिशन के तहत सभी घरों को पीने का पानी उपलब्ध कराने का वादा किया था। नल के पानी के कनेक्शन तक पहुंच वाले परिवारों का अनुपात लगभग दोगुना हो गया है।

निगरानी (Monitoring): सरकार के एजेंडा पर काम ही नहीं था काम की निगरानी भी थी , नौकरशाहों को मुस्तैद रखना , जवाबदेही सुनिश्चित करना, काम की गुणवत्ता पर नज़र रखना ये अहम माना गया। कॉन्ट्रैक्ट पर काम करने वालों पर भी निगरानी रखी गई।

सामूहिक भागीदारी (Mass participation): काम में जनभागीदारी बढ़ी इससे लोगों का उत्साह भी बढ़ा। नौकरशाहों पर भी एक दबाव रहा कि काम समय से हो अन्यथा जनता भी सवाल उठा सकती है।

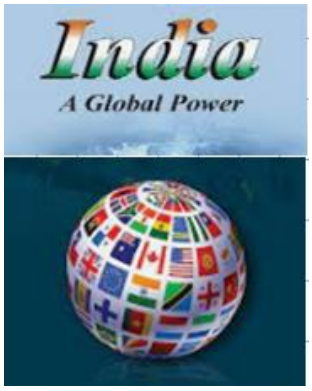

"भारत अब एक वैश्विक शक्ति है, और इसका अधिकांश श्रेय प्रधान मंत्री मोदी को जाता है। उन्होंने भारत को एक ऐसे देश में बदल दिया है जो विश्व मंच पर आत्मविश्वासी और मुखर है।" - श्री फरीद ज़कारिया, सीएनएन होस्ट और लेखक

यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि मोदी सरकार के आलोचक भी हैं, जो बढ़ती असमानता, धार्मिक ध्रुवीकरण और मानवाधिकारों के हनन जैसे मुद्दों की ओर इशारा करते हैं। हालाँकि, इसमें कोई संदेह नहीं है कि मोदी सरकार ने पिछले 9 वर्षों में कई क्षेत्रों में महत्वपूर्ण प्रगति की है।

:"प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में भारत ने पिछले नौ वर्षों में महत्वपूर्ण प्रगति की है। अर्थव्यवस्था बढ़ी है, बुनियादी ढांचे में सुधार हुआ है और सामाजिक कल्याण योजनाओं से लाखों भारतीयों को लाभ हुआ है।" - डॉ. अरविंद पनगढ़िया

"भारत अब एक वैश्विक शक्ति है, और इसका अधिकांश श्रेय प्रधान मंत्री मोदी को जाता है। उन्होंने भारत को एक ऐसे देश में बदल दिया है जो विश्व मंच पर आत्मविश्वासी और मुखर है।" - श्री फरीद ज़कारिया, सीएनएन होस्ट और लेखक

"भारत में गठबंधन राजनीति का अंत एक नए युग की शुरुआत है।" - नरेंद्र मोदी "2019 में भाजपा की जीत ने भारतीय राजनीति में एक विवर्तनिक बदलाव को चिह्नित किया, पार्टी अब निकट भविष्य में अपने दम पर शासन करने की स्थिति में है।" -प्रवीण चक्रवर्ती,

"गठबंधन राजनीति का पतन एक स्वागत योग्य विकास है, क्योंकि इससे अधिक स्थिर और प्रभावी सरकारें बनेंगी।" -*अरविंद सुब्रमण्यम, अर्थशास्त्री* हालांकि, यह सुनिश्चित करना महत्वपूर्ण है कि भाजपा अपने बहुमत का इस्तेमाल भारत की लोकतांत्रिक संस्थाओं को कमजोर करने के लिए न करे।" -*अमर्त्य सेन*

मोदी की जीत जाति और वोट से परे राष्ट्रीय मुद्दों पर है: राष्ट्रीय चिंताओं को संबोधित करना: मोदी के अभियान और शासन ने अक्सर विशिष्ट जाति या क्षेत्रीय वोट बैंकों को लक्षित करने के बजाय आर्थिक विकास, सुरक्षा और भ्रष्टाचार विरोधी उपायों जैसे व्यापक राष्ट्रीय मुद्दों पर ध्यान केंद्रित किया है। "न्यू इंडिया" के निर्माण पर उनका जोर एक बड़े दृष्टिकोण के साथ प्रतिध्वनित होता है जो संकीर्ण पहचान-आधारित राजनीति से परे है।

जनसांख्यिकी के पार अपील: जातिगत सीमाओं से परे, समाज के विभिन्न वर्गों से समर्थन हासिल करने की उनकी क्षमता कई चुनावों में स्पष्ट हुई है। विकास और बेहतर भविष्य की आकांक्षाओं पर उनके ध्यान ने युवाओं को आकर्षित किया है, जबकि बुनियादी ढांचे और आर्थिक विकास पर उनका जोर मतदाताओं के व्यापक स्पेक्ट्रम के साथ प्रतिध्वनित हुआ है।

राजनीतिक आख्यान में बदलाव: मोदी की चुनावी जीतों ने अक्सर पारंपरिक जाति-आधारित राजनीति से विकास, शासन और राष्ट्रीय गौरव पर केंद्रित अधिक अखिल भारतीय आख्यान की ओर बदलाव का संकेत दिया है। इन संदेशों को प्रभावी ढंग से संप्रेषित करने की उनकी क्षमता ने उनकी चुनावी सफलताओं में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

राष्ट्रव्यापी जनादेश: भारत में 2014 और 2019 के आम चुनावों जैसे चुनावों में मोदी और उनकी पार्टी ने देश भर के विभिन्न राज्यों से महत्वपूर्ण जनादेश हासिल किया, जो क्षेत्रीय या जाति-आधारित राजनीति से परे व्यापक स्वीकृति और समर्थन का प्रदर्शन था।

हम कह सकते हैं कि कैसे मोदी की जीत अक्सर जाति-आधारित या क्षेत्रीय वोट बैंक की राजनीति से आगे बढ़ती है, जो राष्ट्रीय मुद्दों और आकांक्षाओं में निहित व्यापक अपील को प्रदर्शित करती है।

पारंपरिक रूप से भारतीय चुनावों को आकार देने वाले क्षेत्रीय बयानबाजी और जाति-आधारित समीकरणों के शोर के बीच में मोदी की जीत एक महत्वपूर्ण क्षण के रूप में उभरी, जो मतदाता प्राथमिकताओं में पहचान की राजनीति से व्यापक राष्ट्रीय चिंताओं की ओर बदलाव को दर्शाती है।

बीजेपी की चुनावी जीत का एक निर्णायक पहलू महत्वपूर्ण राष्ट्रीय मुद्दों पर दिया गया जोर था। मोदी का अभियान रणनीतिक रूप से आर्थिक विकास, राष्ट्रीय सुरक्षा, बुनियादी ढांचे और सामाजिक कल्याण योजनाओं जैसी महत्वपूर्ण चिंताओं को संबोधित करने की दिशा में केंद्रित है। 'मेक इन इंडिया', 'स्वच्छ भारत अभियान', 'आयुष्मान भारत' और 'डिजिटल इंडिया' जैसी पहलों पर ध्यान क्षेत्रीय सीमाओं और जातिगत संबद्धताओं से परे जाकर मतदाताओं को बहुत पसंद आता है।

मोदी के नेतृत्व वाले अभियान द्वारा नियोजित संदेश जाति या पंथ के बावजूद सभी के लिए समावेशिता और प्रगति पर केंद्रित रहता है। बयानों और कार्यों ने लगातार एकीकृत, समृद्ध भारत के लोकाचार को रेखांकित कर विविध आबादी की आकांक्षाओं को पूरा करता है।

मोदी की जीत भारतीय राजनीति में जातिगत समीकरणों पर राष्ट्रीय विकास को प्राथमिकता देने की दिशा में बदलाव का प्रतीक है। यह देश के लिए एक ऐतिहासिक क्षण है।

मतदाताओं का जनादेश इस विश्वास की पुष्टि करता है कि नागरिक पहचान-आधारित राजनीति से आगे बढ़ गए हैं और ऐसे नेतृत्व की तलाश कर रहे हैं जो व्यापक राष्ट्रीय चिंताओं को संबोधित करता हो।

निर्णायक जीत हासिल करके, मोदी ने प्रदर्शित किया है कि एक समृद्ध, समावेशी भारत की दृष्टि जाति विभाजन से परे है, जो भारतीय राजनीति में एक नए युग का प्रतीक है।

बीजेपी की जीत भारतीय राजनीति के प्रतिमान को फिर से परिभाषित करता है, जो शासन और विकास के अधिक समग्र विचार की ओर स्थापित जाति-आधारित मतदान पैटर्न से प्रस्थान का संकेत देता है। पी एम मोदी को मिल रहा जनादेश विभिन्न राजनीतिक नेताओं के लिए राष्ट्रीय हित, एकता और संकीर्ण विचारों से ऊपर प्रगति को प्राथमिकता देने के स्पष्ट आह्वान के रूप में कार्य करता है।

मोदी की जीत एक शक्तिशाली अनुस्मारक के रूप में कार्य करती है कि राष्ट्र के उत्थान और इसकी मूलभूत चुनौतियों का समाधान करने पर ध्यान केंद्रित करने वाला नेतृत्व जाति और क्षेत्रवाद की बाधाओं को पार करते हुए व्यापक समर्थन प्राप्त कर सकता है।

नरेंद्र मोदी को मिलते आ रहा प्रचंड जनादेश विविध मतदाताओं की उभरती आकांक्षाओं को रेखांकित करता है, जो भारतीय राजनीति को अधिक समावेशी, मुद्दों पर आधारित प्रक्षेप पथ की ओर ले जाता है और देश के लिए एक आशाजनक भविष्य की शुरुआत करता है।

बीजेपी की चुनाव-मशीनरी

भाजपा की जीत में बूथ पन्ना प्रमुखों का योगदान: उम्मीदवारों के लिए प्रत्येक मतदाता से व्यक्तिगत रूप से संपर्क करना संभव नहीं है। मोदी लहर के अलावा, मतदाताओं के साथ उनका व्यक्तिगत समीकरण है जो बीजेपी को भारी जीत में मदद करता है।

अमित शाह ने कहा कि चुनाव में पन्ना प्रमुखों और बूथ अध्यक्षों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। उन्होंने बताया कि एक पन्ना प्रमुख को 60 मतदाताओं के संपर्क में रहने, उन्हें सरकार की नीतियों और पहलों के बारे में बताने और उन्हें मतदान करने के लिए प्रोत्साहित करने की भूमिका सौंपी गई है।

28 में से 18 राज्यों प् बीजेपी की सत्ता। संसद में उसके अधिक सदस्य हैं और राज्य विधान सभाओं में 1300 विधायक हैं। अर्थात 44% क्षेत्र और 49.5 प्रतिशत से अधिक आबादी पर बीजेपी का शासन है।

विपक्ष के आधे मन से I.N.D.I.A गठबंधन बनाने के बावजूद, बीजेपी का चुनाव प्रचार शुचारूप से चल रहा है- कोई बात नहीं कि आम चुनाव 5-6 माह दूर हैं। हिट समूहों को एकजुट करने और बूथ प्रबंधन के प्रयास जोरों पर चल रहे हैं. कौन हैं जो अश्वमेघ यज्ञ को रोक सकता है ?

पार्टी को संचालित करना **'यहाँ अभी'** दिष्टिकोण है। राजनितिक असन्तुस्टि के लिए कोई जगह नहीं है- एक ऊर्जावान प्रधानमंत्री मोदी के साथ जो जनता से सीधे संवाद करते हैं, मतदाता और कार्यकर्त्ता उनके साथ अपनेपन के साथ जुड़ाव महशूस करते हैं। पीएम मोदी अपने समर्थन आधार को 2024 और उसके बाद भी राष्ट्रीय चुनावों के लिए गति बनाए रखना चाहते हैं, उनसे लगातार तीसरी बार पार्टी का नेतृत्व करने की उम्मीद की जाती है। भाजपा 180 मिलियन से अधिक सदस्यों के साथ एक सीमांत समूह से दुनिया की सबसे बड़ी पार्टी बन गई है। पार्टी के पास मजबूत नेतृत्व है, जिसमें नरेंद्र मोदी और अमित शाह जैसे नेता

नेतृत्व कर रहे हैं। इन नेताओं का मतदाताओं पर काफी प्रभाव है और ये भाजपा की चुनावी सफलताओं में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

भारत में सबसे अधिक सुव्यवस्थित व्यवस्थाओं में से एक है। यह कार्यकर्ताओं और नेताओं का एक विशाल और जटिल नेटवर्क है जो सभी स्तरों पर चुनावों में पार्टी की जीत सुनिश्चित करने के लिए अथक प्रयास करते हैं।

भाजपा की चुनावी मशीन कई प्रमुख सिद्धांतों पर आधारित है, जिनमें शामिल हैं:

एक मजबूत जमीनी स्तर का संगठन: भाजपा की पूरे भारत के गांवों और कस्बों में गहरी उपस्थिति है।आरएसएस भाजपा को स्वयंसेवकों और कार्यकर्ताओं की एक सतत धारा प्रदान करता है जो उसकी चुनावी सफलता के लिए आवश्यक हैं।

कार्यकर्ताओं का एक अनुशासित कैडर: भाजपा कार्यकर्ता अपने समर्पण और अनुशासन के लिए जाने जाते हैं। वे पार्टी की जीत सुनिश्चित करने के लिए लंबे समय तक काम करने और कड़ी मेहनत करने को तैयार हैं।

सूक्ष्म प्रबंधन पर ध्यान: भाजपा की चुनावी मशीन अत्यधिक केंद्रीकृत और सूक्ष्म प्रबंधन वाली है। पार्टी के केंद्रीय नेतृत्व की उम्मीदवारों के चयन से लेकर धन वितरण तक अभियान के हर पहलू पर कड़ी नजर है.

प्रौद्योगिकी का परिष्कृत उपयोग: भाजपा प्रौद्योगिकी को अपनाने वाले पहले भारतीय राजनीतिक दलों में से एक रही है। पार्टी मतदाताओं तक पहुंचने और अपने अभियानों का प्रबंधन करने के लिए सोशल मीडिया और डेटा एनालिटिक्स जैसे विभिन्न तकनीकी उपकरणों का उपयोग करती है।

भाजपा की चुनावी मशीन ने हाल के वर्षों में पार्टी के सत्ता में आने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। 2014 के आम चुनाव में, भाजपा ने 30 वर्षों में लोकसभा में सबसे बड़ा बहुमत हासिल किया। पार्टी ने अगले वर्षों में कई राज्य विधानसभा चुनावों में भी जीत हासिल की।

भारतीय राजनीति में भाजपा की चुनावी मशीन एक जबरदस्त ताकत है। यह अच्छी तरह से वित्त पोषित, सुव्यवस्थित और अच्छी तरह से अनुशासित है। पार्टी के प्रौद्योगिकी के उपयोग और सूक्ष्म प्रबंधन ने भी इसे अपने प्रतिद्वंद्वियों पर महत्वपूर्ण बढ़त दिलाई है।

दो साल पहले सेवानिवृत्त होने के बाद से, 60 वर्षीय श्री वर्मा कहते हैं कि उन्होंने अपना सारा समय पार्टी के लिए स्वेच्छा से समर्पित कर दिया है। "रैलियां ठीक हैं, लेकिन घर-घर जाकर संपर्क करना आवश्यक है।

प्रचार करना सबसे प्रभावी है," श्री वर्मा ने कहा, "हम चुनावों का सूक्ष्म प्रबंधन करते हैं।" "यह समर्पित कार्यकर्ताओं की मानव श्रृंखला है जो भाजपा की जीत सुनिश्चित कर रही है।"

पिछले एक दशक में बीजेपी के उदय में पीएम मोदी ने अहम भूमिका निभाई है। 2014 में बीजेपी की जीत ने देश में गठबंधन की राजनीति के एक युग का अंत कर दिया। भाजपा का सदस्यता आधार और जनता के साथ नियमित जुड़ाव इसकी बढ़ती लोकप्रियता को दर्शाता है। हाल ही में सोमवार की सुबह, सुखराम साहू - बूथ प्रभारी और भारत की सत्तारूढ़ भारतीय जनता पार्टी के लंबे समय से सदस्य - अपने घर के बरामदे में बैठे और पार्टी के लिए अधिक मतदाताओं को जीतने की रणनीतियों पर सहयोगियों के साथ चर्चा कर रहे थे। भाजपा की मुख्य विपक्षी पार्टी कांग्रेस के पास जमीन पर पर्याप्त ताकत नहीं है और वह 2014 के चुनावों में अपनी अब तक की सबसे बुरी हार के बाद खोई हुई जमीन को वापस पाने के लिए संघर्ष कर रही है, जिसने पीएम मोदी को राष्ट्रीय स्तर पर सत्ता में पहुंचाया।

श्री वर्मा यह सुनिश्चित करने के मिशन पर हैं कि उनके गांव के 1,400 लोगों में से अधिकांश लोग भाजपा को वोट दें, वर्षों से एकत्र किए गए स्थानीय मतदाताओं के बारे में विवरण वाले डेटाबेस की सहायता से।

देशव्यापी **वोटर चेतना महा अभियान** भी शुरू किया है कि भगवा पार्टी अगले साल होने वाले आम चुनावों में अधिकतम वोट हासिल करे। यह अभियान 25 अगस्त को स्थानांतरित किए गए लोगों सहित नए मतदाताओं को पंजीकृत करने, संदिग्ध मतदाताओं को हटाने और मतदाता कार्ड विवरण को सही करने में मदद करने के लिए शुरू किया गया था।

इस अभियान के तहत, भाजपा कार्यकर्ता युवाओं से संपर्क करने के लिए घर-घर जाएंगे और यह सुनिश्चित करेंगे कि पात्र मतदाताओं का नामांकन हो। प्रत्येक विधानसभा में 'फर्जी मतदाताओं' को हटाया जाएगा और नए मतदाताओं का नामांकन किया जाएगा।

"बड़ी विधानसभा में 20,000, मध्यम विधानसभा में 10,000 और केंद्र शासित प्रदेश जो छोटे क्षेत्र हैं, वहां 5,000 मतदाता बनाने का लक्ष्य रखा गया है। नए मतदाताओं को जागरूक और जोड़ा जाएगा," भाजपा सूत्र ने कहा।

'मतदाता चेतना महाअभियान' अभियान की देखरेख बीजेपी की महिला मोर्चा और युवा मोर्चा करेंगे। इस अभियान की देखरेख के लिए भाजपा के संयुक्त महासचिव (संगठन) शिव प्रकाश के नेतृत्व में आठ लोगों की एक टीम बनाई गई है। प्रत्येक को छह राज्यों की जिम्मेदारी दी गई है। स्कूल ऑफ मॉडर्न मीडिया के डीन नलिन मेहता ने कहा, हिंदू राष्ट्रवाद, नए सामाजिक और जातीय गठबंधनों के निर्माण और महिलाओं और कल्याण कार्यक्रमों

पर ध्यान केंद्रित करने पर भाजपा के निर्विवाद जोर ने इसे "कांग्रेस की जगह भारतीय राजनीति का प्राथमिक ध्रुव" बना दिया है। देहरादून में यूपीईएस विश्वविद्यालय और "द न्यू बीजेपी" के लेखक। राजनीतिक वैज्ञानिक श्री मेहता कहते हैं, "ये सभी कारक एक मजबूत जमीनी स्तर के कैडर और जीतने की क्षमता पर एक क्रूर प्रबंधकीय फोकस के साथ मिलकर एक शक्तिशाली चुनाव मशीन बनाते हैं जो अक्सर करीबी मुकाबलों में अंतर पैदा कर सकती है।" "इससे भारत के विपक्षी दलों के लिए चुनौती का स्तर बढ़ गया है क्योंकि वे 2024 में अगले आम चुनाव के लिए तैयार हैं।"

यह स्पष्ट करना महत्वपूर्ण है कि भारत में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) जैसी राजनीतिक पार्टी की सफलता सहित किसी भी चुनाव का परिणाम कई कारकों से प्रभावित होता है, और उनकी जीत का श्रेय केवल उनकी चुनाव प्रणाली को देना चुनौतीपूर्ण होता है। हालाँकि, हम भाजपा की चुनाव रणनीति और प्रणाली के कुछ पहलुओं का पता लगा सकते हैं जिन्होंने उनकी सफलता में योगदान दिया है।

मजबूत संगठनात्मक संरचना: भाजपा के पास एक अच्छी तरह से संरचित और पदानुक्रमित संगठन है, जो संसाधनों और जनशक्ति को प्रभावी ढंग से जुटाने में मदद करता है। भाजपा के एक प्रमुख नेता अमित शाह ने एक बार कहा था, **"हमारा संगठनात्मक ढांचा हमारी ताकत है।** हमारे पास एक प्रतिबद्ध कैडर है, जो हमारी चुनावी जीत के लिए महत्वपूर्ण है।"

समावेशिता और पहुंच: भाजपा हाशिये पर मौजूद लोगों सहित समाज के विभिन्न वर्गों में अपनी अपील बढ़ाने में सफल रही है। मोदी मंत्र: सबका विकास' ,सबका विशवास और सबका प्रयास"

प्रभावी संचार: पार्टी ने विशाल दर्शकों तक पहुंचने के लिए सोशल मीडिया और आधुनिक संचार उपकरणों का प्रभावी ढंग से उपयोग किया है। नरेंद्र मोदी की सोशल मीडिया उपस्थिति इसका एक प्रमुख उदाहरण है। उन्होंने एक बार कहा था, "मैं ऐसा राजनेता नहीं हूं जो खोखले वादे करता हो। मैंने जो वादे किए थे, उन्हें पूरा किया है।"

अभियान रणनीति: भाजपा ने अपनी जीत की संभावनाओं को अधिकतम करने के लिए डेटा-संचालित अभियान रणनीतियों को नियोजित किया है, जैसे बूथ-स्तरीय प्रबंधन, सूक्ष्म-लक्ष्यीकरण और चुनावी डेटा का विश्लेषण। अमित शाह ने कहा, "चुनाव अभियान सिर्फ भाषणों के बारे में नहीं है। वे जमीनी स्तर पर मतदाताओं से जुड़ने के बारे में हैं।"

गठबंधन निर्माण: भाजपा ने रणनीतिक रूप से क्षेत्रीय दलों के साथ गठबंधन बनाया है, जिससे विभिन्न राज्यों में उनकी स्थिति मजबूत हुई है। उदाहरण के लिए, राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (एनडीए) राष्ट्रीय स्तर पर भाजपा के नेतृत्व वाले दलों का गठबंधन है।

चुनाव सुधार: भाजपा ने ऐसे चुनाव सुधारों का समर्थन किया है जो पारदर्शिता बढ़ाते हैं, जैसे मतदाता पहचान पत्र की शुरुआत और इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीनों (ईवीएम) का उपयोग। ये चुनावी प्रक्रिया की अखंडता को बनाए रखने में सहायक रहे हैं। यह ध्यान देने योग्य है कि भाजपा की चुनाव प्रणाली उसकी विचारधारा, नेताओं, अभियानों और पार्टी संरचना सहित विभिन्न तत्वों का एक संयोजन है। हाल के चुनावों में जहां बीजेपी को सफलता मिली है, वहीं उसे आलोचना और विरोध का भी सामना करना पड़ा है. भारत में चुनाव जटिल हैं, और परिणाम आर्थिक स्थितियों, क्षेत्रीय गतिशीलता और मतदाता भावना सहित कई कारकों पर निर्भर करते हैं।

निष्कर्षतः, जबकि भाजपा की चुनाव प्रणाली ने निश्चित रूप से उसकी सफलता में भूमिका निभाई है, यह पहेली का सिर्फ एक टुकड़ा है। चुनाव बहुआयामी होते हैं और कोई भी एक कारक किसी पार्टी की जीत की व्याख्या नहीं कर सकता है। व्यापक भारतीय चुनावी परिदृश्य के साथ-साथ विविध जनसांख्यिकी को अनुकूलित करने, रणनीति बनाने और अपील करने की भाजपा की क्षमता ने उसकी चुनावी जीत में योगदान दिया है।

"बूथ और पन्ना प्रमुख व्यवस्था" के कारण भाजपा की जीत

भाजपा की "बूथ और पन्ना प्रमुख व्यवस्था" जमीनी स्तर पर पार्टी कार्यकर्ताओं को संगठित करने और संगठित करने की एक प्रणाली है। इसे 2019 के लोकसभा चुनाव और 2022 के उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव सहित पार्टी की हालिया चुनावी जीत में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने का श्रेय दिया जाता है।

यह प्रणाली प्रत्येक मतदान केंद्र को 20-25 "पन्ने" या 100-120 मतदाताओं के समूहों में विभाजित करके काम करती है। प्रत्येक पन्ना को एक "पन्ना प्रमुख" सौंपा जाता है, जो उस क्षेत्र में मतदाताओं की पहचान करने और उन्हें एकजुट करने के लिए जिम्मेदार होता है। पन्ना प्रमुखों की देखरेख "बूथ प्रमुखों" द्वारा की जाती है, जो मतदान केंद्र स्तर पर पूरे ऑपरेशन की देखरेख के लिए जिम्मेदार होते हैं।

मतदाताओं को एकजुट करने और यह सुनिश्चित करने में कि पार्टी का संदेश मतदाताओं के हर कोने तक पहुंचे, इसकी प्रभावशीलता के लिए भाजपा की बूथ और पन्ना प्रमुख व्यवस्था की प्रशंसा की गई है। इसे पार्टी को जमीनी स्तर पर मतदाताओं के साथ मजबूत रिश्ते बनाने में मदद करने का श्रेय भी दिया गया है।

जमीनी स्तर पर लामबंदी: भाजपा को जमीनी स्तर के सावधानीपूर्वक संगठन की प्रतिष्ठा है, जिसमें बूथ स्तर के कार्यकर्ताओं और पन्ना (या पृष्ठ) प्रमुखों की नियुक्ति शामिल है जो बूथ स्तर पर चुनाव संबंधी गतिविधियों के प्रबंधन के लिए जिम्मेदार हैं। इस सूक्ष्म प्रबंधन को

अक्सर उनकी चुनावी सफलता का श्रेय दिया जाता है। भाजपा के प्रमुख रणनीतिकार अमित शाह ने इस पहलू पर जोर दिया जब उन्होंने कहा, "चुनाव बूथ दर बूथ लड़ा जाता है। आप बूथ पर जीतते हैं या हारते हैं। हमारा ध्यान बूथ जीतने पर है।"

सूक्ष्म प्रबंधन: भाजपा के दृष्टिकोण में बूथ स्तर पर मतदाताओं की पहचान, जुटाना और वोट प्राप्त करने जैसी गतिविधियों की बारीकी से निगरानी और प्रबंधन करना शामिल है। जैसा कि भारत के प्रधान मंत्री और एक प्रमुख भाजपा नेता नरेंद्र मोदी ने एक बार कहा था, "हमारी सफलता रणनीति, एक प्रभावी संगठनात्मक संरचना, कड़ी मेहनत और हमारे कार्यकर्ताओं के समर्पण का परिणाम है। हमारे कार्यकर्ता जुड़ने के महत्व को समझते हैं बूथ स्तर पर मतदाता।" **डेटा-संचालित अभियान:** भाजपा अपने चुनाव अभियानों को कुशलतापूर्वक प्रबंधित करने के लिए डेटा और प्रौद्योगिकी का लाभ उठाती है। इसमें मतदाता प्रोफाइलिंग, डिजिटल आउटरीच और लक्षित संदेश शामिल हैं। इसे अमित शाह के उद्धरण में समझाया गया है, "हम तुष्टीकरण की राजनीति में विश्वास नहीं करते हैं; हम विकास की राजनीति में विश्वास करते हैं। हमारे पास इसे साबित करने के लिए डेटा है।"

चुनावी जीत: भाजपा की बूथ और पन्ना प्रमुख व्यवस्था से चुनावी सफलता मिली है। उदाहरण के लिए, 2014 के लोकसभा चुनावों में, भाजपा ने पूर्ण बहुमत हासिल किया और 2019 के चुनावों में, उन्होंने अपने प्रदर्शन में सुधार किया। इसका श्रेय अक्सर उनकी जमीनी स्तर की लामबंदी और संगठन को दिया जाता है।

स्थानीय नेता और कैडर ताकत: भाजपा स्थानीय नेताओं और जमीनी स्तर पर मजबूत कैडर आधार तैयार करने पर जोर देती है। यह दृष्टिकोण भाजपा नेता और पूर्व गृह राज्य मंत्री, राजनाथ सिंह द्वारा व्यक्त किया गया था, जिन्होंने कहा था, "भाजपा हमेशा राष्ट्रवाद और सांस्कृतिक पहचान के सिद्धांतों द्वारा निर्देशित रही है। हम स्थानीय नेताओं और एक कैडर का निर्माण करते हैं जो लोगों से जुड़ सकते हैं।"

खुद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बीजेपी की बूथ और पन्ना प्रमुख व्यवस्था की तारीफ करते हुए इसे पार्टी की सफलता की 'रीढ़' बताया है. उन्होंने कहा है कि इस प्रणाली ने पार्टी को जमीनी स्तर पर मतदाताओं से जुड़ने और पार्टी कार्यकर्ताओं का एक मजबूत नेटवर्क बनाने में मदद की है।

***बूथ और पन्ना** प्रमुख व्यवस्था के महत्व पर भाजपा नेता अमित शाह का एक उद्धरण यहां दिया गया है: "बूथ और पन्ना प्रमुख की व्यवस्था भाजपा की सफलता की कुंजी है। इस प्रणाली के माध्यम से हम हर मतदाता तक पहुंचने और उनके साथ मजबूत संबंध बनाने में सक्षम हैं। पन्ना प्रमुख हमारी पार्टी के असली नायक हैं।"*

भाजपा भारत की सबसे अमीर राजनीतिक पार्टी भी है-
वित्तीय वर्ष 2021 में इसकी आय अगले सात सबसे बड़े राष्ट्रीय दलों की संयुक्त संपत्ति में सबसे ऊपर है, जिससे इसे प्रतिद्वंद्वियों पर भारी बढ़त मिली है। लखनऊ शहर में भाजपा के पन्ना प्रमुख रमेश यादव ने कहा, स्थानीय नेता और उम्मीदवार बहुत सीमित खर्च वहन करते हैं, केंद्रीय नेतृत्व स्टार प्रचारकों और प्रचार की लागत सहित अधिकांश खर्चों का ख्याल रखता है।

विकास से परिचित दो वरिष्ठ नेताओं के अनुसार, 2024 के राष्ट्रीय चुनावों के लिए, भाजपा ने उन 144 सीटों को जीतने के लक्ष्य के साथ कार्ययोजना भी तैयार की है जो 2019 में उनके पास नहीं गईं।

सोशल मीडिया पदाधिकारी श्रीअग्रवाल ने कहा, सोशल मीडिया, भारतीय चुनावों में एक प्रमुख युद्धक्षेत्र है - सामग्री बनाने और विपक्षी गतिविधियों पर नजर रखने के लिए हजारों कार्यकर्ता काम कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि पार्टी का सोशल मीडिया सेल साल भर सक्रिय रहता है, वहीं हर प्रान्त में चुनाव प्रचार के लिए पूर्ण वॉर रूम स्थापित किए गए हैं।

2014 के बाद बीजेपी के लिए हर चुनाव में जीत क्यों है अहम ?

भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) भारत की सबसे सफल राजनीतिक पार्टियों में से एक है, जिसने 2014 और 2019 में लगातार दो आम चुनाव जीते हैं। पार्टी की चुनावी मशीनरी को व्यापक रूप से देश में सबसे कुशल और सुव्यवस्थित में से एक माना जाता है।

भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) भारत की सबसे बड़ी राजनीतिक पार्टी है, और इसकी चुनावी मशीन दुनिया में सबसे परिष्कृत में से एक है। पार्टी के पास कार्यकर्ताओं और स्वयंसेवकों का एक विशाल नेटवर्क, मतदाता जनसांख्यिकी की गहरी समझ और एक परिष्कृत डेटा विश्लेषण ऑपरेशन है। कारकों के इस संयोजन ने भाजपा को चुनाव दर चुनाव जीतने की अनुमति दी है, और अब वह भारतीय राजनीति में प्रमुख शक्ति है।

भाजपा की संगठनात्मक संरचना: भाजपा की संगठनात्मक संरचना एक पिरामिड प्रणाली पर आधारित है, जिसमें शीर्ष पर केंद्रीय नेतृत्व और नीचे राज्य और स्थानीय इकाइयों का एक नेटवर्क है। पार्टी का नेतृत्व एक अध्यक्ष द्वारा किया जाता है, जिसे राष्ट्रीय परिषद द्वारा चुना जाता है, जो पार्टी की सर्वोच्च निर्णय लेने वाली संस्था है। राष्ट्रीय परिषद पूरे देश के प्रतिनिधियों से बनी है, जिसमें निर्वाचित अधिकारी, पार्टी नेता और कार्यकर्ता शामिल हैं।

राष्ट्रीय परिषद के नीचे पार्टी की राज्य और स्थानीय इकाइयाँ हैं। प्रत्येक राज्य की अपनी भाजपा इकाई होती है, जिसका नेतृत्व एक अध्यक्ष और पदाधिकारियों की एक टीम करती है। राज्य इकाइयों को आगे जिलों और निर्वाचन क्षेत्रों में विभाजित किया गया है। प्रत्येक जिले में एक भाजपा इकाई होती है, जिसका नेतृत्व एक अध्यक्ष और पदाधिकारियों की एक टीम

करती है। निर्वाचन क्षेत्र इकाइयाँ पार्टी की सबसे छोटी इकाइयाँ हैं, और वे स्थानीय स्तर पर मतदाताओं को संगठित करने और एकजुट करने के लिए जिम्मेदार हैं।पूर्ण कालिक प्रचारक भी केंद्रीय और प्रांतीय स्तर पर नियुक्त किये जाते हैं।

भाजपा संभावित मतदाताओं की पहचान करने, उन्हें व्यक्तिगत संदेशों के साथ लक्षित करने और चुनाव के दिन मतदान करने के लिए प्रेरित करने के लिए डेटा का उपयोग करती है। पार्टी अपने विरोधियों के नकारात्मक अभियानों की पहचान करने और उनका मुकाबला करने के लिए भी डेटा का उपयोग करती है।

भाजपा की चुनावी सफलताएँ: भाजपा ने भारत के सभी हिस्सों में चुनाव जीते हैं, यह भारतीय राजनीति में प्रमुख शक्ति है। पार्टी ने लगातार तीन आम चुनाव जीते हैं और वर्तमान में यह 18 राज्यों में सत्ता में है।

भाजपा की चुनावी सफलताएं कई कारकों के कारण हैं, जिनमें इसकी मजबूत संगठनात्मक संरचना, इसका समर्पित कैडर और इसका परिष्कृत डेटा एनालिटिक्स ऑपरेशन शामिल है। पार्टी को भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के पतन से भी लाभ हुआ है, जो दशकों तक भारतीय राजनीति में प्रमुख शक्ति थी।

अनुदान: भाजपा भारत की सबसे धनी राजनीतिक पार्टियों में से एक है। पार्टी को व्यक्तिगत दानदाताओं, कॉर्पोरेट दानदाताओं और विदेशी दानदाताओं सहित विभिन्न स्रोतों से धन प्राप्त होता है। पार्टी की मजबूत वित्तीय स्थिति उसे बड़े पैमाने पर और सुव्यवस्थित चुनावी अभियान चलाने की अनुमति देती है।

भोपाल में पार्टी की लेखा समिति की बैठक में बीजेपी अध्यक्ष अमित शाह ने एक मुद्दा उठाया- "अब से," वह चारों ओर देखते हुए कहते हैं: "पार्टी के दिन-प्रतिदिन के खर्च चेक दान के माध्यम से पूरे किए जाएंगे।" चारों ओर विनम्र हँसी है। कमरे में मौजूद अधिकांश लोग सोचते हैं कि यह एक मजाक है और पंचलाइन का इंतजार करते हैं। वहां कोई नहीं है। 54 वर्षीय शाह बेहद गंभीर हैं। मुस्कुराहटें उड़ जाती हैं। वह कहते हैं, "नकद में दान लेना बंद करें."

अभियान: भाजपा का चुनावी अभियान अपने जोशपूर्ण और पेशेवर दृष्टिकोण के लिए जाना जाता है। पार्टी के अभियानों का नेतृत्व आमतौर पर अनुभवी अभियान रणनीतिकारों की एक टीम द्वारा किया जाता है। पार्टी विभिन्न प्रकार की अभियान तकनीकों का भी उपयोग करती है, जैसे रैलियां, रोड शो और घर-घर जाकर प्रचार करना। पार्टी के अभियानों को भी अच्छी तरह से वित्त पोषित किया जाता है, जो इसे विभिन्न प्रकार की अभियान सामग्रियों और प्रौद्योगिकियों का उपयोग करने की अनुमति देता है।

उदाहरण: 2019 के आम चुनाव में, भाजपा ने लोकसभा में 303 सीटें जीतकर प्रचंड जीत हासिल की। पार्टी की जीत का श्रेय कई कारकों को दिया गया, जिनमें इसकी मजबूत संगठनात्मक संरचना, इसका समर्पित कैडर और इसका परिष्कृत डेटा एनालिटिक्स ऑपरेशन शामिल है।

भाजपा ने संभावित मतदाताओं की पहचान करने, उन्हें व्यक्तिगत संदेशों के साथ लक्षित करने और चुनाव के दिन मतदान करने के लिए प्रेरित करने के लिए डेटा का उपयोग किया। पार्टी ने अपने विरोधियों के नकारात्मक अभियानों की पहचान करने और उनका मुकाबला करने के लिए भी डेटा का उपयोग किया।2022 के गुजरात राज्य विधानसभा चुनावों में, भाजपा ने मतदाताओं तक पहुंचने और अपने चुनावी अभियान का प्रबंधन करने के लिए अपने मजबूत कैडर का इस्तेमाल किया। पार्टी का कैडर विभिन्न गतिविधियों में शामिल था, जैसे घर-घर जाकर प्रचार करना, रैलियों और बैठकों का आयोजन करना और अभियान सामग्री वितरित करना।

2021 के उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव में, भाजपा ने 403 सदस्यीय विधानसभा में 255 सीटें जीतकर प्रचंड जीत हासिल की। पार्टी की जीत का श्रेय कई कारकों को दिया गया, जिनमें इसकी मजबूत संगठनात्मक संरचना, इसका समर्पित कैडर और इसका परिष्कृत डेटा एनालिटिक्स ऑपरेशन शामिल है। पार्टी ने अपने विरोधियों के नकारात्मक अभियानों की पहचान करने और उनका मुकाबला करने के लिए भी डेटा का उपयोग किया।

2022 के उत्तर प्रदेश राज्य विधानसभा चुनावों में, भाजपा ने बड़े पैमाने पर और सुव्यवस्थित चुनावी अभियान चलाने के लिए अपनी मजबूत वित्तीय स्थिति का उपयोग किया। पार्टी ने विभिन्न प्रकार की प्रचार सामग्री और प्रौद्योगिकियों का उपयोग किया, जैसे रैलियां, रोड शो और घर-घर जाकर प्रचार करना।

"भाजपा की चुनावी मशीनरी देश में सबसे कुशल और सुव्यवस्थित में से एक है। पार्टी के पास समर्पित कार्यकर्ताओं का एक मजबूत कैडर, एक मजबूत प्रौद्योगिकी बुनियादी ढांचा और एक मजबूत वित्तीय स्थिति है। ये कारक भाजपा को चुनावों में महत्वपूर्ण बढ़त दिलाते हैं। ।" - *प्रशांत झा, हाउ द बीजेपी विन्स पुस्तक के लेखक*

"भाजपा की चुनावी मशीनरी एक ताकतवर ताकत है। पार्टी अपने कैडर और संसाधनों को तेजी से और प्रभावी ढंग से जुटाने में सक्षम है। इससे पार्टी को बड़े पैमाने पर और सुव्यवस्थित चुनावी अभियान चलाने की अनुमति मिलती है।" -*अशोक मलिक, राजनीतिक विश्लेषक*
"भाजपा की चुनावी मशीनरी दुनिया में सबसे परिष्कृत में से एक है। पार्टी मतदाताओं तक

पहुंचने और अपने चुनावी अभियानों का प्रबंधन करने के लिए विभिन्न तकनीकों और डेटा विश्लेषण का उपयोग करती है।" *-संदीप रॉय, राजनीतिक विश्लेषक*

"भाजपा की चुनावी मशीन दुनिया में सबसे अच्छी है। यह एक अच्छी मशीन है जो भारत के सभी हिस्सों में चुनाव जीतने में सक्षम है।" -अमित शाह, भाजपा गृह मंत्री

"भाजपा का कैडर पार्टी की चुनावी मशीन की रीढ़ है। कैडर मतदाताओं को संगठित करने और एकजुट करने, अभियान चलाने और चुनाव के दिन वोट दिलाने के लिए जिम्मेदार है।" -नरेंद्र मोदी, भाजपा प्रधानमंत्री

"भाजपा का डेटा एनालिटिक्स ऑपरेशन भारतीय राजनीति में सबसे परिष्कृत में से एक है। पार्टी मतदाता जनसांख्यिकी को समझने, रुझानों की पहचान करने और लक्षित संदेश विकसित करने के लिए डेटा का उपयोग करती है।" -जे.पी.नड्डा, भाजपा अध्यक्ष

भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की चुनावी मशीन को व्यापक रूप से दुनिया में सबसे प्रभावी में से एक माना जाता है, और इसे भाजपा की सफलता में प्रमुख भूमिका निभाने का श्रेय दिया जाता है। भाजपा के पास एक स्पष्ट और संक्षिप्त संदेश है जो मतदाताओं को प्रभावित करता है। पार्टी का संदेश सनातन हिंदू राष्ट्रवाद और आर्थिक विकास पर आधारित है।

भाजपा की चुनावी सफलताओं का एक संक्षिप्त इतिहास: "हमें प्रत्येक भाजपा समर्थक से मिलने की ज़रूरत है, और यह सब 300 दिनों से भी कम समय में किया जाना है," 30 वर्षीय व्यक्ति ने मुंबई की ओर बढ़ रहे साथी कार्यकर्ताओं के एक समूह से कहा। "हम चाहते हैं कि लोग यह याद रखें कि भाजपा ने किसी भी विपक्षी पार्टी के कार्यकर्ता से बहुत पहले उनके दरवाजे खटखटाए थे।"
गायकवाड़ और उनकी टीम अगले साल के राष्ट्रीय चुनाव से पहले पूरे भारत में प्रचार करने वाले 18,000 स्वयंसेवी कार्यकर्ताओं के में से एक है। उनका मिशन जनवरी तक लगभग 35 मिलियन भाजपा समर्थकों, या लगभग 2,000 प्रत्येक से आमने-सामने मिलना है।

भारतीय जनता पार्टी, 180 मिलियन सदस्यों के साथ दुनिया का सबसे बड़ा राजनीतिक दल, दुनिया के सबसे अधिक आबादी वाले देश में सत्ता में तीसरा कार्यकाल सुरक्षित करने के लिए, इतिहास में सबसे बड़े मतदाता संपर्क अभियान पर

दांव लगा रही है। जमीनी स्तर पर लामबंदी अभियान का नेतृत्व कर रहे भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा ने कहा, "इस बार हमें अज्ञात क्षेत्रों में जीत हासिल करनी होगी क्योंकि लगातार तीसरी बार सभी मौजूदा सीटों को बरकरार रखना एक चुनौती होगी।"

नड्डा और छह अन्य वरिष्ठ भाजपा हस्तियों ने परियोजना के पहले से अप्रमाणित विवरणों को रेखांकित किया - जिसे आंतरिक रूप से "बिग आउटरीच" कहा गया - जिसके बारे में उन्होंने कहा कि यह 2014 और 2019 की चुनावी रणनीतियों से एक बदलाव है जो देश भर में बड़े अभियान रैलियों पर अधिक केंद्रित है। .

उत्तराखंड में यूपीईएस स्कूल ऑफ मॉडर्न मीडिया के डीन और "द न्यू बीजेपी" पुस्तक के लेखक नलिन मेहता के अनुसार, यह कोई आसान काम नहीं होगा, या जोखिम से मुक्त नहीं होगा। उन्होंने कहा कि ऑनलाइन अभियान के साथ जमीनी लामबंदी, कुछ तिमाहियों में सत्ता विरोधी भावना को बढ़ावा दे सकती है।

मेहता ने कहा, "प्रमुख राष्ट्रीय पार्टी के रूप में भाजपा की चुनौती मतदाताओं की थकान को प्रबंधित करना और सत्ता में दो कार्यकाल के बाद अपने कार्यकर्ताओं के बीच उत्साह बनाए रखना है।"

"पार्टी का जमीनी स्तर का कैडर-निर्माण बड़े पैमाने पर डिजिटल पदचिह्न के निर्माण के साथ-साथ सोशल मीडिया के औद्योगिक पैमाने के उपयोग के साथ-साथ चलता।

पहला चरण, जो अक्टूबर की शुरुआत में समाप्त होने वाला है, सनातन हिंदू-बहुल आबादी वाले 134 प्राथमिकता वाले निर्वाचन क्षेत्रों को लक्षित किया है, जहां वे 2014 और 2019 में मामूली अंतर से हार गए थे।

नड्डा ने कहा, "इन सीटों पर ऊर्जावान हस्तक्षेप और मौजूदा वोट शेयर के इन्सुलेशन की आवश्यकता है।" उन्होंने कहा कि जनवरी में समाप्त होने वाले दूसरे चरण में कार्यकर्ता उन सभी 303 सीटों का दौरा करेंगे, जिन पर पार्टी ने चार साल पहले जीत हासिल की थी।

"कृपया हमें बताएं, बड़े भाई, हम आपके जीवन को बेहतर बनाने के लिए क्या कर सकते हैं?" गायकवाड़ ने दुकानदार से पूछा और साथ ही उसकी मतदाता सूची में उस व्यक्ति के नाम पर निशान लगा दिया। वह 2014 में मोदी के सत्ता में आने के बाद से शहरी गरीबों के जीवन को बेहतर बनाने के लिए केंद्रीय सरकार द्वारा शुरू किए गए कई सुधारों के बारे में उत्साहपूर्वक बोलते हैं। गायकवाड़ ने एक मंत्र दिया जिसे वह अगले चार घंटों में 20 से अधिक मतदाताओं के सामने दोहराएंगे: "हम जानते हैं कि आप भाजपा के लिए वोट करते हैं और

हम यहां यह समझने के लिए हैं कि 2024 में इस सीट को जीतने के लिए हमें क्या करना चाहिए।"

2024? BJP ON MISSION SOUTH

2024 की बड़ी लड़ाई के लिए विपक्षी दलों के एकजुट होने के बीच, भाजपा ने दक्षिण में एक समझौते की योजना बनाई है। इस रणनीति का एक महत्वपूर्ण हिस्सा दक्षिण भारत में पार्टी की उपस्थिति को मजबूत करना है। बीजेपी ने इस उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए कई कदम उठाए हैं, जिनमें क्षेत्रीय नेताओं को आगे बढ़ाना, स्थानीय मुद्दों पर ध्यान केंद्रित करना और विकासपरक नीतियों को बढ़ावा देना शामिल है।

बीजेपी ने हाल ही में अपने राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक में दक्षिण भारत पर विशेष ध्यान दिया। बैठक में, पार्टी ने तमिलनाडु, केरल, आंध्र प्रदेश और तेलंगाना जैसे राज्यों में अपनी उपस्थिति को मजबूत करने के लिए एक रोडमैप तैयार किया। इस रोडमैप के तहत, बीजेपी क्षेत्रीय नेताओं को आगे बढ़ाने और स्थानीय मुद्दों पर ध्यान केंद्रित करने पर जोर देगी।

क्षेत्रीय नेताओं को आगे बढ़ाना: बीजेपी ने तमिलनाडु में K. AnnamalaiK. Annamalai, केरल में कांग्रेस के पूर्व नेता के. सुरेंद्रन और तेलंगाना में टीआरएस के पूर्व नेता के. चंद्रशेखर राव जैसे क्षेत्रीय नेताओं को पार्टी में शामिल किया है। इन नेताओं को उम्मीद है कि वे पार्टी को दक्षिण भारत में अपनी उपस्थिति को मजबूत करने में मदद करेंगे।

स्थानीय मुद्दों पर ध्यान केंद्रित करना: बीजेपी ने दक्षिण भारत में स्थानीय मुद्दों पर ध्यान केंद्रित करना शुरू कर दिया है। उदाहरण के लिए, पार्टी ने तमिलनाडु में नीलगिरी के जंगलों की रक्षा और केरल में मछुआरों के अधिकारों के लिए अभियान चलाया है।

विकासपरक नीतियों को बढ़ावा देना: बीजेपी ने दक्षिण भारत में विकासपरक नीतियों को बढ़ावा देना शुरू कर दिया है। उदाहरण के लिए, पार्टी ने तमिलनाडु में सड़कों और बिजली की आपूर्ति में सुधार के लिए योजनाएं शुरू की हैं।

बीजेपी का 'मिशन साउथ' 2024 के आम चुनाव में पार्टी की जीत के लिए एक महत्वपूर्ण रणनीति है। दक्षिण भारत में पार्टी की उपस्थिति को मजबूत करने से उसे देश के अन्य हिस्सों में भी अपनी जीत की संभावना बढ़ सकती है। बीजेपी अध्यक्ष जेपी नड्डा ने कहा, "हम दक्षिण भारत में अपनी उपस्थिति को मजबूत करने के लिए प्रतिबद्ध हैं। हम क्षेत्रीय नेताओं को आगे बढ़ा रहे हैं, स्थानीय मुद्दों पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं और विकासपरक नीतियों को बढ़ावा दे रहे हैं।"

तमिलनाडु में बीजेपी के अध्यक्ष एल. मुरुगन ने कहा, "हमने दक्षिण भारत में अपनी उपस्थिति को मजबूत करने के लिए एक रोडमैप तैयार किया है। हम इस रोडमैप को लागू करने के लिए कड़ी मेहनत कर रहे हैं।"

भविष्य की संभावनाएं: बीजेपी के 'मिशन साउथ' के सफल होने की संभावनाएं हैं। पार्टी ने दक्षिण भारत में अपनी उपस्थिति को मजबूत करने के लिए कई कदम उठाए हैं। हालांकि, विपक्षी दलों ने भी दक्षिण भारत में अपनी उपस्थिति को मजबूत करने के लिए प्रयास किए हैं। ऐसे में, यह देखना दिलचस्प होगा कि 2024 के आम चुनाव में बीजेपी का 'मिशन साउथ' कितना सफल होता है।

*कर्णाटक बीजेपी ने सभी सीटें जीतने किया जेडीएस से अलायन्स

2019 लोकसभा चुनावों (Lok Sabha Polls) में भाजपा ने कर्नाटक में 25 सीटों पर जीत दर्ज की थी. जबकि कांग्रेस और जेडीएस ने 1-1 सीट जीती थी। वहीं, नर्दलीय उम्मीदवार के तौर पर सुमलता अंबरीश (Sumalatha Ambareesh) ने मांड्या लोकसभा क्षेत्र में जीत दर्ज की थी। वहीं, आगामी लोकसभा चुनावों के मद्देनजर सांसद सुमलता पहले ही राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (NDA) के साथ गठबंधन करने के अपने फैसले की घोषणा कर चुकी हैं।

कुल मिलाकर, भाजपा ने 2019 के लोकसभा चुनावों में राज्य में जीत हासिल की, अपने दम पर 25 सीटें जीतीं और एक स्वतंत्र उम्मीदवार को जीत में मदद करने के बाद 26वीं सीटें जीतीं। कांग्रेस ने एक सीट जीती।

जेडीएस ने कुल वोट शेयर का 10 प्रतिशत से भी कम हासिल किया, जो इस गठबंधन के महत्व को रेखांकित करता है, खासकर राज्य चुनावों में भी हार के बाद; उसे मतदान के 14 प्रतिशत से भी कम वोट मिले।

यह गठजोड़ भाजपा के लिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि यह भारत द्वारा उत्पन्न की जा रही गति का मुकाबला करना चाहता है, मेगा विपक्षी गुट जिसमें कांग्रेस, तृणमूल कांग्रेस, आम आदमी पार्टी, द्रविड़ मुनेत्र कड़गम, शिव सेना यूबीटी और कई शामिल हैं।

विपक्षी गठबंधन की काट के लिए NDA के पास वर्तमान OBC पी एम मोदी का अलावा OBC पूर्व प्रधानमंत्री देवगौड़ा भी हैं। तेलंगाना में इस

साल के अंत में एक नई सरकार के लिए मतदान होगा और भाजपा प्रत्येकराज्य में स्थानीय पदचिह्न बनाने के लिए उत्सुक है क्योंकि यह अगले साल के मेगा चुनाव से पहले मजबूत हो रही है।
तमिलनाडु में दो धाराओं के बीच विकल्प बनने की कोशिश में बीजेपी दरअसल, बीजेपी अबतक कर्नाटक के अलावा दक्षिण भारत में अपना खास प्रभाव नहीं जमा सकी है। पिछले कुछ वर्षों में पार्टी ने इसके लिए पूरा आधार तैयार किया है। बीजेपी तमिलनाडु की दो धाराओं-डीएमके और एआईएडीएमके के बीच बंटी राजनीति में अपने को एक विकल्प के तौर पर पेश करना चाहती है।

बीजेपी की इस रणनीति में अन्नामलाई की भूमिका फिट बैठती है। वे पार्टी के लिए लंबे रेस के घोड़े हैं और अबतक की राजनीति में उन्होंने पार्टी को मुख्य विपक्ष की भूमिका में ला खड़ा किया है। कम से कम सड़कों पर तो ऐसा ही दिखता है।
AIDMK से अलायन्स ख़त्म होने के बाद बीजेपी तमिलनाडु की छोटी पार्टियों के साथ थर्ड फ्रंट तमिलनाडु में बना सकती है।

*तमिलनाडु पीएम मोदी के लिए भी रहा है खास फोकस
हम थोड़ा और पीछे चलें तो पिछले साल बीजेपी की हैदराबाद में हुई राष्ट्रीय कार्यकारिणी के बाद से पार्टी 'मिशन साउथ' को लेकर ज्यादा आक्रामक नजर आ रही है।

पार्टी की ओर से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का तमिलनाडु के प्रति लगाव उभारने में भी कोई कोर-कसर नहीं छोड़ी जा रही है। तमिलनाडु पर पीएम मोदी का कितना फोकस है, यह पिछले साल महीने भर तक चले काशी तमिल संगम में भी दिख चुका है।

इस साल नए संसद भवन के उद्घाटन के मौके पर सदन के अंदर आसन के पीछे पवित्र 'सेंगोल' की स्थापना में भी नजर आ चुकी है। सबसे ताजा उदाहरण अविश्वास मत पर पीएम मोदी के जवाब में देखा जा सकता है। उनके भाषण में कम से कम 9 बार तमिलनाडु का जिक्र आया था। तमिलनाडु के कन्याकुमारी, रामेश्वरम या कोइम्बटोर से भी पीएम मोदी के चुनाव लड़ने की उठती रही है मांग। बीजेपी ने अपनी पुरानी सहयोगी एआईएडीएम की बैसाखी के बजाए अपने पैरों पर खड़ा होना तय किया है। कर्नाटक में JDS के साथ सम्झौता हो। इस तरह से कर्नाटक, केरल, तेलंगाना और पुडुचेरी (केंद्र शासित प्रदेश) के बाद तमिलनाडु चौथा ऐसा राज्य है, जहाबीजेपी अपनी स्वतंत्र पहचान बनाने में जुट चुकी है। आंध्र प्रदेश में अभी स्थिति स्पष्ट नहीं हुई है।

एक करिश्माई नेता: प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी भारत के सबसे करिश्माई और लोकप्रिय नेताओं में से एक हैं। मोदी को एक मजबूत और निर्णायक नेता के रूप में देखा जाता है जो भारत को

आगे ले जा सकते हैं। उनकी व्यक्तिगत लोकप्रियता ने भाजपा की चुनावी सफलता में प्रमुख भूमिका निभाई है।
"भाजपा की चुनावी मशीन दुनिया में सबसे शक्तिशाली है।" - नीलांजन मुखोपाध्याय, राजनीतिक वैज्ञानिक
"भाजपा के पास एक कैडर-आधारित संगठन है जो भारत में किसी भी अन्य राजनीतिक दल से बेजोड़ है।" एक चुनाव विश्लेषक
"भाजपा मतदाताओं से जुड़ने के लिए प्रौद्योगिकी का उपयोग करने में माहिर है।" -प्रवीण चक्रवर्ती, पत्रकार
"भाजपा के पास एक स्पष्ट और संक्षिप्त संदेश है जो मतदाताओं को प्रभावित करता है।" - आशुतोष वार्ष्णेय, राजनीतिशास्त्री
"नरेंद्र मोदी भारत के सबसे करिश्माई और लोकप्रिय नेताओं में से एक हैं।" - क्रिस्टोफ़ जाफ़रलॉट, राजनीतिक वैज्ञानिक
"हाउ द बीजेपी विन्स" पुस्तक के लेखक प्रशांत झा: "भाजपा की चुनाव मशीनरी भारत में सबसे परिष्कृत और प्रभावी है। यह मजबूत जमीनी स्तर के संगठन और डेटा-संचालित अभियान की नींव पर बनाई गई है।"

भाजपा के पूर्व राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी प्रमुख अरविंद गुप्ता: "भाजपा की चुनाव मशीनरी एक रथ है। यह सुव्यवस्थित, अच्छी तरह से वित्त पोषित और अच्छी तरह से प्रबंधित है। पार्टी अपने अभियानों में प्रौद्योगिकी का बड़े प्रभाव से उपयोग करती है।"

ऑब्जर्वर रिसर्च फाउंडेशन की वरिष्ठ फेलो माया मीरचंदानी: "भाजपा की चुनावी मशीनरी उसकी चुनावी सफलता में एक महत्वपूर्ण कारक है। पार्टी के पास कार्यकर्ताओं का एक मजबूत नेटवर्क, मतदाता जानकारी का एक विशाल डेटाबेस और एक परिष्कृत सोशल मीडिया उपस्थिति है।"

भाजपा की चुनाव मशीनरी स्पष्ट रूप से पार्टी के लिए एक बड़ी संपत्ति है। इसने पार्टी की हालिया चुनावी सफलताओं में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है और भविष्य में भी ऐसा जारी रहने की संभावना है।

केंद्रीय चुनाव समिति भी राष्ट्रीय कार्यकारिणी द्वारा स्थापित की जाती है, और इसमें संसदीय बोर्ड के 11 सदस्य और राष्ट्रीय कार्यकारिणी द्वारा चुने गए 8 अन्य सदस्य शामिल होते हैं। सीईसी की भूमिका पूरे भारत में सभी विधायी और संसदीय चुनावों के लिए उम्मीदवारों का चयन करना है।

भाजपा और पी एम मोदी की हैट्रिक

"मोदी एक करिश्माई नेता हैं जो भावनात्मक स्तर पर जनता से जुड़ने में सक्षम हैं।" -अमिताभ मट्टू, राजनीतिक विश्लेषक

पिछले नौ वर्षों में, भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) और नरेंद्र मोदी ने खुद को भारतीय राजनीति में प्रमुख खिलाड़ी के रूप में स्थापित किया है। 1 पार्टी का निर्विरोध शासन न केवल उसके अपने प्रयासों के कारण है, बल्कि देश के बड़े हिस्से में राजनीतिक विपक्ष की मरणासन्न स्थिति के कारण भी है।

व्यक्तिगत करिश्मा और लोकप्रियता: मोदी भारतीय राजनीति में सबसे लोकप्रिय और करिश्माई नेताओं में से एक हैं। वह अपनी सशक्त वक्तृत्व कला, जनता से जुड़ने की क्षमता और एक निर्णायक एवं मजबूत नेता के रूप में अपनी छवि के लिए जाने जाते हैं।

मजबूत संगठनात्मक कौशल: मोदी संगठन में माहिर हैं और उन्होंने भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) को एक मजबूत चुनावी मशीन बना दिया है। भाजपा अब भारत की सबसे बड़ी राजनीतिक पार्टी है और पूरे देश में इसकी मजबूत उपस्थिति है।

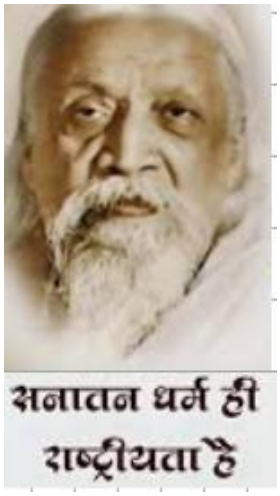

सनातन हिंदू राष्ट्रवादी अपील: मोदी हिंदू मतदाताओं के बीच एक लोकप्रिय नेता हैं, जो भारतीय आबादी का बहुमत हैं। वह हिंदुत्व, एक राजनीतिक विचारधारा जो हिंदू पहचान और संस्कृति पर जोर देती है, को बढ़ावा देकर भारत में हिंदू राष्ट्रवादी भावना का लाभ उठाने में सक्षम रहे हैं।

आर्थिक नीतियां: मोदी सरकार ने मेक इन इंडिया पहल और वस्तु एवं सेवा कर (जीएसटी) जैसी कई आर्थिक नीतियां लागू की हैं, जिनका उद्देश्य आर्थिक वृद्धि और विकास को बढ़ावा देना है। ये नीतियां कुछ मतदाताओं, विशेषकर व्यवसायों और निवेशकों के बीच लोकप्रिय रही हैं। "मोदी के आर्थिक सुधारों में भारत को वैश्विक आर्थिक महाशक्ति में बदलने की क्षमता है।" - अर्थशास्त्री.

मजबूत संचार कौशल: मोदी की सोशल मीडिया का प्रभावी उपयोग और जनता से सीधे संवाद करने की उनकी क्षमता को महत्वपूर्ण ताकत माना गया है। उद्धरण: "मोदी के सोशल मीडिया के उपयोग ने भारत में राजनीतिक संचार को फिर से परिभाषित किया है।"

"मोदी संगठन के मास्टर हैं और उन्होंने बीजेपी को एक मजबूत चुनावी मशीन बना दिया है।" - नीलांजन मुखोपाध्याय, पत्रकार

तीन विपक्षी दलों ने, जिनमें से प्रत्येक एक अलग वैचारिक स्थान का प्रतिनिधित्व करता है, खुद को गहरे संकट की स्थिति में पाया है: कांग्रेस, तथाकथित "मंडल" दल और वामपंथी। जबकि प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी के प्रशासन से पहले इन पार्टियों में वैचारिक और संगठनात्मक क्षरण हुआ था, भाजपा ने उनकी स्पष्ट कमजोरियों का फायदा उठाया, और उन विरासत प्रभावों को कम कर दिया जिनका वे एक बार आनंद ले रहे थे।

जैसे-जैसे राजनीतिक दल 2024 के आम चुनाव की ओर रुख कर रहे हैं, अधिकांश विपक्ष ने खुद को एक ऐसे संकट में पाया है जो भाजपा के प्रभुत्व के वर्तमान युग से बहुत पहले शुरू हुआ था। यदि ये पार्टियाँ अपने ढर्रे में फँसी रहीं, तो भाजपा का एकमात्र गंभीर विरोध क्षेत्रीय-भाषाई पार्टियाँ ही करती रहेंगी, जिससे भाजपा को देश के दक्षिणी और पूर्वी हिस्सों में महत्वपूर्ण क्षेत्र सौंपते हुए राष्ट्रीय स्थान पर आराम से कब्ज़ा करने की अनुमति मिल जाएगी।

भाजपा को 2024 में सत्ता से हटाना मुश्किल होगा। विपक्षी एकता को कभी-कभी इस चुनौती के लिए रामबाण के रूप में प्रस्तुत किया जाता है, लेकिन किसी को याद रखना चाहिए कि भाजपा को 2014 की तुलना में 2019 में कहीं अधिक समेकित विपक्ष का सामना करना पड़ा, और फिर भी वह और भी बड़े बहुमत के साथ उभरी। उदाहरण के लिए, उत्तर प्रदेश और कर्नाटक राज्यों में बड़े विपक्षी गठबंधनों से नतीजों पर कोई बड़ा फर्क नहीं पड़ा।

भारतीय विपक्ष की कमजोरी: फूट: विपक्षी दल क्षेत्रीय और वैचारिक आधार पर बंटे हुए हैं। इससे उनके लिए भाजपा के खिलाफ संयुक्त मोर्चा बनाना मुश्किल है।

"भारत में विपक्षी दल असमंजस की स्थिति में हैं। उनके पास एक मजबूत नेता की कमी है और वे भाजपा के खिलाफ एकजुट मोर्चा बनाने में असमर्थ हैं।" -आशुतोष वार्ष्णेय, राजनीतिशास्त्री

नकारात्मक संदेश: विपक्षी दलों पर अक्सर देश के लिए सकारात्मक दृष्टिकोण पेश करने के बजाय मोदी सरकार के नकारात्मक संदेश और आलोचना पर ध्यान केंद्रित करने का आरोप लगाया गया है। इससे कुछ मतदाता छिटक गये हैं

"विपक्षी दल देश के लिए सकारात्मक दृष्टिकोण पेश करने के बजाय मोदी सरकार के नकारात्मक संदेश और आलोचना पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं।" -प्रशांत किशोर, राजनीतिक रणनीतिकार

मोदी को स्पष्ट चुनौती देने वाले का अभाव

कोझिकोड में आयोजित केरल लिटरेचर फेस्टिवल में बुद्धिजीवियों ने कहा था कि बीजेपी से मुकाबले के लिए एक विश्वसनीय और स्थिर विपक्ष की जरूरत है। यह भी कि राहुल गांधी में यह क्षमता नहीं है कि वह ऐसे विपक्ष का नेतृत्व कर सकें। इस संबंध में उन्होंने आगे कहा कि युवा भारत पांचवीं पीढ़ी का वंशवाद नहीं चाहता। अपोजिशन को लेकर और भी कई लोग समय-समय पर सवाल उठाते रहे हैं। दरअसल, किसी भी जनतांत्रिक व्यवस्था के लिए आदर्श स्थिति यह होती है कि समान क्षमता वाली कम से कम दो पार्टियां वहां मौजूद रहें। एक सत्ता में हो और दूसरी विपक्ष में। पर यहाँ तो 26पार्टियों के गठबंधन पर भी मोदी और बीजेपी के इलेक्शन मशीनरी हावी है।

जनसंघ की धारा समय के साथ मजबूत होती गई और बीजेपी के रूप में वह कांग्रेस के समानांतर खड़ी हो गई। तब गैर-कांग्रेस और गैर-बीजेपी दलों ने तीसरे मोर्चे की अवधारणा पेश की लेकिन उससे जुड़े दल देर तक एकजुट नहीं रह पाए और मौका देखकर वे कभी कांग्रेस तो कभी बीजेपी का दामन थामने लगे।

कांग्रेस की मुश्किल यह है कि उसका अतीत उसके साथ चिपका हुआ है और उस पर एक परिवार का लेबल भी लगा है। इस कारण वह आक्रामक होने के बजाय प्राय: रक्षात्मक ही दिखती है। उसका कोई नया-ताजा नेतृत्व होता तो वह अतीत को परे रख अभी के मुद्दों पर हमलावर हो सकता था। लेकिन ऐसा हो नहीं पा रहा। कांग्रेस का जमीनी ढांचा जर्जर हो चुका है। पार्टी के पास कार्यकर्ता नहीं हैं और नेताओं में जनता के बीच रहकर सघर्ष करने की कोई प्रवृत्ति नहीं है। क्षेत्रीय पार्टियां न तो अपने दायरे से निकलती हैं, न किसी

को उसमें घुसने देना चाहती हैं।
भारत जैसे जीवंत लोकतंत्र में सरकार के स्वस्थ कामकाज के लिए एक मजबूत विपक्ष आवश्यक है। विपक्ष सत्तारूढ़ दल को जवाबदेह ठहराने और यह सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है कि नागरिकों के हितों का अच्छी तरह से प्रतिनिधित्व हो। हालाँकि, हाल के वर्षों में, प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व वाले भारतीय राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (एनडीए) को विपक्ष से स्पष्ट चुनौती की कमी के रूप में एक उल्लेखनीय कमजोरी का सामना करना पड़ा है। यह लेख इस कमजोरी के पीछे के कारणों की पड़ताल करता है और भारत में वर्तमान राजनीतिक परिदृश्य पर प्रकाश डालने के लिए उदाहरण और उद्धरण प्रदान करता है।

भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) और उसके नेता नरेंद्र मोदी एक दशक से अधिक समय से भारतीय राजनीति पर हावी हैं। 2019 के आम चुनाव में, भाजपा ने लोकसभा में 303 सीटें हासिल करके प्रचंड जीत हासिल की। विपक्ष बुरी तरह विभाजित हो गया, कोई भी पार्टी मोदी के लिए स्पष्ट चुनौती के रूप में उभर कर सामने नहीं आई।

“भारतीय गणतंत्र के पहले दशकों में कांग्रेस अनिवार्य रूप से सरकार की पार्टी थी, लेकिन अपने तम्बू को यथासंभव व्यापक रखने के उसके प्रयासों से अनिवार्य रूप से विखंडन हुआ। 1950 और 1960 के दशक में भारत के लगभग सभी राज्यों को चलाने से लेकर आज यह घटकर 28 में से केवल तीन राज्यों में रह गया है, जबकि भाजपा के लिए यह 12 है।"

26 पार्टियों की दो दिवसीय बैठक राष्ट्रीय गठबंधन की घोषणा के साथ समाप्त हुई। वर्तमान में सत्ता में प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व वाले गठबंधन की संक्षिप्त-निर्धारित शैली के बाद, 26 पार्टियों के गठबंधन ने अपना नाम.I.N.D.I.A रखा। इसके बाद "भारत" छा गया जिसे बोलने मात्र से प्राचीन भारत का चित्र इतिहांस और सनातन हिन्दू धर्म की महिमा जो विश्व कल्याण का मार्ग दिखाती है समझ में आ जाती है।लेकिन गठबंधन बचाव मुद्रा में व्याख्या ही करते रह गया गया।

विपक्ष की कमजोरी के कई कारण हैं. विपक्ष कई अलग-अलग पार्टियों में बंटा हुआ है। सबसे बड़ी विपक्षी पार्टी, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (आईएनसी), कई वर्षों से गिरावट में है। अन्य विपक्षी दल, जैसे आम आदमी पार्टी (आप), बहुजन समाज पार्टी (बसपा), और भारतीय

कम्युनिस्ट पार्टी (मार्क्सवादी) (सीपीआई (एम)) भी अपेक्षाकृत कमजोर हैं।

BJD, तेदेपा, आंध्र प्रदेश में सत्तारूढ़ YSRCP भी विपक्षी गठबंधन में शामिल नहीं है।

उदयनिधि स्टालिन के बाद, DMK के ए राजा ने सनातन धर्म को एचआईवी, कुष्ठ रोग जैसा सामाजिक अपमान बता कर I. N. D. I. A गठबंधन की बहुत बड़ी क्षती की है। उदयनिधि स्टालिन के बाद, DMK के ए राजा ने सनातन धर्म को एचआईवी, कुष्ठ रोग जैसा सामाजिक अपमान बता कर I. N. D. I. A गठबंधन की बहुत बड़ी क्षती की है। तमिलनाडु के मंत्री उदयनिधि स्टालिन के हालिया बयान ने सनातन धर्म को लेकर विवाद खड़ा कर दिया है। उन्होंने इसके खात्मे की वकालत करते हुए इसकी तुलना डेंगू और मलेरिया जैसी बीमारियों से की. विरोध का सामना करने के बावजूद, वह अपनी टिप्पणी से पीछे नहीं हटे या माफी नहीं मांगी।

विपक्ष की कमजोरी का एक और कारण यह भी है कि वह भाजपा के खिलाफ एकजुट मोर्चा पेश करने में असमर्थ रहा है। उदाहरण के लिए, 2019 के आम चुनाव में, विपक्षी दल प्रधान मंत्री के लिए एक आम उम्मीदवार पर सहमत होने में विफल रहे। इस विभाजन ने मोदी को विपक्षी उम्मीदवारों को आसानी से हराने की अनुमति दी। 2019 के आम चुनाव में, भाजपा ने लोकसभा में 303 सीटें हासिल करके प्रचंड जीत हासिल की। विपक्ष बुरी तरह विभाजित हो गया, कोई भी पार्टी मोदी के लिए स्पष्ट चुनौती के रूप में उभर कर सामने नहीं आई। 2019 के आम चुनाव में, विपक्षी दलों ने लोकसभा में कुल 261 सीटें जीतीं। यह बीजेपी को मिली 303 सीटों से काफी कम थी.

मोदी को स्पष्ट चुनौती देने वाले की अनुपस्थिति विपक्ष के लिए एक बड़ी कमजोरी रही है। इससे विपक्ष के लिए सरकार को जवाबदेह ठहराना और भारत के लिए एक सुसंगत वैकल्पिक दृष्टिकोण विकसित करना मुश्किल हो गया है।

विपक्षी दल प्रधानमंत्री के लिए एक साझा उम्मीदवार पर सहमत नहीं हो पाए हैं। इस विभाजन ने विपक्ष के लिए 2024 के आम चुनाव में मोदी को गंभीर चुनौती देना मुश्किल बना दिया है।

"विपक्ष असमंजस की स्थिति में है। मोदी को कोई स्पष्ट चुनौती देने वाला नहीं है।" - संजय कुमार, राजनीतिक विश्लेषक

"अगर विपक्षी दलों को बीजेपी को हराना है तो उन्हें एक साथ आने की जरूरत है।" -योगेंद्र यादव, राजनीतिक वैज्ञानिक

"विपक्ष को भारत के लिए एक सुसंगत वैकल्पिक दृष्टिकोण विकसित करने की आवश्यकता है।" -आशुतोष वार्ष्णेय, राजनीतिशास्त्री

विपक्ष की कमजोरी भारतीय लोकतंत्र के लिए एक बड़ी समस्या है। इससे विपक्ष के लिए सरकार को जवाबदेह ठहराना और भारत के लिए एक सुसंगत वैकल्पिक दृष्टिकोण विकसित करना मुश्किल हो गया है। अगर विपक्षी दल 2024 के आम चुनाव में मोदी को चुनौती देना चाहते हैं तो उन्हें एक साथ आने और एक संयुक्त मोर्चा विकसित करने की जरूरत है।

विपक्षी दलों का बिखराव

भारतीय विपक्ष की प्राथमिक कमज़ोरियों में से एक विपक्षी दलों का बिखराव है। एनडीए के विपरीत, जिसका नेतृत्व भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) कर रही है और इसका एक एकजुट गठबंधन है, विपक्षी दल अक्सर क्षेत्रीय और वैचारिक आधार पर विभाजित होते हैं। यह विखंडन उनकी सामूहिक ताकत को कमजोर करता है और सत्तारूढ़ दल के खिलाफ एकजुट मोर्चा पेश करना मुश्किल बना देता है।

2019 के आम चुनावों में खंडित विपक्ष देखा गया, जिसमें कई क्षेत्रीय दल विभिन्न राज्यों में भाजपा के खिलाफ चुनाव लड़ रहे थे। इस विभाजन से भाजपा को लोकसभा में स्पष्ट बहुमत के साथ निर्णायक जीत हासिल करने में मदद मिली।

"विपक्ष की एकजुटता और साझा एजेंडा पेश करने में असमर्थता मोदी सरकार को प्रभावी ढंग से चुनौती देने में एक बड़ी बाधा है।" -राजनैतिक विश्लेषक, राजेश वर्मा

मजबूत नेतृत्व का अभाव

भारतीय विपक्ष की एक और महत्वपूर्ण कमजोरी एक करिश्माई और राष्ट्रीय स्तर पर मान्यता प्राप्त नेता की अनुपस्थिति है जो प्रधान मंत्री मोदी की लोकप्रियता और अपील का मुकाबला कर सके। मोदी ने खुद को एक मजबूत और निर्णायक नेता के रूप में स्थापित किया है, जिसकी प्रतिध्वनि भारतीय मतदाताओं के एक बड़े हिस्से में हुई है। इसके विपरीत, विपक्ष के पास ऐसे नेता का अभाव है जो मतदाताओं को समान पैमाने पर प्रेरित और संगठित कर सके।

2014 और 2019 के चुनावों के दौरान, नरेंद्र मोदी के नेतृत्व और अपील ने भाजपा को बहुमत दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। विपक्ष में किसी तुलनीय नेता के अभाव में एनडीए ने अपना दबदबा कायम रखा.

क ऐसे नेता की ज़रूरत है जो जनता की कल्पना पर कब्जा कर सके और मोदी का एक विश्वसनीय विकल्प प्रदान कर सके। ऐसे नेता के बिना, वे संघर्ष करना जारी रखेंगे।" -राजनीतिक टिप्पणीकार, स्मिता पटेल

वैचारिक मतभेद और गठबंधन की राजनीति

वैचारिक मतभेद और गठबंधन राजनीति की आवश्यकता अक्सर विपक्ष की एकजुट और एकीकृत एजेंडा पेश करने की क्षमता में बाधा डालती है। विपक्षी दल मध्य-वाम से लेकर मध्य-दक्षिण तक हैं, और उनकी अक्सर परस्पर विरोधी नीतियां और प्राथमिकताएं होती हैं। यह वैचारिक विविधता शासन के लिए एक साझा दृष्टिकोण तैयार करना और मतदाताओं के व्यापक स्पेक्ट्रम से जुड़ना चुनौतीपूर्ण बनाती है।

पश्चिम बंगाल, केरल और तमिलनाडु जैसे राज्यों में विपक्षी दलों ने भाजपा को चुनौती देने के लिए गठबंधन बनाया है। हालाँकि, ये गठबंधन अक्सर नाजुक होते हैं, साझेदार पार्टियों के बीच वैचारिक मतभेद आंतरिक संघर्ष का कारण बनते हैं।

"विपक्ष की वैचारिक विविधता ताकत और कमजोरी दोनों हो सकती है। जबकि विविधता व्यापक दृष्टिकोण का प्रतिनिधित्व कर सकती है, यह आंतरिक असहमति और उनके संदेश में सुसंगतता की कमी भी पैदा कर सकती है।" -राजनीतिक वैज्ञानिक, डॉ. अंजलि मिश्रा

विपक्षी दलों का क्षेत्रीय प्रभुत्व

कई विपक्षी दलों के पास मजबूत क्षेत्रीय आधार हैं और वे स्थानीय मुद्दों पर केंद्रित हैं, जो एनडीए के लिए एक राष्ट्रीय विकल्प पेश करने की उनकी क्षमता को सीमित करता है। हालाँकि वे अपने संबंधित राज्यों में अच्छा प्रदर्शन कर सकते हैं, लेकिन वे राष्ट्रीय स्तर पर व्यापक मान्यता और प्रभाव हासिल करने के लिए संघर्ष करते हैं।

पश्चिम बंगाल में तृणमूल कांग्रेस, तमिलनाडु में द्रमुक और महाराष्ट्र में शिवसेना जैसी पार्टियों ने क्षेत्रीय प्रभुत्व स्थापित किया है, लेकिन अखिल भारतीय उपस्थिति का अभाव है।

"क्षेत्रीय दल अक्सर राष्ट्रीय मुद्दों पर राज्य-विशिष्ट चिंताओं को प्राथमिकता देते हैं। इससे उनके क्षेत्रों के बाहर के मतदाताओं में उनकी अपील सीमित हो जाती है और मोदी के राष्ट्रीय एजेंडे को चुनौती देने की उनकी क्षमता में बाधा आती है।" -राजनीतिक विश्लेषक, आलोक सिंह

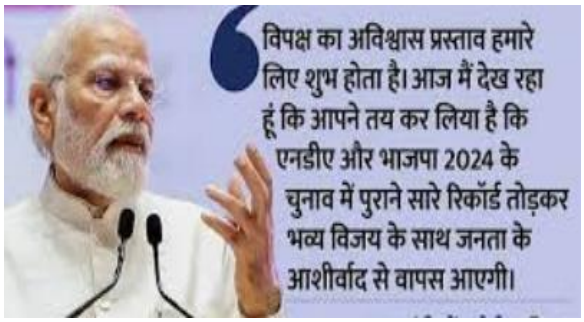

बिखराव, मजबूत नेतृत्व की कमी, वैचारिक मतभेद और क्षेत्रीय प्रभुत्व की विशेषता वाली भारतीय विपक्ष की कमजोरी देश के लोकतांत्रिक परिदृश्य में एक महत्वपूर्ण चुनौती है। मोदी के नेतृत्व वाली एनडीए सरकार को प्रभावी ढंग से चुनौती देने के लिए, विपक्षी दलों को इन कमजोरियों को दूर करना होगा और देश के भविष्य के लिए स्पष्ट दृष्टिकोण के साथ एकजुट मोर्चा पेश करना होगा। इन कमियों को दूर करके ही भारतीय विपक्ष आगामी चुनावों में प्रधान मंत्री मोदी और उनकी पार्टी को एक विश्वसनीय और प्रतिस्पर्धी विकल्प प्रदान करने की उम्मीद कर सकता है।

विपक्ष की कमजोरी एक जटिल मुद्दा है जिसका कोई आसान समाधान नहीं है। हालाँकि, कुछ चीजें हैं जो विपक्षी दल अपनी स्थिति मजबूत करने के लिए कर सकते हैं।

सबसे पहले, विपक्षी दलों को एक साथ आकर एक संयुक्त मोर्चा बनाने की जरूरत है। इससे उन्हें अपने संसाधनों को एकत्रित करने और भाजपा के लिए अधिक विश्वसनीय चुनौती पेश करने की अनुमति मिलेगी।

दूसरा, विपक्षी दलों को भारत के लिए एक सुसंगत वैकल्पिक दृष्टिकोण विकसित करने की आवश्यकता है। यह दृष्टिकोण लोगों की जरूरतों पर आधारित होना चाहिए और स्पष्ट और संक्षिप्त रूप से व्यक्त किया जाना चाहिए।

तीसरा, विपक्षी दलों को मजबूत जमीनी स्तर के संगठन बनाने पर ध्यान देने की जरूरत है। इससे उन्हें मतदाताओं से जुड़ने और उनकी नीतियों के लिए समर्थन बनाने में मदद मिलेगी।

अंततः, विपक्षी दलों को धैर्यवान और दृढ़ रहने की जरूरत है। बीजेपी को हराने में थोड़ा वक्त लग सकता है, लेकिन लक्ष्य पर फोकस रहना जरूरी है'

विपक्ष कैसे अपनी स्थिति मजबूत करने की कोशिश कर रहा है इसके उदाहरण

मई 2022 में, कांग्रेस, आप और टीएमसी ने महाराष्ट्र में चुनाव पूर्व गठबंधन बनाया। यह गठबंधन विपक्षी दलों द्वारा एक साथ आकर भाजपा के खिलाफ संयुक्त मोर्चा बनाने का पहला बड़ा प्रयास है।

जून 2022 में, कांग्रेस ने "भारत जोड़ो यात्रा" नामक एक नया अभियान शुरू किया। इस अभियान का उद्देश्य मतदाताओं से जुड़ना और पार्टी की नीतियों के लिए समर्थन जुटाना है।

जुलाई 2022 में, AAP ने नए राज्यों में अपने संचालन का विस्तार करने की योजना की घोषणा की। यह विस्तार एक मजबूत जमीनी स्तर का संगठन बनाने के पार्टी के प्रयासों का हिस्सा है।

यह कहना जल्दबाजी होगी कि ये प्रयास सफल होंगे या नहीं। हालाँकि, उनका सुझाव है कि विपक्षी दल अपनी कमजोरियों से अवगत हैं और उन्हें दूर करने के लिए कदम उठा रहे हैं।

यह चुनौती है कि गठबंधन में अन्य दलों को अपने वोट हस्तांतरित करने में सहयोगी किस तरह की स्थिति में हैं। पश्चिम बंगाल, पंजाब और केरल जैसे कुछ राज्यों में, एक आम उम्मीदवार को वोट हस्तांतरित करने के लिए केवल एक औपचारिक गठबंधन से कहीं अधिक की आवश्यकता होगी। तमिलनाडु जैसे राज्यों में ऐसी समस्याएँ कम गंभीर हैं जहाँ द्रमुक जैसी पार्टी का कांग्रेस या वामपंथी दलों से कोई गंभीर प्रतिस्पर्धा नहीं है। लेकिन गठबंधन सहयोगियों द्वारा शासित 11 राज्यों में से कई राज्यों में, वोट हस्तांतरणीयता के लिए मुख्य मतदाताओं को प्रभावित करने के लिए कहीं अधिक प्रयास करना होगा।

सहयोगी दलों के कार्यकर्ताओं के बीच समन्वय महत्वपूर्ण है। यह मजबूत कैडर वाली पार्टियों के लिए अधिक महत्वपूर्ण है जो उन पार्टियों के खिलाफ अभियान चला रहे हैं जिन्हें वे अब सहयोगी के रूप में पाते हैं। कैडर को सहयोगियों के लिए समान उत्साह के साथ काम करने के लिए मनाना, या कम से कम उनका विरोध करने से बचना, एक कठिन काम होगा। पिछले लोकसभा चुनाव 2019 में, उत्तर प्रदेश में ऐसी समस्याएं स्पष्ट थीं जब समाजवादी पार्टी और बहुजन समाज पार्टी के कार्यकर्ताओं को अपने दोनों दलों के गठबंधन को जमीन पर एक समन्वित अभियान में तब्दील करना मुश्किल हो गया था।

सर्वे में मोदी 2024 में पुनः प्रधानमंत्री

इसे 2024 में लोकसभा चुनाव से पहले अंतर्निहित भावनाओं के प्रतिनिधित्व के रूप में देखा जा सकता है, प्यू रेटिंग्स से पता चला है कि 10 में से आठ भारतीय नेता के रूप में पीएम नरेंद्र मोदी के पक्ष में हैं। प्यू रिसर्च सेंटर के एक सर्वेक्षण से पता चलता है कि 55 प्रतिशत भारतीयों का पीएम नरेंद्र मोदी के प्रति 'बहुत अनुकूल' दृष्टिकोण है।

' मोदी और अन्य राष्ट्रीय नेताओं के बारे में भारतीयों के विचार' शीर्षक वाली प्यू रिसर्च रिपोर्ट में कहा गया है , "पांचवें भारतीयों की मोदी के बारे में नकारात्मक राय है।" रिपोर्ट 29 अगस्त

को प्रकाशित हुई थी। यह सर्वेक्षण 25 मार्च से 11 मई के बीच आयोजित किया गया था, जो मोदी उपनाम से जुड़े मानहानि मामले के सिलसिले में 27 मार्च को राहुल गांधी को एमपी के कार्यालय से हटाए जाने से ठीक पहले शुरू हुआ था।

लगभग दस में से छह भारतीय भारतीय राष्ट्रीय विपक्षी नेता राहुल गांधी को भी देखते हैंकांग्रेस(आईएनसी) एक सकारात्मक रोशनी में। इसके विपरीत, 34% का कांग्रेस राजनेता के प्रति प्रतिकूल दृष्टिकोण है," रिपोर्ट में कहा गया है।

रिपोर्ट के निष्कर्षों को आगामी के आलोक में देखा जा सकता हैLok Sabha2024 में चुनाव। रिपोर्ट में कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे और अधीर रंजन चौधरी जैसे अन्य नेताओं पर भी भारतीयों की राय मांगी गई। रिपोर्ट में कहा गया है, "खड़गे को चौधरी की तुलना में कुछ हद तक अधिक अनुकूल देखा जाता है: 46% उनके बारे में सकारात्मक राय रखते हैं, जबकि 42% लोग चौधरी के बारे में ऐसा ही कहते हैं। दस में से तीन या उससे अधिक लोग प्रत्येक राजनेता के प्रति प्रतिकूल दृष्टिकोण रखते हैं।"

भारतीय-अमेरिकी अर्थशास्त्री अरविंद पनगढ़िया और कोलंबिया विश्वविद्यालय में भारतीय राजनीतिक अर्थव्यवस्था के प्रोफेसर जगदीश भगवती ने 2024 में प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी की तीसरी पारी की जीत की भविष्यवाणी की है। उनकी भविष्यवाणी विभिन्न पर आधारित है उनकी सरकार द्वारा उठाए गए कल्याणकारी कदम, जैसे महिलाओं के लिए शौचालय का प्रावधान, बैंक खाते खोलना और कमजोर वर्गों के लिए पानी के कनेक्शन 2014 से मोदी सरकार द्वारा प्रदान किए गए।

अरविंद पनगढ़िया की राय में, नरेंद्र मोदी को सत्ता विरोधी लहर का सामना करने की संभावना नहीं है। बल्कि, उनके अनुसार 2024 का चुनाव वास्तव में मोदी के पक्ष में सत्ता समर्थक चुनाव बन सकता है।

पनगढ़िया के अनुसार मोदी सरकार के पक्ष में कई कारण जो जो उन्हें 2024 में सत्ता में लाएंगे:

1. मोदी सरकार द्वारा शुरू की गई स्वच्छ भारत योजना: अब तक 600,000 से अधिक सामुदायिक शौचालयों के साथ-साथ घरों में 6.281 मिलियन शौचालयों का निर्माण किया गया है, और लगभग 4,355 शहरों को खुले में शौच से मुक्त घोषित किया गया है।
2. जन धन योजना के तहत बचत बैंक खाते खोलना: गरीबों के खाते, और भ्रष्टाचार कम करना; जन धन योजना के तहत लगभग 480 मिलियन बैंक खाते खोले गए हैं।
3. नल से जल योजना है जिसका उद्देश्य 2024 तक हर घर में पीने योग्य पानी का कनेक्शन प्रदान करना है।

इन योजनाओं से सीधे तौर पर उन महिलाओं को लाभ मिलता है जो तेजी से मतदान करने के लिए बाहर आ रही हैं, और यह भी निर्धारित कर रही हैं कि उनके परिवार कैसे मतदान करते हैं।

2021 में अपने स्वतंत्रता दिवस भाषण में, प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी ने छह प्रमुख पहलों को शामिल किया था:

1. मुफ्त चिकित्सा बीमा की पेशकश करने वाली आयुष्मान भारत योजना;
2. उज्ज्वला योजना मुफ्त एलपीजी कनेक्शन की पेशकश;
3. Twin life insurance schemes, PM Suraksha Bima Yojana (PMSBY) & the PM Jeevan Jyoti Bima Yojana backed by the Modi government;
4. अटल पेंशन योजना;
5. पीएम आवास योजना; और,
6. पीने के पानी के लिए हर घर जल योजना.

इनमें से आयुष्मान भारत और हर घर जल ने अब तक पीएम मोदी के दूसरे कार्यकाल के दौरान जमीन पर कुछ प्रभाव दिखाया है, जो पर्यवेक्षकों के अनुसार, 2024 के लोकसभा चुनाव में दिखाई देने की संभावना है।

बाहरी मोर्चे पर मोदी सरकार की उपलब्धियां:

1. दक्षिण एशिया और दक्षिण-पूर्व एशिया में निकटतम पड़ोसियों और जापान के प्रति एक्ट ईस्ट पॉलिसी और नेबरहुड फर्स्ट पॉलिसी;

2. चीनी मंसूबों का मुकाबला करने के लिए हिंद महासागर क्षेत्र में भारत के समुद्री पड़ोसियों तक पहुंच;

3. पश्चिमी शक्तियों के सामने झुके बिना एक स्वतंत्र विदेश नीति का पालन करते हुए, प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी ने दुनिया को दिखाया है कि भारत एक विश्व शक्ति के रूप में उभरा है, जिसे दुनिया ने व्यापक रूप से स्वीकार किया है।

नरेंद्र मोदी ने घरेलू और बाहरी दोनों मोर्चों पर प्रभावशाली ढंग से अपनी क्षमता साबित की है, और इस प्रक्रिया में अंतरराष्ट्रीय स्तर पर देश का कद बढ़ाया है। दरअसल, आज की तारीख में विपक्ष के पास मोदी के कद का कोई नेता नहीं है, जो मोदी की लोकप्रियता और राजनीति कौशल को चुनौती दे सकेयह देश के हित में है कि अधूरे काम को पूरा करने के लिए मोदी को 2024 में एक और कार्यकाल मिले। पार्टी सूत्रों का हवाला देते हुए, कुछ मीडिया रिपोर्टों में कहा गया है कि एक साल पहले मोदी और शाह ने 144 लोकसभा निर्वाचन क्षेत्रों की पहचान की, जिनका

प्रतिनिधित्व अब विपक्षी सदस्य करते हैं, और 40 केंद्रीय मंत्रियों को उन्हें परिश्रमपूर्वक विकसित करने का काम सौंपा गया है।

भाजपा ने पहले भी कम से कम दो इसी तरह के आउटरीच कार्यक्रम आयोजित किए थे, भले ही छोटे पैमाने पर, लेकिन काफी सफलता मिली थी।

प्रमुख ब्रोकरेज हाउस 'जेफ़रीज़' की एक रिपोर्ट के अनुसार, एनडीए को चुनाव में 251-300 सीटें जीतने की संभावना है, जबकि अभी लगभग 330 सीटें हैं, क्योंकि हालिया विपक्षी एकता का 'सीमित प्रभाव' होगा।

'इंडिया पॉलिटिक्स- द इलेक्शन प्लेबुक' शीर्षक वाली रिपोर्ट में सत्ता विरोधी लहर और छोटे वोट शेयर स्विंग जैसे प्रमुख जोखिम कारकों को भी सूचीबद्ध किया गया है, जो नतीजों और 2004 के चुनाव पर बड़ा प्रभाव डाल रहे हैं।

चुनौतियों को चुनौती देना पी एम नरेंद्र मोदी का है स्वभाव। है कोई विपक्ष में जो दे सकता है मोदी को चुनौती ? गुजरात में हैट्रिक, दो लोकसभा में लगातार जीतके बाद लगाने को तैयार हैं हैट्रिक। सनातन हिंदू हृदय सम्राट से लेकर विकास पुरुष का सफर तय करने वाले नरेंद्र मोदी अपने राजनीतिक जीवन में कभी चुनाव नहीं हारे।

क्यों अपराजेय हैं नरेंद्र मोदी ? भारत के 14वें प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी ने खुद को भारतीय राजनीति में एक प्रमुख और प्रभावशाली व्यक्ति के रूप में स्थापित किया है। सत्ता में उनका उदय और एक मजबूत राजनीतिक स्थिति बनाए रखने की उनकी क्षमता ने कई लोगों को आश्चर्यचकित कर दिया है कि ऐसा क्या है जो उन्हें अपराजेय बनाता है।

मोदी विपक्ष की कमजोरियों को भी भुनाने में सफल रहे हैं। मुख्य विपक्षी दल भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस अव्यवस्थित है। इसे कोई मजबूत नेता नहीं मिल पाया है और यह आंतरिक विभाजन से त्रस्त है।

अंततः, मोदी को अनुकूल आर्थिक माहौल से लाभ हुआ है। मोदी की देखरेख में भारत की अर्थव्यवस्था तेजी से बढ़ी है और इससे उनकी लोकप्रियता को बढ़ाने में मदद मिली है।

मोदी दुश्मनों का भी सोचते हैं भला। ठीक इसके विपरीत विपक्ष के एक कोने से "मोदी मरजा मोदी मरजा" के नारे लगते हैं। प्रत्युत्तर में सहजभाव से मोदी कहते हैं जनता कहती है "मोदी मत जा मोदी मत जा"।

तेलंगाना में पीएम मोदी क्यों बोले- **मैं रोज 2-3 किलो गाली खाता हूं**, मेरा शरीर गालियों को पोषण में बदल देता है। पीएम मोदी ने उनको दी गई गालियां गिनाते हुए कहा, अब तक 91 बार कांग्रेस के नेता उनको गालियां दे चुके हैं। पीएम ने कर्नाटक चुनाव में हाल ही में हुई एक रैली में कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे के बयान पर अपना पलटवार किया था। दरअसल खरगे ने कर्नाटक के कलबुर्गी जिले में एक चुनावी रैली को संबोधित करते हुए कहा था, मोदी जहरीले सांप की तरह हैं। आप इसे जहर समझें या न समझें लेकिन अगर आप इसे चखेंगे तो मर जाएंगे।

विपक्षी I.N.D.I.A. के सामने यही सवाल खड़ा है कि नरेंद्र मोदी को चुनौती देने वाला नेता कौन होगा ? I.N.D.I.A. के सामने नेता घोषित करने की दोहरी चुनौती है। अगर चुनाव से पहले I.N.D.I.A. का नेता चुन लिया गया, तो उसकी तुलना नरेंद्र मोदी से होगी। अगर नहीं चुना गया तो विपक्ष बिखरा ही दिखाई देगा।

7 अक्टूबर 2001 में जब पहली बार नरेंद्र मोदी पहली बार मुख्यमंत्री बने तब गुजरात भूकंप के झटकों से सहमा हुआ था। केशुभाई पटेल के इस्तीफे के बाद बीजेपी में भी खलबली मची थी। सत्ता संभाले 6 महीने ही हुए थे कि 27 फरवरी को गोधरा कांड हुआ और 28 फरवरी 2002 से गुजरात दंगों की आंच में झुलस गया। 2002 में विधानसभा चुनाव होने वाला था। नरेंद्र मोदी इस अग्निपरीक्षा में सफल हुए। प्रशासनिक मोर्चे पर कमान संभाली। राजनीतिक दबाव के बावजूद चुनाव का नेतृत्व किया और बीजेपी को प्रचंड जीत दिलाई। इसके बाद से ही नरेंद्र मोदी राजनीतिक तौर से शक्तिशाली होते गए। इसके बाद 2007 और 2012 में बीजेपी को गुजरात में प्रचंड जीत मिली । दो विधानसभा चुनाव जीतने के बाद ब्रांड मोदी देश में पॉपुलर हो गया। नरेंद्र मोदी के राजनीतिक जीवन में खास यह रहा कि सीएम और पीएम होते हुए वह हमेशा विपक्ष के सीधे निशाने पर रहे।

अभी तक ब्रांड मोदी का तोड़ नहीं ढूंढ पाया वि पक्ष: करप्शन

पर नहीं घेर पाया विपक्ष, बेदाग छवि से मिली मजबूती: पी एम मोदी केंद्रीय जांच ब्यूरो की हीरक जयंती पर आयोजित एक कार्यक्रम में बोल रहे थे और उन्होंने जिन अधिकारियों को संबोधित कर रहे थे उनसे भ्रष्ट राजनेताओं को पकड़ने से न डरने का आग्रह किया। उन्होंने कहा कि भ्रष्टाचार कोई सामान्य अपराध नहीं है, यह विकास की राह में बाधक है। "भ्रष्टाचार भाई-भतीजावाद और वंशवादी व्यवस्था को बढ़ावा देता है जो देश की ताकत को नष्ट कर देता है और विकास को गंभीर रूप से बाधित करता है।"

24X7 इलेक्शन मोड में बीजेपी, मोदी का तूफानी प्रचार

आलोचना की परवाह नहीं, बड़े और चौंकाने वाले फैसले लेते हैं मोदी

यहां कुछ विशिष्ट उदाहरण और उद्धरण दिए गए हैं जो बताते हैं कि मोदी इतने अपराजेय क्यों हैं:

करिश्मा और मतदाताओं से जुड़ने की क्षमता: शक्तिशाली भाषणों और करिश्माई उपस्थिति के माध्यम से जनता से जुड़ने की मोदी की क्षमता। "मैं भले ही एक छोटा आदमी हूं, लेकिन मेरे पास एक बड़ा दृष्टिकोण है।" - नरेंद्र मोदी

"मोदी एक करिश्माई नेता हैं जिनका मतदाताओं के साथ मजबूत व्यक्तिगत संबंध है। वह उनकी भावनाओं और आकांक्षाओं को समझने में सक्षम हैं और उन्हें एक मजबूत और निर्णायक नेता के रूप में देखा जाता है।" - एलिसा आयर्स, भारतीय विद्वान और जॉर्ज वाशिंगटन विश्वविद्यालय में डीन

"मोदी एक मास्टर कम्युनिकेटर हैं। वह व्यक्तिगत स्तर पर मतदाताओं से जुड़ने में सक्षम हैं, और वह उन्हें ऐसा महसूस कराते हैं कि वह उनकी समस्याओं और चिंताओं को समझते हैं।" - मिलन वैष्णव, कार्नेगी एंडोमेंट फॉर इंटरनेशनल पीस के वरिष्ठ फेलो

सशक्त सनातन हिंदुत्व विचारधारा: "मोदी की हिंदुत्व विचारधारा ने कई हिंदुओं को आकर्षित किया है, जिन्हें लगता है कि भारत हाल के वर्षों में बहुत अधिक धर्मनिरपेक्ष हो गया है।" - एशले टेलिस, कार्नेगी एंडोमेंट फॉर इंटरनेशनल पीस के वरिष्ठ साथी

"मोदी खुद को हिंदू हितों के चैंपियन के रूप में सफलतापूर्वक स्थापित करने में सक्षम हैं।" - क्रिस्टोफ़ जाफ़रलॉट, साइंसेज पीओ में भारतीय राजनीति और समाजशास्त्र के प्रोफेसर

मजबूत राष्ट्रीय सुरक्षा रुख: आतंकवादी शिविरों के खिलाफ सर्जिकल स्ट्राइक सहित राष्ट्रीय सुरक्षा मुद्दों से निपटना। "प्रत्येक भारतीय को हमारे सशस्त्र बलों की वीरता पर गर्व होगा।" - नरेंद्र मोदी

जमीनी स्तर की राजनीतिक रणनीति: भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के माध्यम से एक मजबूत जमीनी स्तर का नेटवर्क बनाना। "हमारी पार्टी सिर्फ एक राजनीतिक पार्टी नहीं है; यह समाज की भलाई के लिए एक आंदोलन है।" - नरेंद्र मोदी

विदेश नीति की सफलताएँ: "भारत की विदेश नीति 'वसुधैव कुटुंबकम' के सिद्धांत पर आधारित है - दुनिया एक परिवार है।" - नरेंद्र मोदी

अनुकूल आर्थिक माहौल: आर्थिक विकास को बढ़ावा देने के लिए "मेक इन इंडिया" और "डिजिटल इंडिया" जैसी आर्थिक नीतियों का कार्यान्वयन। "विकसित और समृद्ध भारत का हमारा सपना तब साकार होगा जब गाँव हमारे राष्ट्र की ताकत बनेंगे।" - नरेंद्र मोदी

विदेश नीति की सफलताएँ: "भारत की विदेश नीति 'वसुधैव कुटुंबकम' के सिद्धांत पर आधारित है - दुनिया एक परिवार है।" - नरेंद्र मोदी

सोशल मीडिया पर लोकप्रियता: युवाओं से जुड़ने और अपनी नीतियों के बारे में बताने के लिए सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म का व्यापक उपयोग। "मैं प्रौद्योगिकी की शक्ति और हमारे देश को बदलने की इसकी क्षमता में दृढ़ विश्वास रखता हूं।" नरेंद्र मोदी

संकट स्थितियों से निपटना: COVID-19 महामारी के दौरान नेतृत्व और टीकों का वितरण। "कोविड-19 के खिलाफ भारत की लड़ाई हमारी सामूहिक ताकत और लचीलेपन का एक उदाहरण है।" नरेंद्र मोदी

सामूहिक अपील और राजनीतिक आधार: देश भर में विविध प्रकार के मतदाताओं को आकर्षित करने की मोदी की क्षमता। "मैं 1.3 अरब भारतीयों की सेवा करने के लिए यहां हूं, और मैं उनके जीवन को बेहतर बनाने के लिए अथक प्रयास करूंगा।"

"मोदी की देखरेख में भारत की अर्थव्यवस्था तेजी से बढ़ी है और इससे उनकी लोकप्रियता को बढ़ाने में मदद मिली है।" - विश्व बैंक

"मोदी भारत की आर्थिक वृद्धि का श्रेय लेने में सक्षम हैं, भले ही यह पूरी तरह से उनकी नीतियों के कारण नहीं है।" -अरविंद सुब्रमण्यन, भारत सरकार के पूर्व मुख्य आर्थिक सलाहकार

कमजोर विपक्ष: "मुख्य विपक्षी दल भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस अव्यवस्थित है। इसे कोई मजबूत नेता नहीं मिल पाया है और यह आंतरिक विभाजन से ग्रस्त है।" - माइकल कुगेलमैन, विल्सन सेंटर में एशिया कार्यक्रम के उप निदेशक

"विपक्षी दल मोदी के खिलाफ एकजुट होने में असमर्थ रहे हैं और इससे अगले चुनाव में उन्हें हराने की उनकी संभावनाएं कमजोर हो गई हैं।" - प्रताप भानु मेहता, राजनीतिक वैज्ञानिक और स्तंभकार

कुल मिलाकर, ऐसे कई कारण हैं जिनकी वजह से नरेंद्र मोदी इतने अपराजेय हैं। वह एक मजबूत हिंदुत्व विचारधारा वाले करिश्माई नेता हैं। कमज़ोर विपक्ष और अनुकूल आर्थिक माहौल से उन्हें फ़ायदा हुआ है. परिणामस्वरूप, वह लगातार दो आम चुनावों में भारी जीत हासिल करने में सफल रहे।

निष्कर्ष: मोदी की व्यक्तिगत लोकप्रियता उनके आलोचकों के बीच भी ऊंची बनी हुई है।

भाजपा की देशभर में मजबूत संगठनात्मक उपस्थिति है।

भाजपा को विपक्षी दलों पर स्पष्ट लाभ है, जो विभाजित हैं और उनके पास एक मजबूत नेता का अभाव है।

भाजपा ने प्रधानमंत्री जन धन योजना और उज्ज्वला योजना जैसी कई लोकप्रिय कल्याणकारी योजनाएं लागू की हैं।

भाजपा ने आतंकवाद और सीमा पार घुसपैठ जैसे राष्ट्रीय सुरक्षा के मुद्दों पर सख्त रुख अपनाया है।

हालाँकि, यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि 2024 के चुनाव अभी भी 6-7 माह दूर हैं, और उस समय में बहुत कुछ हो सकता है। मोदी के लिए तीसरा कार्यकाल सुनिश्चित करने के

लिए भाजपा को अपनी गति बनाए रखने और देश के सामने आने वाली चुनौतियों का समाधान करने की आवश्यकता होगी।

अतिरिक्त कारक जो 2024 के चुनावों को प्रभावित कर सकते हैं:

अर्थव्यवस्था की स्थिति: अगर 2024 में अर्थव्यवस्था अच्छा प्रदर्शन करती है, तो यह भाजपा के लिए एक बड़ा बढ़ावा होगा।

विपक्षी दलों का प्रदर्शन: यदि विपक्षी दल एकजुट होकर मोदी के सामने एक विश्वसनीय विकल्प पेश करने में सक्षम हैं, तो इससे चुनाव और अधिक प्रतिस्पर्धी हो सकता है।

अप्रत्याशित घटनाएँ: प्रमुख अप्रत्याशित घटनाएँ, जैसे प्राकृतिक आपदा या आतंकवादी हमला, भी चुनाव के परिणाम पर प्रभाव डाल सकती हैं।

युक्रेन के बाद इजराइल युद्ध की ओर...

"युक्रेन के बाद अब इसराइल युद्ध की ओर, वैश्विक मित्र भारत और उसके प्रधान मंत्री मोदी के लिए अच्छी खबर नहीं"

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 2018 में लंदन हॉल में फरवरी 2018 में रामल्ला की यात्रा का जिक्र करते हुए कहा था कि, "हां, मैं इज़राइल जाऊंगा और मैं फिलिस्तीन भी जाऊंगा"। "मैं आगे सऊदी अरब के साथ सहयोग करूंगा और भारत की ऊर्जा जरूरतों के लिए मैं ईरान के साथ भी जुड़ूंगा।

बाइडन ने कहा कि उन्हें विश्वास है कि हमास द्वारा इजराइल पर आतंकवादी हमला करने का एक कारण हाल में नयी दिल्ली में जी20 शिखर सम्मेलन के दौरान महत्वाकांक्षी भारत-पश्चिम एशिया-यूरोप आर्थिक गलियारे पर की गई हालिया घोषणा थी, जो पूरे क्षेत्र को रेलमार्ग के नेटवर्क से जोड़ने वाला है।

यूक्रेन-रूस गतिरोध के बाद अब इजराइल-गाजा संघर्ष किसी के हित में नहीं है।

यूक्रेन के जो शरणार्थी रूस और यूक्रेन की जंग के कारण यूक्रेन छोड़कर शांति से जीने के लिए इजराइल आए थे, उनकी बदकिस्मती यह रही कि उन्हें यहां भी युद्ध के माहौल में जीना पड़ रहा है। फरवरी 2022 से अब तक 45 हजार से ज्यादा यूक्रेनी नागरिकों ने इजराइल में शरण ली है।

वैश्विक भू-राजनीति के निरंतर बदलते परिदृश्य में, अंतर्राष्ट्रीय संघर्षों का प्रभाव राष्ट्रों पर पड़ता है। जिस तरह दुनिया अभी भी यूक्रेन संकट के प्रभावों से जूझ रही थी, इज़राइल का नवीनतम संघर्ष अंतरराष्ट्रीय संबंधों में जटिलता की एक और परत जोड़ता है। भारत के लंबे समय से संबंध सभी सम्बंधित देशों के साथ हैं। ये घटनाक्रम एक महत्वपूर्ण चुनौती पेश करते हैं, और प्रधान मंत्री मोदी खुद को एक भू-राजनीतिक तूफान के केंद्र में पाते हैं।

"यूक्रेन का नाटो में शामिल होने की जिद और रूस को अपनी सुरक्षा का डर यानी दुनिया में विश्वास की कमी का ख़तरा" यह मुद्दा भू-राजनीतिक रूप से संवेदनशील है।

नाटो में शामिल होने यूक्रेन का आग्रह: नाटो में शामिल होने की यूक्रेन की इच्छा कई प्रमुख कारकों में निहित है:राष्ट्रीय सुरक्षा: यूक्रेन नाटो सदस्यता को अपनी राष्ट्रीय सुरक्षा बढ़ाने और संभावित रूसी आक्रामकता से खुद को बचाने के एक तरीके के रूप में देखता है, खासकर 2014 में रूस द्वारा क्रीमिया पर कब्ज़ा करने और पूर्वी यूक्रेन में चल रहे संघर्ष के मद्देनजर।

उदाहरण: पूर्व यूक्रेनी राष्ट्रपति पेट्रो पोरोशेंको ने इस बिंदु पर जोर देते हुए कहा, "नाटो हमारी स्वतंत्रता और संप्रभुता की रक्षा के लिए एकमात्र विश्वसनीय तंत्र है।"मी एकीकरण: नाटो सदस्यता को अक्सर पश्चिमी राजनीतिक, आर्थिक और सुरक्षा संरचनाओं के साथ एकीकरण के साधन के रूप में देखा जाता है, जिसे कई यूक्रेनियन अपनी लोकतांत्रिक आकांक्षाओं के साथ जोड़कर देखते हैं।

उदाहरण: यूक्रेनी राष्ट्रपति वलोडिमिर ज़ेलेंस्की ने कहा, "हमारा मानना है कि नाटो में शामिल होने से हम विकसित देशों के मानकों के करीब आएंगे, हमारी सुरक्षा बढ़ेगी और आर्थिक विकास के अवसर पैदा होंगे।"

रूस की असुरक्षा का डर: यूक्रेन की नाटो आकांक्षाओं के बारे में रूस की चिंताएँ समान रूप से महत्वपूर्ण हैं और सुरक्षा खतरों की उसकी धारणा पर आधारित हैं:

रूस नाटो के विस्तार को अपनी सुरक्षा के लिए ख़तरे के रूप में देखता है। रूस के नेताओं का मानना है कि नाटो एक घेरने वाला गठबंधन है जो रूस को नियंत्रित करना चाहता है और पूर्वी यूरोप में उसके प्रभाव को कम करना चाहता है। रूस विशेष रूप से यूक्रेन के नाटो में शामिल होने की संभावना को लेकर चिंतित है, क्योंकि यूक्रेन रूस के साथ एक लंबी सीमा साझा करता है और इसे रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण देश के रूप में देखा जाता है।

रूस नाटो के विस्तार को अपनी सुरक्षा के लिए ख़तरे के रूप में देखता है। रूस के नेताओं का मानना है कि नाटो एक घेरने वाला गठबंधन है जो रूस को नियंत्रित करना चाहता है और पूर्वी यूरोप में उसके प्रभाव को कम करना चाहता है। रूस विशेष रूप से यूक्रेन के नाटो में शामिल होने की संभावना को लेकर चिंतित है, क्योंकि यूक्रेन रूस के साथ एक लंबी सीमा साझा करता है और इसे रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण देश के रूप में देखा जाता है।

ऐतिहासिक संदर्भ: रूस के यूक्रेन के साथ ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संबंध हैं, और वह पूर्व सोवियत क्षेत्रों में नाटो के विस्तार को एक सुरक्षा खतरे के रूप में देखता है। रूस को अपनी

पश्चिमी सीमा पर नाटो की उपस्थिति का डर है, जिसे वह अपने प्रभाव क्षेत्र में अतिक्रमण के रूप में देखता है।

उदाहरण: 2008 में, जब नाटो ने घोषणा की कि यूक्रेन और जॉर्जिया अंततः सदस्य बनेंगे, तो रूसी राष्ट्रपति दिमित्री मेदवेदेव ने चेतावनी दी कि नाटो के विस्तार को "रूसी संघ की सुरक्षा के लिए सीधा खतरा" के रूप में देखा जाएगा।राष्ट्रीय सुरक्षा और विश्वास: रूस को डर है कि यूक्रेन की नाटो सदस्यता से रूसी क्षेत्र के करीब नाटो बलों की तैनाती हो जाएगी, जिससे विश्वास खत्म हो जाएगा और संभावित रूप से तनाव बढ़ जाएगा।

उदाहरण: रूसी विदेश मंत्री सर्गेई लावरोव ने कहा, "यूक्रेन का नाटो में शामिल होना रूस के लिए सीधा उकसावे और अस्तित्व का खतरा होगा।"

विश्वास की कमी और युद्ध का खतरा: यूक्रेन की नाटो आकांक्षाओं और रूस की सुरक्षा चिंताओं के बीच बातचीत ने ऐसी स्थिति पैदा कर दी है जहां दोनों पक्षों को विश्वास की कमी और युद्ध का खतरा बढ़ गया है। युद्ध का डर बढ़ने की संभावना और अनसुलझे संघर्षों के अस्तित्व में निहित है:

वृद्धि: यूक्रेन में नाटो की मौजूदगी से रूस और गठबंधन के बीच तनाव बढ़ सकता है, जिससे सीधे टकराव का खतरा बढ़ सकता है।

उदाहरण: रूसी सैन्य विशेषज्ञ पावेल फेलगेनहाउर ने टिप्पणी की, "यूक्रेन में नाटो का विस्तार रूस को अपनी सुरक्षा की रक्षा के लिए उपाय करने के लिए उकसा सकता है, जिससे संभावित रूप से संघर्ष हो सकता है।"

अनसुलझे संघर्ष: पूर्वी यूक्रेन में चल रहे संघर्ष ने स्थिति को और जटिल बना दिया है, जिससे यह क्षेत्र संभावित टकराव का बिंदु बन गया है। दोनों पक्ष एक-दूसरे पर संघर्ष विराम का उल्लंघन करने और संघर्ष को बढ़ाने का आरोप लगाते हैं।

उदाहरण: यूक्रेनी विदेश मंत्री दिमित्रो कुलेबा ने कहा, "पूर्वी यूक्रेन में रूसी आक्रामकता सुरक्षा के लिए नाटो में शामिल होने की हमारी इच्छा को प्रेरित करने वाला एक महत्वपूर्ण कारक है।"

संक्षेप में, नाटो में शामिल होने पर यूक्रेन की जिद और रूस की असुरक्षा का डर, विशेष रूप से इसकी सुरक्षा और प्रभाव के लिए कथित खतरा, विश्वास की कमी और संघर्ष की संभावना से चिह्नित स्थिति पैदा करते हैं। जटिल इतिहास, सांस्कृतिक संबंध और चल रही भू-राजनीतिक गतिशीलता क्षेत्र में शक्ति के नाजुक संतुलन में योगदान करती है, जिससे यह अंतरराष्ट्रीय संबंधों में एक महत्वपूर्ण मुद्दा बन जाता है।

• 2022 के एक लेख में, पूर्व अमेरिकी विदेश मंत्री हेनरी किसिंजर ने लिखा, "यूक्रेन में युद्ध ने वैश्विक अस्थिरता के एक नए युग की शुरुआत की है।"

युक्रेन के बाद अब इसराइल युद्ध की ओर...

इस्लाम का प्रतिनिधित्व करने का दावा करने वाले कुछ व्यक्ति और समूह आतंकवादी कृत्यों में शामिल हैं, और इस मुद्दे को जिम्मेदारी से संबोधित करना महत्वपूर्ण है। वैश्विक खतरे के रूप में मुस्लिम आतंकवादी संगठनों के विषय पर चर्चा करते समय विचार करने के लिए यहां कुछ प्रमुख बिंदु दिए गए हैं:

1. रूढ़िबद्धता से बचें: सभी मुसलमानों को संभावित आतंकवादियों के रूप में सामान्यीकृत और रूढ़िबद्ध करने से बचना महत्वपूर्ण है। मुसलमानों का विशाल बहुमत शांतिपूर्ण है और आतंकवाद की निंदा करता है।

2. चरमपंथी विचारधारा: इस्लामी होने का दावा करने वाले कई आतंकवादी संगठन इस्लाम की चरमपंथी व्याख्याओं में निहित हैं। ये व्याख्याएँ सभी मुसलमानों की मान्यताओं का प्रतिनिधित्व नहीं करती हैं। उदाहरण के लिए, ISIS इस्लाम का पालन करने का दावा करता है, लेकिन दुनिया भर के मुसलमानों द्वारा उनकी व्याख्या को व्यापक रूप से खारिज कर दिया जाता है।

3. वैश्विक पहुंच: मुस्लिम संबद्धता वाले कुछ आतंकवादी समूहों ने विश्व स्तर पर आतंकवादी घटनाएं करते हैं। उदाहरण के लिए, अल-कायदा अपनी वैश्विक पहुंच के लिए जाना जाता है और विभिन्न देशों में हमलों के लिए जिम्मेदार रहा है।

4. क्षेत्रीय बनाम वैश्विक खतरा: विभिन्न संगठनों द्वारा उत्पन्न खतरे की डिग्री अलग-अलग होती है। जबकि अल-कायदा और ISIS जैसे समूहों का ध्यान अधिक वैश्विक है, अन्य समूह मुख्य रूप से क्षेत्रीय प्रकृति के हो सकते हैं, जो किसी विशिष्ट क्षेत्र या देश के भीतर राजनीतिक लक्ष्यों को प्राप्त करने की कोशिश कर रहे हैं।

5. आतंकवाद का मुस्लिम विरोध: इस तथ्य को उजागर करना महत्वपूर्ण है कि कई मुस्लिम नेताओं, विद्वानों और संगठनों ने लगातार आतंकवाद की निंदा की है।

6. आतंकवाद विरोधी प्रयास: कई मुस्लिम-बहुल देश आतंकवाद विरोधी प्रयासों में सक्रिय रूप से भाग लेते हैं, और वे स्वयं आतंकवाद से प्रभावित हुए हैं। उदाहरण के लिए, पाकिस्तान को तालिबान जैसे समूहों से महत्वपूर्ण चुनौतियों का सामना करना पड़ा है, और सऊदी अरब को अल-कायदा द्वारा निशाना बनाया गया है।

7. अंतर्राष्ट्रीय सहयोग: वैश्विक आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई में राष्ट्रों के बीच सहयोग शामिल है, चाहे उनकी धार्मिक या सांस्कृतिक पृष्ठभूमि कुछ भी हो। संयुक्त राष्ट्र के आतंकवाद विरोधी कार्यक्रमों जैसे अंतर्राष्ट्रीय प्रयास, इस मुद्दे के समाधान के लिए वैश्विक प्रतिबद्धता को प्रदर्शित करते हैं।

अंत में, आतंकवाद किसी भी प्रकार का हो किसी भी देश में हो उसकी निंदा की जानी चाहिए। इसके आलावा टेररिज्म को सरपरिभाषित किया जाना भी आवश्यक है। इस मुद्दे पर विभाजित विश्व आतंकवाद को करने में सहायक नहीं हो सकता। इज़राइल में चल रहे संघर्ष का दुनिया भर के देशों पर दूरगामी प्रभाव है, जिसमें एक अप्रत्याशित हताहत भारत के प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी हैं। इजरायल-फिलिस्तीनी संघर्ष पर केंद्रित इस संकट ने भारत को एक नाजुक कूटनीतिक स्थिति में डाल दिया है।

"इजरायल-फिलिस्तीन संघर्ष हमेशा मध्य पूर्व में एक अशांति का विषय रहा है। भारत इस क्षेत्र में एक प्रमुख खिलाड़ी है, इसके दृष्टिकोण में कोई भी गलत कदम क्षेत्रीय स्थिरता के लिए परिणाम दे सकता है।" - विदेश मामलों के विश्लेषक, राजेश वर्मा

खाड़ी क्षेत्र में भारत की क्षेत्रीय स्थिरता और आर्थिक हितों का मतलब है कि इसके रुख में कोई भी गलत निर्णय या कथित पूर्वाग्रह इसकी रणनीतिक साझेदारी और ऊर्जा सुरक्षा को नुकसान पहुंचा सकता है।

"मध्य पूर्व में भू-राजनीतिक उथल-पुथल का भारत की अर्थव्यवस्था पर सीधा प्रभाव पड़ सकता है। संघर्ष के परिणामस्वरूप तेल की बढ़ती कीमतें, भारत के ऊर्जा-निर्भर उद्योगों और जीवनयापन की सामान्य लागत को नुकसान पहुंचा सकती हैं।" - आर्थिक विश्लेषक, अंकित शर्मा

इज़राइल और हमास के बीच हालिया संघर्ष, जो 7 अक्टूबर, 2023 को शुरू हुआ, दोनों पक्षों के लिए पांच गाजा युद्धों में से सबसे घातक बन गया है, जिसमें 4,000 से अधिक लोग मारे गए।।

प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी ने twitter पर इज़राइल के साथ अपना गहरा शोक और एकजुटता व्यक्त की, हमले को "आतंकवादी हमला" कहा। मोदी की स्थिति किसी भी रूप में आतंकवाद का विरोध करने और इसका सामना करने वाले देशों का समर्थन करने की भारत की नीति के अनुरूप हैं। भारत ने इज़राइल के साथ अपनी बढ़ती साझेदारी के बावजूद फिलिस्तीन और अन्य अरब देशों के साथ अपने राजनयिक और आर्थिक संबंध बनाए रखे हैं। इज़राइल-फिलिस्तीन संघर्ष भारत और प्रधान मंत्री मोदी के लिए एक जटिल और बहुआयामी चुनौती है। इज़राइल और अरब दुनिया के साथ अपने संबंधों के बीच सही संतुलन बनाना, घरेलू

विभाजन का प्रबंधन करना, आर्थिक हितों की रक्षा करना और अपनी वैश्विक छवि को बनाए रखना, इस संकट से निपटने में भारत सरकार के लिए सभी जटिल कार्य हैं।

"भारत ने ऐतिहासिक रूप से इज़राइल और अरब राज्यों दोनों के साथ मैत्रीपूर्ण संबंध बनाए रखे हैं। प्रधान मंत्री मोदी अब एक नाजुक संतुलन कार्य में फंस गए हैं क्योंकि वह इजरायल-फिलिस्तीनी संघर्ष के अशांत पानी से गुजर रहे हैं।" -*, डॉ. सारा कपूर*

इज़राइल-गाजा संघर्ष: इज़राइल-गाजा संघर्ष हमेशा अंतरराष्ट्रीय संबंधों में एक संवेदनशील और विवादास्पद मुद्दा रहा है। गाजा में इजराइल और हमास के बीच हाल ही में भड़की हिंसा ने मामले को और भी जटिल बना दिया है। जैसा कि भारत ने लगातार मध्य पूर्व में शांतिपूर्ण समाधान की वकालत की है, मौजूदा संघर्ष ने प्रधान मंत्री मोदी को एक नाजुक राजनयिक स्थिति में डाल दिया है।

"इजरायल-गाजा संघर्ष भारत को मुश्किल स्थिति में डाल देता है। इजरायल के साथ अपने रणनीतिक संबंधों और फिलिस्तीनी अधिकारों के लिए इसके ऐतिहासिक समर्थन को संतुलित करना तेजी से चुनौतीपूर्ण होता जा रहा है।" विदेश नीति विश्लेषक, डॉ. श्रेया कपूर

भारत-इज़राइल संबंधों पर प्रभाव: हाल के वर्षों में इजराइल के साथ भारत के रिश्ते तेजी से बढ़े हैं। रक्षा सहयोग, कृषि साझेदारी और तकनीकी सहयोग इस रिश्ते की आधारशिला रहे हैं। हालाँकि, जैसे-जैसे इज़राइल-गाजा संघर्ष बढ़ता जा रहा है, इस बात को लेकर चिंता बढ़ रही है कि यह इज़राइल के साथ भारत के रणनीतिक संबंधों को कैसे प्रभावित कर सकता है।

इकोनॉमिक टाइम्स की रिपोर्ट है, "प्रधानमंत्री मोदी की विदेश नीति इजरायल सहित भारत की वैश्विक साझेदारियों में विविधता लाने पर काफी हद तक निर्भर रही है। मौजूदा संघर्ष भारत को अपने हितों की रक्षा के लिए अपनी स्थिति को फिर से व्यवस्थित करने के लिए मजबूर करता है।"

प्रधानमंत्री मोदी की कूटनीति: वैश्विक मंच पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की कूटनीतिक कुशलता की सराहना की गई है। अक्सर एक-दूसरे के साथ मतभेद रखने वाले देशों के साथ मजबूत रिश्ते बनाए रखने की उनकी क्षमता ने भारत की अच्छी सेवा की है। हालाँकि, इज़राइल और यूक्रेन द्वारा एक साथ पेश की गई चुनौतियों के लिए एक अलग स्तर की कूटनीतिक चालाकी की आवश्यकता है। टाइम्स ऑफ इंडिया के साथ हाल ही में एक साक्षात्कार में, राजनीतिक विश्लेषक आरती सिंह ने टिप्पणी की, "मोदी के नेतृत्व की परीक्षा होगी। शांति और स्थिरता को बढ़ावा देते हुए भारत के रणनीतिक हितों को संरक्षित करने की उनकी क्षमता उनकी विरासत को परिभाषित करेगी।"

इजराइल-गाजा संघर्ष और यूक्रेन-रूस गतिरोध भारत के लिए कूटनीतिक रस्सी पर चलने की चुनौती पेश करते हैं। प्रधान मंत्री मोदी को अंतरराष्ट्रीय क्षेत्र में शांति और स्थिरता के लिए भारत की प्रतिबद्धता को संरक्षित करते हुए प्रमुख सहयोगियों के साथ भारत के संबंधों की रक्षा करने की कठिन चुनौती का सामना करना पड़ रहा है। राजदूत रमेश गुप्ता के शब्दों में, "भारत को यूक्रेन पर नज़र रखते हुए इज़राइल-गाजा संघर्ष में सावधानी से चलना चाहिए। उसे अपने राष्ट्रीय हितों की रक्षा के लिए नाजुक संतुलन बनाए रखने की आवश्यकता है।"

क्या गाजा-पट्टी युद्ध पर भी वैसा ही प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित किया जा सकता है जैसा यूक्रेन युद्ध पर जी20 में पारित किया गया था ?

गाजा-पट्टी युद्ध इजरायल और फिलिस्तीनी आतंकवादी समूहों, मुख्य रूप से हमास के बीच एक लंबे समय से चला आ रहा संघर्ष है, जो लगभग 41 किमी लंबे और 12 किमी चौड़े संकीर्ण तटीय क्षेत्र गाजा पट्टी को नियंत्रित करता है। युद्ध के कारण दोनों पक्षों में हजारों मौतें, चोटें और विस्थापन हुए हैं, साथ ही गाजा में बुनियादी ढांचे और मानवीय संकट को व्यापक क्षति हुई है। अंतर्राष्ट्रीय समुदाय ने बार-बार संघर्ष के शांतिपूर्ण समाधान का आह्वान किया है, लेकिन पार्टियों के बीच विश्वास, संवाद और सहयोग की कमी के कारण प्रयास बाधित हुए हैं।

हाल ही में, G20 नेता, जो दुनिया की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाओं का प्रतिनिधित्व करते हैं, नई दिल्ली, भारत में एक शिखर सम्मेलन के बाद एक संयुक्त घोषणा पर सहमत हुए हैं। घोषणा में विभिन्न वैश्विक मुद्दों को संबोधित किया गया, जिसमें यूक्रेन की भू-राजनीतिक स्थिति भी शामिल है, जहां रूस ने क्रीमिया पर आक्रमण किया है और पूर्वी क्षेत्रों में अलगाववादी विद्रोहियों का समर्थन किया है। घोषणा में अधिकांश सदस्यों ने रूस की आक्रामकता और अंतरराष्ट्रीय कानून के उल्लंघन की कड़ी निंदा की, लेकिन यह भी कहा कि अन्य विचार भी थे। घोषणा में सभी क्षेत्रों में क्षेत्रीय संप्रभुता, मानवीय कानून, शांति और स्थिरता को बनाए रखने का भी आह्वान किया गया।

सवाल यह है कि क्या गाजा-पट्टी युद्ध पर भी वैसा ही प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित किया जा सकता है जैसा यूक्रेन युद्ध पर जी20 में पारित किया गया था। उत्तर सरल नहीं है, क्योंकि दोनों संघर्षों में कई अंतर और जटिलताएँ शामिल हैं। ऐसे कुछ कारक जो इस तरह के संकल्प की संभावना और सामग्री को प्रभावित कर सकते हैं:

संघर्ष की ऐतिहासिक और धार्मिक जड़ें: गाजा-पट्टी युद्ध दशकों पुराने इजरायल-फिलिस्तीनी संघर्ष में निहित है, जिसकी उत्पत्ति यहूदियों और अरबों द्वारा फिलिस्तीन की भूमि पर प्रतिस्पर्धी दावों में हुई है। यह संघर्ष दोनों पक्षों की धार्मिक मान्यताओं और पहचान के साथ-साथ उनके क्षेत्रीय और अंतर्राष्ट्रीय सहयोगियों और दुश्मनों से भी प्रभावित है। दूसरी

ओर, यूक्रेन युद्ध मुख्य रूप से रूस के भू-राजनीतिक हितों और अपने पूर्व सोवियत क्षेत्र पर अपना प्रभाव और नियंत्रण स्थापित करने की महत्वाकांक्षाओं से प्रेरित है। यह संघर्ष यूक्रेनियन और रूसियों के बीच जातीय और भाषाई विभाजन के साथ-साथ यूरोप या रूस के प्रति उनके राजनीतिक और आर्थिक झुकाव से भी संबंधित है।

पार्टियों की स्थिति और मान्यता: गाजा-पट्टी युद्ध में एक राज्य अभिनेता (इज़राइल) और एक गैर-राज्य अभिनेता (हमास) शामिल हैं, जिनकी अंतरराष्ट्रीय क्षेत्र में वैधता और मान्यता के विभिन्न स्तर हैं। इज़राइल संयुक्त राष्ट्र का सदस्य है और दुनिया के अधिकांश देशों के साथ उसके राजनयिक संबंध हैं, जबकि हमास को कई देशों द्वारा एक आतंकवादी संगठन माना जाता है, जिसमें कुछ G20 सदस्य भी शामिल हैं। हमास भी सभी फ़िलिस्तीनियों का प्रतिनिधित्व नहीं करता है, क्योंकि एक और फ़िलिस्तीनी प्राधिकरण है जो वेस्ट बैंक के कुछ हिस्सों पर शासन करता है और कई देशों द्वारा फ़िलिस्तीनी लोगों के वैध प्रतिनिधि के रूप में मान्यता प्राप्त है। यूक्रेन युद्ध में दो राज्य अभिनेता (यूक्रेन और रूस) शामिल हैं, जो दोनों संयुक्त राष्ट्र के सदस्य हैं और दुनिया के अधिकांश देशों के साथ राजनयिक संबंध रखते हैं। हालाँकि, रूस के क्रीमिया पर कब्जे और अलगाववादी विद्रोहियों के समर्थन को अधिकांश देशों द्वारा मान्यता नहीं दी गई है, जिनमें कुछ G20 सदस्य भी शामिल हैं।

बाहरी तत्वों की भागीदारी और प्रभाव: गाजा-पट्टी युद्ध विभिन्न बाहरी तत्वों से प्रभावित है जिनके क्षेत्र में अलग-अलग हित और एजेंडे हैं। इनमें से कुछ कारक कतर, सूडान, तुर्की और उत्तर कोरिया हैं जो हमास का समर्थन करते हैं; ईरान, हिजबुल्लाह, सीरिया, अफगानिस्तान और अल्जीरिया जो अन्य फिलिस्तीनी आतंकवादी समूहों का समर्थन करते हैं; मिस्र जो इज़राइल और हमास के बीच मध्यस्थता करता है; और संयुक्त राज्य अमेरिका जो इज़राइल का समर्थन करता है। यूक्रेन युद्ध विभिन्न बाहरी तत्वों से भी प्रभावित है जिनके यूरोप में अलग-अलग हित और एजेंडे हैं। इनमें से कुछ अभिनेता नाटो, यूरोपीय संघ, अमेरिका हैं

और कनाडा जो यूक्रेन का समर्थन करता है; चीन जो तटस्थ रुख रखता है; जर्मनी और फ्रांस जो संघर्ष को सुलझाने के लिए राजनयिक प्रयासों का नेतृत्व करते हैं; और बेलारूस जो यूक्रेन और रूस के बीच शांति वार्ता की मेजबानी करता है।

इन कारकों को देखते हुए, गाजा-पट्टी युद्ध पर एक सर्वसम्मत प्रस्ताव तक पहुंचना मुश्किल हो सकता है जैसा कि यूक्रेन युद्ध पर जी20 में पारित किया गया था। पार्टियों को कैसे परिभाषित किया जाए, उनके अधिकारों और जिम्मेदारियों को कैसे संबोधित किया जाए, उनके कार्यों की निंदा या समर्थन कैसे किया जाए, उनकी बातचीत को कैसे सुविधाजनक बनाया जाए या दबाव डाला जाए, उनके समझौतों की निगरानी कैसे की जाए या उन्हें कैसे

लागू किया जाए आदि पर जी20 सदस्यों के बीच असहमति हो सकती है। इसके अलावा, इस तरह के प्रस्ताव का ज़मीनी स्तर पर बहुत अधिक प्रभाव नहीं हो सकता है, क्योंकि इसे पार्टियों या उनके बाहरी सहयोगियों या दुश्मनों द्वारा स्वीकार या कार्यान्वित नहीं किया जा सकता है।

इसलिए, अधिक यथार्थवादी और प्रभावी दृष्टिकोण G20 सदस्यों के बीच द्विपक्षीय या बहुपक्षीय संवाद को आगे बढ़ाना हो सकता है जिनका गाजा-पट्टी युद्ध में शामिल पक्षों पर प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष प्रभाव है। इन संवादों का उद्देश्य G20 सदस्यों के बीच विश्वास, समझ और सहयोग का निर्माण करना हो सकता है कि संघर्ष के मूल कारणों और परिणामों को कैसे संबोधित किया जाए, आगे बढ़ने या हिंसा को कैसे रोका जाए, नागरिकों को मानवीय सहायता या सुरक्षा कैसे प्रदान की जाए, राजनीतिक समर्थन कैसे किया जाए या राजनयिक पहल या प्रक्रियाएँ जो स्थायी शांति समझौते का कारण बन सकती हैं।

पश्चिम एशिया में संकट के बीच मोदी ने कहा, मानवता के खिलाफ आतंकवाद...एक विभाजित दुनिया इसका समाधान नहीं ढूंढ सकती

मोदी ने पश्चिम एशिया में हालिया संघर्ष का जिक्र नहीं किया, लेकिन उनकी टिप्पणियां इजरायल और फिलिस्तीन के बीच बढ़ती हिंसा की पृष्ठभूमि में आईं। उन्होंने 14 अक्टूबर, 2023 सीमा पार आतंकवाद के संबंध में भारत के अनुभव और ग्रह के सामने आने वाली चुनौतियों से निपटने के लिए एकजुट दुनिया की आवश्यकता के बारे में भी बात की। पी20 शिखर सम्मेलन ने एक संयुक्त बयान जारी कर सभी रूपों में आतंकवाद की निंदा की और आतंकवादी समूहों के समर्थन को नकारने के प्रयासों को बढ़ाने का आह्वान किया। मोदी ने भारत की विविधता में एकता का भी जश्न मनाया और सभी क्षेत्रों में महिलाओं की भागीदारी को बढ़ावा देने के सरकार के प्रयासों पर प्रकाश डाला।

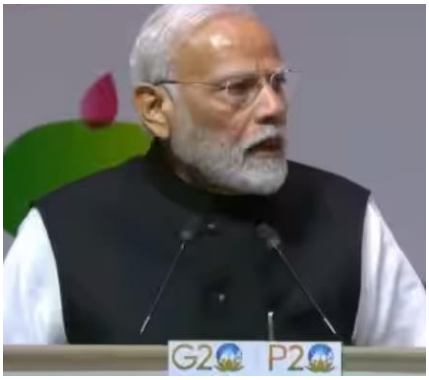

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि दुनिया को यह एहसास होना शुरू हो गया है कि दुनिया के किसी भी हिस्से में, किसी भी रूप में या किसी भी कारण से होने वाला आतंकवाद मानवता के खिलाफ एक कृत्य है, उन्होंने भीषण संघर्ष की पृष्ठभूमि में शांति और भाईचारे का आह्वान किया। पश्चिम एशिया में भड़की हिंसा ने हजारों लोगों की जान ले ली है।

दिल्ली के यशोभूमि कन्वेंशन सेंटर में जी20 देशों और अतिथि देशों के संसदीय नेताओं के पी20 शिखर सम्मेलन को संबोधित करते हुए, मोदी ने सभी संसदों और उनके प्रतिनिधियों से

आतंकवाद के खिलाफ एक साथ आने का आग्रह किया और बताया कि आतंक के अपराधी वैश्विक सहमति की कमी का फायदा उठा रहे हैं।

“अब दुनिया को यह एहसास होने लगा है कि आतंकवाद इस दुनिया के लिए कितना गंभीर खतरा है। आतंकवाद कोई भी हो, चाहे कोई भी कारण हो, चाहे कोई भी रूप हो, आतंकवाद मानवता के विरुद्ध है। हमें आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई जारी रखनी होगी," मोदी ने कहा।

मोदी ने पहले हमास के हमले की "आतंकवादी हमले" के रूप में निंदा की और अपने इजरायली समकक्ष बेंजामिन नेतन्याहू से कहा कि भारत इजरायल के साथ एकजुटता से खड़ा है। गुरुवार को, विदेश मंत्रालय ने भी हमले को "आतंकवादी हमला" बताया, लेकिन कहा कि भारत ने हमेशा फिलिस्तीन के एक संप्रभु राज्य की स्थापना के लिए सीधी बातचीत का समर्थन किया है जो इज़राइल के साथ-साथ अस्तित्व में रह सकता है।

मोदी ने अपने भाषण में सभी देशों और संसदों से आतंकवाद के खिलाफ एक साथ आने का आह्वान किया. “आतंकवाद की परिभाषा पर आम सहमति का अभाव बेहद दुर्भाग्यपूर्ण है। आज भी आतंकवाद से मुकाबले पर संयुक्त राष्ट्र अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन आम सहमति की प्रतीक्षा में है। मानवता के खिलाफ अपराधी इस स्थिति का फायदा उठा रहे हैं, ”उन्होंने कहा।

मोदी ने पाकिस्तान का नाम लिए बिना बताया कि कैसे भारत 2001 में अपनी संसद पर हुए हमले सहित कई आतंकी हमलों से मजबूत होकर उभरा।

“जैसा कि आप जानते हैं, भारत दशकों से सीमा पार आतंकवाद के मुद्दे का सामना कर रहा है। भारत में आतंकवादियों ने हजारों निर्दोष लोगों की हत्या कर दी है। नए संसद भवन के पास आपको पुराना संसद भवन मिलेगा. करीब 20 साल पहले आतंकियों ने हमारी संसद को निशाना बनाया था. आप यह जानकर चौंक जाएंगे कि उस समय संसद का सत्र चल रहा था।" आतंकवादी सांसदों को बंधक बनाना, मारना चाहते थे। भारत ऐसी कई आतंकी घटनाओं से निपट चुका है...”अब दुनिया भी महसूस कर रही है कि आतंकवाद दुनिया के लिए कितनी बड़ी चुनौती है," मोदी ने कहा।

पाकिस्तान स्थित दो आतंकवादी समूहों - लश्कर-ए-तैयबा (एलईटी) और जैश-ए-मोहम्मद (जेईएम) के नकाबपोश बंदूकधारियों ने 13 दिसंबर, 2001 को संसद पर हमला किया। इस हमले में पांच दिल्ली पुलिस कर्मी, दो संसद सुरक्षा सेवा कर्मी मारे गए। , एक अर्धसैनिक कांस्टेबल और एक माली की मौत हो गई, और परमाणु हथियार से लैस दो पड़ोसियों के बीच तनाव बढ़ गया।

“दुनिया के विभिन्न कोनों में, जो कुछ भी हो रहा है, कोई भी उससे अछूता नहीं है। विश्व संघर्षों और टकरावों से उत्पन्न संकटों से गुजर रहा है। यह संकटग्रस्त संसार किसी के लिए हितकर नहीं है। एक विभाजित दुनिया हमारे ग्रह के सामने आने वाली प्रमुख चुनौतियों का समाधान नहीं दे सकती," मोदी ने कहा।

उन्होंने वैश्विक विश्वास में संकट को समाप्त करने का आह्वान किया। उन्होंने भारत की जी20 अध्यक्षता की थीम को दोहराते हुए कहा, "हमें दुनिया को एक पृथ्वी, एक परिवार, एक भविष्य के आलोक में देखना होगा।"

बाद में दिन में जारी एक संयुक्त बयान में, पी20 - जी20 संसदीय अध्यक्ष के शिखर सम्मेलन - ने "आतंकवादी समूहों को सुरक्षित पनाहगाह, संचालन की स्वतंत्रता, आंदोलन और भर्ती के साथ-साथ वित्तीय, भौतिक या राजनीतिक समर्थन से वंचित करने के लिए" प्रयासों में वृद्धि का आह्वान किया।

पी20 नेताओं ने स्पष्ट रूप से "आतंकवाद के सभी रूपों और अभिव्यक्तियों की निंदा की, जिसमें ज़ेनोफोबिया, नस्लवाद और असहिष्णुता के अन्य रूपों के आधार पर या धर्म या विश्वास के नाम पर आतंकवाद शामिल है, जो शांति के लिए सभी धर्मों की प्रतिबद्धता को पहचानता है।"

“आतंकवाद के सभी कृत्य आपराधिक और अनुचित हैं, चाहे उनकी प्रेरणा कुछ भी हो, कहीं भी, जब भी और किसी ने भी किया हो। प्रभावी आतंकवाद विरोधी उपाय, आतंकवाद के पीड़ितों के लिए समर्थन और मानवाधिकारों की सुरक्षा परस्पर विरोधी लक्ष्य नहीं हैं, बल्कि पूरक और पारस्परिक रूप से मजबूत हैं। अंतरराष्ट्रीय कानून के आधार पर एक समग्र दृष्टिकोण प्रभावी ढंग से आतंकवाद का मुकाबला कर सकता है, ”बयान में कहा गया है।

“आतंकवादी समूहों को सुरक्षित आश्रय, संचालन, आंदोलन और भर्ती की स्वतंत्रता के साथ-साथ वित्तीय, भौतिक या राजनीतिक समर्थन से वंचित करने के लिए अंतर्राष्ट्रीय सहयोग की प्रभावशीलता बढ़ाने के प्रयासों को मजबूत किया जाना चाहिए। हमारे विधायी, बजटीय और निरीक्षण कार्यों के आलोक में, हम आतंकवाद और हिंसक उग्रवाद से निपटने में अपनी भूमिका निभाने की प्रतिज्ञा करते हैं। यह जोड़ा गया.

मोदी ने इस अवसर पर भारत की विविधता में एकता को भी उजागर किया और कहा कि देश में कई भाषाएं और कई बोलियां हैं। उन्होंने कहा, लोगों को वास्तविक समय की जानकारी प्रदान करने के लिए 28 भाषाओं में 900 से अधिक टीवी चैनल हैं और लगभग 200 भाषाओं में 33,000 से अधिक विभिन्न समाचार पत्र प्रकाशित होते हैं। “21वीं सदी के इस विश्व में, भारत की यही जीवंतता, अनेकता में एकता, हमारी सबसे बड़ी ताकत है। यह जीवंतता हमें हर

चुनौती से लड़ने और हर कठिनाई को मिलकर हल करने के लिए प्रेरित करती है, "उन्होंने कहा।

पीएम ने यह भी कहा कि सरकार बहुमत से बनती है, हम देश को आम सहमति से चलाते हैं, जो विविध हितों और जटिलताओं को हल करने में व्यापक दृष्टिकोण का संकेत देता है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शुक्रवार को पी20 शिखर सम्मेलन को संबोधित करते हुए आतंकवाद के खिलाफ एकजुटता का आह्वान किया और शांति और भाईचारे की जरूरत पर जोर दिया. उन्होंने आतंकवाद की परिभाषा पर वैश्विक सहमति की कमी पर प्रकाश डाला और सभी देशों और संसदों से मानवता के लिए इस गंभीर खतरे के खिलाफ लड़ने के लिए एक साथ आने का आग्रह किया।

आइये हम सब एक स्वर में आतंकवाद को परिभाषित करें और उसकी निंदा करें, क्योंकि विभाजित दुनिया मानवता के सामने आने वाली समस्याओं का समाधान नहीं ढूंढ सकती है। उनकी टिप्पणी चल रहे इज़राइल-फिलिस्तीन युद्ध के मद्देनजर आई है।

"जहाँ भी आतंकवाद होता है, किसी भी कारण से, किसी भी रूप में, यह मानवता के खिलाफ है। ऐसी स्थिति में, हम सभी को आतंकवाद के संबंध में लगातार सख्त रहना होगा, " उन्होंने नई दिल्ली में संसदीय वक्ताओं और दुनिया भर के नेताओं को संबोधित करते हुए कहा। इजराइल पर हमास के हमले के कुछ घंटों बाद, मोदी ने ट्विटर पर एक पोस्ट के माध्यम से "आतंकवादी हमलों पर अपना गहरा सदमा व्यक्त किया था, और कहा था कि भारत "इस कठिन समय में इजराइल के साथ एकजुटता से खड़ा है"।

रूस- यूक्रेन युद्ध के मद्देनजर पिछले साल की गई अपनी 'युद्ध का युग नहीं' टिप्पणी को दोहराते हुए , प्रधान मंत्री ने कहा, "यह शांति और भाईचारे का समय है, सार्वभौमिक प्रगति और कल्याण के लिए एक साथ आगे बढ़ने का समय है। हमें दुनिया में विश्वास की कमी से निपटना होगा और मानव-नेतृत्व वाली विचार प्रक्रिया की ओर बढ़ना होगा।" इस संबंध में, प्रधान मंत्री ने भारत की एक पृथ्वी, एक परिवार, एक भविष्य की जी20 थीम का भी उल्लेख किया, और दुनिया को अधिक प्रभाव के लिए सामूहिक निर्णय लेने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने कहा, "दुनिया से फैसला लेने में जितनी भागीदारी होगी, उतना बड़ा प्रभाव होगा।" उन्होंने कहा कि भारत ने इसी उद्देश्य से अफ्रीकी संघ के लिए जी20 सदस्यता का प्रस्ताव रखा है।

आतंकवाद शांति, लोकतंत्र और सहयोग के उन मूल्यों को कमज़ोर करता है जिन्हें हम संजोते हैं: इससे हमारी सुरक्षा, स्थिरता और समृद्धि को खतरा है। आतंकवाद किसी भी लक्ष्य को प्राप्त करने का वैध तरीका नहीं है। यह केवल निर्दोष लोगों को पीड़ा और पीड़ा पहुंचाता है, और यह अंततः दुनिया की स्थिरता और सुरक्षा को कमजोर करता है।

लेकिन हम इस खतरे से कैसे लड़ सकते हैं ? हम आतंकवाद को प्रभावी ढंग से और स्थायी रूप से कैसे रोक सकते हैं और मुकाबला कर सकते हैं ? हम आतंकवाद को बढ़ावा देने वाले मूल कारणों और स्थितियों का समाधान कैसे कर सकते हैं ? हम आतंकवाद के पीड़ितों और बचे लोगों की रक्षा कैसे कर सकते हैं और उनके लचीलेपन और पुनर्प्राप्ति का समर्थन कैसे कर सकते हैं ? उत्तर नहीं है।

आतंकवाद एक जटिल और बहुआयामी घटना है जिसके लिए व्यापक और समग्र दृष्टिकोण की आवश्यकता है। कोई भी देश या क्षेत्र अकेले इससे नहीं निपट सकता. कोई भी एक उपाय या रणनीति पर्याप्त नहीं हो सकती। कोई त्वरित सुधार या सिल्वर बुलेट काम नहीं कर सकता।

हमें एक वैश्विक प्रतिक्रिया की आवश्यकता है जो अंतर्राष्ट्रीय कानून, मानवाधिकार और बहुपक्षीय सहयोग पर आधारित हो। हमें एक ऐसी प्रतिक्रिया की आवश्यकता है जो समावेशी, सहभागी और विविधता का सम्मान करने वाली हो। हमें एक ऐसी प्रतिक्रिया की आवश्यकता है जो संतुलित, आनुपातिक और साक्ष्य-आधारित हो। हमें एक ऐसी प्रतिक्रिया की आवश्यकता है जो अनुकूलनीय, लचीली और नवीन हो।

संयुक्त राष्ट्र ने इस सन्दर्भ में कुछ अपर्याप्त प्रयास किये हैं।

आतंकवाद के खिलाफ सामूहिक कार्रवाई रणनीति में चार स्तंभ शामिल हैं: आतंकवाद के प्रसार के लिए अनुकूल परिस्थितियों को संबोधित करना; आतंकवाद को रोकना और मुकाबला करना; राज्य की क्षमता का निर्माण और संयुक्त राष्ट्र की भूमिका को मजबूत करना; मानवाधिकारों और कानून के शासन के लिए सम्मान सुनिश्चित करना।

इसकी प्रासंगिकता और प्रभावशीलता सुनिश्चित करने के लिए संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा हर दो साल में रणनीति की समीक्षा की जाती है। नवीनतम समीक्षा जून 2021 में हुई, जहां सदस्य देशों ने रणनीति को उसके सभी पहलुओं में लागू करने की अपनी प्रतिबद्धता की पुष्टि की। उन्होंने एक प्रस्ताव भी अपनाया जिसमें आतंकवाद का मुकाबला करने में कुछ उभरती चुनौतियों और प्राथमिकताओं पर प्रकाश डाला गया, जैसे कि सीओवीआईडी -19 महामारी का प्रभाव, विदेशी आतंकवादी लड़ाकों का खतरा, नई प्रौद्योगिकियों का उपयोग, नागरिक समाज और पीड़ितों की भूमिका। संघ, और लिंग-संवेदनशील और युवा-उन्मुख दृष्टिकोण2 की आवश्यकता

संयुक्त राष्ट्र में विभिन्न एजेंसियां, फंड, कार्यक्रम और विशेष निकाय भी हैं जो आतंकवाद-निरोध के विभिन्न पहलुओं पर काम करते हैं, जैसे हिंसक उग्रवाद को रोकना, सीमा सुरक्षा बढ़ाना, आतंकवादी वित्तपोषण को बाधित करना, बातचीत और संघर्ष समाधान को बढ़ावा

देना, मानवाधिकारों और मानवीय कानून की रक्षा करना। , पीड़ितों और प्रभावित समुदायों की सहायता करना, और शांति की शिक्षा और संस्कृति को बढ़ावा देना3

हालाँकि, संयुक्त राष्ट्र इसे अकेले नहीं कर सकता। इसे सभी हितधारकों के समर्थन और सहयोग की आवश्यकता है: सरकारें, क्षेत्रीय संगठन, नागरिक समाज समूह, निजी क्षेत्र की संस्थाएं, मीडिया आउटलेट, शैक्षणिक संस्थान, धार्मिक नेता और आम नागरिक। आतंकवाद को रोकने और उसका मुकाबला करने में हर किसी की भूमिका है।

जैसा कि संयुक्त राष्ट्र के पूर्व महासचिव बान की मून ने कहा था: "आतंकवाद पूरी मानवता के लिए खतरा है - लेकिन इसका मुकाबला करने की हमारी सामूहिक शक्ति भी है।" 4 विभाजित विश्व इस समस्या का समाधान नहीं ढूंढ सकता। इस मुद्दे पर निर्णय लेने में जितनी अधिक भागीदारी होगी, प्रभाव उतना ही बड़ा होगा।

आइए हम इस संकट को हमेशा के लिए ख़त्म करने के लिए एकजुट हों। आइए हम आतंकवाद के पीड़ितों और बचे लोगों के साथ एकजुटता से खड़े हों। आइए हम मानवता, गरिमा और शांति के अपने सामान्य मूल्यों को बनाए रखें।

1. सूचना साझा करना और खुफिया सहयोग: इंटरपोल और फाइव आईज गठबंधन (ऑस्ट्रेलिया, कनाडा, न्यूजीलैंड, यूनाइटेड किंगडम और संयुक्त राज्य अमेरिका) जैसे संगठनों के माध्यम से देशों के बीच खुफिया जानकारी साझा करना आतंकवादी हमलों को रोकने और संभावित खतरों की पहचान करने में सहायक रहा है।

उद्धरण: "खुफिया आतंकवाद के खिलाफ रक्षा की पहली पंक्ति है, और यह सुनिश्चित करने के लिए अंतर्राष्ट्रीय सहयोग आवश्यक है कि हमलों को रोकने के लिए हमारे पास सबसे सटीक और नवीनतम जानकारी हो।" - जॉन ओ. ब्रेनन

2. आतंकवादी फंडिंग को रोकने के लिए वित्तीय सहयोग: अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय संस्थान और सरकारें आतंकवादी संगठनों से जुड़ी संपत्तियों को ट्रैक करने और फ्रीज करने के लिए सहयोग करती हैं, जिससे उनके संचालन को वित्तपोषित करने की क्षमता बाधित होती है।

उद्धरण: "आतंकवादी संगठनों को धन के प्रवाह में कटौती करना वैश्विक स्तर पर उनकी क्षमताओं और संचालन को कमजोर करने के सबसे प्रभावी तरीकों में से एक है।" - संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद

3. आतंकवाद विरोधी प्रशिक्षण और क्षमता निर्माण: देश अक्सर आतंकवाद के उच्च जोखिम का सामना करने वाले देशों को उनकी आतंकवाद विरोधी क्षमताओं को बनाने में मदद करने के लिए प्रशिक्षण और संसाधन प्रदान करते हैं।

उद्धरण: "अपनी सीमाओं के भीतर आतंकवाद से लड़ने के लिए राष्ट्रों की क्षमता का निर्माण करके, हम इस खतरे के खिलाफ अधिक लचीली वैश्विक रक्षा बना सकते हैं।" - जॉर्ज डब्ल्यू बुश

4. वैश्विक सहयोग को बढ़ावा देने में संयुक्त राष्ट्र की भूमिका: संयुक्त राष्ट्र विभिन्न प्रस्तावों और सम्मेलनों के माध्यम से आतंकवाद के खिलाफ अंतर्राष्ट्रीय सहयोग को सुविधाजनक बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

उद्धरण: "आतंकवाद कोई सीमा नहीं जानता, और केवल अंतर्राष्ट्रीय सहयोग के माध्यम से हम इस वैश्विक संकट को प्रभावी ढंग से संबोधित करने की उम्मीद कर सकते हैं।" - कोफ़ी अन्नान

5. बहुपक्षीय सैन्य संचालन और गठबंधन: 11 सितंबर 2001 के हमलों के बाद आतंकवाद से निपटने के लिए अफगानिस्तान में नाटो की भागीदारी ने आतंकवाद के प्रति समन्वित अंतर्राष्ट्रीय सैन्य प्रतिक्रिया की शक्ति का प्रदर्शन किया।

उद्धरण: "अफगानिस्तान में नाटो का मिशन आतंकवाद से लड़ने के लिए गठबंधन की प्रतिबद्धता का एक प्रमाण है, जहां भी यह हमारी आम सुरक्षा के लिए खतरा है।" - जेन्स स्टोलटेनबर्ग

6. कूटनीतिक प्रयास और संघर्ष समाधान: कूटनीति और संघर्ष समाधान पहल आतंकवाद के मूल कारणों को संबोधित करने में मदद कर सकते हैं, जिससे प्रभावित क्षेत्रों में इसकी अपील कम हो सकती है।

उद्धरण: "आतंकवाद को जन्म देने वाली स्थितियों को खत्म करने के लिए दीर्घकालिक शांति और स्थिरता महत्वपूर्ण है। इस प्रयास में कूटनीति एक महत्वपूर्ण उपकरण है।" - बान की मून

7. साइबर सुरक्षा और प्रौद्योगिकी सहयोग: साइबर आतंकवाद से निपटने और महत्वपूर्ण बुनियादी ढांचे को साइबर हमलों से बचाने के लिए देशों के बीच सहयोग आज की परस्पर जुड़ी दुनिया में महत्वपूर्ण है।

उद्धरण: "डिजिटल युग में, साइबर आतंकवाद से बचाव के लिए अंतर्राष्ट्रीय सहयोग आवश्यक है, जो हमारी सुरक्षा के लिए एक बढ़ता खतरा बन गया है।" - एन्जेला मार्केल

8. कानून प्रवर्तन सहयोग: आतंकवादी अपराधों की जांच और मुकदमा चलाने के लिए देश मिलकर काम कर सकते हैं।

9. कट्टरपंथ का मुकाबला: लोगों को कट्टरपंथी बनने और आतंकवादी समूहों में शामिल होने से रोकने के लिए देश मिलकर काम कर सकते हैं।

10. सहिष्णुता और बहुलवाद को बढ़ावा देना: देश अपने समाजों में सहिष्णुता और बहुलवाद को बढ़ावा दे सकते हैं, जिससे चरमपंथी विचारधाराओं की अपील को कम करने में मदद मिल सकती है।

आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई लंबी और कठिन है, लेकिन हमें इसे जीतना ही होगा। साथ मिलकर काम करके, हम दुनिया को सभी के लिए एक सुरक्षित स्थान बना सकते हैं।

"अमेरिका ने जापान पर परमाणु हमला किया, अब दोनों मित्र यहूदी हैं, जर्मनी द्वारा भू-संहार कर दिया गया है, अब इजराइल और जर्मनी मित्र हैं, क्या कभी इसाइल और फिलिस्तीन शांति से एक साथ रहेंगे" अन्य उदाहरण भी हैं: निश्चित रूप से, यहां संघर्ष के इतिहास वाले राष्ट्रों या समूहों के कुछ ऐतिहासिक उदाहरण दिए गए हैं जो अंततः शांति या सुलह का मार्ग ढूंढ रहे हैं:

1. अमेरिका ने जापान पर गिराए परमाणु बम, अब दोनों हैं दोस्त: यह बयान द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान 1945 में संयुक्त राज्य अमेरिका द्वारा हिरोशिमा और नागासाकी पर परमाणु बमबारी का जिक्र करता है। बमबारी के कारण जापान ने आत्मसमर्पण कर दिया और युद्ध समाप्त हो गया। युद्ध के बाद, संयुक्त राज्य अमेरिका ने जापान के पुनर्निर्माण और एक लोकतांत्रिक सरकार की स्थापना में मदद करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। जापान और संयुक्त राज्य अमेरिका ने वास्तव में समय के साथ एक मजबूत और सहयोगात्मक संबंध विकसित किया है। हालाँकि, यह स्वीकार करना महत्वपूर्ण है कि इन घटनाओं का इतिहास अभी भी बहस का विषय है और कई लोगों के लिए एक संवेदनशील मुद्दा बना हुआ है।

2. दक्षिण अफ्रीका: दक्षिण अफ्रीका का रंगभेद से लोकतंत्र की ओर परिवर्तन एक उल्लेखनीय उदाहरण है। देश में नस्लीय अलगाव और हिंसा का इतिहास रहा है, लेकिन यह बहु-नस्लीय लोकतंत्र में परिवर्तन करने में कामयाब रहा, नेल्सन मंडेला ने इस परिवर्तन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

3. उत्तरी आयरलैंड: 1998 में गुड फ्राइडे समझौते ने उत्तरी आयरलैंड में राष्ट्रवादी कैथोलिक और संघवादी प्रोटेस्टेंट के बीच दशकों के संघर्ष को समाप्त करने में मदद की। इस समझौते ने अधिक शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व का मार्ग प्रशस्त किया।

4. वियतनाम और संयुक्त राज्य अमेरिका: वियतनाम युद्ध के बाद, संयुक्त राज्य अमेरिका और वियतनाम ने धीरे-धीरे अपने रिश्ते सामान्य कर लिए हैं और व्यापारिक भागीदार बन

गए हैं। यह युद्ध के दौरान संघर्ष से एक उल्लेखनीय बदलाव है। 4. कोलंबिया: 50 से अधिक वर्षों के सशस्त्र संघर्ष के बाद, कोलंबिया ने 2016 में रिवोल्यूशनरी आर्म्ड फोर्सेज ऑफ कोलंबिया (एफएआरसी) के साथ एक ऐतिहासिक शांति समझौते पर हस्ताक्षर किए। हालांकि अभी भी चुनौतियां हैं, यह स्थायी शांति की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

5. रवांडा: 1994 में नरसंहार के बाद, रवांडा ने जातीय तनाव को सुलझाने और अधिक शांतिपूर्ण समाज की दिशा में काम करने के प्रयास किए हैं। देश ने राष्ट्रीय एकता और उपचार पर ध्यान केंद्रित किया है।

6. जर्मनी द्वारा यहूदियों का नरसंहार किया गया था, और अब इज़राइल और जर्मनी दोस्त हैं: यह कथन नरसंहार को संदर्भित करता है, जहां द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान नाजी जर्मनी द्वारा लाखों यहूदियों और अन्य अल्पसंख्यक समूहों को व्यवस्थित रूप से सताया गया और मार दिया गया था। युद्ध के बाद, जर्मनी ने यहूदी समुदाय और इज़राइल राज्य के साथ सामंजस्य स्थापित करने के लिए महत्वपूर्ण प्रयास किए हैं। इसमें क्षतिपूर्ति, नरसंहार की मान्यता और दोनों देशों के बीच मैत्रीपूर्ण संबंधों को बढ़ावा देना शामिल है। इज़राइल और जर्मनी ने वास्तव में राजनयिक और आर्थिक संबंध विकसित किए हैं।

7. क्या इज़राइल और फिलिस्तीन कभी शांति से एक साथ रहेंगे: इजरायल-फिलिस्तीनी संघर्ष एक गहरा जटिल और लंबे समय से चला आ रहा मुद्दा है जिसमें इज़राइल राज्य और फिलिस्तीनी प्राधिकरण और हमास सहित विभिन्न फिलिस्तीनी समूह शामिल हैं। इस संघर्ष का स्थायी और शांतिपूर्ण समाधान प्राप्त करना एक चुनौतीपूर्ण प्रयास है, क्योंकि इसमें प्रतिस्पर्धी राष्ट्रीय आकांक्षाएं, क्षेत्रीय विवाद, सुरक्षा चिंताएं और ऐतिहासिक शिकायतें शामिल हैं। शांतिपूर्ण समाधान तक पहुंचने के लिए बातचीत, शांति समझौते और अंतरराष्ट्रीय मध्यस्थता सहित कई प्रयास किए गए हैं, लेकिन अंतिम समाधान अभी तक हासिल नहीं हुआ है। इज़राइल और फ़िलिस्तीन के बीच शांति की संभावनाएँ एक विवादास्पद और अनसुलझा मुद्दा बनी हुई हैं।

इजरायल-फिलिस्तीनी संघर्ष के संबंध में, स्थायी शांति प्राप्त करना एक जटिल और चुनौतीपूर्ण मुद्दा बना हुआ है, लेकिन इतिहास ने दिखाया है कि संघर्षों को समय, बातचीत और अंतरराष्ट्रीय मध्यस्थता से हल किया जा सकता है। ओस्लो समझौते और कैंप डेविड शिखर सम्मेलन जैसे शांति की दिशा में प्रयास अतीत में हुए हैं, और संघर्ष को हल करने के उद्देश्य से चर्चाएं और पहल चल रही हैं। हालाँकि, यह एक अत्यधिक संवेदनशील और बहुआयामी मुद्दा है जिसके स्थायी समाधान तक पहुँचने के लिए दोनों पक्षों और अंतर्राष्ट्रीय समुदाय से निरंतर समर्पण की आवश्यकता है।

इजराइल युद्ध पर भारत की नीति: शीत युद्ध की समाप्ति और एकमात्र महाशक्ति के रूप में अमेरिका के उदय के बाद, भारत ने 1992 में इज़राइल के साथ राजनयिक संबंध स्थापित किए। तब से इजरायल के साथ भारत के संबंध विकसित हुए हैं, खासकर प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में, जिनका इजरायल के प्रधान मंत्री बेंजामिन नेतन्याहू के साथ घनिष्ठ संबंध है। मोदी 2017 में इज़राइल का दौरा करने वाले पहले भारतीय नेता थे और उन्होंने रक्षा, कृषि, प्रौद्योगिकी और व्यापार जैसे विभिन्न क्षेत्रों में इज़राइल के साथ सहयोग बढ़ाया है।

इज़राइल और हमास के बीच हालिया युद्ध पर भारत के रुख को उसकी पारंपरिक स्थिति से विचलन के रूप में देखा गया था। मोदी ने फिलिस्तीनी हताहतों या दो-राज्य समाधान का उल्लेख किए बिना, हमास के "आतंकवादी हमलों" की निदा की और इज़राइल के साथ एकजुटता व्यक्त की। भारत ने गाजा में मानवीय संघर्ष विराम के लिए संयुक्त राष्ट्र के प्रस्ताव पर मतदान से भी परहेज किया, जिसे इज़राइल के समर्थन के संकेत के रूप में देखा गया।

हालाँकि, भारत ने फिलिस्तीनी मुद्दे के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को पूरी तरह से नहीं छोड़ा है। भारत के विदेश मंत्रालय ने सीधी बातचीत और इजराइल के साथ शांति से रहने वाले फिलिस्तीन के एक संप्रभु, स्वतंत्र और व्यवहार्य राज्य के लिए अपना समर्थन दोहराया। भारत ने गाजा में मानवीय स्थिति में मदद के लिए निकट पूर्व में फिलिस्तीन शरणार्थियों के लिए संयुक्त राष्ट्र राहत और कार्य एजेंसी (यूएनआरडब्ल्यूए) को 10 मिलियन डॉलर का दान भी दिया। भारत और भी सामग्री सहायतार्थ भेजने को तत्पर है।

इज़राइल और फ़िलिस्तीन पर भारत की नीति विभिन्न कारकों से प्रभावित होती है, जैसे कि इसके रणनीतिक हित, इसकी घरेलू राजनीति, इसके ऐतिहासिक संबंध और इसके अंतर्राष्ट्रीय दायित्व। भारत अपने हितों और मूल्यों को बनाए रखते हुए दोनों पक्षों के साथ अपने संबंधों को संतुलित करने का प्रयास करता है।

भारत की नीति स्थिर नहीं है, बल्कि क्षेत्र में बदलती वास्तविकताओं के प्रति गतिशील और उत्तरदायी है "राष्ट्रहित प्रथम"।

नया भारत ने गुटनिरपेक्ष नीति से आगे बढ़ कर विश्व मित्र के रूप में उभर रहा है।

विश्व मित्र भारत

क्या विश्व सरकार संभव है? क्या वैश्विक गवर्नेंस असंभव है? सनातन धर्म विश्वकल्याण के लिए वैश्विक गवर्नेंस का मार्ग प्रशस्त कर सकता है। कोरोना संकट से निपटने और G-20 की सफलता से 76% रेटिंग के साथ विश्व नेता बने मोदी। विश्व नेताओं ने वैश्विक शांतिदूत के रूप में मोदी की प्रशंसा की है। 2+2 नहीं 4: गठबंधन की राजनीति का अंत। गुटनिरपेक्षता से आगे बढ़ कर अब भारत और उसके प्रधानमंत्री स्वयं को "विश्व मित्र" के रूप में प्रतिष्ठापित कर चुके हैं।

प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा, "हमें उन मुद्दों को उनके रास्ते में नहीं आने देना चाहिए जिन्हें हम मिलकर हल नहीं कर सकते।"

पी एम मोदी के उक्त कथन के सन्दर्भ में मुझे विश्वामित्रा द्वारा मित्र राजा त्रिशंकु के लिए जो नया स्वर्ग बनाया था उस घटना का स्मरण हो रहा है। त्रिशंकु इक्ष्वाकु वंश का एक राजा था जिसे ऋषि विश्वामित्र ने सशरीर स्वर्ग भेजा था। देवराज इन्द्र ने उसे स्वर्ग से वापस पृथ्वी की ओर धकेल दिया। नीचे गिरते हुये त्रिशंकु को ऋषि विश्वामित्र ने बीच में ही लटका कर उसके लिये स्वर्ग का निर्माण किया तथा वह अपने स्वर्ग के साथ आज भी वास्तविक स्वर्ग और पृथ्वी के बीच दूसरे स्वर्ग में है।

प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी ने एक रिकॉर्डेड बयान में कहा, "पिछले कुछ वर्षों का अनुभव - वित्तीय संकट, जलवायु परिवर्तन, महामारी, आतंकवाद और युद्ध - स्पष्ट रूप से दिखाता है कि वैश्विक शासन विफल हो गया है।"

वो देखते कैसे है... वो बोलते कैसे हैं...वो चलते कैसे हैं.... वो मिलते कैसे हैं... वो खाते क्या हैं वो पहनते क्या हैं सभी पर भारत ही नहीं दुनिया की निगाहें रहती हैं। अमेरिकी मार्केटिंग गुरु और ब्रांडिंग पर कई पुस्तकों के लेखक डेविड आकर ने अप्रैल 2012 के ब्लॉग पोस्ट में लिखा था कि प्रत्येक व्यक्ति का एक ब्रांड होता है जो प्रभावित करता है कि उस व्यक्ति को कैसे देखा जाता है और क्या उसे पसंद किया जाता है और उसका सम्मान किया जाता है।

पीएम ने लोकसभा में संसद के विशेष सत्र सितंबर 2023 को संबोधित किया: "जी20 के दौरान, भारत 'विश्व मित्र' के रूप में उभरा": उन्होंने कहा, "यह सभी के लिए गर्व की बात है कि भारत ने 'विश्व मित्र' के रूप में अपनी जगह बनाई है ' और पूरी दुनिया भारत में एक दोस्त देख रही है।' इसका कारण वेदों से लेकर विवेकानन्द तक मिले हमारे संस्कार हैं। सबका साथ सबका विकास का मंत्र हमें दुनिया को अपने साथ लाने के लिए एकजुट कर रहा है"

"क्या हम एक छोटे कैनवास पर बड़े चित्र बना सकते हैं? अगर हम अपने विचारों का दायरा नहीं बढ़ा सके तो नए भारत की तस्वीर नहीं बना पाएंगे। अगले 25 वर्षों के अमृत काल में भारत को बड़े कैनवास पर काम करना है।" मोदी

पीएम मोदी ने संकेत दिया कि गुटनिरपेक्ष आंदोलन (NAM) ने अपना उद्देश्य पूरा कर लिया है और अब भारत पूरी दुनिया के मित्र विश्वामित्र के रूप में उभरा है। "अब, भारत की स्थिति अलग है। हम अब विश्वामित्र के रूप में विकसित हो गए हैं... G20 में, हमने एक जैव ईंधन गठबंधन बनाया है। यह एक बड़ा आंदोलन होगा और भारत उस आंदोलन का नेतृत्व करेगा, "मोदी ने कहा।

पीएम मोदी ने जीवन की गुणवत्ता पर ध्यान केंद्रित करने और कुशल जनशक्ति की वैश्विक आवश्यकता को पूरा करने में भारत कैसे मदद कर सकता है, इसके बारे में भी बात की। "हमने 150 नर्सिंग कॉलेज खोले। पूरी दुनिया में नर्सों की भारी मांग है। हम दुनिया को कुशल जनशक्ति प्रदान करेंगे। इसके लिए हमें सही समय पर सही निर्णय लेने होंगे। हम खुद को राजनीतिक लाभ और हानि का बंधक नहीं बना सकते।"

विश्व-मित्र की नीति के साथ आगे बढ़ रहा भारत। पी एम मोदी ने ग्लोबल मंच पर भारत के रुख और महत्व की भी चर्चा की। उन्होंने कहा, 'शीत युद्ध में हमारी नीति गुट-निरपेक्ष देश की थी।आज हम विश्व-मित्र की नीति के साथ आगे बढ़ रहे हैं। G20 में भारत, ग्लोबल साउथ की आवाज बनकर उभरा है। G20 में जो बीज बोया गया है वो भविष्य में एक वट-वृक्ष बनकर उभरेगा'।

भारत विश्व मंत्र के साथ विश्व मित्र के रूप में उभरा है:

दिल्ली में G20 नेताओं के शिखर सम्मेलन में उपस्थित 35 से अधिक देशों के नेताओं ने इन शब्दों को न केवल याद किया है, बल्कि उन्होंने इसे प्रकट होते भी देखा है। भारत 'विश्वामित्र' या विश्व का मित्र बनकर उभरा है। इंडोनेशिया, ब्राजील और दक्षिण अफ्रीका जैसे उभरते देशों

की मदद से, G20 शेरपा अमिताभ कांत गर्व से यह घोषणा करने में सक्षम थे कि दिल्ली घोषणा, जो 38 पृष्ठों में थी, में 80 से अधिक पैराग्राफों में से किसी में कोई फुटनोट या विवादित पंक्ति नहीं जोड़ी गई थी, जिसमें सर्वसम्मत सहमति थी। .

अत्यधिक ध्रुवीकृत दुनिया में संघर्ष के समय आम सहमति हासिल करने की क्षमता मील का पत्थर है। इसने रिश्तों को प्रबंधित करने और सभी क्षेत्रों में मित्रता बनाए रखने की भरत की क्षमता को प्रदर्शित किया। तब प्रधानमंत्री मोदी ने 'विश्वामित्र भारत' के मुख्य प्रतिनिधि के रूप में सबका साथ यानी समावेशन का 'विश्व मंत्र' दिया था। अफ्रीकी संघ का स्थायी सदस्य के रूप में शामिल होना सबका साथ का सबसे बड़ा प्रमाण है ।

प्रधान मंत्री द्वारा कोणार्क व्हील, जिसे कालचक्र भी कहा जाता है, के सामने सभी नेताओं का व्यक्तिगत रूप से स्वागत किया गया। 24 तीलियों वाला पहिया, भारत के राष्ट्रीय ध्वज में भी अपनाया गया है, और भारत के प्राचीन ज्ञान, उन्नत सभ्यता और वास्तुशिल्प उत्कृष्टता का प्रतीक है। कोणार्क पहिए की घूमती गति समय के साथ-साथ प्रगति और निरंतर परिवर्तन का भी प्रतीक है। यह लोकतंत्र के पहिये के एक शक्तिशाली प्रतीक के रूप में कार्य करता है जो लोकतांत्रिक आदर्शों के लचीलेपन और समाज में प्रगति के प्रति प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

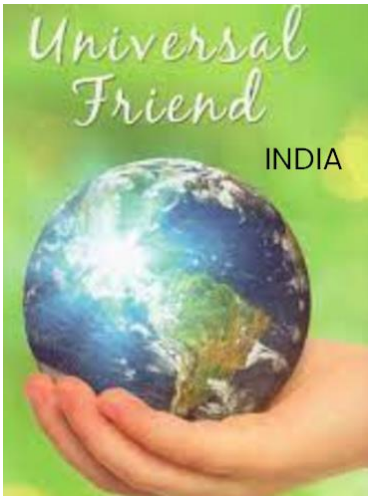

भारत को कई कारणों से "विश्व मित्र" (सार्वभौमिक मित्र) कहा जाता है:भारत का प्राचीन दर्शन और संस्कृति सभी लोगों के बीच शांति, सद्भाव और सहयोग पर जोर देती है। "वसुधैव कुटुंबकम" (दुनिया एक परिवार है) की वैदिक अवधारणा इस विश्वदृष्टिकोण को दर्शाती है। भारत की आध्यात्मिक परंपराओं ने कई प्रमुख हस्तियों को भी जन्म दिया है जिन्होंने सार्वभौमिक प्रेम और करुणा के संदेश का प्रचार किया है, जैसे कि महात्मा गांधी, स्वामी विवेकानंद और दलाई लामा।

भारत में विभिन्न संस्कृतियों और सभ्यताओं के बीच संवाद और समझ को बढ़ावा देने का एक लंबा इतिहास रहा है। यह देश सदियों से दुनिया भर के लोगों का घर रहा है, और इसने एक समृद्ध सांस्कृतिक टेपेस्ट्री को जन्म दिया है। भारत

अंतरधार्मिक संवाद के क्षेत्र में भी अग्रणी रहा है और इस विषय पर कई विश्व सम्मेलनों की मेजबानी की है।

पीएम मोदी ने अपनी प्रारंभिक टिप्पणी में दिल्ली के फ़िरोज़ शाह कोटला में टोपरा अशोकन स्तंभ में उकेरे गए प्राकृत उद्धरण का उल्लेख किया। प्राचीन स्तंभ पर अंकित श्लोक कहता है: "मानवता का कल्याण और खुशी हमेशा सुनिश्चित की जानी चाहिए।" पीएम ने कहा कि भारत ने 2,000 साल पहले दुनिया को यह संदेश दिया था।

मूल उद्धरण - **"हेवम लोकसा हित-सुखे ती, अथ इयम नातिसु हेवम" - स्तंभ पर अंकित** छठे शिलालेख का एक हिस्सा है। अशोक के शिलालेखों को सही सिद्धांत और जीवन संहिता का प्रसार करने के लिए स्तंभों पर अंकित किया गया था जो लोगों के कल्याण के लिए दया, सहनशीलता और चिंता की बात करता है।

भारत ने शांति और अहिंसा के वैश्विक आंदोलन में अग्रणी भूमिका निभाई है। महात्मा गांधी के सत्याग्रह (अहिंसक प्रतिरोध) के दर्शन ने दुनिया भर के लोगों को प्रेरित किया है, और भारत शांतिपूर्ण संघर्ष समाधान का एक मजबूत समर्थक रहा है। संयुक्त राष्ट्र के शांति मिशनों में भी भारत का प्रमुख योगदान रहा है।

भारत ने वैश्विक अर्थव्यवस्था और विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। देश अब दुनिया की सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्थाओं में से एक है, और अंतर्राष्ट्रीय व्यापार और निवेश में एक प्रमुख खिलाड़ी है। भारत अन्य देशों को तकनीकी सहायता और विकास सहायता प्रदान करने में भी अग्रणी रहा है।

भारत अंतर्राष्ट्रीय समुदाय का एक जिम्मेदार और रचनात्मक सदस्य है। देश संयुक्त राष्ट्र, विश्व व्यापार संगठन और जी20 जैसे कई प्रमुख अंतरराष्ट्रीय संगठनों का सदस्य है। भारत ने अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन और आपदा प्रतिरोधी बुनियादी ढांचे के लिए गठबंधन जैसी पहलों में भी अग्रणी भूमिका निभाई है।

हाल के वर्षों में भारत एक प्रमुख वैश्विक शक्ति के रूप में उभरा है। देश की बढ़ती आर्थिक और सैन्य ताकत, साथ ही लोकतंत्र और बहुलवाद के प्रति इसकी प्रतिबद्धता ने इसे विश्व मंच पर एक प्रमुख खिलाड़ी बना दिया है। आने वाले वर्षों में "विश्व मित्र" के रूप में भारत की भूमिका और भी महत्वपूर्ण होने की संभावना है।

विश्व मित्र के रूप में भारत की भूमिका के उदाहरण: वैश्विक संकटों में नेतृत्व: प्रधानमंत्री मोदी की COVID-19 महामारी और चल रहे यूक्रेन युद्ध के दौरान उनके नेतृत्व के लिए प्रशंसा की गई है। उन्हें भारत को महामारी के सबसे बुरे प्रभावों से बचाने के लिए निर्णायक कार्रवाई करने और संकट से निपटने के अंतरराष्ट्रीय प्रयासों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने का श्रेय दिया गया है। यूक्रेन युद्ध के मामले में, मोदी ने संघर्ष को सुलझाने के लिए बातचीत और कूटनीति का आह्वान किया है, और दोनों पक्षों के बीच मध्यस्थता में भारत की सहायता की पेशकश की है।

भारत द्वारा जरूरतमंद देशों को मानवीय सहायता का प्रावधान, जैसे कि 2015 में नेपाल में आए भूकंप के दौरान।

जलवायु परिवर्तन के खिलाफ लड़ाई में भारत का नेतृत्व, जैसे पेरिस समझौते के प्रति उसकी प्रतिबद्धता।

आतंकवाद और साइबर अपराध जैसे मुद्दों पर अंतर्राष्ट्रीय सहयोग को बढ़ावा देने के भारत के प्रयास।

विश्व मित्र के रूप में भारत की भूमिका के बारे में उद्धरण:

"भारत दुनिया के लिए आशा और अवसर की भूमि है।" - नेल्सन मंडेला

"भारत तेजी से विभाजित होती दुनिया में लोकतंत्र और बहुलवाद का प्रतीक है।" - बराक ओबामा

बहुपक्षवाद के प्रति प्रतिबद्धता: मोदी बहुपक्षवाद के प्रबल समर्थक रहे हैं, और उन्होंने जी20, ब्रिक्स समूह और शंघाई सहयोग संगठन (एससीओ) सहित कई अंतरराष्ट्रीय संगठनों में अग्रणी भूमिका निभाई है। वह संयुक्त राष्ट्र के भी मुखर समर्थक रहे हैं और उन्होंने सुरक्षा परिषद में सुधार का आह्वान किया है ताकि इसे 21वीं सदी की दुनिया का अधिक प्रतिनिधि बनाया जा सके।

भारतीय संस्कृति और मूल्यों को बढ़ावा देना: मोदी विश्व मंच पर भारतीय संस्कृति और मूल्यों के अथक प्रवर्तक रहे हैं। उन्होंने योग, आयुर्वेद और अन्य पारंपरिक भारतीय प्रथाओं के महत्व के बारे में बात की है, और दुनिया भर के लोगों को भारत के समृद्ध इतिहास और विरासत के बारे में अधिक जानने के लिए प्रोत्साहित किया है।

विकास पर ध्यान: मोदी ने अपनी सरकार के लिए विकास को सर्वोच्च प्राथमिकता दी है, और भारत की आर्थिक वृद्धि को बढ़ावा देने के उद्देश्य से कई महत्वाकांक्षी पहल शुरू की हैं।

वह सतत विकास के भी प्रबल समर्थक रहे हैं और उन्होंने जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए तत्काल कार्रवाई का आह्वान किया है।

व्यक्तिगत करिश्मा: मोदी एक करिश्माई और लोकप्रिय नेता हैं जो दुनिया भर के लोगों से जुड़ने में सक्षम हैं। वह एक कुशल वक्ता हैं जो प्रेरक भाषण देने में सक्षम हैं, और उनकी सोशल मीडिया पर मजबूत उपस्थिति है जो उन्हें बड़े दर्शकों तक पहुंचने की अनुमति देती है।

इन कारकों के परिणामस्वरूप, मोदी को एक ऐसे विश्व नेता के रूप में देखा जाने लगा है जिनका जीवन के सभी क्षेत्रों के लोग सम्मान और प्रशंसा करते हैं। कई विश्व नेताओं द्वारा उन्हें "विश्व का मित्र" कहा गया है, और एक वैश्विक राजनेता के रूप में उनकी प्रतिष्ठा आने वाले वर्षों में बढ़ने की संभावना है।

प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी को कई कारणों से "विश्व मित्र" कहा गया है:

विश्व नेताओं के साथ उनके मजबूत व्यक्तिगत संबंध। मोदी ने अमेरिकी राष्ट्रपति जो बिडेन, रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन, चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग और जापानी प्रधान मंत्री फुमियो किशिदा सहित दुनिया भर के नेताओं के साथ घनिष्ठ संबंध विकसित किए हैं। इन रिश्तों ने भारत और अन्य देशों के बीच विश्वास और सहयोग बनाने में मदद की है।

भारत का बढ़ता आर्थिक एवं सामरिक महत्व। भारत दुनिया की सबसे तेजी से बढ़ती प्रमुख अर्थव्यवस्था है और 2030 तक तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने का अनुमान है। इस आर्थिक विकास ने भारत को वैश्विक मंच पर एक अधिक महत्वपूर्ण खिलाड़ी बना दिया है। इसके अतिरिक्त, हिंद महासागर में भारत की रणनीतिक स्थिति इसे क्षेत्रीय सुरक्षा में एक प्रमुख खिलाड़ी बनाती है।

भारत की सॉफ्ट पावर: भारत के पास एक समृद्ध संस्कृति और विरासत है, जिसने दुनिया भर में देश की सकारात्मक छवि पेश करने में मदद की है। इसके अतिरिक्त, भारत का प्रवासी दुनिया में सबसे बड़े और सबसे सफल में से एक है, और इसने विदेशों में भारत के हितों को बढ़ावा देने में मदद की है।

मोदी की "विश्व मित्र" स्थिति के कुछ उदाहरणों में शामिल हैं:

2015 में, मोदी को टाइम पत्रिका का पर्सन ऑफ द ईयर नामित किया गया था।

2016 में, फोर्ब्स पत्रिका द्वारा मोदी को दुनिया का नौवां सबसे शक्तिशाली व्यक्ति का दर्जा दिया गया था।

2018 में, मोदी को सियोल शांति पुरस्कार से सम्मानित किया गया था।

निष्कर्षतः, प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी को विश्व नेताओं के साथ उनके मजबूत व्यक्तिगत संबंधों, भारत के बढ़ते आर्थिक और रणनीतिक महत्व, बहुपक्षवाद के प्रति उनकी प्रतिबद्धता और भारत की नरम शक्ति के कारण व्यापक रूप से "विश्व मित्र" माना जाता है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अपने स्वतंत्रता दिवस भाषण में कहा कि विविध क्षेत्रों में भारत की उपलब्धियां दुनिया में स्थिरता ला रही हैं और यह 'विश्व-मित्र' के रूप में उभरा है, उन्होंने देश की बढ़ती वैश्विक छवि को अपनी सरकार की एक बड़ी उपलब्धि के रूप में पेश किया।

लाल किले की प्राचीर से लगातार 10वीं बार अपने संबोधन में, पीएम मोदी ने कहा कि भारत की ताकत और क्षमता के बारे में भारतीयों और दुनिया के मन में कोई "अगर या लेकिन" नहीं है और देश के विकासात्मक दृष्टिकोण को ध्यान में रखना चाहिए। वैश्विक कल्याण का भी ध्यान रखें।

भू-राजनीति के बदलते स्वरूप, खासकर कोविड-19 महामारी के बाद, का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि 140 करोड़ भारतीयों की ताकत बदलती विश्व व्यवस्था में प्रतिबिंबित हो रही है।

उन्होंने कहा, "वैश्विक अर्थव्यवस्था और वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला में भारत की भागीदारी और भारत ने अपने लिए जो स्थान अर्जित किया है, उसके साथ मैं पूरे विश्वास के साथ कह सकता हूं कि आज भारत का वर्तमान परिदृश्य दुनिया में स्थिरता की गारंटी लेकर आया है।" .

"अब हमारे मन में, या मेरे 140 करोड़ परिवार के सदस्यों के मन में, या दुनिया के मन में कोई 'अगर' या 'लेकिन' नहीं है। पूरा विश्वास है। अब गेंद हमारे पाले में है; हमें करना चाहिए अवसर को जाने न दें," उन्होंने कहा।

अपने लगभग 90 मिनट के भाषण में, पीएम मोदी ने जलवायु परिवर्तन, आर्थिक मंदी जैसी विभिन्न वैश्विक चुनौतियों से निपटने में भारत के योगदान पर प्रकाश डाला, उन्होंने कहा कि भारत से "प्रकाश की किरण" उठी है, जिसे दुनिया अपने लिए एक रोशनी के रूप में देख रही है।

प्रधान मंत्री मोदी ने कहा कि भारत आज वैश्विक कल्याण के लिए एक मजबूत नींव रख रहा है और यह "इस मजबूत नींव पर निर्माण करना हमारी सामूहिक जिम्मेदारी है"।

उन्होंने कहा, "वैश्विक विशेषज्ञ कह रहे हैं कि भारत अब अजेय है।" उन्होंने कहा, "हमारे राष्ट्रीय प्रयासों को विश्व कल्याण के साथ जोड़ा जाना चाहिए।" पीएम मोदी ने कहा कि दुनिया को कोविड महामारी से निपटने में मदद करने में अपने योगदान के बाद भारत 'विश्व-मित्र' और 'विश्व का अटूट साथी' (दुनिया का विश्वसनीय भागीदार) के रूप में उभरा है।

पीएम मोदी ने कहा कि कोविड के बाद एक नई वैश्विक व्यवस्था और एक नया भू-राजनीतिक समीकरण तेजी से उभर रहा है। .....मेरा दृढ़ विश्वास है कि जैसे दूसरे विश्व युद्ध के बाद दुनिया ने एक नई विश्व व्यवस्था बनाई, मैं स्पष्ट रूप से देख सकता हूं कि कोरोना के बाद एक नई विश्व व्यवस्था, एक नई वैश्विक व्यवस्था, एक नया भू-राजनीतिक समीकरण तेजी से आगे बढ़ रहा है।"

"भू-राजनीतिक समीकरण की सभी व्याख्याएं बदल रही हैं, परिभाषाएं बदल रही हैं। मेरे प्रिय परिवार के सदस्यों, आपको गर्व होगा कि दुनिया बदलती दुनिया को आकार देने में मेरे 140 करोड़ साथी नागरिकों की क्षमताओं को देख रही है। आप एक मोड़ पर खड़े हैं बिंदु," उन्होंने कहा।

प्रधान मंत्री ने कहा कि दुनिया ने भारत की क्षमताओं को कोविड के दौरान देखा है जब प्रमुख आपूर्ति श्रृंखलाएं बाधित हुईं और जब बड़ी अर्थव्यवस्थाओं पर दबाव था। .....जब दुनिया की सप्लाई चेन बाधित हुई थी, जब बड़ी अर्थव्यवस्थाओं पर दबाव था, उस वक्त भी हमने कहा था कि हमें दुनिया का विकास देखना है।"

"यह मानव केंद्रित और मानवीय होना चाहिए; तभी हम समस्याओं का सही समाधान ढूंढ पाएंगे। और कोविड ने हमें सिखाया है या हमें यह एहसास कराने के लिए मजबूर किया है कि मानवीय संवेदनाओं को छोड़कर हम दुनिया का कल्याण नहीं कर सकते।" "

प्रधान मंत्री ने कहा मोदी ने कहा कि भारत आज ग्लोबल साउथ की आवाज बन रहा है और भारत की समृद्ध विरासत दुनिया के लिए ताकत बन रही है।

देश की आर्थिक वृद्धि पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने कहा, "आने वाले पांच वर्षों में, भारत शीर्ष तीन अर्थव्यवस्थाओं में होगा - यह पीएम मोदी की गारंटी है।" उन्होंने कहा, "पिछले साल बाली में जी20 शिखर सम्मेलन में विकसित देशों के नेताओं समेत हर कोई डिजिटल इंडिया की सफलता के बारे में जानना चाहता था।"

प्रधान मंत्री ने कहा, "हर कोई इसकी सफलता जानना चाहता था और मैंने कहा कि भारत ने जो कुछ भी किया है, वह मुंबई, दिल्ली और कोलकाता तक ही सीमित नहीं है, बल्कि टियर-2 और टियर-3 शहरों के युवा भी विभिन्न क्षेत्रों में योगदान दे रहे हैं।.....दुनिया अभी कोरोना के दुष्प्रभाव से बाहर नहीं आई है, युद्ध ने फिर एक अतिरिक्त समस्या पैदा कर दी है। आज दुनिया महंगाई के संकट से जूझ रही है।"

प्रधान मंत्री ने कहा, "मुद्रास्फीति ने पूरी दुनिया की अर्थव्यवस्था को जकड़ लिया है। हम दुनिया भर से कुछ सामान भी आयात करते हैं। दुर्भाग्य से, हमें बढ़ी हुई कीमतों पर आयात

करना पड़ता है। इसलिए, पूरी दुनिया मुद्रास्फीति की चपेट में है।.....पीएम मोदी ने कहा कि भारत ने महंगाई पर काबू पाने की पूरी कोशिश की है.....भारत को जानने और समझने की इच्छा बढ़ रही है।.....दुनिया में शायद ही कोई रेटिंग एजेंसी है जो भारत की प्रशंसा नहीं कर रही हो।"

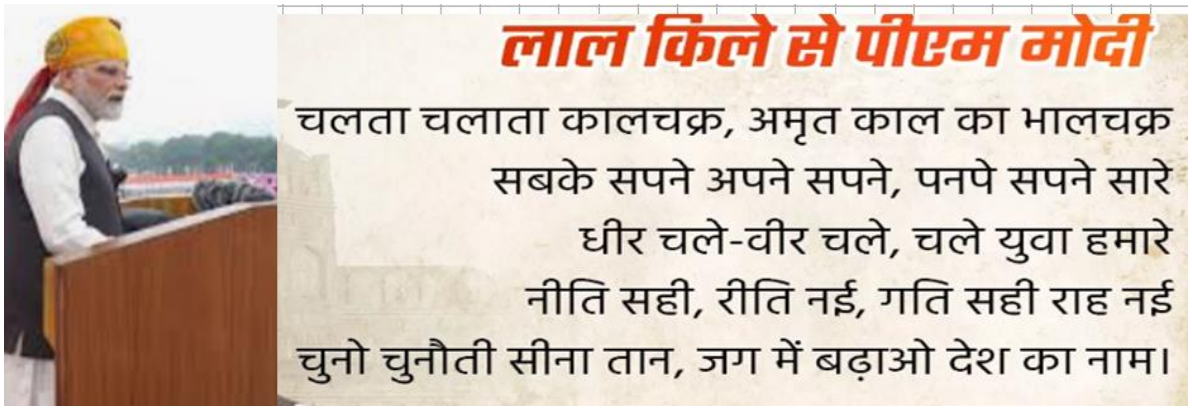

लाल किले की प्राचीर से 77वें स्वतंत्रता दिवस पर **राष्ट्र को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री मोदी** ने कहा कि भारत के सामर्थ्य को लेकर भारतीयों और दुनिया के मन में कोई किन्तु, परंतु नहीं है और विकास को लेकर देश का दृष्टिकोण वैश्विक कल्याण होना चाहिए।

पीएम मोदी ने कई क्षेत्रों में दुनिया के लिए भारत के दृष्टिकोण के बारे में भी बात की।

"हमने नवीकरणीय ऊर्जा के क्षेत्र में 'वन सन, वन वर्ल्ड, वन ग्रिड' कहा। यह हमारी ओर से एक महत्वपूर्ण बयान है और आज दुनिया इसे स्वीकार कर रही है। COVID-19 के बाद, हमने दुनिया को बताया कि हमारा दृष्टिकोण क्या होना चाहिए 'एक पृथ्वी, एक स्वास्थ्य'।"

"हमने जी20 शिखर सम्मेलन के लिए **'एक विश्व, एक परिवार, एक भविष्य'** की अवधारणा रखी है और उस दिशा में काम कर रहे हैं।.....दुनिया जलवायु संकट से जूझ रही है, ऐसे में भारत ने रास्ता दिखाया है और पर्यावरण के लिए लाइफस्टाइल - मिशन LiFE पहल शुरू की है।.....हमने दुनिया के साथ मिलकर अंतरराष्ट्रीय सौर गठबंधन बनाया और कई देश अब अंतरराष्ट्रीय सौर गठबंधन का हिस्सा हैं।.....

पीएम मोदी ने कहा कि जी-20 समूह ने भी महिलाओं के नेतृत्व वाले विकास के भारत के दृष्टिकोण को स्वीकार किया है।.....यह निश्चित है कि भारत की क्षमताएं और संभावनाएं विश्वास की नई ऊंचाइयों को पार करने के लिए तैयार हैं, और क्षमताओं और नई ताकतों में इस नए विश्वास को पोषित किया जाना चाहिए।"

"आज देश को G-20 शिखर सम्मेलन की मेजबानी करने का अवसर मिला है। और जिस प्रकार से पिछले वर्ष से भारत के हर कोने में G-20 के विभिन्न कार्यक्रम और कार्यक्रम आयोजित किए गए हैं, उन्होंने आम लोगों की क्षमताओं को प्रदर्शित किया है। दुनिया।" उन्होंने उल्लेख किया

पीएम मोदी ने कहा, "इन आयोजनों ने भारत की विविधता का परिचय दिया है। दुनिया भारत की विविधता को आश्चर्य से देख रही है और इसके परिणामस्वरूप भारत के प्रति आकर्षण भी बढ़ा है।"

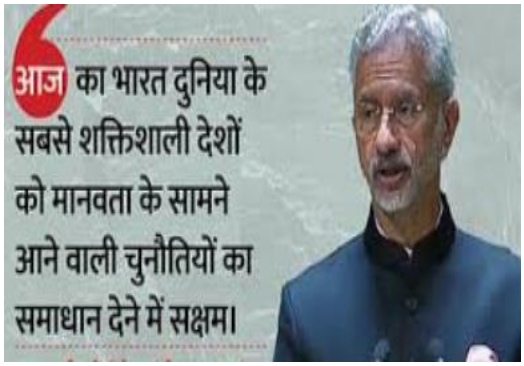

IORA मंच पर जयशंकर ने भारत को 'विश्व मित्र' बताया

कोलंबो, 11 अक्टूबर (भाषा) विदेश मंत्री एस जयशंकर ने बुधवार को भारत को 'विश्व मित्र' यानी दुनिया का मित्र और वैश्विक दक्षिण की आवाज बताया।

अगले दो वर्षों के लिए उपाध्यक्ष के रूप में, "भारत, विश्वमित्र, या विश्व का मित्र, वैश्विक दक्षिण की आवाज़, वास्तविक क्षमता को साकार करने की दिशा में IORA के संस्थागत, वित्तीय और कानूनी ढांचे को मजबूत करने के लिए IORA के सदस्य देशों के साथ काम करेगा। इस गतिशील समूह का, "जयशंकर ने कहा।

जयशंकर ने कहा, "यह वसुधैव कुटुंबकम का संदेश है, 'दुनिया एक परिवार है', जो आईओआरए सदस्य देशों को एक साथ लाने के लिए एक बाध्यकारी शक्ति हो सकती है।" उन्होंने यह भी कहा कि भारत महिलाओं के नेतृत्व वाले विकास पर ध्यान केंद्रित करके महिलाओं की शक्ति या नारी शक्ति का उपयोग करने में आईओआरए की भी मदद करेगा।

26 सितंबर 2023: *जयशंकर ने यूएनजीए में एक वैश्विक मित्र के रूप में भारत की भूमिका और जी20 की अध्यक्षता पर प्रकाश डाला। उन्होंने वैश्विक चिंताओं को दूर करने और विविध भागीदारों के साथ सहयोग को बढ़ावा देने की भारत की प्रतिबद्धता पर जोर दिया।*

विदेश मंत्री एस जयशंकर ने न्यूयॉर्क में संयुक्त राष्ट्र महासभा (यूएनजीए) को संबोधित किया और भारत की अध्यक्षता में आयोजित जी20 शिखर सम्मेलन के दौरान भारत के 'विश्व मित्र' के रूप में विकसित होने पर प्रकाश डाला। जयशंकर ने कहा, "गुटनिरपेक्षता के युग से, हम अब विश्व मित्र के युग में विकसित हो गए हैं।"

जयशंकर ने जोर देकर कहा, "जब हम एक अग्रणी शक्ति बनने की आकांक्षा रखते हैं, तो यह आत्म-संतुष्टि के लिए नहीं बल्कि बड़ी जिम्मेदारियां उठाने और अधिक महत्वपूर्ण योगदान देने के लिए है।" उनके शब्दों में वैश्विक मुद्दों से निपटने के लिए सामूहिक प्रयास का आह्वान प्रतिबिंबित हुआ।
"विश्वमित्र" की विकसित होती अवधारणा: जयशंकर ने गुटनिरपेक्षता के युग से "विश्वामित्र" की समकालीन अवधारणा में बदलाव का उल्लेख किया, जो वैश्विक समुदाय के विकास को दर्शाता है।
संकीर्ण हितों से परे एक दृष्टि: नहीं है, बल्कि कई देशों की प्राथमिक चिंताओं पर ध्यान केंद्रित करने का एक प्रयास है।" जयशंकर का बयान एक ऐसे भविष्य को आकार देने की सामूहिक जिम्मेदारी के विचार से मेल खाता है जो भू-राजनीतिक सीमाओं से परे है और सभी देशों की भलाई को प्राथमिकता देता है।
भारत का गुटनिरपेक्षता से आगे बढ़ना और "विश्व मित्र" के रूप में देखा जा रहा है।

विदेश नीति के प्रति भारत के नए दृष्टिकोण को "व्यावहारिक बहुपक्षवाद" के रूप में वर्णित किया गया है। इसका मतलब यह है कि भारत किसी भी देश के साथ काम करने को तैयार है, चाहे उसकी विचारधारा या राजनीतिक व्यवस्था कुछ भी हो, जब तक यह भारत के राष्ट्रीय हित में है। इस दृष्टिकोण ने भारत को दुनिया भर के देशों के साथ व्यापक साझेदारी बनाने में मदद की है।

निष्कर्ष:

भारत गुटनिरपेक्षता से आगे बढ़कर वैश्विक मंच पर अधिक सक्रिय खिलाड़ी बन गया है। यह कई कारकों के कारण है, जिनमें भारत की बढ़ती आर्थिक और सैन्य शक्ति, इसका बदलता सुरक्षा वातावरण और अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था को आकार देने में बड़ी भूमिका निभाने की इच्छा शामिल है।

भारत अब मानवीय सहायता और आपदा राहत का अग्रणी प्रदाता, सतत विकास का एक मजबूत समर्थक और मुक्त व्यापार और वैश्वीकरण का चैंपियन है। भारत अधिक शांतिपूर्ण और समृद्ध विश्व के निर्माण के लिए अन्य देशों के साथ काम करने के लिए भी प्रतिबद्ध है।

उदाहरणों और उद्धरणों के साथ चर्चा करें "भारत अब गुटनिरपेक्ष नीति से आगे बढ़ चुका है और विश्व मित्र के रूप में सक्रिय है"

यह कथन कि "भारत अब गुटनिरपेक्ष नीति से आगे बढ़ चुका है और एक विश्व मित्र के रूप में सक्रिय है" भारत की विकसित हो रही विदेश नीति के रुख को दर्शाता है। ऐतिहासिक रूप से, भारत की गुटनिरपेक्ष नीति की विशेषता शीत युद्ध के दौरान किसी भी प्रमुख शक्ति गुट के साथ गठबंधन न करना था। हालाँकि, हाल के वर्षों में, भारत दुनिया भर के विभिन्न देशों के साथ रणनीतिक साझेदारी और गठबंधन बनाने में अधिक सक्रिय रहा है। आइए इस कथन पर उदाहरणों और उद्धरणों के साथ चर्चा करें:

प्रमुख शक्तियों के साथ रणनीतिक साझेदारी: भारत ने संयुक्त राज्य अमेरिका जैसी प्रमुख शक्तियों के साथ घनिष्ठ संबंध विकसित किए हैं। 2016 में, पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति बराक ओबामा ने भारतीय प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी के साथ अपने संयुक्त बयान में कहा, "संयुक्त राज्य अमेरिका और भारत ने 'अनिवार्य साझेदारों' के रूप में हमारी साझेदारी को बढ़ाया है।" यह दुनिया के साथ अधिक सक्रिय जुड़ाव की ओर बदलाव का प्रतिनिधित्

एक्ट ईस्ट नीति: भारत की "एक्ट ईस्ट" नीति, इसकी पिछली "लुक ईस्ट" नीति का विस्तार है, जिसका उद्देश्य एशिया-प्रशांत क्षेत्र के देशों के साथ आर्थिक और रणनीतिक संबंधों को बढ़ाना है। गुटनिरपेक्षता से सक्रिय जुड़ाव की ओर यह बदलाव जापान और दक्षिण कोरिया जैसे देशों के साथ भारत की बढ़ती साझेदारी में देखा जा सके।

USA जापान और ऑस्ट्रेलिया के साथ चतुर्भुज सुरक्षा वार्ता (क्वाड) में भारत की भागीदारी सख्त गुटनिरपेक्ष रुख से हटने का एक प्रमुख उदाहरण है। भारतीय प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा, "क्वाड वयस्क हो गया है। यह अब क्षेत्र में स्थिरता का एक महत्वपूर्ण स्तंभ बना रहेगा।"

इज़राइल के साथ द्विपक्षीय संबंध: भारत का इजरायल के साथ मजबूत होते रिश्ते उसकी विकसित हो रही विदेश नीति का एक और संकेत है।

रक्षा, प्रौद्योगिकी और कृषि जैसे क्षेत्रों में सहयोग के साथ, पिछले कुछ वर्षों में इज़राइल के साथ भारत के रिश्ते गहरे हुए हैं। जैसा कि भारतीय प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा, "हमारा द्विपक्षीय सहयोग हमारे पारंपरिक क्षेत्रों से आगे बढ़कर हाई-टेक, रक्षा और कृषि तक बढ़ गया है।"

मानवीय कूटनीति: भारत ने मानवीय कूटनीति में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। कोविड-19 महामारी के दौरान, भारत ने विभिन्न देशों को टीके की आपूर्ति की और वैश्विक नेताओं से प्रशंसा अर्जित की। संयुक्त राष्ट्र महासचिव एंटोनियो गुटेरेस ने भारत की सराहना करते हुए कहा, "मैं वैश्विक कोविड-19 प्रतिक्रिया में भारत के निरंतर समर्थन के लिए बहुत आभारी हूं।"

बहु-संरेखण दृष्टिकोण: भारत की विदेश नीति को "बहु-संरेखण" दृष्टिकोण के रूप में जाना जा सकता है, जहां यह विभिन्न देशों के साथ अच्छे संबंध बनाए रखता है। जैसा कि पूर्व भारतीय विदेश सचिव श्याम सरन ने कहा, "बहु-संरेखण भारत को विभिन्न देशों के साथ अपने संबंधों को अनुकूलित करने और अपने राष्ट्रीय हितों के आधार पर अपनी विदेश नीति को आकार देने की अनुमति देता है।"

भारत की विदेश नीति वास्तव में शीत युद्ध के दौर के सख्त गुटनिरपेक्ष रुख से आगे विकसित हुई है। इसने अपनी संप्रभुता और स्वतंत्र विदेश नीति को बनाए रखते हुए विभिन्न देशों के साथ सक्रिय रूप से संपर्क किया है और रणनीतिक साझेदारियां बनाई हैं। "विश्व मित्र" बनने की दिशा में बदलाव भारत के घनिष्ठ संबंधों, रणनीतिक गठबंधनों और अंतर्राष्ट्रीय मामलों में अधिक प्रमुख भूमिका की खोज में स्पष्ट है।

“भारत विदेशी संबंधों में गुटनिरपेक्षता की नीति से आगे बढ़ गया है और वर्तमान में विभिन्न देशों और समूहों के साथ गठबंधन कर रहा है, लेकिन राष्ट्रीय हित से जुड़े मुद्दों पर, न कि वैचारिक शर्तों पर। हम 1950 और 60 के दशक का भारत नहीं हैं। दुनिया के सभी हिस्सों में, दुनिया से संबंधित सभी मुद्दों पर हमारी बड़ी हिस्सेदारी है। और इसलिए, मेरे विचार से, हमें समूहों, देशों के साथ जुड़ना चाहिए , उन मुद्दों के साथ जहां राष्ट्रीय हित शामिल है, “ विदेश सचिव विजय गोखले

भारतीय विदेश नीति के पिछले 75 वर्षों का हम 2047 के "अमृत काल" दृष्टिकोण के अनुरूप भारत की विदेश नीति की आशा करता है। यह एक मूल्यवान अतिरिक्त होगा यह भारतीय विदेश नीति का विषय है और यह विद्वानों, शोधकर्ताओं, राजनयिक अभ्यासकर्ताओं के साथ-साथ रणनीतिक समुदाय के लिए भी उपयोगी होगा। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी

अमृत काल कह रहा है कि हमें आज भी औपनिवेशिक मानसिकता से बाहर आने की जरूरत है।

एक उपमहाद्वीप होने के नाते, भारत की विदेश नीति में महाद्वीपीय और समुद्री दोनों पहलू हैं। इंडो-पैसिफिक के तेजी से महत्वपूर्ण और विवादित क्षेत्र बनने के साथ, भारत ने अपना दृष्टिकोण स्पष्ट किया और 2019 में प्रधान मंत्री मोदी ने इंडो-पैसिफिक का प्रस्ताव रखा

महासागर पहल (आईपीओ) जो 7 स्तंभों के तहत व्यावहारिक सहयोग के साथ समुद्री क्षेत्र को बेहतर प्रबंधन, संरक्षण और बनाए रखने के लिए भारत के सहयोगात्मक प्रयास को रेखांकित करता है।

समकालीन भारतीय विदेश नीति को तेजी से ऐसे शब्दों, वाक्यांशों में व्यक्त किया जा रहा है, जो प्राचीन हैं लेकिन कौन से हैं

वास्तव में कभी दूर नहीं गए हैं। लेकिन हो सकता है कि पिछले कुछ दशकों में वे अनुपयोगी हो गए हों। भारत की समृद्ध, सांस्कृतिक विरासत और विचार नेतृत्व का जिक्र करते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अपनी बात रखी

कई बार कुछ विचार जो ताज़ा लगते हैं लेकिन पहले भी व्यक्त किए गए थे, हालांकि इतने सशक्त नहीं थे। 'वसुधैव'कुटुंबकम' ऐसा ही एक उदाहरण है। लेकिन यदि आप अन्य को देखें, तो आप 'सभी के लिए सुरक्षा और विकास' (सागर) जैसे बैनर शीर्षक विचारों को जानते हैं।

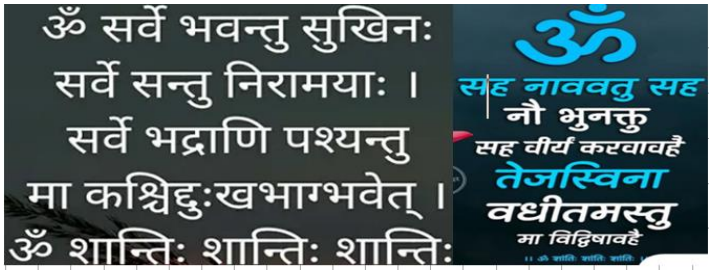

'सर्वे भवन्तु सुखिनः' की भावना में और कई वैदिक भजनों में व्यक्त सामंजस्यपूर्ण ढंग से एक साथ काम करने की भावना में और जिसका एक उदाहरण है 'ओम सह नाववतु, सह नौ भुनक्तु, सह वीर्य करवावहे'। इसलिए, बड़ी संख्या में वैदिक भजन हैं जिनका प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने हाल ही में 'वसुधैव' के इस विषय को रेखांकित करने और समझाने के लिए आह्वान किया है।

"प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में, हम भारतीय अधिक साहसी और स्पष्टवादी हो गए हैं तथा भारत की संस्कृति और सभ्यता के बारे में कम क्षमाप्रार्थी हो गए हैं।"

PM Modi spoke of human centric globalisation through his 4R matrix to re-energise the world, we should together call for a global agenda of 'Respond, Recognize, Respect and Reform': Respond to the priorities of the Global South by framing an inclusive and balanced international agenda.

संयुक्त राष्ट्र शिखर सम्मेलन और अन्य बैठकों में आतंकवाद के खिलाफ मोदी की कड़ी वकालत, विशेष रूप से राज्य प्रायोजित आतंकवाद के खिलाफ

भारतीय विदेश नीति के 75 वर्ष: "भारतीय विदेश नीति के 75 वर्षों का उत्सव" पर दो दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी पर मीडिया विज्ञप्ति, 17-18 जनवरी 2023. आईसीडब्ल्यूए ने 17-18 जनवरी 2023 को सप्रू हाउस, नई दिल्ली में "भारतीय विदेश नीति के 75 वर्षों का उत्सव" नामक दो दिवसीय ऑनलाइन अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन हुआ।

**प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 2018 में लंदन हॉल में फरवरी 2018 में रामल्ला की यात्रा का जिक्र करते हुए कहा था कि, "हां, मैं इज़राइल जाऊंगा और मैं फिलिस्तीन भी जाऊंगा"। "मैं आगे सऊदी अरब के साथ सहयोग करूंगा और भारत की ऊर्जा जरूरतों के लिए मैं ईरान के साथ भी जुड़ूंगा।

इज़राइल-फिलिस्तीन, ईरान-इज़राइल, अमेरिका-रूस और सऊदी अरब या जीसीसी और ईरान और यहां तक कि कुछ हद तक अमेरिका-चीन भी ऐसे कुछ उदाहरण हैं। इस प्रकार, भारत की नीति को शायद एक और 3डी दृष्टिकोण के रूप में परिभाषित किया जा सकता है - जो है संवाद। कूटनीति, अपने स्वयं के विकास के लिए और बड़े अर्थों में वैश्विक भलाई के लिए डी-हाइफ़नेशन।

भारत की पड़ोस प्रथम नीति, एक्ट ईस्ट नीति या उस मामले के लिए पश्चिम की ओर देखो नीति सभी केंद्रित पहलों के माध्यम से अपने रणनीतिक विकल्पों को आगे ले जा रही हैं क्योंकि इसका पड़ोस विशेष रूप से चीन, अफगानिस्तान और पाकिस्तान और आतंकवाद के प्रायोजन के संबंधित आयाम के संबंध में कटु बना हुआ है। इन देशों द्वारा. चीन हर भूगोल में एक चुनौती बना रहेगा क्योंकि पाकिस्तान से अधिक यथार्थवादी तरीके से निपटा जा रहा है।

नरेन्द्र मोदी को 26 मई 2014 को राष्ट्रपति भवन में भारत के प्रधानमन्त्री के पद की शपथ दिलाई गयी थी। वे भारत के प्रथम प्रधानमन्त्री हैं जिनका जन्म भारत की स्वतन्त्रता (15 अगस्त 1947) के बाद हुआ है। उनके मंत्रिमण्डल में 45 मन्त्री हैं जो इसके पूर्व के यूपीए सरकार में मंत्रियों की संख्या से 25 कम है। नवम्बर 2014 में पुनः 21 ने मन्त्री बनाए गए। सम्प्रति उनके मन्त्रिमण्डल में कुल 78 मन्त्री हैं। 24 मई 2019 को, उन्हें राष्ट्रपति भवन में लगातार दूसरी बार भारत के प्रधान मंत्री के रूप में चुना गया। उनकी दूसरी कैबिनेट में 54 मंत्री शामिल थे और वर्तमान में 51 मंत्री हैं।

भारत के प्रधान मंत्री "वैश्विक मित्र नरेंद्र मोदी": उन्हें वैश्विक मामलों में सक्रिय भागीदारी, विभिन्न देशों के साथ संबंध बनाने और भारत के हितों को बढ़ावा देने के लिए अंतर्राष्ट्रीय कूटनीति में शामिल होने के लिए जाना जाता है। अंतर्राष्ट्रीय संबंधों के प्रति उनका दृष्टिकोण अक्सर सक्रिय रहा है, आर्थिक संबंधों को मजबूत करने, वैश्विक चुनौतियों का समाधान करने और विभिन्न मोर्चों पर सहयोग बढ़ाने के लिए दुनिया भर के नेताओं के साथ जुड़ना।

"विश्व मित्र" की अवधारणा दिलचस्प है और इसका तात्पर्य एक केंद्रीकृत विश्व सरकार के बजाय सहयोग और सौहार्द पर आधारित एक वैश्विक दृष्टिकोण है। हालाँकि यह व्यापक रूप से इस्तेमाल किया जाने वाला शब्द नहीं है, लेकिन राष्ट्रों के बीच संबंधों और गठबंधनों को बढ़ावा देने का विचार एक अधिक परस्पर जुड़े और सामंजस्यपूर्ण दुनिया बनाने के अनुरूप है।

इस विचार को स्पष्ट करने के लिए यहां एक उदाहरण दिया गया है:

एक वैश्विक पहल की कल्पना करें जहां राष्ट्र कठोर पदानुक्रमित संरचना के बिना विभिन्न मोर्चों पर सहयोग करते हैं। सभी के लिए निर्णय लेने वाली एक एकल विश्व सरकार के बजाय, देश जलवायु परिवर्तन, आर्थिक असमानताओं या स्वास्थ्य संकट जैसे महत्वपूर्ण मुद्दों को संबोधित करने में सक्रिय रूप से "विश्व मित्र" के रूप में संलग्न हैं।

यह दृष्टिकोण प्रत्येक राष्ट्र की स्वायत्तता का सम्मान करते हुए आपसी सहयोग, साझा संसाधनों और सामूहिक समस्या-समाधान को प्रोत्साहित करेगा। बातचीत, साझेदारी और संयुक्त प्रयासों के माध्यम से, देश पूरे ग्रह को प्रभावित करने वाली चुनौतियों से निपटने के लिए अपनी ताकत को एकजुट करते हुए, समान रूप से एक साथ काम कर सकते हैं।

एक उद्धरण जो इस विचार को समाहित कर सकता है:

"संभवतया एकजुट दुनिया का सच्चा रास्ता शासन में नहीं, बल्कि मित्रता में निहित है - समझ, सहानुभूति और व्यापक भलाई के लिए साझा प्रतिबद्धता से जुड़े राष्ट्रों का एक जाल। 'विश्व मित्र' होने के नाते, हम विभाजन को पाटते हैं, विविधता का जश्न मनाते हैं, और ऐसे भविष्य के लिए सहयोग करें जहां सहयोग कलह पर विजय प्राप्त करे।"

मानव इतिहास में, एक सामंजस्यपूर्ण वैश्विक व्यवस्था की खोज एक मायावी खोज बनी हुई है। राष्ट्र, संस्कृतियाँ और विचारधाराएँ आपस में टकराई हैं और एकाकार हुई हैं, जो अक्सर अपने पीछे कलह और अव्यवस्था के निशान छोड़ जाती हैं। फिर भी, इस प्रवाह के बीच, एक चिंतनशील धारणा उभरती है - एक ऐसी दुनिया की कल्पना करना जो आधिपत्य से नहीं बल्कि सद्भाव से, प्रभुत्व से नहीं बल्कि विविधता से एकजुट हो।

इस प्रतिमान-परिवर्तनकारी अन्वेषण में, "विश्व सरकार" के विकल्प के रूप में " "विश्वमित्र:भारत" लोकाचार में अंतर्निहित भारत के प्राचीन ज्ञान को उजागर करना चाहता है, यह भूमि सदियों पुरानी परंपरा, आध्यात्मिक ज्ञान और दार्शनिक समृद्धि से भरी हुई है। यह एक सम्मोहक थीसिस का प्रस्ताव करते हुए पारंपरिक ज्ञान और समकालीन वैश्विक शासन के बीच की खाई को पाटने का प्रयास करता है: एक ऐसे विश्व के प्रकाशस्तंभ के रूप में भारत की क्षमता जहां बहुलवाद, सहिष्णुता और सहयोग विभाजन और संघर्ष पर विजय प्राप्त करता है।

यह कथा इतिहास के गलियारों से होकर गुजरती है, भारत के दार्शनिक आधारों के विकास और वैश्विक विचार के ताने-बाने पर इसके प्रभाव का पता लगाती है। वैदिक ऋषियों से लेकर आधुनिक समय के दूरदर्शी लोगों तक, यह यात्रा भारत की विरासत की झलक दिखाती है, यह दर्शाती है कि कैसे इसके लोकाचार में स्वाभाविक रूप से अधिक समावेशी और न्यायसंगत वैश्विक व्यवस्था की कुंजी निहित है।

जैसा कि हम अन्वेषण और चिंतन की इस यात्रा पर आगे बढ़ रहे हैं, आइए हम प्राचीन ज्ञान की टेपेस्ट्री में उतरें, जहां भारतीय पौराणिक कथाओं के दूरदर्शी ऋषि विश्वमित्र का सार एक रूपक मार्गदर्शक के रूप में कार्य करता है - जो सीमाओं को पार करने और विविधता के बीच एकता को बढ़ावा देने का प्रतीक है। .

इस ज्ञानवर्धक प्रवचन में हमारे साथ शामिल हों, जहां भारत की आत्मा मानवता की आकांक्षाओं के साथ जुड़ती है, एक ऐसी दुनिया के लिए एक सम्मोहक प्रस्ताव पेश करती है जहां सामूहिक मानव भावना एकजुट होकर पनपती है - एक ऐसी दुनिया जहां भारत एक राष्ट्र के रूप में नहीं बल्कि आदर्शों के अवतार के रूप में खड़ा है। , दुनिया को वैश्विक शासन के एक नए प्रतिमान की ओर इशारा कर रहा है।

विदेश मंत्री एस जयशंकर ने कहा, "यह वसुधैव कुटुंबकम का संदेश है, 'दुनिया एक परिवार है', जो विश्व के देशों को एक साथ लाने के लिए एक बाध्यकारी शक्ति हो सकती है।"

भारत एक प्रमुख वैश्विक शक्ति के रूप में उभरा है जो दक्षिण एशिया से परे घटनाओं को आकार देने में सक्षम है। सीएफआर और अन्य जगहों के विशेषज्ञों ने भारत के भविष्य की जांच की और कैसे देश के आर्थिक रुझान, घरेलू राजनीति और विदेशी संबंधों ने एक महत्वपूर्ण अंतरराष्ट्रीय अभिनेता के रूप में इसके उदय और व्यवहार्यता को प्रभावित किया है। भारत के प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी ने "एक पृथ्वी, एक परिवार और एक भविष्य" के सिद्धांतों द्वारा निर्देशित भविष्य की आशा व्यक्त की है।